॥ श्रीः ॥

अथ मुहूर्त्तप्रकाशहूर्त्तप्रकाशः ❀

(…र्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध.)

प्रतिपाद्यविषयाः ।

अपरनाम

ज्ञाप्रकरण

चतुर्थीलाल प्रकाशः

वशिष्ठ-गर्ग-नारद-पराशर-भृगु-बृहस्पति-कश्यपादि महर्षिप्रणीत संहिताभ्यो राजमार्तंडादि प्राचीन निबंधेभ्यश्च सारमादायलोकोपकारार्थं बालबोधार्थंच

श्री बीकानेरविषयान्तर्गत श्री रत्नगढनिवासिना गौडवंशावतंस पंडित वैद्य श्रीचतुर्थीलाल (चौथमल) शर्मणा
विरचितः

पुनस्तेनैवविदुषाविरचितयाचातुर्थीलालीभाषाटीकया।
संवलितः

सोयम्
पंडित श्रीधरशिवलालात्मज पंडित श्रीकृष्णलाल गौड
सलेमाबाद निवासिना
मुंबय्याम्
स्वकीये (श्री ज्ञानसागर) मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रसिद्धिंनितः

शकाब्दा १८२१ संवत् १९५६ माघकृष्णा १३

भूमिका.

विदित हो कि–वर्तमान समयमें अनेक प्रकारके
अनुसार आधुनिक बन बन कर छपगये हैं. परन्तु मुहूर्त
नुपम ग्रंथ देखनेमें नहीं आता, कि जिसकेद्वारा प्रत्येक प्रकारके
सर्वसाधारण जन निकालसकें अर्थात् अपना काम चलासकें, जिन भूदेवगणोंको मुहूर्त्त निकालनेका काम अधिकताके साथ रहता है उनको शीघ्रबोध, मुहूर्त्तगणपतिआदि अनेक प्रकारके ग्रंथ खरीदनेपर भी उनका काम भलीभांति नहीं चलसक्ता. दूसरे मुहूर्त्तविषयके जो ग्रंथ संस्कृतके छपे हैं. उनको सिवाय सस्कृतज्ञ विद्वानोंके किसी साधारण बुद्धिवाले ब्राह्मणदेवताका काम नहीं चलसक्ता. इत्यादि कारणोंसे जगत् प्रसिद्ध चंडूपंचांगके प्रसिद्धकर्त्ता ज्ञानसागरप्रेस मुम्बईके स्वामी श्रीयुत पंडित किसनलालजीने मुझे अनुरोध किया कि–आप मुहूर्त्तविषयका ऐसा ग्रंथ संग्रह करदो कि–जिसमें सर्वसिद्धान्तोंके अनुसार सर्वप्रकारके मुहूर्त निकालना अत्यंत सरलताकेसाथ लिखाहो? और जिसको पढकर साधारण बुद्धिका धारकभी प्रत्येक प्रकारका मुहूर्त्त बातकी बातमें निकाल ले और अपना काम चला ले. इसीप्रकार हमारे कई विद्वजनमित्रोंने भी अनुरोध किया तो उन सबकी आज्ञा शिरोधारण कर यह "मुहूर्त्तप्रकाश" उपनाम चतुर्थीलाल प्रकाश नामका ग्रथ वशिष्ठ, नारद, पराशर, भृगु, कश्यप और गर्गादि संहिता व राजमार्तण्डादि अनेक प्राचीन ग्रथोंके अनुसार संग्रह किया है. जिसमे संज्ञा १ त्याज्य २ नानामुहूर्त्त ३ गोचर ४ संस्कार ५ विवाह ६ यात्रा ७ वास्तु ८ और मिश्रित ९ ये नव प्रकर्ण विस्तारपूर्वक जहातक मुझसे बना उक्त महाशयोंके अभिप्रायानुसार सरलताके साथ हिन्दीभाषाटीका सहित लिखे हैं. यदि इस ग्रंथके प्रकाशित होनेसे हमारे सजातीय भूदेवगणोंका कुछ भी उपकार साधन हुआ तो मेरा व प्रकाशक महाशयका परिश्रम व व्यय सफल समझा जायगा.

दूसरे कई विशेष कारणोंसे इस ग्रंथके लिखनेमें शीघ्रताकरनी पडी तथा. हमारे परोक्षमें मुद्रित कियागया है. जिससे अनेक जगह अशुद्धि भी रहना सम्भव है. यदि विद्वद्गणोंको दृष्टिमें कहींपर अशुद्धियें देखनेमें आवें तो पत्रद्वारा सूचित करेंगे तो दूसरी आवृत्तिमें शुद्धकर दीजायगी.

रत्नगड.
ता. २९–१–१९०० }

द्विजजातिकाहितैषी–
पंडित चतुर्थीलालशर्मा.

अथ मुहूर्त्तप्रकाशस्थविषयानुक्रमणिका लिख्यते.

त्याज्यप्रकरणम् २.

गोचरप्रकरणम् ३.

विषयानुक्रमणिका पूर्वार्द्ध समाप्तम्.

अथ मुहूर्त्तप्रकाशउत्तरार्द्धस्थयंत्राणांविषया-नुक्रमणिका लिख्यते.

विषयानुक्रमणिका उत्तरार्द्ध समाप्तम्.

॥ श्रीः ॥

❁ मुहूर्त्तप्रकाश. ❁

श्रीयुत पंडित चतुर्थीलालजी रत्नगढ निवासीकृत.

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीमार्तंडायनमः ॥ प्रणम्यविश्वेश्वरमिष्टदेवं दृष्ट्वा-वसिष्ठादिकृताश्चसंहिताः । बालप्रबोधायकरोमिग्रंथं ज्योतिःप्रकाशंसु-गमंसमासतः ॥ १ ॥ तावत्संवत्सरपरिज्ञानम् । विक्रमादित्यशाकस्य पंचत्रिंशाधिकेशते । शोधितेजायतेशाकश्चैत्रशुक्लादितःक्रमात् ॥ २ ॥ अथप्रभवादिसंवत्सरज्ञानम् । शकेन्द्रकालःपृथगाकृति २२ घ्नःशशा-ङ्कनंदाश्वियुगैः ४२९१ समेतः । शराद्रिवस्विंदु १८७५ हृतःस-लब्धःषष्ट्यावशिष्टाःप्रभवादयोऽब्दाः ॥ ३ ॥ अथायनसंज्ञा । मकरा-द्राशिषट्केऽर्केप्रोक्तंचैवोत्तरायणम् । षट्सुकर्कादितिज्ञेयंदक्षिणंह्ययनंर-वेः ॥ ४ ॥ अथऋतुसंज्ञा । मीनमेषगतेसूर्येवसंतःपरिकीर्तितः । वृषभेमि-थुनेग्रीष्मोवर्षासिंहेऽथकर्कटे ॥५॥ कन्यायांचतुलायांचशरदृतुरुदाहृतः। हेमंतोवृश्चिकद्वंद्वेशिशिरोमृगकुंभयोः ॥ ६ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ भाषाभावार्थ लिख्यते । प्रथम ग्रंथकर्ता शिष्टाचारको अंगीकारकरके ग्रंथके निर्विघ्नता पूर्वक समाप्तिके अर्थ नमस्कारात्मक मंगलाचरण करताहै (प्रणम्य इति) विश्वका ईश्वर और हमारा इष्टदेव विश्वेश्वर है उनको नम-स्कार करके तथा वसिष्ठ-नारद-गर्ग-पराशर भृगु आदिमहर्षिकृत संहितावोंको देखि-करके यह ज्योतिषका " मुहूर्त्तप्रकाश " नामग्रंथ अतिसुगम और संक्षेपसे बालकोंके बोधके अर्थ करताहूं ॥१॥ (तत्रादौ सवत्सरज्ञानम्) विक्रमादित्यके वर्तमान संवत्मेंसे १३५ निकाललेवे तो शालिवाहनका शाक निकल आवे । यह शाक चैत्र शुक्ल प्रति-पदासे जानना चाहिये ॥ २ ॥ (प्रभवादि संवत्सरज्ञानं) वर्तमान शाकको बाईस २२ से गुणावे फिर४२९१करके संयुक्त करै और१८७५ से भाग देवै फिर लब्ध हो वे अंकके साथ वर्तमान शाकेको जोडे अनंतर ६० का भाग देवै जो शेष रहा हुवा अंक है उनको प्रभवादि गत संवत्सर जानना ॥ ३ ॥ (अयनसंज्ञा) मकरसे आदि-लेके छः राशियोंमें सूर्य होनेसे उत्तरायण कहलाताहै और कर्कादि छः राशियोंपर सूर्य

होनेसे दक्षिणायन जानना चाहिये ॥ ४ ॥ (ऋतुसंज्ञा) मीन १२ मेष १ का सूर्य होनेसे वसंतऋतुः।वृष २ मिथुन ३ के सूर्यसे ग्रीष्मऋतुः और कर्क ४ सिंह ५ के सूर्यसे वर्षाऋतु होतीहै ॥ ५ ॥ कन्या ६ तुल ७ के सूर्यसे शरद्ऋतु । वृश्चिक ८ धन ९ के सूर्यको हेमंत और मकर १० कुंभ ११ में सूर्य होनेसे शिशिरऋतु कहतेहैं ॥ ६ ॥

अथमाससंज्ञा ॥ मासश्चैत्रोथवैशाखोज्येष्ठआषाढसंज्ञकः। ततस्तुश्रावणो-भाद्रपदाथाश्विनसंज्ञकः ॥७॥ कार्तिकोमार्गशीर्षश्चपौषोमाघोथफाल्गुनः। मासोदर्शावधिश्चांद्रःसौरःसंक्रमणाद्रवेः ॥८॥ त्रिंशद्दिनःसावनिकोनाक्ष-त्रोविधुसंभ्रमात्। चांद्रस्तुद्विविधोमासोदर्शांतःपौर्णिमांतिमः ॥९॥ अथ तिथिसंज्ञा॥प्रतिपच्चद्वितीयाचतृतीयातदनंतरम्। चतुर्थीपंचमीषष्ठीसप्त-मी चाष्टमीतथा ॥ १० ॥ नवमीदशमीचैवैकादशीद्वादशीततः। त्रयोदशी ततोज्ञेयाततःप्रोक्ताचतुर्दशी ॥ ११ ॥ पूर्णिमाशुक्लपक्षेत्याकृष्णपक्षेत्वमा-स्मृता।अथतिथीशाः ॥ तिथीशावह्निकोगौरीगणेशोऽहिर्गुहोरविः ॥ १२ ॥

(माससंज्ञा) चैत्र १ वैशाख २ ज्येष्ठ ३ आषाढ ४ श्रावण ५ भाद्रपद ६ आश्विन ७ कार्त्तिक ८ मार्गशिर ९ पौष १० माघ ११ फाल्गुन १२ यह बारह मास हैं, और अमावस्या अंतमें होनेसे चांद्रमास और सूर्यकी संक्रांतिसे सौरमास कहाहै ॥ ७ ॥८॥ तीस दिनको मासकी सावनिक संज्ञा है और चंद्रमासे नाक्षत्रसंज्ञा होतीहै चांद्रमास-भी दो प्रकारके है एक तो अमावस्या अंतका दूसरा पूर्णिमाके अंतका ॥ ९ ॥ (तिथिसंज्ञा) प्रतिपदा १ द्वितीया २ तृतीया ३ चतुर्थी ४ पंचमी ५ षष्ठी ६ सप्तमी ७ अष्टमी ८ नवमी ९ दशमी १० एकादशी ११ द्वादशी १२ त्रयोदशी १३ चतुर्दशी १४ शुक्लपक्षके अंतमें पूर्णिमा १५ और कृष्णपक्षके अन्तमें अमावास्या ३० होती है (तिथीनां अधिपति) प्रतिपदासे लेके सोलह तिथियोंका क्रमसे अधिपति जानना। प्रतिपदाको अग्नि स्वामी १ द्वितीयाको ब्रह्मा २ तृतीयाको गौरी ३ चतुर्थीको गणेश ४ पंचमीको सर्प ५ षष्ठीको स्वामी कार्तिक ६ सप्तमीको सूर्य ७ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२॥

शिवोदुर्गान्तकोविश्वेहरिःकामःशिवःशशी। आमावास्यातिथेरीशाःपि-तरःसंप्रकीर्तिताः ॥ १३ ॥ अथनंदादिसंज्ञा। नंदाभद्राजयारिक्तापू-र्णाश्चतिथयःक्रमात्। वारत्रयंसमावर्त्यतिथयःप्रतिपन्मुखाः ॥ १४ ॥ अ-थवारसंज्ञा। आदित्यश्चंद्रमाभौमोबुधश्चाथबृहस्पतिः। शुक्रःशनैश्चरश्चैते वासराःपरिकीर्तिताः ॥ १५ ॥ शिवोदुर्गागुहोविष्णुर्ब्रह्मेंद्रःकालसंज्ञकः।

सूर्यादीनांक्रमादेतेस्वामिनःपरिकीर्तिताः ॥ १६ ॥ अथशुभाशुभसंज्ञा । गुरुश्चंद्रोबुधःशुक्रःशुभावाराःशुभेस्मृताः । क्रूरास्तुक्रूरकृत्येषुग्राह्याभौमार्कसूर्यजाः ॥ १७ ॥ अथस्थिरचरसंज्ञा । स्थिरःसूर्यश्चरश्चंद्रोभौमश्चोग्रोबुधःसमः। लघुर्जीवोमृदुःशुक्रःशनिस्तीक्ष्णःसमीरितः ॥ १८ ॥

अष्टमीको शिव ८ नवमीको दुर्गा ९ दशमीको काल १० एकादशीको विश्वेदेव ११ द्वादशीको विष्णु १२ त्रयोदशीको कामदेव १३ चतुर्दशीको शिव १४ पूर्णिमाको चंद्रमा १५ अमावस्याके पितर अधिपति जानना ॥ १३ ॥ (नंदादिसंज्ञा) प्रतिपदासे लेके तीन वेर गिणनेसे नंदा आदि तिथियोंकी संज्ञा होतीहै, जैसे१।६।११नंदा २।७।१२। भद्रा ३।८।१३। जया ४।९।१४ रिक्ता ५।१०।१५ पूर्णा जानना ॥ १४ ॥ (वारसंज्ञा) आदित्यवार, १ सोम, २ मंगल, ३ बुध ४, बृहस्पति, ५ शुक्र, ६ शनैश्चर ७ यह सात वारहैं ॥ १५ ॥ आदित्यवारको शिव अधिपति, सोमको दुर्गा, भौमको स्वामिकार्तिक, बुधको विष्णु, गुरुको ब्रह्मा, शुक्रको इंद्र, शनिको काल मालकहै ॥ १६॥(शुभाशुभसंज्ञा) गुरु, शुक्र, बुध, चंद्र यह शुभकर्मकेयोग्य शुभवारहैं. भौम, आदित्य, शनि, क्रूरकामके योग्य क्रूर वार जानना ॥ १७ ॥ (स्थिरचरसंज्ञा) सूर्य स्थिरसंज्ञक है, चंद्रमा चर, मंगल उग्र, बुध सम, गुरु लघुसंज्ञक, शुक्र मृदु, शनि तीक्ष्ण संज्ञावालेहै ॥ १८ ॥

अथनक्षत्रनामानि । अश्विनीभरणीचैवकृत्तिकारोहिणीमृगः।आर्द्रापुनर्वसुःपुष्यस्ततोऽश्लेषामघातथा ॥ १९ ॥ पूर्वाफाल्गुनिकातस्मादुत्तराफाल्गुनीततः । हस्तश्चित्रातथास्वातीविशाखातदनंतरम् ॥ २० ॥ अनूराधा ततोज्येष्ठाततोमूलंनिगद्यते । पूर्वाषाढोत्तराषाढात्वभिजिच्छ्रवणस्ततः । धनिष्ठाशततारारव्यापूर्वाभाद्रपदाततः । उत्तराभाद्रपाच्चैवरेवत्येतानिभानिच॥२१॥ अथनक्षत्रेशाः । दस्रोयमोऽनलोधाताचंद्रोरुद्रोऽदितिर्गुरुः। भुजंगमश्चपितरोभगोर्यमदिवाकरौ॥२२॥ त्वष्टावायुश्चशक्राग्नीमित्रःशक्रश्चनैर्ऋतिः।जलंविश्वेविधिर्विष्णुर्वासवोवरुणस्तथा॥२३॥ अजैकपादहिर्बुध्न्यःपूषेतिकथितोबुधैः।अष्टाविंशतिसंख्यानांनक्षत्राणामधीश्वराः२४

(नक्षत्रनाम) अ. भ. कृ. रो. मृ. आ. पु. पु. आ. मघा. पू. फा. उ. फा. ह. चि. स्वा. वि. अनु. ज्ये. मू. पू. षा. उ. षा. अभि. श्र. ध. श. पू. भा. उ. भा. रे. यह अट्ठाईस नक्षत्र हैं ॥ १९ ॥ २०॥२१ ॥ (नक्षत्रस्वामी) अश्विनीका अश्वनीकुमारस्वामी १ भरणीका यमराज २ कृत्तिकाका अग्नि३ रो. ब्रह्मा ४ मृ. चंद्रमा ५ आ. शिव. ६

पुन. अदिति ७ पुष्य. अंगिरा ८ आश्ले. सर्प. ९ म. पितर १० पू. भग ११ उ. अर्यमा १२ ह. रवि १३ चि. त्वष्टा. १४ स्वा. वायु. १५ वि. इंद्राग्नी १६ अ. मित्र. १७ ज्ये. इंद्र १८ मू. निर्ऋति १९ पू. जल २० उ. विश्वेदेवा २१ अ. विधि. २२ श्र. विष्णु २३ ध. वसु २४ श. वरुण २५ पू. अजैकपाद २६ उ. अहिर्बुध्न्य. २७ रेवतीका २८ पूषा स्वामी जानना ॥ २४ ॥

अथध्रुवस्थिरादिसंज्ञा। ध्रुवंस्थिरमितिख्यातंरोहिणीचोत्तरात्रयम्। मृगाश्वित्रानुराधाचरेवतीमृदुमैत्रकम् ॥ २५ ॥ पुष्याश्विन्यभिजिद्धस्तंलघुक्षिप्रमुदाहृतं। ज्येष्ठार्द्रामूलमाश्लेषातीक्ष्णंदारुणमुच्यते ॥ २६ ॥ श्रवणादित्रिभंस्वातिपुनर्वसुचरंचलं। भरणीचमघापूर्वाक्रूरमुग्रमुदाहृतम् ॥ २७ ॥ विशाखाकृत्तिकासौम्यंमिश्रंसाधारणंस्मृतं। (अथाधऊर्ध्वतिर्यङ्मुखनक्षत्राणि) मूलाश्लेषामघापूर्वाविशाखाभरणीद्वयम् ॥ २८ ॥ अधोमुखानिभान्यत्रकर्मकुर्यादधोमुखं। पुनर्वस्वनुराधाख्यंज्येष्ठाहस्तत्रयंमृगः ॥ २९ ॥ रेवतीद्वितयंतिर्यग्वक्त्रंतस्मिंस्तथाक्रियाः। उत्तरारोहिणीचैवपुष्यार्द्राश्रवणत्रयम् ॥ ३० ॥

(ध्रुवस्थिरादिसंज्ञा) रो. उत्तरा तीनों-ध्रुव स्थिर संज्ञकहै, मृ. चि. अनु. रे. मृदु मैत्र संज्ञकहै ॥ २५ ॥ पुष्य. अश्विनी. अभिजित्-हस्त-इनकी लघु क्षिप्र संज्ञाहै और जे. आ. मू मघा. आश्लेषा, इनकी दारुण तीक्ष्ण संज्ञाहै॥२६॥ श्र. ध. श. स्वा. पुन. यह चर चल है भ. मघा. पूर्वा तीनों यह क्रूर तथा उग्र संज्ञकहै ॥ २७ ॥ वि. कृ. मृ. यह मिश्र साधारण संज्ञा वालेहैं, मू. आश्ले. मघा. पूर्वातीनो वि. भ. कृ. ॥ २८ ॥ यह अधो मुखी नक्षत्रहैं इनमें खात आदिकार्य करना योग्यहै पुन. अनु. ज्ये. ह. चि. स्वा. मृ. ॥ २९ ॥ रे. अश्वि. इनका टेढा मुखहै सो ऐसाही कार्य करना चाहिये. उ. ३ रो. पुष्प. आर्द्रा, श्र. ध. श. इन नक्षत्रों का ऊपरको मुखहै सो इनमें खात भरणे आदिका कार्य करना ॥ ३० ॥

एतान्यूर्ध्वमुखान्यत्रकर्मोक्तंतादृशंबुधैः। अथाश्विन्यादिभानांतारकासंख्या। रामा ३ ग्नि ३ ऋतु ६ बाणा ५ ग्नि ३ भू १ वेदा ४ ग्नि ३ शरे ५ षवः ५। नेत्र २ बाहु २ शरें ५ दुं २ दु १ युग ४ वेदा ४ ग्नि ३ शंकराः ११। दृग २ श्वि २ राम ३ रामा ३ ब्धि ४ शतं १०० बाहु २ क्षणं २ रदाः ३२। अश्विनीप्रमुखानांचतारासंख्यायथाक्रमम् ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ अथअंधादिसंज्ञा। अंधाक्षश्चिपटाक्षश्चकाणाक्षोदिव्यलो-

चनः। गणयेद्रोहिणीपूर्वंसप्तवारमनुक्रमात्॥३ ३॥अंधेचोरहृतंद्रव्यंलभेद्यत्नात्तुकेकरे। काणाक्षेश्रवणंयातिदिव्यनेत्रेनकिंचन ॥३ ४॥ अंधेचलभतेशीघ्रंकाणेचैवदिनत्रयम्। चिपिटेमासमेकंतुसुलोचेचनलभ्यते॥ ३ ५ ॥ अंधेपूर्वेगतंवस्तुकाणेचैवतुदक्षिणे।चिपिटेपश्चिमायांतुसुलोचेचैवउत्तरे ३ ६

(नक्षत्रोंकेतारोंकीसंख्या) अश्विनीका ३ भ. ३ कृ. ६ रो. ५ मृ. ३ आ. १ पु.४ पु.३ आश्ले. ५ म. ५ पू.फा.२उ.फा.२ह.५चि.१स्वा.१वि.४अनु.४ज्ये.३मू.११पु.षा. ४ उ. षा. ३ अ.३ श्र.३ ध. ४ श.१०० पू. भा २ उ. भा. २ रेवतीका ३२ ताराजानना ॥ ३२ ॥ (अंधादि संज्ञा) रोहिणीसे लेकर अठाईस नक्षत्रोंकी क्रमसे अंधलोचन–चिपटाक्ष-काणाक्ष-दिव्यलोचन-यह चार संज्ञा जाननी ॥ ३३ ॥ अंधसंज्ञकनक्षत्रोंमें गया हुवा धन शीघ्र मिलताहै। चिपटाक्ष (केकर) में गया हुवा यत्नसे मिलेगा-काणाक्षका धन सुननेमें आताहै और दिव्यलोचनमें गया हुवा धन कदापि नहीं मिलताहै ॥ ३४ ॥ (दूसरा मत) अंधाक्षका शीघ्र धन मिलै और काणाक्षका तीन ३ दिनसे मिले-चिपटाक्षका एक १ माससे और सुलोचनका मिलताही नहींहै॥ ३५॥ अंधाक्षमें वस्तु पूर्वको गई जानों काणाक्षमें दक्षिणको और चिपटाक्षमें पश्चिमको-सुलोचनमें गई वस्तु उत्तरको जानना ॥ ३६ ॥

रो	पु	उ	वि	पू	ध	रे	अंधाक्ष
मृ	आ	ह	अ	उ	श	अ	चिपटाक्ष.
आ	म	चि	ज्ये	श्र	पू	भ	काणाक्ष.
पु	पू	स्वा	मू	श्र	उ	कृ	दिव्यलो०

अथयोगनामानि। विष्कंभःप्रीतिरायुस्मान्सौभाग्यःशोभनस्तथा। अतिगंडःसुकर्मांचधृतिःशूलस्तथैवच ॥ ३ ७॥ गंडोवृद्धिर्ध्रुवश्चाथव्याघातोहर्षणस्तथा । वज्रंसिद्धिर्व्यतीपातोवरीयान्परिघःशिवः ॥ ३८ ॥ सिद्धिःसाध्यःशुभःशुक्लोब्रह्माचैंद्रोथवैधृतिः। योगानांज्ञेयमेतेषांस्वनामसदृशंफलम्॥ ३ ९ ॥ अथकरणनामानि। तिथिंचद्विगुणीकृत्यएकहीनंचकारयेत्। सप्तभिश्चहरेद्भागंशेषंकरणमुच्यते॥ ४ ०॥ बवश्चबालवश्चैवकौलवस्तैतिलस्तथा । गरश्चवणिजोविष्टिःसप्तैतानिचराणिच ॥ ४ १ ॥ कृष्णपक्षेचतुर्दश्यांशकुनिः पश्चिमेदले। चतुष्पादश्चनागश्चअमावास्यादलद्वये ॥ ४२ ॥

(योगनाम) विष्कंभ १ प्री. २ आ. ३ सौ. ४ शो. ५ अ. ६ सु. ७ धृ. ८ शू. ९ गं. १० वृ ११ ध्रु. १२ व्या. १३ ह. १४ व. १५ सि. १६ व्य. १७ व. १८ प. १९ शि. २० सि. २१ सा. २२ शु. २३ शु. २४ ब्र. २५ ऐं. २६ वैधृति २७ यह सताईस योगोंके नामहैं और नामसदृशही फल जानो ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ (करण नाम)

वर्तमान तिथिको दूणी करके एक १ कमती करै और सातका भाग देवै शेष बचैंसो करण क्रमसे जानै ॥ ४० ॥ बव १ बालव २ कौलव ३ तैतिल ४ गर ५ वणिज् ६ विष्टि (भद्रा) ७ यह सात करण हैं इनकी चर संज्ञाहै ॥ ४१ ॥ कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके पश्चात् भागमें अर्थात् पीछेकी ३० घडियोंमें शकुनि नाम करण रहता है और अमावस्याके दोनों भागमें चतुष्पाद १ नाग २ नाम करण रहताहै ॥ ४२ ॥

शुक्लप्रतिपदायास्तुकिंस्तुघ्नःप्रथमेदले। स्थिराण्येतानिचत्वारिकरणानिजगुर्बुधाः ॥ ४३ ॥ शुक्लप्रतिपदांतेचबवाख्यःकरणोभवेत्। एकादशैवज्ञेयानिचरस्थिरविभागतः ॥ ४४ ॥ अथभद्रा। दशम्यांचतृतीयायांकृष्णपक्षेपरेदले। सप्तम्यांचचतुर्दश्यांविष्टिःपूर्वदलेस्मृता ॥ ४५ ॥ एकादश्यांचतुर्थ्यांचशुक्लपक्षेपरेदले। अष्टम्यांपूर्णिमायांचभद्रापूर्वदलेस्मृता ॥ ४६ ॥ अन्यःप्रकारः। मेषत्रयालिगेचंद्रेभद्रास्वर्लोकचारिणी। कन्याद्वयेधनुर्युग्मेचंद्रेभद्रारसातले ॥ ४७ ॥ कुंभेमीनेतथाकर्केसिंहेचंद्रेभुविस्थिता। भूर्लोकस्थासदात्याज्यास्वर्गपातालगाशुभा ॥ ४८ ॥

शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके प्रथम भागमें किंस्तुघ्न और द्वितीय भागमें बव करण होताहै यह चार करण स्थिर संज्ञकहै और पहले कहे हुये ७ चर संज्ञावाले जानना ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ (भद्रा विचार) कृष्णपक्षकी दशमी १० तृतीया ३ के (परदल) पिछाडीकी तीस घडियोंमें भद्रा रहतीहै और सप्तमी ७ चतुर्दशी १४ के पहली तीस घडियोंमें रहै ॥ ४५ ॥ शुक्लपक्षकी एकादशी ११ चतुर्थीके परभाग (दूसरे) भागमें और अष्टमी ८ पूर्णिमाके १५ पूर्व दलमें भद्रा जाननी चाहिये ॥ ४६ ॥ (दूसरामत) मेष १ वृष २ मिथुन ३ वृश्चिक ८ के चंद्रमामें स्वर्गलोकमें भद्रा रहतीहै। कन्या ६ तु. ७ ध. ९ म. १० के चंद्रमामें पातालमें रहतीहै ॥ ४७ ॥ कुं. ११ मी. १२ कर्क ४ सिं. ५ के चंद्रमामें भूलोक (पृथ्वीमें) भद्रा रहतीहै सो पृथ्वीमें रहनेवाली भद्रा शुभकाममें त्याज्य है और स्वर्ग-पातालमें रहनेवाली भद्रा शुभ है ॥ ४८ ॥

अथभद्रायाअंगविभागस्तत्फलंच। मुखेपंचगलेत्वेऽकावक्षस्यैकादशस्मृताः। नाभौचतस्रःषट् ६ कट्यांतिस्रःपुच्छाख्यनाडिकाः ॥ ४९ ॥ कार्यहानिर्मुखेमृत्युर्गलेवक्षसिनिःस्वता। कट्यामुन्मत्ततानाभौच्युतिःपुच्छेध्रुवोजयः ॥ ५० ॥ ज्ञेयंक्रमात्फलंविष्टेरिदमंगसमुद्भवम्। कार्येत्वावश्यकेविष्टेर्मुखमात्रंपरित्यजेत् ॥ ५१ ॥ अथभद्रापुच्छम्। चतुर्थ्याश्चाष्टमेयामेप्रथमेचाष्टमीदिने। एकादश्यास्तथाषष्ठेपूर्णिमास्यास्तृतीयके ॥ ५२ ॥

सप्तमेस्यात्तृतीयायाःसप्तम्यास्तुद्वितीयके । दशम्याःपंचमेयामेचतुर्द्दश्याश्चतुर्थके ॥ प्रांतेघटीत्रयंपुच्छंशुभकार्येशुभावहम् । अथभद्रास्वरूपम् । पुरादेवासुरेयुद्धेशंभुकायाद्विनिर्गता । दैत्यघ्नीरासभास्याचविष्टिर्लांगूलिनीत्रिपात् ॥ ५३ ॥ सिंहग्रीवाशवारूढासप्तहस्ताकृशोदरी । अमरैःश्रवणप्रांतेसानियुक्ताशिवाज्ञया ॥ ५४ ॥ महोग्राविकरालास्यापृथुदंष्ट्राभयानका । कार्यघ्नीभुवमायातिवह्निज्वालासमाकुला ॥ ५५ ॥

(भद्राका अंगविभाग) पहली ५ घडी भद्राके मुखकी है । फिर १ घडी गलेकीहै। ११ घडी वक्षस्थल (छाती) की है । ४ घडी नाभीकीहै । ६ घडी कटीकीहै । फिर ३ घडी अंतकी पुच्छकी जाननी ॥ ४९ ॥ (फल) मुखकी ५ घडियोंमें शुभकार्य करनेसे कार्यका नाश होताहै । गलेकी १ घडी मृत्यु करतीहै । और छातीकी ११ घडियोंमें दरिद्रता होतीहै । कटीकी ६ घडियोंमें पागल होजावै और नाभिकी ४ घडी नाशकारकहै–पुच्छकी ३ घडी जयके अर्थात् कार्यको सिद्ध करनेवालीहै ॥ ५० ॥ इस प्रकार क्रमसे भद्राके अंगकी घडियोंका फल जानके कार्य करै यदि अतिही जरूरत होवेतो भद्राके मुख मात्रकी ५ घडीही त्याग देवै ॥ ५१ ॥ (भद्राके पुच्छकी घडी) शुक्लपक्षमें चतुर्थीके आठवीं ८ पहरके अंतकी तीन घडी भद्राके पूँछकीहै और अष्टमीके प्रथम १ प्रहरके अंतकी ३ घडी भद्राके पुँछकीहै । एकादशीके छठी पहरके अंतकी ३ घडी और पूर्णिमाके तीसरी पहरके अंतकी तीन घडी पूँछकी जाननी चाहिये ॥ ५२ ॥ कृष्णपक्षमें तृतीयाके सातवीं ७ पहरकी तीन घडी ३ और सप्तमीको दूसरी २ पहरकी ३ घडी. दशमीके पांचवीं ५ प्रहरके अंतकी ३ और चौदशके चौथी ४ प्रहरके अंतकी ३ घडी शुभ कामोंके योग्यहै ॥ ५२ ॥ (भद्रास्वरूप)

भद्रा पुच्छ घटी चक्रम् ।								
तिथि	४	८	११	१५	३	७	१०	१४
प्रहर	८	१	६	६	७	२	५	४
घडी	३	३	३	३	३	३	३	३

पूर्वकालमें देव दैत्योंके युद्धमें महादेवजीके शरीरसे यह भद्रा (देवी) उत्पन्न हुई है । दैत्योंको मारनेके लिये गर्दभके मुख और लंबे पूंछ सहित और तीन पैर (पग) युक्त उत्पन्न हुईहै ॥५३॥ और सिंहजैसी ग्रीवा-मुर्देपें चढी हुई-सात हाथ और शुष्क पेटवाली-महाभयंकर-विकराल मुखी-पृथु दंष्ट्रा-भयानक कार्यको नाश करनेवाली अग्निकी ज्वालासहित देवोंकी भेजी हुई पृथ्वीपैं उतरीहै ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

अथपरिहारः । तिथेःपूर्वार्द्धजारात्रौदिनेभद्रापरार्द्धजा । भद्रादोषोनतत्रस्यात्कार्येत्यावश्यकेसति ॥ ५६ ॥ मतांतरम् । शुक्लेतुवृश्चिकीभद्रा कृष्णपक्षेभुजंगमा । सादिवासर्पिणीरात्रौवृश्चिकीचापरेजगुः ॥ ५७ ॥

मुखंत्याज्यंतुसर्पिण्यावृश्चिक्याःपुच्छमेवच ॥ भद्राकृत्यम् । वधबंधविषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादियत् ॥ ५८ ॥ तुरंगमहिषोष्ट्रादिकर्मविष्टयांतुसिध्यति । नकुर्यान्मंगलंविष्टयांजीवितार्थीकदाचन ॥ ५९ ॥ कुर्वन्नज्ञस्तदाक्षिप्रंतत्सर्वंनाशतांव्रजेत् । अथदिवारात्रौपंचदशमुहूर्त्ताः । दिवामुहूर्त्तारुद्राहिमित्राःपितृवसूदकम् ॥ ६० ॥ विश्वेविधातृब्रह्मेंद्राइंद्राग्न्यसुरतोयपाः । अर्य्यमाभगसंज्ञश्चविज्ञेयादशपंचच ॥ ६१ ॥

(भद्रापरिहार) तिथिके पूर्वार्द्धमें अर्थात् पहली तीस घडियोंमें होनेवाली भद्राका रात्रिमें दोष नहींहै और तिथिके पश्चात् भागमें अर्थात् पिछाडीकी तीस घडियोंमें होनेवाली भद्रा दिनमें होवेतो अवश्यक काममें दोष नहीं है ॥ ५६ ॥ (दूसरी रीतसे परिहार) शुक्लपक्षकी भद्रा वृश्चिक संज्ञकहै और कृष्णपक्षकी सर्प संज्ञकहै तथा कई आचार्योंके मतसे दिनकी भद्रा सर्प संज्ञकहै और रात्रिकी वृश्चिक संज्ञक मानीहै सो सर्प संज्ञाके मुखकी ५ घडी और वृश्चिक संज्ञाके पुच्छकी ३ घडी शुभकार्यमें त्याग देना चाहिये ॥ ५७ ॥ (भद्रा कृत्य) भद्रामें वध. बंधन. विष. अग्नि. शस्त्र. छेदन उच्चाटन आदि निंदितकार्य, घोडा-महिष. ऊँट-आदिका दमन करना शुभदायक होताहै परंतु शुभकामकी इच्छावालोंको भद्रामें शुभकार्य कदापि नहीं करना योग्यहै यदि मूर्खपणेसे करैगा तो तत्कालही कार्य सहित नाश होवेगा॥५८॥५९॥(दिन रात्रि मुहूर्त्त.) रुद्र. १ अहि. २ मित्र. ३ पितृ. ४ वसु. ५ उदक. ६ विश्वेदेव ७ विधाता. ८ ब्रह्म. इंद्र. १० इंद्राग्नि. ११ असुर. १२ वरुण. १३ अर्यमा. १४. भग. १५ यह १५ मुहूर्त्त क्रमसे दिनमें आतेहैं और१ मुहूर्त्त दिनके पंदरहवें हिस्सेका होताहै॥६०॥६१

अह्नःपंचदशोभागोमुहूर्त्तोथतथानिशि । ईशाजपादाहिर्बुध्न्यपूषाश्वियमवह्नयः ॥ ६२ ॥ धातृचंद्रादितीज्याख्यविष्णवर्कत्वष्टृवायवः । । अथैषां प्रयोजनम् । यस्मिन्नृक्षेहियत्कर्म्मकथितंनिखिलंचयत् ॥ ६३ ॥ तद्दैवत्येतन्मुहूर्त्तेकार्य्यंयात्रादिकंसदा । दिनमध्येऽभिजित्संज्ञेदोषमध्येषुसत्स्वपि ॥ ६४ ॥ सर्वंकुर्याच्छुभंकर्म्मयाम्यदिग्गमनंविना । । अथरव्यादिवारेषुत्याज्यमुहूर्त्ताः । अर्य्यमाभानुमद्वारेचंद्रेऽह्निविधिराक्षसौ॥ ६५॥ पित्र्यग्नीकुजवारेतुचंद्रपुत्रेतथाभिजित्। पित्र्याब्राह्मौभृगोर्वारेरक्षस्सार्पौगुरोर्दिने ॥ ६६॥ रौद्रसार्पौशनेरन्हित्याज्याश्चैतेमुहूर्त्तकाः।अथपौराणिकामुहूर्ताः । पौराणिकारौद्रचैत्रासितमैत्रमवाक्षणाः । सावित्रवैराजिका-

ख्यौगंधर्वश्चाष्टमोभिजित् ॥ ६७ ॥ रौहिणोबलसंज्ञश्चविजयोनैर्ऋत-
स्तथा । इंद्रोजलेश्वरःपंचदशमोभगसंज्ञकः ॥ ६८ ॥

और रुद्र १ अजैकपाद २ अहिर्बुध्न्य ३ पूषा ४दस्र ५ यम ६ वन्हि ७ धाता ८ चं-
द्र ९ अदिति १० गुरु ११ विष्णु १२ अर्क १३ त्वष्टा १४ वायु १५ यह १५ मुहूर्त्त
क्रममें रात्रिमें जानना ॥ ६२ ॥ (मुहूर्त्तप्रयोजन) जिस नक्षत्रमें जो कार्य कारण
लिखा है सोही समग्र कर्म उसी नक्षत्रके ऊपर लिखे हुये स्वामीके मुहूर्त्तमें यात्रा आ-
दि शुभकार्य करना चाहिये ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ और दिनके ११॥ बजे अभिजित् नाम
मुहूर्त्त सदैव आता है सो इस मुहूर्त्तमें अशुभदिन होवे तोभी यात्रा आदिकार्य करना
शुभदायक है परतु दक्षिण दिशाके गमनमें त्याज्य है ॥ ६५ ॥ (वारेषु त्याज्य मु-
हूर्त्त) अर्यमा नाम मुहूर्त्त आदित्यवारको त्याज्य है और विधि राक्षस सोमवारको
पितृ अग्नि मगलको अभिजित् बुधको पितृ ब्राह्म शुक्रको राक्षस सर्प गुरुवारको रौद्र-
शनिवारको शुभकार्यमें त्याग देना चाहिये ॥ ६६ ॥ (पुराणोक्त मुहूर्त्त) रौद्र १ चैत्र
२ सित ३ मैत्र ४ सावित्र ५ वैराजिक ६ गाधर्व ७ अभिजित् ८ रौहिण ९ बल १०
विजय ११ निर्ऋति१२ माहेंद्र१३ जलेश्वर१४ भग१५ यह१५ मुहूर्त्त दिनके पुराणोंके
मतसे जानना और इनमें आठवां अभिजित् मुहूर्त्त है उसका कुतपभी नाम है६७।६८॥

अष्टमोयोभिजित्संज्ञःसएवकुतपःस्मृतः । रौद्रगंधर्वयक्षेशाश्चारुणोमारु-
तोनलः ॥६९॥ रक्षोधातातथासौम्यःपद्मजोवाक्पतिःस्मृतः । पूषाहरि-
र्वायुनिर्ऋतमुहूर्त्तारात्रिसंज्ञिताः ॥७०॥ सितवैराजविजयमैत्राणचित्रसं-
ज्ञकाः । अभिजित्बलयुक्तास्तेसर्वकार्येषुसिद्धिदाः ॥ ७१ ॥ अथआ-
नंदादियोगाः । आनंदःकालदंडश्चधूम्राक्षोथप्रजापतिः । सौम्येध्वांक्षो
ध्वजश्चैवश्रीवत्सोवज्रमुद्गरौ ॥ ७२ ॥ छत्रंमित्रंमानसंचपद्माख्योलुंब-
कस्तथा । उत्पातमृत्युकाणश्चसिद्धिश्चाथशुभोऽमृतिः ॥ ७३ ॥ मुस-
लोगदमातंगौराक्षसश्चचरःस्थिरः । प्रवर्द्धमानोविज्ञेयाअष्टाविंशतिरित्य-
मी ॥ ७४ ॥ फलेस्वनामसदृशायोगादैवज्ञभाषिताः । अथाऽऽनंदादि-
संज्ञा । अश्विनीरविवारेचयोगोह्यानंदसंज्ञकः ॥ ७५ ॥

रौद्र १ गंधर्व २ यक्षेश ३ अरुण ४ मारुत ५ अनल ६ राक्षस ७ धाता ८ सौम्य ९
पद्मज १० वाक्पति ११ पूषा१२हरि १३ वायु १४ निर्ऋति १५ यह रात्रिका मुहूर्त्त
हैं ॥ ६९ ॥ ७० ॥ इन मुहूर्त्तमेंसे सित वैराज विजय मैत्र चित्र अभिजित् यह छः मुहूर्त्त

संपूर्ण कार्योंके सिद्धि करनेवाले है ॥ ७१ ॥ (आनंदादि योग नाम) आनंद १ कालदंड २ धूम्राक्ष ३ प्रजापति ४ सौम्य ५ ध्वांक्ष ६ ध्वज ७ श्रीवत्स ८ वज्र९ मुद्गर १० छत्र ११ मित्र १२ मानस १३ पद्म १४ लुंबक १५ उत्पात १६ मृत्यु १७ काण १८ सिद्धि १९ शुभ २० अमृत २१ मुसल २२ गद २३ मातंग २४ राक्षस २५ चर २६ स्थिर २७ प्रवर्द्धमान २८ यह अट्ठाईस योग हैं और इन योगोंके नामसदृश फल जानना चाहिये ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

मृगशीर्षशीतरश्मावाश्लेषाक्षितिनंदने । बुधेहस्तोनुराधाचदेवराजपुरोहिते ॥ ७६ ॥ भार्गवेचोत्तराषाढाशनौशतभिषायदि । तदाऽऽनंदाख्ययोगःस्यात्कालदंडादयःक्रमात् ॥ ७७ ॥ अथामृतसिद्धियोगः । हस्तःसूर्येमृगःसोमेवारेभौमेतथाश्विनी । बुधेमैत्रंगुरौपुष्योरेवतीभृगुनंदने ॥ ७८ ॥ रोहिणीसूर्यपुत्रेचसर्वसिद्धिप्रदायकः । असावमृतसिद्धिश्च योगःप्रोक्तःपुरातनैः ॥ ७९ ॥ उत्पातमृत्युकाणसिद्धियोगाः । विशाखादिचतुष्केचसूर्यवारक्रमेणच । उत्पातमृत्युकाणश्चसिद्धि ४ श्चाथशुभोभवेत् ॥ ८० ॥ क्रकचयोगः । तिथ्यंकेनसमायुक्तोवारांकोयदिजायते । त्रयोदशांकः १३ क्रकचोयोगोनिंद्यस्तदाशुभे ॥ ८१ ॥

(आनंद योग) आदित्यवारको अश्विनीनक्षत्र होवे तब आनंदयोग होता है और सोमवारको मृगशिर हो, मंगलवारको आश्लेषा हो, बुधको हस्त हो, गुरुको अनुराधा हो तो आनंदयोग जानना ॥ ७६ ॥ शुक्रवारको उत्तराषाढा हो और शनिवारको शतभिषा होवे तब आनंदयोग होता है और इसीतरह क्रमसे कालदंडादि योग जानना ॥ ७७ ॥ (अमृतसिद्धि योग) आदित्यवारको हस्त नक्षत्र होवे–सोमवारको मृगशिर हो–मंगलवारको अश्विनी हो–बुधवारको अनुराधा हो–गुरुवारको पुष्य हो–शुक्रवारको रेवती हो–शनिवारको रोहिणी होवे तब सर्वसिद्धि देनेवाला अमृतसिद्धि योग होता है ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ (उत्पात मृत्यु काण सिद्धियोगाः) आदित्यवारको विशाखानक्षत्र होवे तो उत्पातयोग होता है और अनुराधा होवे तो मृत्युयोग–ज्येष्ठा होवे तो काणयोग और मूल होवे तो सिद्धियोग जानना ॥ ८० ॥ (क्रकच योग) तिथिकी संख्याके साथ वारकी संख्या मिलाके तेरह १३ हो जावे तब क्रकच योग (शुभकार्यमें निंदित) होता है ॥ ८१ ॥

यमघंटः । मघासूर्येविशाखेंदौभौमेचार्द्रानलोगुरौ । बुधेमूलंविधिःशु-

क्रेयमघंटःशनौकरः ॥ ८२ ॥ मृत्युयोगः । नंदासूर्येमंगलेचभद्राभार्गववचंद्रयोः। बुधेजयागुरौरिक्ताशनौपूर्णाचमृत्युदा ॥ ८३ ॥ सिद्धियोगः। प्रोक्ताचभार्गवेनंदाभद्रासौम्येप्रकीर्तिता॥ जयाभौमेशनौरिक्तागुरौपूर्णाचसिद्धिदा ॥ ८४ ॥ संवर्त्तकयोगः । सप्तम्यांचरवेर्वारोबुधस्यप्रतिपद्दिने । संवर्त्ताख्यस्तदायोगोवर्जितव्यःसदाबुधैः ॥ ८५ ॥ अथराशिसंज्ञा । सप्तविंशतिभानाचनवभिर्नवभिःपदैः । अश्विनीप्रमुखानांचमेषाद्याराशयःस्मृताः ॥ ८६ ॥ मेषो १ वृषोऽथ२ मिथुनं३ कर्कः४ सिंहश्च५ कन्यका६। तुला७ वृश्चिक८ चापश्च ९ मकरः१० कुंभ११ मीनकौ१२। राशयस्तुक्रमादेतेपुंस्त्रियौक्रूरसौम्यकौ। ज्ञेयश्चरःस्थिरश्चैवद्विःस्वभावःक्रमात्पुनः ॥ ८७ ॥

(यमघंट) आदित्यवारको मघानक्षत्र हो-सोमवारको विशाखा हो-मंगलवारको आर्द्रा हो-गुरुवारको कृत्तिका हो-बुधको मूल हो-शुक्रको रोहिणी हो-शनिवारको हस्त होवे तब यमघंट योग होता है ॥ ८२ ॥ (मृत्युयोग) आदित्य या मंगलवारको नंदा १।६। ११ तिथि होवे और शुक्र सोमको भद्रा २।७। १२ तिथि हों बुधको जया ३। ८। १३ तिथि हों गुरुवारको रिक्ता ४। ९। १४ और शनिवारको पूर्ण ५। १०। १५ तिथि होवे तो मृत्युयोग होता है ॥ ८३ ॥ (सिद्धि योग) शुक्रवारको नंदा १।६। ११ तिथि हों बुधवारको भद्रा २।७। १२ होवे और मंगलको जया ३। ८। १३। तिथि हों शनिवारको रिक्ता ४। ९। १४ हों तथा गुरुवारको पूर्ण ५।१०। १५ तिथि होवे तब सिद्धियोग होता है ॥ ८४ ॥ (सवर्त्त योग) सप्तमी तिथिको रविवार हो प्रतिपदाको बुधवार हो तब सवर्त्तनाम योग होवे सो यह योग अशुभ है ॥ ८५ ॥ (राशिसंज्ञा) अश्विनीसे आदिलेके सत्ताईस २७ नक्षत्रोंके नौ नौ चरणों करके क्रमसे मेषादि बारह १२ राशि होते हैं ॥ ८६ ॥ (राशि नाम) मेष १ वृष २ मि. ३ क. ४ सिं. ५ क. ६ तु. ७ वृ. ८ ध. ९ म. १० कुं. ११ मीन १२ यह द्वादश राशि है ॥ ८७ ॥

अथनक्षत्राणांप्रत्येकंराशेर्भोगः । अश्विनीभरणीकृत्तिकापादंमेषः १ कृत्तिकात्रयःपादारोहिणीमृगशिरोर्द्धंवृषभः २ मृगशिरोत्तरार्धार्द्रापुनर्वसुत्रयोमिथुनः ३ पुनर्वस्वंत्यपादपुष्यआश्लेषांतंकर्कटकः ४ मघापूर्वाउत्तरापादसिंहः ५ उत्तरात्रयःपादाहस्तचित्रार्द्धंकन्या ६ चित्रोत्तरार्द्ध-

स्वातीविशाखात्रयस्तूलः ७ विशाखांत्यपादानुराधाज्येष्ठांतंवृश्चिकः ८ मूलपूर्वाषाढोत्तराषाढापादंधनुः ९ उत्तराषाढात्रयःपादाश्रवणधनिष्ठार्द्धं- मकरः १० धनिष्ठोत्तरार्द्धशततारकापूर्वाभाद्रपदात्रयः कुंभ ११ पूर्वा- भाद्रपदांत्यपादउत्तराभाद्रपदारेवत्यंतंमीनः १२ ॥ अथाऽवकहडादिच- क्रानुसारेणनक्षत्रचरणानांवर्णः। चूचेचोलाश्विनीप्रोक्तालीलूलेलोभरण्य- थ। आईऊएकृत्तिकास्यादोवावीवुरोहिणी ॥ ८८ ॥ वेवोकाकीमृगशिरः कूघङछतथार्द्रका। केकोहाहीपुनर्वसु हूहेहोडातुपुष्यभम् ॥८९॥ डीडू- डेडोतुआश्लेषामामीमूमेमघास्मृता। मोटाटीटूपूर्वाफल्गुटेटोपाप्युत्तरंत- था ॥९०॥ पूषणाढाहस्ततारापेपोरारीतुचित्रका। रूरेरोतास्मृतास्वाती- तीतूतेतोविशाखका ॥ ९१ ॥ नानीनूनेनुराधर्क्षज्येष्ठानोयायियुस्मृता। येयोभाभीमूलतारापूर्वाषाढाबुधाफडा ॥ ९२ ॥ भेभोजाज्युत्तराषाढाजू- जेजोखाभिजिद्भवेत्। खीखूखेखोश्रवणभंगागीगूगेधनिष्ठिका ॥ ९३ ॥ गोसासीसूशतभिषक्सेसोदादीतुपूर्वभाक् । दूथझञोत्तराभाद्रादेदोचा- चीतुरेवती ॥ ९४ ॥

इन राशियोंकी मेषादि क्रमसे पुरुष स्त्री संज्ञा है और क्रूर सौम्य संज्ञा है तथा चर स्थिर द्विःस्वभाव संज्ञा जानना ॥ ८८ ॥ (नक्षत्र राशि भोगविचार) अश्विनी भ- रणी संपूर्ण और कृत्तिकाके प्रथम पादतक मेष राशि है १ और कृत्तिकाका तीन पाद रोहिणी संपूर्ण मृगशिरके दो पादतक वृष जानो २ मृगशिरका दो चरण और आर्द्रा सारी पुनर्वसुके तीन पादतक मिथुन राशि है ३ पुनर्वसुके अंतको चरण और पुष्य आश्लेषाके संपूर्ण तक कर्क है ४ मघा पूर्वाफाल्गुनी संपूर्ण और उत्तराफाल्गु- नीके प्रथम पादतक सिंहराशि जानो ५ उत्तराका तीनपाद हस्त संपूर्ण चित्राके दो चरणतक कन्या है ६ चित्राका दो चरण स्वाती संपूर्ण विशाखाके तीन पादतक तु- लाराशि है ७ विशाखाके अंतको चरण और अनुराधा ज्येष्ठा संपूर्ण होनेसे वृश्चिक है८ मूल पूर्वाषाढा संपूर्ण उत्तराषाढाके प्रथम पादतक धनराशि है९ उत्तराका तीन पाद श्र- वण सपूर्ण धनिष्ठाके दो पादतक मकरराशि जानो १० धनिष्ठाको उत्तरार्द्ध शतभिषा संपूर्ण पूर्वाभाद्रपदके तीन चरणतक कुंभराशि है११पूर्वाभाद्रपदको अन्त्य चरण और उत्तराभाद्रपद रेवती संपूर्णतक मीनराशि होतोहै१२ ॥८९॥९०॥९१॥९२॥९३॥९४॥

अथनामतोराशिज्ञानम् । चूचेचोलालीलूलेलोआमेषः १ ईऊएओवा-वीवूवेवोवृषः २ काकीकूघंङछकेकोहामिथुनः ३ हीहूहेहोडाडीडूडेडोक-र्कः ४ मामीमूमेमोटाटीटूटेसिंहः ५ टोपापीपूषणाठापेपोकन्या ६ रा-रीरूरेरोतातीतूतेतुला ७ तोनानीनूनेनोयायीयूवृश्चिकः ८ येयोभाभी-भूधाफाडाभेधनुः९ भोजाजीजूजेजोखाखीखूखेगागीमकरः१० गूगे-गोसासीसूसेसोदाकुंभः ११ दीदूथझञदेदोचाचीमीनः १२ इतिद्वाद-शराशयः। अथराश्यधिपतयः। मेषवृश्चिकयोर्भौमःशुक्रोवृषतुलाप्रभुः। बुधःकन्यामिथुनयोःपतिःकर्कस्यचंद्रमाः ॥ ९५ ॥ स्यान्मीनधनुषोर्जी-वःशनिर्मकरकुंभयोः। सिंहस्याधिपतिःसूर्यःकथितागणकोत्तमैः॥९६॥ अथपृष्ठोदयादिसंज्ञा। पृष्ठोदयाधनुर्मेषोमकरोवृषकर्कटौ। उभयोदय-वान्मीनस्ततोन्येमस्तकोदयाः ॥ ९७ ॥ मेषोवृषोधनुर्युग्मंकर्कनक्रौनि-शाबलाः। दिवाबलास्तुतेभ्योन्येस्वस्वकालेबलाधिकाः ॥ ९८ ॥ अथ-ग्रहोच्चसंज्ञा। मेषोवृषस्तथानक्रःकन्याकर्कझषास्तुलाः। सूर्यादीनांक्रमा-देतेकथिताउच्चराशयः ॥ ९९ ॥ परमोच्चांशकाःसूर्यादिशो १० रामा ३ गजाश्विनः २८। बाणचंद्राः १५ शराः ५ शैलदस्राः २७ खाश्वि २० मिताःक्रमात् ॥ १०० ॥

॥ अवकहडा चक्रम् ॥

चूचेचोला अश्विनी	लीलूलेलो भ	अइउए कृ	ओवावीवु रो	वेवोकाकि मृ	कूघङछ आ	केकोहाहि पु
हूहेहोडा पुष्य	डीडूडेडो अ	मामीमूमे म	मोटाटीटू पू फा	टेटोपापी उ फा	पषणठ हस्त	पेपोरारि चि
रूरेरोता स्वा	तितुतेतो वि	नानीनुने अनु.	नोयायियू ज्ये	येयोभभी मू	भूधाफाडा पू षा	भेभोजाजि उ षा
जूजेजोखा अभिजित्	खखीखूखे श्र	गागीगूगे ध	गोसासीसू शत	सेसोदादि पू भा	दूथझञ उ भा	देदोचची रेवती

नामसे राशिज्ञानका चक्र ऊपर लिखा है उसे समझ लेना। (राशि स्वामी) मेष, वृश्चिकको मंगल स्वामी है, वृष, तुलको शुक्र स्वामी है, कन्या मि-

थुनको बुध है, कर्कको स्वामी चंद्रमा है ॥ ९५ ॥ धन, मीनको बृहस्पति स्वामी है, मकर, कुंभको शनैश्वर और सिंहराशिको सूर्य मालक जानना ॥ ९६ ॥ (पृष्ठोदयादि संज्ञा) धन ८ मेष १ मकर१० वृष २ कर्क४ यह राशि पृष्ठोदय संज्ञक हैं अर्थात् पृष्ठभागसे उदय होती हैं, और मीन १२ राशि (उभयोदयवान्) अर्थात् पृष्ठ तथा मस्तक दोनों अंग प्रथम उदय करता है और शेष रही हुई राशि अर्थात् मिथुन ३ सिंह ५ कन्या ६ तुल ७ वृश्चिक ८ कुंभ ११ राशि मस्तकको अगाडी करके उदय होती हैं ॥ ९७ ॥ मेष १ वृषभ २ धन ९ मिथुन ३ कर्क ४ मकर १० यह राशि या लग्न रात्रिमें बलवान् हैं और सिंह ५ कन्या ६ तुल ७ वृश्चिक ८ कुंभ ११ मीन १२ यह राशि या लग्न दिनमें बलवान् हैं सो अपने२ समयमें बल देते हैं ॥ ९८ ॥ (ग्रहोंकी उच्च नीच संज्ञा) सूर्यकी मेष१ उच्चराशि है चंद्रमाकी वृष २ मंगलकी मकर १० बुधकी कन्या ६ गुरुकी कर्क ४ शुक्रकी मीन १२ शनैश्वरकी तुल ७ राशि उच्चकी है ॥ ९९ ॥ और सूर्य दस १० अंशतक परम उच्चका है । चंद्रमा ३ अंशतक । मंगल २८ अंशतक । बुध१५ अंशतक । गुरु५ अंशतक । शुक्र २७ अंशतक । शनैश्वर २० अंशतक परम उच्चका होता है ॥ १०० ॥

अथनीचसंज्ञा। सूर्यादीनांजगुर्नीचं स्वोच्चभाद्यच्चसप्तमम् । राहोस्तुकन्यकागेहंमिथुनंस्वोच्चभंस्मृतम् ॥ १०१ ॥ अथमूलत्रिकोणं । सिंहोवृषभमेषौचकन्याधन्वितुलाघटाः । रव्यादीनांक्रमान्मूलत्रिकोणाराशयःस्मृताः ॥ १०२ ॥ अथतिथ्यादीनांबलम् । तिथिरेकगुणावारोद्विगुणस्त्रिगुणंचभम् । योगश्चतुर्गुणःपंचगुणंतिथ्यर्द्धसंज्ञकम् ॥ १०३ ॥ ततोमुहूर्तोबलवांस्ततोलग्नंबलाधिकं । लग्नंकोटिगुणंविद्याद्ध्रुववीर्यंबलान्वितम् ॥ १०४ ॥ तस्मात्सर्वेषुकार्येषुलग्नवीर्यंविलोकयेत् । अथषड्वर्गः । त्रिलग्नहोराद्रेष्काणनवांशद्वादशांशकः । त्रिंशांशश्चेतिषड्वर्गास्तेसौम्यग्रहजाःशुभाः ॥ १०५ ॥ अथलग्नादीनांलक्षणानि । त्रिंशद्भागात्मकं लग्नंहोरातस्यार्द्धमुच्यते । लग्नत्रिभागोद्रेष्काणोनवमांशोनवांशकः १०६

(नीच संज्ञा) सूर्यादि ग्रहोंके पूर्व कहे हुये उच्चस्थानोंसे सातवां ७ स्थान क्रमसे नीचका स्थान जानना चाहिये ॥ १०१ ॥ (मूलत्रिकोण संज्ञा) सूर्य सिंह का मूल त्रिकोणी है और चंद्रमा वृषका, मंगल मेषका, बुध कन्याका, गुरु धनका, शुक्र तुलका, शनैश्वर कुंभका, मूल त्रिकोणी होता है ॥ १०२ ॥ (तिथ्यादि बल) तिथिमें एक१ गुण है, वारमें २ गुण, नक्षत्रमें ३ तीन गुण, योगमें४ गुण, करणमें ५

गुण हैं ॥ १०३ ॥ और करणसे पूर्वोक्त मुहूर्त बलवान् है, उस्से लग्न बलवान् है तथा ग्रहोंके बलवीर्यसहित लग्न होवे तो क्रोड गुण समझना इसवास्ते संपूर्ण कार्योंमें लग्नका बल देखना चाहिये ॥ १०४ ॥ (षड्वर्ग संज्ञा) लग्न १ होरा २ द्रेष्काण ३ नवांशक ४ द्वादशांश ५ त्रिंशांशक ६ यह षड्वर्ग हैं सो शुभग्रहका शुभ जानना चाहिये ॥ १०५ ॥ (लग्नआदिका लक्षण) तीस ३० अंशका लग्न होता है और पंदरह १५ अंशका होरा जानना, दश १० अंशका द्रेष्काण होता है और लग्नके नौवें ९ हिस्सेको नवांशक कहते है ॥ १०६ ॥

द्वादशांशोद्वादशांशस्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः । लग्नराशिपतिःखेटोग्रहेशः परिकीर्त्तितः ॥ १०७ ॥ अथहोरासंज्ञा । होरयोरोजराशौतुरवींदूक्रमशः पती । समराशौतुचंद्रार्कौहोरेशौक्रमशोवदेत् ॥ १०८ ॥ द्रेष्काणसंज्ञा । द्रेष्काणआद्योलग्नस्यद्वितीयःपंचमस्यच । द्रेष्काणस्यतृतीयस्तुलग्नंनवमराशिषु ॥ १०९ ॥ (नवांशसंज्ञा) मेषेनवांशामेषाद्यावृषेचमकरादिकाः । मिथुनेचतुलाद्याः स्युः कर्कटेककर्कटादिकाः ॥ ११० ॥ मेषाद्येचधनुःसिंहौगोकन्येमकरादिके । तुलाद्यौतुलकुंभौचकर्काद्यौमीनवृश्चिकौ ॥ १११ ॥ गोतुलायुग्मकन्यानांनवांशाःशुभदाःस्मृताः । (द्वादशांशम्) लग्नस्यद्वादशांशस्तुस्वराशेरेवकीर्त्तितः ॥ ११२ ॥

लग्नके बारहवें १२ हिस्सेको द्वादशांशक और तीसवें ३० हिस्सेको त्रिंशांशक जानना चाहिये और लग्नकी राशिके पतिको ग्रहेश कहते है ॥ १०७ ॥ (होरा संज्ञा) विषम राशिमें प्रथम सूर्यका होरा तदनंतर चंद्रमाका होरा जानना और सम राशिमें प्रथम चंद्रमाका होरा फिर सूर्यका होरा होता है ॥ १०८ ॥ (द्रेष्काण संज्ञा) लग्नके तीस ३० अंशोंमेंसे प्रथम १० दश अंशतक द्रेष्काण होवे तो लग्नका स्वामी द्रेष्काणका अधिपति होता है और दूसरा द्रेष्काण २० अंशतक होवे तो पंचमस्थानका पति द्रेष्काणका अधिपति होता है । यदि तीसरा द्रेष्काण३०अंशतक होवे तो नवमका स्वामी द्रेष्काणपति होता है परंतु शनि, सूर्य, मंगलका द्रेष्काण अशुभ है ॥ १०९ ॥ (नवांशक कथन) मेषलग्नमें मेषसे आद्य लेके नवांशक जानना और वृषमें, मकरसे आदि लेके, मिथुनमें तुलसे जानना और कर्कमें कर्कसे सिंहमें तथा धनमें मेषसे जानना, कन्यामें मकरसे, तुल कुंभमें तुलसे, मीनवृश्चिकमें कर्कसे आद्यलेके नवांशक जानना चाहिये ॥ ११० ॥ १११ ॥ परंतु संपूर्ण नवांशोंमें वृष २ तुला ७ या मिथुन ३ कन्या ५ के नवांशक शुभकार्यमें श्रेष्ठ हैं (द्वाद-

शांश कथन) लग्नके तीस ३० अंश और बारहवें १२ हिस्सेका नाम द्वादशांश है सो यह द्वादशांश पापग्रहोंका अशुभ है ॥ ११२ ॥

अथलग्नविचारः। तत्रादौलग्ननामानि । मेषोवृषोऽथमिथुनंकर्कःसिंहश्चक न्यका । तुलाश्चवृश्चिकोधन्वीमकरःकुंभमीनकौ॥ ११३ ॥ अथलग्नज्ञा- नम् । यस्मिन्राशौयदासूर्यस्तल्लग्नमुदयेभवेत् । तस्मात्सप्तमराशिस्तु अस्तलग्नंतदुच्यते॥ ११४॥ अथलग्नस्पष्टीकरणम् । सूर्यस्यराश्यंशसमा- नकोष्टेघटंच्च दिकं स्वेष्टघटीयुतंयत् । तत्तुल्यकोष्टेतुगतांशयुक्तंलग्नंप्रवा- च्यंसुधिय'तिसौख्यम्॥ ११५ ॥ अथलग्नानांघटिकाप्रमाणम् । तिस्रो- मीनेचमेषेचवटयःपंचश्रुतिः २५ पलाः । चतस्रश्च ४ वृषेकुंभेपलाःप्रो- क्ताश्चषोडश । मिथुनेमकरेपंच ५ घटिकाविंशतिः२० पलाः । पंच५कर्केच श्चापेच शशिवेदाः ४१ पलाःस्मृताः ॥ ११६ ॥ घटिकाःपंच ५ सिंहे ऽलौद्वयंवेदाः ४२ पलाःस्मृताः । कन्यायांचतुले पंच ५ पलाश्चंद्रस्त थाग्नयः ३१ ॥ ११७ ॥ अथद्वितीयःप्रकारः । वस्वेकपक्षा२ १७ वसु- धेषुपक्षा २५१ त्रिव्योमरामा ३०३ गुणवेदरामाः ३४३ । सप्ताब्धि रामा ३४७ वसुरामरामाः ३३८ क्रमेणमेषादिपलाश्चज्ञेयाः॥ ११८ ॥

(लग्नविचार) मेष १ वृष २ मिथुन ३ कर्क ४ सिंह ५ कन्या ६ तुल ७ वृश्चिक ८ धन ९ मकर१०कुंभ११ मीन १२ यह १२ लग्न हैं॥ ११३ ॥ (लग्नज्ञानम्) जिस राशिपर सूर्य होवे सोही लग्न सूर्योदयके समय आता है और उसी लग्नसे सातवें लग्नमें सूर्यका अस्त होता है ॥११४॥ (लग्न स्पष्ट करनेकी रीति) सूर्यकी राशिका जि- तना अंश गया हुआ हो उतनेही अंशका सारणीके कोष्टमें अंक देखना फिर उसी अंकके नीचे और लग्नके सामने जो अंक है उन अंकोंमें इष्टकी घडी पलसहित री- तिमुजब मिला देवै फिर६० का भाग देवै जो शेष अक रहे सो सारणीके कोष्टोंमें ज- हां मिले तहांहि देखै जितने अंशके नीचे जिस लग्नके सामने अंक हो उसी लग्नका गत अंश बुद्धिवान्कों जान लेना चाहिये ॥ ११५ ॥ (लग्नोंकी घटी) मीन १२ मेष १ की तीन ३ घटी २५ पल हैं, वृष २ कुंभ ११ की चार ४ घटी १६ पल हैं, मिथुन ३ मकर १० की पांच ५ घटी २० पल हैं कर्क ४ धनकी ९ पांच ५ घटी ४१ पल हैं. सिंह, वृश्चिक, की पांच ५ घटी ४२ पल हैं और कन्या, तुलकी ५ घटी ३१ पल जानना ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ (दूसरा प्रकार) मीन, मेषकी २१८ पल हैं वृष,

कुंभकी २५१ पल हैं मिथुन, मकरकी ३०३ पल हैं कर्क, धनकी ३४३ पल हैं सिं-
ह, वृश्चिककी ३४७ पल हैं, और कन्या, तुलकी ३३८ पल जानना ॥ ११८ ॥

लग्नघटिकायंत्रम् ॥

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क	तू.	वृ	ध.	म	कु.	मी	ल.	मे	वृ	मि	क	सि	क.	तू	वृ	ध	म	कु	मी	ल.
३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३	घ	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३	घ
२५	१६	२०	४१	४२	३१	३१	४२	४१	२०	१६	२५	प	३८	११	३	४३	४७	३८	३८	४७	४३	३	११	३८	प

अथतन्वादिद्वादशभावसंज्ञा ॥ तनु १ धनं २ सहोत्थाख्यं ३ सुहृत् ४ पुत्राऽ ५ रि ६ योषितः ७ । निधनं ८ धर्म ९ कर्मा १० य ११ व्यया १२ भावस्तनोः क्रमात् ॥ ११९ ॥ अथकेंद्रादिसंज्ञा । केंद्रं १।४।७।१०। यपापरं २।५।८।११ चापोक्लीमं ३।६।९।१२ लग्नात्पुनःपुनः । नवमं ९ पंचमं ५ स्थानंत्रिकोणंपरिकीर्त्तितम् ॥१२०॥ त्रि ३ दशै १० कादशं ११ षष्ठं ६ प्रोक्तं चोपचयाव्हयम् । जामित्रंसप्तमं ७ द्यूनंद्यूनंचमदनाभिधम् ॥ १२१ ॥ रिःफंतुद्वादशं १२ ज्ञेयं दुश्चिक्यंस्यात्तृतीयकम् ३ । चतुरस्रंतुरीया ४ ष्टसंख्यंरंध्र ८ मथाष्टमम् ॥१२२ ॥ अथग्रहदृष्टिज्ञानम् । यामित्रभे७ दृष्टिफलंसमग्रं स्वपादहीनंचतुरस्रयो ४। ८ श्च । त्रिकोणयो ९।५। दृष्टिफलार्द्धमाहुर्दुश्चिक्य ३ संख्ये दशमे १० चपादम् ॥ १२३ ॥ फलंविशेषंप्रवदाम्यथातो भौमस्यपूर्णंचतुरस्र ४।८ । केस्यात् । फलंचजीवस्यतथात्रिकोणे ९। ५। पूर्णंशनेःस्याद्दशमे १० तृतीये । स्वाक्रांतभात्सप्तमभेसमस्तंफलंदृगुत्थंनिखिलग्रहाणाम् ॥ १२४ ॥ अथदिनलग्नज्ञानम् । छायापादैरसो ६ पेतैरेकविंशाच्छतं १२१ भजेत् । लब्धांकेघटिकाज्ञेयाः शेषांकेच पलाः स्मृताः ॥ १२५ ॥ अथरात्रिलग्नज्ञानम् । सूर्यभान्मौलिभंगण्यं सप्तहीनं ७ चशेषकं । द्विगुणंचद्वि २ हीनंचगतारात्रिःस्फुटाभवेत् ॥ १२६ ॥ इतिश्रीरत्नगढनगरनिवासिनापंडितगौडश्रीचतुर्थीलालशर्मणाविरचितेमुहूर्त्तप्रकाशेऽद्भुतनिबंधेसंज्ञाप्रकरणम् ॥ १ ॥

(तन्वादि द्वादश भाव) तनु १ धन २ सहज ३ सुहृत् ४ सुत ५ रिपु ६ जाया ७ मृत्यु ८ धर्म ९ कर्म १० आय ११ व्यय १२ यह १२ भावोंके नाम हैं ॥ ११९ ॥

(केंद्रादि संज्ञा) लग्न १ चतुर्थ ४ सप्तम ७ दशम १० इनकी केंद्र संज्ञा है और दूसरे २ पांचवें ५ आठवें ८ ग्यारहवें ११ की पणफर संज्ञा है तीसरे ३ छठे ६ नौवें ९ बारहवें १२ की आपोक्लिम संज्ञा है और नौवें ९ पांचवें ५ की त्रिकोण संज्ञा कहते हैं ॥१२०॥ तीसरे ३ दशवें १० ग्यारहवें ११ छट्ठे ६ स्थानकी उपचय संज्ञा है और यामित्र, द्यून, मदन, सप्तम, यह ४ नाम सातवें स्थानका हैं॥ १२१ ॥ रिःफ नाम बारहवें १२ स्थानका है, दुश्चिक्य नाम तीसरे३ स्थानका है और चतुरस्र, तुरीयाष्ट, रंध्र, यह तीन नाम आठवें स्थानका हैं ॥ १२२ ॥ (दृष्टि ज्ञान) (यामित्र) नाम सातवें स्थानमें संपूर्ण ग्रहोंकी पूर्ण दृष्टि होती है और चौथे ४ आठवें ८ त्रिपाद दृष्टि है नौवें ९ पांचवें ५ द्विपाद दृष्टि और तीसरे ३ दशवें १० एकपाद दृष्टि जाननी चाहिये ॥ १२३ ॥ (विशेष दृष्टिका विचार) चौथे ४ आठवें ८ मंगलकी पूर्ण दृष्टि नौवें ९ पांचवें ५ बृहस्पतिकी पूर्णदृष्टि होती है और तीसरे ३ दशवें १० शनिकी पूर्णदृष्टि जाननी चाहिये और अपने स्थित हुए स्थानसे सातवें ७ संपूर्ण ग्रहोंकी पूर्णदृष्टि होती है ॥ १२४ ॥ (दिनलग्नज्ञानं) प्रथम अपने शरीरकी छाया अपने पगोंसे मापना फिर उस छायामें छः मिलाना अनंतर १२१ का भाग देना जो अंक प्राप्त हो सो घटी जानना और शेष बचे सो पल जानना चाहिये ॥ १२५ ॥ (रात्रिलग्नज्ञानं) सूर्यके नक्षत्रसे रात्रिमें मस्तकके ऊपरके नक्षत्रतक गिनना फिर उसमेंसे सात ७ घटाके दूना करना फिर दो २ घटाना जो शेष अंक बचे उतनी घटी रात्रि गई जानना ॥ १२६ ॥ इतिश्रीमुहूर्त्तप्रकाशेभाषाटीकायांसंज्ञाप्रकरणं प्रथमम् ॥

अथत्याज्यप्रकरणम् ॥ तिथिनक्षत्रवाराणांदुष्टयोगान्परस्परम् । व्यतीपातादिदुर्योगान्विष्टिदर्शार्कसंक्रमान् ॥ १ ॥ जन्मर्क्षतिथिमासांश्चातिथ्यर्द्धित्ववमंदिनम् । पापैर्भुक्तंयुतंभोग्यंविद्धंलत्तितमृक्षकम् ॥ २ ॥ उत्पातग्रहभिन्नंचखग्रासेग्रहणर्क्षकम् । षण्मासावधिमासेषुत्रिषुग्रासेऽर्द्धके सति ॥ ३ ॥मासमेकंतुतुर्यांशेग्रस्तेचंद्रेचभास्करे । त्र्यहंप्राग्ग्रहणात्सप्तदिनानिग्रहणोत्तरम्॥४॥ ग्रस्तास्तेतुत्र्यहंपूर्वंत्र्यहंग्रस्तोदयेपरम् । पूर्णेग्रासेत्विदंज्ञेयंखंडग्रासेऽनुपाततः ॥ ५॥ गंडांतंत्रिविधंदुष्टर्क्षाणेंदुःपापकर्त्तरी । पापहोराखलेवारेयामार्द्धकुलिकादिकान् ॥ ६ ॥

(अथ त्याज्यप्रकरणं लिख्यते) तिथि, नक्षत्र, वारोंसे उत्पन्न होनेवाला मृत्युयोग आदि दुष्टयोग और व्यतीपात वैधृति आदि निषिद्ध योग, भद्रा, अमावस्या, और सूर्यके संक्रांतिका दिन, शुभकाममें त्याग देना चाहिये ॥ १ ॥ जन्मनक्षत्र, जन्मतिथि, जन्ममास, और तिथिवृद्धि अर्थात् बढी हुई तिथि तथा (अवमदिन) टूटी

हुई तिथि और पापग्रहों करके भोगाहुवा तथा पापग्रहयुक्त नक्षत्र, या जिस नक्षत्रपर पापग्रह आताहो तथा ग्रहो करके वेधित हो अथवा लातदोषयुक्त होवे तो उस नक्षत्रमें शुभकार्य नहीं करना ॥ २ ॥ और उत्पातोसे दूषित नक्षत्र तथा ग्रहों करके वेधित नक्षत्र और सूर्य चंद्रमाके खग्रास ग्रहणका नक्षत्र छः ६ मासतक त्यागै तथा आधा ग्रास होवे तो तीन ३ मासतक त्यागना चाहिये ॥३ ॥ चौथे हिस्सेका ग्रहण होवे तो एकमास १ और ग्रहणसे तीन ३ दिन पहलेका तथा सात ७ दिन ग्रहणके अनतर त्यागना योग्य है ॥ ४॥ यदि ग्रस्तास्त होवे तो पहले तीन दिन और ग्रस्तोदय होवे तो पीछेका तीन दिन त्याग देवै परतु यह व्यवस्था पूर्णग्रहणमें जानना यदि न्यून होवे तो कमदिन त्यागदेना चाहिये ॥ ५ ॥ तिथिगंडांत नक्षत्रगंडांत लग्नगंडांत और दुष्टक्षीण चद्रमा पापग्रहोंका कर्त्तरी योग तथा पाप होरा पापवार, वारवेला, कुलिक आदि योगभी त्याग देवै ॥ ६ ॥

चद्रपापयुतंलग्नमंशंवाकुनवाशकम् ॥ जन्मराशिविलग्नाभ्यामष्टमंलग्नमेवच ॥ ७ ॥ दिनमेकंतुमासांतेनक्षत्रांतेघटीद्वयम्। घटीमेकांतुतिथ्यंतेलग्नांतेघटिकार्द्धकम् ॥ ८ ॥ विषाख्यानाडिकाभानांपातमेकार्गलंतथा । दग्धाहंक्रांतिसाम्यंचलग्नेशंरिपुमृत्युगम् ॥ ९ ॥ दिनार्द्धेचरजन्यर्द्धेसंध्यौचपलविंशतिम् । मलमासंकवीज्यास्तंबाल्यवार्द्धक्यमेवच ॥ १० ॥ जन्मेशास्तंमनोभंगंसूतकंमातुरार्त्तवम् । रोगोत्पाताद्यरिष्टानिशुभेष्वेतानिसंत्यजेत्॥ ११॥ अथअयनकृत्यम् । गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठाविवाहचौलव्रतबंधपूर्व।सौम्यायनेकर्मशुभंविधेयंयद्गर्हितंतत्खलुदक्षिणेच॥ १२॥

चंद्रमा करके तथा पापग्रह करके युक्त लग्न और नवांशक तथा पापनवांशक, और जन्मराशि जन्मलग्नसे आठवें ८ लग्नभी त्यागै ॥ ७ ॥ मासके अंतको १ दिन नक्षत्रके अंतकी दो २ घडी तथा तिथिके अंतकी एक १ घडी और लग्नके अंतकी आधीघडी अशुभ है ॥ ८ ॥ नक्षत्रोंकी विषघडी, पातदोष, एकार्गल दोष, दग्धयोग, क्रांतिसाम्य, और लग्नको पति छठे ६ आठवे ८ अशुभ है ॥ ९ ॥ मध्यान्हमें अर्द्धरात्रिमें और संध्याकालमें वीस २० पल त्याग देवै और मलमास, शुक्र, बृहस्पतिका अस्त, तथा बालवृद्ध संज्ञाका दिनभी त्याज्य है ॥ १० ॥ जन्मलग्नको स्वामी अस्त हो और मन प्रसन्न नहीं हो तथा सूतक हो या माता रजस्वला होगईही हो या रोग, उत्पात, अरिष्ट आदि होवे तो शुभकाम नही करना ॥ ११ ॥ (अयन कृत्य) नवीन घरमें प्रवेश, देवस्थापन, विवाह, चूडाकर्म, यज्ञोपवीत, इत्यादि शुभकर्म उत्तरायणमेंहि करना चाहिये और निंदित अशुभकार्य होवे सो दक्षिणायनमें करना योग्य है ॥ १२ ॥

अथशुक्रास्तादिनिषिद्धकालेत्याज्यकर्माणि ॥ वापीकूपतडागयज्ञगमनं क्षौरंप्रतिष्ठाव्रतंविद्यामंदिरकर्णवेधनमहादानंगुरोःसेवनम् । तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनंमंत्रोपदेशंशुभंदूरेणैवजिजीविषुःपरिहरेदस्तेगुरोर्भार्गवे ॥ ॥ १३॥ अथविशेषः ॥ जलाशयगृहारामप्रतिष्ठारंभणेतथा । व्रतारंभसमासीचदीक्षांसोमाऽध्वरादिकम् ॥ १४ ॥ महादानमुपाकर्माग्रयणारंभमष्टकम् । केशांतंवृषभोत्सर्गंदेवतास्थापनंप्रपा ॥ १५ ॥ व्रतबंधमथोद्वाहंमुंडनंकर्णवेधनम् । गर्भाधानादिसंस्कारान्कालातिक्रमणेशिशोः ॥ ॥ १६ ॥ देवतीर्थेक्षणंचाद्यंभूमिपालाभिषेचनम् । अग्न्याधानंचसंन्यासंचातुर्मास्यमथोगमम् ॥ १७ ॥ वेदव्रतंव्रतोत्सर्गमाद्यंवध्वाःप्रवेशनम्। अस्तेशुक्रेज्ययोर्बाल्येवार्द्धकेसिंहगेगुरौ ॥ १८ ॥ त्रयोदशदिनेपक्षेमासेन्यूनेऽधिकेत्यजेत् । धार्यनेतिजगुःकेचिदस्तादौभूषणादिकम् ॥ १९॥

(शुक्रादिकोंके अस्तसमयमें त्याज्य कर्म) बावडी, कूवा, तलाव आदिका आरंभ, यज्ञ, यात्रा, प्रथम क्षौरकर्म, देवालय, तलाव, आदिकी प्रतिष्ठा, यज्ञोपवीत, प्रथम विद्यारंभ, गृहारभ, गृहप्रवेश, कर्णवेध, तुलादान, गुरुसेवारंभ, तीर्थस्नान, विवाह, काम्यहोम, मत्रोपदेश, इत्यादि शुभकार्य शुक्र और बृहस्पतिके अस्तमें नहीं करना चाहिये ॥ १३ ॥ (ग्रंथांतरे विशेषः) जलाशय, घर, बगीचा आदिका आरंभ तथा प्रतिष्ठा, यज्ञोपवीत, दीक्षा, सोमयज्ञ, तुलादान, उपाकर्म, आग्रयणारंभ, अष्टकाश्राद्ध, केशांतकर्म, काम्यवृषोत्सर्ग, देवस्थापन, प्रपा, विवाह, चौलकर्म, कर्णवेध, गर्भाधानादि संस्कार, देव, या तीर्थदर्शन, राज्याभिषेक, अग्न्याधान, संन्यास, चातुर्मासयाग, वेदव्रत, उद्यापन, वधूप्रवेश, यात्रा, इत्यादि कर्म शुक्रके तथा गुरुके अस्तमें और बालक तथा वृद्धपनेमें और सिंहकेबृहस्पतिमें और तेरा १३ दिनके पक्षमें तथा क्षय, अधिकमासमें नहीं करना चाहिये । और कई आचार्योंका ऐसाभी मत हैं कि आभूषण, चूडा, आदिका धारणभी नहीं करना योग्य है ॥ १४ ॥ १५॥ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥

केचिद्वक्रेऽतिचारेपिनीचराशिगतेगुरौ । धनुर्मीनगतेसूर्येगुरुणासंयुतेपि-च ॥ २० ॥ अथगुरुशुक्रयोर्बाल्यवार्धक्यम् । बालेवृद्धेचसंध्यंशेचतुः पंच ५ त्रि ३ वासरान् । जीवेचभार्गवेचैवविवाहादिषुवर्जयेत् ॥ २१ ॥ अथगुरोर्वक्रातिचारेविशेषः । वक्रातिचारगेजीवेत्वष्टाविंशति २८ वा-

सरान् ॥ परित्यज्यततःकुर्याद्व्रतोद्वाहादिकंशुभम् ॥ २२ ॥ अथवक्रातिचारदोषापवादः । त्रिकोण ९।५ द्व्याय २।११ संस्थेतुजीवेवक्रातिचारिणे । नदोषस्तत्रविज्ञेयःकुर्यादुद्वाहनादिकम् ॥ २३॥ अथसिंहस्थगुरोर्दोषः । सिंहसिंहांशगेजीवेविवाहादिनकारयेत् । गोदायाउत्तरेभागेभागीरथ्याश्चदक्षिणे ॥ २४ ॥

और केचित्का यहभी मत है कि गुरु वक्री हो अर्थात् अपनी राशिसे लेरकी राशिपर पीछा चला जावे अथवा अतिशीघ्रतासे दूसरी राशियें जानेकी करे तबभी और धन मीनके सूर्यमें तथा गुरुके साथ सूर्य होवे तोभी शुभकार्य नही करना ॥२०॥ (गुरुशुक्रकी बाल वृद्ध अवस्था) गुरु शुक्रके बालक पनेका च्यार ४ दिन हैं और वृद्धपनेका पांच ५ दिन जानना और संधीका ३ दिन हैं सो विवाह आदि शुभकार्योंमें त्याज्य हैं और केचित् आचार्य ऐसेभी कहते हैं कि अस्तके पहले सातदिन वृद्धसंज्ञाके हैं और उदयके अनंतर सातदिन बालक संज्ञाके हैं परंतु अति अवश्यकतामें तीन ३ दिनभी वर्ज हैं ॥२१॥ और गुरु वक्र हो, या, अतिचार हो तो अठाईस २८ दिन त्यागके यज्ञोपवीत विवाह आदिकरना शुभ है ॥ २२ ॥ परंतु जन्मराशिसे गुरु त्रिकोण ९। ५। में, या, २।११। होवे तो वक्र अतिचारका दोष नहीं है जरूर विवाह आदि शुभकार्य करो ॥ २३ ॥ (सिंहके गुरुका दोष) सिंहराशिमें तथा सिंहके नवांशकमें गुरु होवे तो विवाहादि नहीं करना परंतु गोदावरी नदीके उत्तर भागमें और भागीरथी (गंगा) के दक्षिणभागमें त्याज्य है ॥ २४ ॥

अथदेशविशेषेणसिंहस्थगुरोर्दोषाभावः । गोदायायाम्यदिग्भागेभागीरथ्यास्तथोत्तरे । विवाहाद्यखिलंकार्यंसिंहस्थेपिबृहस्पतौ ॥ २५ ॥ अथसिंहस्थगुरोःसर्वदेशेषुदोषापवादः । सिंहराशिस्थितेजीवेमेषेर्केतुनदूषणम् । आवश्यकेविवाहादौसर्वदेशेष्वपिस्मृतम् ॥ २६ ॥ अथमकरस्थेगुरौविशेषः । मगधेगौडदेशेचसिंधुदेशेचकौंकणे । विवाहादिशुभेत्याज्योनान्यस्मिन्नक्रगोगुरुः ॥ २७ ॥ अथलुप्तसंवत्सरः । अतिचारगतोजीवस्तंराशिंनैतिचेत्पुनः । लुप्तसंवत्सरोज्ञेयोगर्हितःसर्वकर्मसु ॥ २८ ॥ अथलुप्तसंवत्सरापवादः । मेषे १ वृषे २ झषे १२ कुंभे ११ य्यतीचारगेगुरौ । नतत्रकालदोषःस्यादित्याहभगवान्यमः ॥२९॥ अथत्याज्यतिथ्यादि । तत्रादौपक्षरंध्रतिथयः । चतुर्दशी १४ चतुर्थी ४ च अष्टमी

८ नवमी ९ तथा। षष्ठी ६ चद्वादशी १२ चैवपक्षरंध्राव्हयाइमाः॥३०॥

और गोदावरीके दक्षिणदेशमें और भागीरथीके उत्तरदेशमें सिंहके बृहस्पतिका वि-वाह आदिमें दोष नहीं है ॥ २५ ॥ यदि सिंहमें गुरु होवे और मेषमें सूर्य होवे तो विवाह आदि करनेमें सर्वत्रहि दोष नहीं है यह सर्व देशमें ग्राह्य है ॥ २६ ॥ और मकरराशिमें गुरु होवे तब मगधदेशमें अर्थात् गयाजीके पासका जिल्ला और गौड देश अर्थात् बंगा-लेके उत्तर पुरानियेके पासका जिल्ला, और सिंधुदेश अर्थात् पश्चिममें सिंधका देश और कोंकणदेश अर्थात् मुबईके पास प्रसिद्ध है इन देशोंमें विवाहादि शुभकार्योंमें त्याज्य है और इनसे अन्यदेशोंमें दोष नहीं है ॥ २७ ॥ यदि बृहस्पति अतिचार होके अपनी राशिसे मार्गी होजावे और वक्री होके पूर्व राशिपर नहीं आवे तब लुप्तसंवत्सर होताहै सो यह संपूर्णकार्योंमें निंदितहै ॥२८॥ परंतु बृहस्पति मेष १ वृष २ मीन १२ या कुंभ ११ को मार्गी, या, वक्री होवे तो लुप्त संवत्का दोष नहीं है ऐसे भगवान् यमराजने-कहा है ॥२९॥ (पक्षरध्रतिथि) चतुर्दशी १४ चौथ ४ अष्टमी ८ नौमी ९ छट ६ बा-रस १२ यह तिथि पक्षरंध्रसंज्ञक हैं ॥ ३० ॥

अथैषांफलम् । विवाहेविधवानारीव्रात्यःस्याच्चोपनायने । सीमंतेगर्भना-शःस्यात्प्राशनेमरणंध्रुवम् ॥ ३१ ॥ अग्निनादह्यतेशीघ्रंगृहारंभेविशेषतः। राजराष्ट्रविनाशःस्यात्प्रतिष्ठायांविशेषतः ॥ ३२ ॥ किमत्रबहुनोक्तेनकृ-तंकर्मविनश्यति । अथावश्यकेपक्षरंध्रतिथीनांवर्ज्याघटिकाः । क्रमादेता-सुतिथिषु १४।४।८।९।६।१२ वर्जनीयाश्चनाडिकाः॥ ३३ ॥ भूता ५ ष्ट ८ मनु १४ तत्वा २४ ङ्क ९ दश १० शेषास्तुशोभनाः । दोषना-डीषुयत्कर्मकृतंसर्वंविनश्यति ॥ ३४ ॥ अथसंक्रांतौत्याज्यकालः । अ-यनेविषुवे १।७ त्याज्यंपूर्वमध्यंपरंदिनम् । शेषसंक्रमणेपूर्वपश्चात्षोडश नाडिकाः ॥ ३५ ॥ अथषडशीतिमुखादिसंज्ञा । षडशीत्याननंचाप ९ नृयुक्कन्या ३।६ झषे १२ भवेत् । तुला ७ जौ १ विषुवं विष्णुपदं सिं-हा ५ लि ८ गो २ घटे ११ ॥ ३६ ॥

इन तिथियोंमें विवाह करे तो कन्या विधवा होवे और यज्ञोपवीत लेनेसे शूद्रके आ-चरणोंको धारण करै तथा सीमंतोन्नयन संस्कार करे तो गर्भपात हो और अन्नप्रा-शन करे तो मृत्यु होवे ॥ ३१ ॥ गृहारंभ करे तो अग्निसे घर दग्ध होवे तथा प्रतिष्ठा आदि करनेसे राजा और देशका नाश होता है अर्थात् किया हुवा कार्य संपूर्ण नष्ट होता है ॥ ३२ ॥ परंतु यदि कामकी अति जरूरत होवे तो इन

तिथियोंकी क्रमसे आद्यकी घडी त्याग देवे अर्थात् चौदसकी ५ घडी, चौथकी ८ घडी, आठेंकी १४ घडी, नौमीकी २४ घडी, छठकी ९ घडी, बारसकी १० घडी त्याग देनी चाहिये ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ (संक्रांतिकी त्याज घडी) सूर्य उत्तरायण. या दक्षिणायनमें आवै और (विषुव) अर्थात् मेष १ तुल ७ की सक्रांति होवे तो संक्रांतिसे पहला दिन और दूसरा दिन और संक्रांतिका दिन इसतरह तीन ३ दिन शुभकर्ममें अशुभ है और वृष २ मि. ३ क. ४ सिं. ५ क. ६ वृ. ८ ध. ९ म.१० कुं. ११ मीन१२ इनकी संक्रांति होवे तो संक्रांतिसे पहली १६ घडी और पीछेकी १६ घडी त्यागनी चाहिये ॥ ३५ ॥ धन ९ मिथुन ३ कन्या ५ मीन १२ इन संक्रांतियोंकी षडशीति मुख संज्ञा है और तुल ७ मेषकी विषुव संज्ञा है सिंह ५ वृश्चिक ८ वृष २ कुंभ ११ की विष्णुपद संज्ञा जानना चाहिये ॥ ३६ ॥

अथसकलग्रहाणांसंक्रांतौत्याज्यकालः । त्याज्याःसूर्यस्यसंक्रांतेःपूर्वतः परतस्तथा । विवाहादिषुकार्येषुनाड्यःषोडशषोडश ॥ ३७ ॥ देव ३ ३ द्व्यं२ क९तवो६ष्टाष्टौ८८नाड्योका९ खनृपाः १६० क्रमात् । वर्ज्याः संक्रमणेऽर्कादेःप्रायोऽर्कस्यातिनिंदिताः ॥ ३८ ॥ अथविरुद्धयोगानां त्याज्यघटिकाः। वैधृतिव्यतिपाताख्यौ संपूर्णौवर्जयेच्छुभे । वज्रविष्कंभयोश्चैवघटिकात्रयमादिकम् ॥ ३९ ॥ परिघार्धपंच ५ शूलेव्याघातेघटिकानवम् ९ । गंडातिगंडयोःषट्च ६ हेयाःसर्वेषुकर्मसु ॥ ४० ॥ एतेषामपियोगानांशेषंसाधारणंस्मृतम् । एकेविरुद्धयोगानांपादमाद्यंत्यजंति हि ॥ ४१ ॥ अथध्वांक्षादिदुर्योगानांत्याज्यघटिकाः । ध्वांक्षमुद्गरवज्राणांघटीपंचकमादिषु । काणमौसलयोर्द्वेद्वेचतस्रःपद्मलुंबयोः ॥ ४२ ॥

(संपूर्ण ग्रहोकी संक्रांतिकी त्याज्यघटी) सूर्यकी संक्रांतिसे पहले १६ घडी और पीछेकी १६ घडी विवाह आदि कार्योमें त्याज्य हैं ॥३७॥ इसीतरह क्रमसे सूर्यके संक्रांतिकी ३३ घडी, चंद्रमाके संक्रमणकी २ घडी, मंगलकी ९ घडी. बुधकी ६ घडी, गुरुकी ८८ घडी शुक्रकी ९ घडी, शनैश्चरके संक्रमणकी १६० घडी शुभकार्यमें त्यागना योग्य है परंतु सूर्यके संक्रांतिकी घडी तो अवश्यही त्यागना चाहिये कारण अत्यंत निंदिततर हैं ॥ ३८ ॥ (विरुद्धयोगोंकी वर्जित घडी) वैधृति, व्यतीपात, संपूर्णहि शुभकार्योंमें अशुभ है और वज्र, विष्कंभकी तीन ३ घडी अशुभ हैं ॥३९॥ परिघकी तीस ३० घडी, शूलकी ५ घडी व्याघातकी ९ घडी और गंड अतिगंडकी ६ घडी सर्वकामसे त्याज्य हैं ॥ ४० ॥ और इन योगोंकी शेष घडी साधारण हैं तथा कई

आचार्योंके मतमें इन योगोंका प्रथम चरण अशुभ है ॥ ४१ ॥ ध्वांक्ष, मुद्गर, वज्रके आद्यकी पांच ५ घडी और काण, मुसलकी २ घडी तथा पद्म, लुंबककी ४ घडी अशुभ हैं ॥ ४२ ॥

एकाधूम्रेगदेसप्तचरेतिस्रोघटीस्त्यजेत् । त्यजेत्सर्वान्शुभेमृत्युकालोत्पातार्ख्यराक्षसान् ॥ ४३ ॥ अथावश्यककृत्येविशेषः । यमघंटेत्यजेदष्टौ मृत्यौद्वादशनाडिकाः। अन्येषांपापयोगानांमध्याह्नात्परतःशुभम्॥ ४४॥ मृत्युक्रकचदग्धादीनिंदौशस्तेशुभान्जगुः । केचिद्यामोत्तरंचान्येयात्रायामेवनिंदितान् ॥ ४५ ॥ वारर्क्षतिथियोगेषुयात्रामेवविवर्जयेत् । विवाहादीनिकुर्वीतगर्गादीनामिदंवचः ॥ ४६ ॥ अथदेशविशेषेणविरुद्धयोगपरिहारः । विरुद्धयोगातिथिवारजातानक्षत्रवारप्रभवाश्चयेच । हूणेषु वंगेषुखसेषुवर्ज्याःशेषेषुदेशेषुनतेनिषिद्धाः ॥ ४७ ॥ कुयोगःसिद्धियोगश्चयदिस्यातामुभावपि । सुयोगाहंतिदुर्योगंकार्यसिद्धौशुभावहः ४८

धूम्रयोगकी १ घडी, गदयोगकी ७ घडी चरकी ३ घडी त्यागने योग्य है और मृत्यु, काल, उत्पात, राक्षस, यह योग संपूर्णही त्याज्य हैं ॥ ४३॥ (अवश्यक काममें विशेषता)-यमघंटकी ८ घडी और मृत्युयोगकी १२ घडीहि अतिजरूरत होवे तो त्याग देना और संपूर्णहि पापयोग मध्याह्नके अनंतर शुभ जानना चाहिये ॥ ४४ ॥ बहुतसे आचार्योंका ऐसाभी मत है कि मृत्यु, क्रकच, दग्ध, आदि दुष्टयोग चंद्रमा बली होनेसे शुभ हैं कोचित् आचार्य प्रहर १ दिन चढनेके अनंतर शुभ कहते हैं परंतु मृत्युआदि अशुभयोग केवल यात्रामेंहि वर्जित हैं ॥ ४५ ॥ कारण वार, नक्षत्र, तिथिसे उत्पन्न होनेवाले योगोंमें यात्राही निषेध है और विवाहादि शुभकर्म्म करनेमें दोष नहीं है ऐसा गर्गादि मुनियोंका वाक्य है ॥४६॥ (देशभेद करके विरुद्ध योगोंका परिहार) तिथी वार नक्षत्रोंसे उत्पन्न होनेवाला मृत्युयोगादि दुष्टयोग हूण वंग (बंगाला) खस देशमें वर्जनीक है और अन्यदेशोंमें निषिद्ध नहीं है ॥ ४७ ॥ और एक दिनमें यदि कुयोग तथा सिद्धियोग दोनों होवे तो श्रेष्ठयोग दुष्टयोगको दूर करता है और कार्यकी सिद्धि करता है ॥ ४८ ॥

अथपापसौम्यग्रहाः। सूर्यभौमशनिराहुकेतवःपापसंज्ञखचराःक्षयिचंद्रः । पूर्णचंद्रगुरुशुक्रसोमजाःसर्वकर्मसुहिसौम्यखचेराः ॥ ४९ ॥ अथलग्नस्थचंद्रविचारः । पापेंदूलग्नगौत्याज्यौसर्वेणसर्वकर्मसु । अक्षीणं कर्कि४ गो २ जस्थं १ केऽप्याहुर्लग्नगंशुभम् ॥ ५० ॥ चंद्रान्निधनगाःपापाल-

ष्टमाद्वानिधनोपगाः । कर्तुश्चफलानाशःस्याद्भग्नभांडेपयोयथा ॥ ५१ ॥ द्वंद्वाष्टमगान्पापान्वर्जयेन्नैधनंविलग्नंच । चंद्रंचनिधनसंस्थंसर्वारंभका-र्येषु॥ ५२ ॥ शुभश्चंद्रोप्यसत्पापात्सप्तमःपापयुग्तथा । पापमध्यगतः क्षीणोनीचगःशत्रुवर्गगः ॥५३ ॥ अशुभोपिशुभश्चंद्रोगुरुणालोकितोयु-तः । स्वर्क्षोच्चस्थः शुभांशेवास्वाधिमित्रांशकेतथा ॥ ५४ ॥

(पाप सौम्यग्रह विचार) सूर्य, भौम, शनि, राहु, केतु, क्षीणचंद्रमा यह पापी ग्रह हैं और पूर्णचंद्रमा, गुरु, शुक्र, बुध, यह संपूर्ण कार्योंमें शुभके देनेवाला शुभग्रह हैं ॥४९॥ (लग्नमें चंद्रमाका विचार) पापग्रह और चंद्रमा लग्नमें संपूर्ण कार्योंमें त्याज्य हैं कई आचार्य पूर्णचंद्रमाको और कर्क ४ वृष २ मेष १ स्थित चंद्रमाको लग्नमें शुभ कहते हैं ॥ ५० ॥ और चंद्रमासे या लग्नसे आठवें पापग्रह कर्ताके कार्यनाशक हैं जैसे फूटे हुये भांडे(पात्र)मेंसे जल निकल जावे॥५१॥और चंद्रमासे आठवें पापग्रह तथा लग्न और लग्नसे आठवें चंद्रमाको संपूर्ण कार्योंमें त्यागदेना चाहिये ॥५२॥ और यदि चंद्रमा शुभही है परंतु पापग्रहसे सातवें होवे या पापग्रह सहित होवे तथा पापग्रहोके मध्यगत होवे अथवा क्षीण या नीचराशिका होवे या शत्रुकी राशिमे होवे तो अशुभ है ॥ ५३ ॥ और चंद्रमा अशुभभी है परंतु बृहस्पति देखता हो या उच्चराशिपर हो या शुभग्रहके या अपने मित्रके नवांशकमे होवे तो शुभ होता है ॥ ५४ ॥

अपिसौम्यग्रहैर्युक्तंगुणैःसर्वैःसमन्वितम् । व्यया १२ ष्ट ८ रिपुंगे ६ चंद्रेलग्नदोषःससंज्ञितः॥५५॥तल्लग्नंवर्जयेद्यत्नाज्जीवशुक्रसमन्वितं । उ-च्चगेनीचगेवापिमित्रगेशत्रुराशिगे ॥ ५६ ॥ अपिसर्वगुणोपेतंदंपत्योर्नि-धनप्रदम् । शशांकेपापसंयुक्तेदोषःसंग्रहकारकः ॥ ५७ ॥ अथसर्वका-र्येषुलग्नबलम् । सर्वेषुशुभकार्येषुनेष्टाःखेटाव्ययाष्टगाः।लग्नेपापरिपौसौ-म्याःपापाःकेंद्रत्रिकोणगाः ॥ ५८ ॥ सौम्याःकेंद्रत्रिकोणस्थाःपापास्तु-त्रिषडायगाः । तेसर्वेलाभगाः खेटाःश्रेष्ठाःस्युःशुभकर्मणि ॥ ५९ ॥ भा-वःस्वपतिनासौम्यैर्दृष्टोयुक्तोबलाधिकः । पूर्णफलंनिजंधत्तेव्यस्तंपापैर्यु-तेक्षितः ॥ ६० ॥

यदि लग्न शुभग्रहोंकरके तथा संपूर्ण गुणोंकरके युक्तभी हैं परतु चद्रमा १२।८।६ होवे तो अशुभही जानना ॥ ५५ ॥ और उस लग्नमें यदि गुरु, शुक्रभी हैं तथा चंद्रमा उच्चराशि ४ या नीचराशि ८ अथवा मित्रके या शत्रुके घरमें हैं और संपूर्ण गुणोंकरके सहित लग्न हैं परंतु पापग्रहयुक्त चंद्रमा हो तो दोषकारकही होता है और स्त्री

पुरुषकी मृत्यु करता है ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ (संपूर्ण कार्य योग्य लग्नबल विचार) संपूर्ण-कार्योंमें पापग्रह१२।८।१।इन जगहमें तथा ६ में शुभग्रह और पापग्रह केंद्र१।४।७।१० त्रिकोण ९।५ में अशुभ होताहै ॥ ५८ ॥ और सौम्यग्रह केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५में और पापग्रह३।६।११इन स्थानोंमें तथा संपूर्ण ग्रह ग्यारहवें ११ श्रेष्ठ होता है॥५९॥ और जो स्थान अपने स्वामीकरके या शुभग्रहों करके देखा हुआ हो और बलयुक्त हो परंतु उससे सातवें ७ कोई ग्रह होवे नहीं तथा पापग्रहों करके देखा हुआ नहीं हो तो पूर्णफल देता है ॥ ६० ॥

अथावश्यककृत्येदुष्टतिथिवारर्क्षचंद्रतारादीनांदानम् ॥ तंडुलांश्चतिथौ-दुष्टेवारेरत्नंसकांचनम् । गामृक्षेकनकंयोगेकरणेधान्यमेवच ॥ ६१ ॥ शंखरौप्ययुतंचंद्रेतारायांसैंधवंतथा। नाड्यांहेमनरोदद्यात्कार्येत्यावश्यके सति ॥ ६२ ॥ अथदुष्टचंद्रेविशेषदानम्। श्वेतंवासःसिताधेनुःशंखोवा-क्षीरपूरितः । देयोवारजतश्चंद्रश्चंद्रदोषोपशांतये ॥६३॥ इति श्रीबीका-नेरराज्यान्तर्गतश्रीरत्नगढनगरनिवासिनापंडितगौडवैद्यश्रीचतुर्थीलाल शर्मणाविरचितेमुहूर्त्तप्रकाशेत्याज्यप्रकरणम् समाप्तम् ॥ २ ॥

(अति जरूरतमें दुष्टतिथि वार नक्षत्र चंद्र ताराका दान) यदि तिथि दुष्ट होवे तो तंडुलका दान करे और वार दुष्ट होवे तो सुवर्णसहित रत्न देवे, राशि अशुभ होवे तो गौदान और योग दुष्ट होवे तो सुवर्णदान तथा करण अशुभ होवे तो धान्यका दान करना चाहिये ॥ ६१ ॥ और चंद्रमा अशुभ होवेतो शंख चांदी सहित तथा तारा दुष्ट होवे तो सैंधव लवण और नाडी अशुभ होवेतो सुवर्ण दान अवश्यक कार्यमें करे॥६२॥ (दुष्टचंद्रमाका विशेष दान) श्वेतवस्त्र, सपेद धेनु, दुग्धपूरित शंख और चांदीका चंद्रमा चंद्रशांतिके अर्थ देना चाहिये ॥ ६३ ॥ इति मुहूर्त्तप्रकाशे त्याज्यप्रकरणं द्वितीयम् ॥ २ ॥

गोचरप्रकरणम् ३.

॥ अथ गोचरप्रकरणम् ॥ तत्रादौ ग्रहाणां राशिभोगम् । सपादर्क्षद्वयं भोगोमेषादीनामनुक्रमात्।अश्विभाद्रेवतीयावद्राशिभोगोनवांघ्रिकः॥१॥ मासं १ शुक्रबुधादित्याःसार्द्धं १॥ मासंतुमंगलः । त्रयोदश १३ गुरु-श्चैवसपाद २। द्विदिनेशशिः ॥ २ ॥ राहुरष्टादशान्मासान् १८ त्रिंश न्मासान् ३० शनैश्चरः । राहुवत् केतु १८ रुक्तस्तुराशिभोगाःप्र-

कीर्त्तिताः ॥ ३ ॥ अथग्रहाणांफलसमयः । राशेरादौकुजःसूर्योमध्येशुक्रबृहस्पती । अंतेचंद्रःशनिर्ज्ञेयःफलदःसर्वदाबुधः ॥ ४ ॥ सूर्यःपंचदिनात्पूर्वंशीतरश्मिर्घटीत्रयात् । भौमोघस्राष्टकादर्वाक्शुक्रज्ञौसप्तवासरात् ॥ ५ ॥ गुरुर्मासद्वयाच्चैवषण्मासात्तुशनैश्चरः । राहुर्मासत्रयादेष्य राशेस्तुफलदाःस्मृताः ॥ ६ ॥

(अथ गोचरप्रकरण लिख्यते) प्रथम ग्रहोंके राशि भोगनेकी अवधि लिखते हैं अश्विन्यादि सवादो २। नक्षत्रोंके नौ९ चरणतक एक मेषराशि१ होती है इसीतरह वृषसें आदि लेके ग्यारह ११ राशि फिर समझनी चाहिये॥१॥ शुक्र, बुध, सूर्य. राशिमें एक १ मास रहते हैं और मगल १॥ मास गुरु तेरह १३ मास चंद्रमा २। दिन ॥२॥ राहु, केतु १८ मास शनैश्वर ३० मास एकराशिको भोगता है ॥ ३ ॥ (ग्रहोंके फलका समय) मंगल, सूर्य राशिके पहलेही फल देते हैं और शुक्र बृहस्पति. बीचमें अर्थात् आधी राशि भोगनेके अनंतर फल करते हैं और चंद्रमा शनिश्चर राशिके अंत्यमें तथा बुध सपूर्ण राशिभरही फलकारक हैं ॥ ४ ॥ परंतु सूर्य ५ दिन पहले, और चंद्रमा तीन घडी पहले मगल आठ ८ दिन पहले तथा शुक्र बुध सात ७ रोज पहलें फल देता हैं ॥ ५ ॥ बृहस्पति २ मास पहले, शनैश्वर ६ मास और राहु केतु तीनमास पहलेही अगाडी जानेवाली राशिका फल करते हैं ॥ ६ ॥

अथकार्यविशेषेग्रहफलम् । उद्वाहेचोत्सवेजीवः सूर्योभूपालदर्शने । संग्रामेधरणीपुत्रोविद्याभ्यासेबुधोबली ॥ ७ ॥ यात्रायांभार्गवःप्रोक्तोदीक्षायांचशनैश्वरः । चंद्रमाःसर्वकार्येषुप्रशस्तोगृह्यतेबुधैः ॥८ ॥ अथजन्मराशेःसकाशात्शुभफलदाग्रहाः । तृतीये ३ दशमे १० षष्ठे ६ सदासूर्यःशुभावहः । प्रथमे १ दशमे १० षष्ठे ६ तृतीये ३ सप्तमे ७ शशी ॥ ९ ॥ शुक्लपक्षेद्वितीय २ श्चपंचमो ५ नवमः ९ शुभः । त्रि ३ षष्ठे ६ दशमे १० भौमोराहुःकेतुःशनिःशुभाः ॥ १०॥ षष्ठे ६ ष्टमे ८ द्वितीये २ च चतुर्थे ४ दशमे१०बुधः । द्वितीये २ पंचमे ५ जीवः सप्तमे ७ नवमे ९ शुभः ॥ ११ ॥ विहायशुक्रोदशमं १० षष्ठं ६ च सप्तमं ७ शुभः । एकादशे ११ ग्रहाः सर्वेसर्वकार्येषुशोभनाः। ग्रहाणां गोचरंज्ञेयंफलविज्ञैःशुभाशुभम् ॥ १२ ॥

(कार्योंमें ग्रहोंकी विशेषता) विवाह, या उत्सवमें गुरुका बल देखना और

राजाके दर्शन (मिलने) में सूर्यका संग्राममें मंगलका विद्यारंभमें बुधका और यात्रामें शुक्रका दीक्षामें शनिका और संपूर्ण कार्योंमें चंद्रमाका बल देखना चाहिये ॥ ७ ॥ ८ ॥ (जन्मराशिसे ग्रहोंकाफल) तीसरे ३ छट्टे ६ दशवें १० सदैव सूर्य शुभ होता हे जन्मको १ दशवें १० छट्ठे ६ तीसरे ३ सातवें ७ चंद्रमा सदा शुभ हैं ॥ ९ ॥ और शुक्लपक्षमें दूसरा २ पांचवां ५ नौवां ९ चंद्रमा शुभ जानना और तीसरे ३ छट्ठे ६ दशवें १० मंगल, राहु, केतु, शनि, शुभ होते हैं ॥ १० ॥ छंट्ठे ६ आठवें ८ दूसरे २ चौथे ४ दशवें १० बुध शुभ है दूसरे २ पांचवें ५ सातवें ७ नौवें ९ बृहस्पति शुभ जानना ॥ ११ ॥ और दशवें १० छट्ठे ६ सातवें ७ स्थानोंके विना शेष जगह शुक्र शुभ होता है और ग्यारहवें ११ स्थानमें संपूर्णही सूर्यादि ग्रह श्रेष्ठ जानने चाहिये इस प्रकार गोचर ग्रहोंका फल ज्योतिषियोंको कहना योग्य है॥१२॥

अथचंद्रबलेविशेषः । आश्रित्यचंद्रस्यबलानिसर्वेग्रहाःप्रयच्छंतिशुभाऽशुभानि । मनःसमेतानियथेंद्रियाणिकर्मण्यतांयांतिनकेवलानि ॥१३॥ चंद्रबलेनविहीनोनमनःपरितोषदःक्रियारंभः । अन्यगुणैरपियुक्तोजरीवरमणोनहिस्त्रीणाम् ॥ १४ ॥ चंद्रेशुद्धिर्गोचरेवावेधेपक्षादिकेपिवा । शुभेशीतकरेकुर्य्याद्यात्रापाणिग्रहादिकम् ॥ १५ ॥ अथावश्यकेनेष्टस्थानस्थचंद्रबलम् । द्वि २ पंच ५ नवमे ९ शुक्ले श्रेष्ठश्चंद्रोहिउच्यते । अष्टमे ८ द्वादशे १२ कृष्णे चतुर्थे ४ श्रेष्ठउच्यते ॥ १६ ॥ अथद्वादशचंद्रेविशेषः । उत्सवेष्वभिषेकेचजननेव्रतबंधने । पाणिग्रहेप्रयाणेच शशिर्द्वादशगःशुभः ॥१७॥ अथचंद्रस्यपूर्णावधिः । दशम्य १० वधिकृष्णेतुपक्षेपूर्णोहिचंद्रमाः।ततःपरंक्षीणचंद्रःशुभेकर्मणिवर्जयेत् ॥ १८॥

(चंद्रमाके बलका विशेष विचार) चंद्रमाके बलका आसरा लेके संपूर्ण ग्रह बल देते हैं जिसतरह मनके आसरेसे इंद्रियां बल देती हैं ॥१३॥ चंद्रमाके बलके विना कार्यका आरंभ अनेक गुणसहितभी हैं परंतु चित्त प्रसन्न नहीं कर सक्ता है जैसे कि वृद्धमनुष्य युवती स्त्रियोंको आनंद नहीं देवै ॥१४॥ चंद्रमाकी शुद्धि गोचर, वेध, पक्ष, आदिद्वारा देखके विवाह, यात्रादि शुभ कार्य करना चाहिये ॥ १५ ॥ (अवश्यक काममें नेष्ट चंद्रविचार) शुक्लपक्षमें २।५।९। चंद्रमा श्रेष्ठ होता है और कृष्णपक्षमें ४।८। १२। चंद्रमा श्रेष्ठ कहा है ॥१६ ॥ (द्वादशचंद्रविचार) उत्सव, राज्याभिषेक जन्मकाल यज्ञोपवीत विवाह यात्रामें चंद्रमा बारहवें १२ अवश्यक कार्यमें शुभ है ॥१७॥ (पूर्णचंद्रका विचार) कृष्णपक्षकी दशमी १० तक पूर्ण चंद्रमा होता है उसके अनंतर क्षीण चंद्र है सो संपूर्ण कार्योंमें त्यागना चाहिये ॥ १८ ॥

अथतारादिबलादन्येषांबलम् । तारायाबलतश्चंद्रबलंसूर्यस्यचंद्रतः । सूर्यतःसर्वखेटानांबलंज्ञेयंशुभाशुभम् ॥ १९ ॥ अथताराविचारः । जन्मर्क्षंगणयेदादौदिनऋक्षंचजायते । नवभिस्तुहरेद्भागंशेषातारापकीर्त्तिता ॥ २० ॥ अथतारानामानि । जन्म १ संपत् २ विपत् ३ क्षेम ४ प्रत्यरिः ५ साधको ६ वधः ७ । मैत्रा ८ तिमैत्रा ९ स्ताराःस्युस्त्रिरावृत्त्यानवैवहि ॥ २१ ॥ अथताराफलम् ॥ जन्मतारा १ द्वितीयाच २ षष्ठी ६ चैवचतुर्थिका ४ । अष्टमी ८ नवमी ९ चैवपंचताराःशुभावहाः ॥ २२ ॥ यदिस्यात्सबलश्चंद्रस्तथापिक्लेशदायिनी । तृतीया ३ पंचमी ५ तारासप्तमी ७ चनृणांभवेत् ॥ २३ ॥ अथजन्मतारायांविशेषः । जन्मर्क्षगेशशांकेतुपंचकर्माणिवर्जयेत् । यात्रांयुद्धंविवाहंचक्षौरंच गृहवेशनम् ॥ २४ ॥

(तारावलविचार) तारा (नक्षत्र) के बलसे चद्रमा और चंद्रमाके बलसे सूर्य सूर्यके बलसे संपूर्ण ग्रहोंका शुभाशुभ बल देखना योग्य है ॥१९॥ (ताराज्ञान) जन्मनक्षत्रसे कार्यके नक्षत्रतक गिने और नव९का भाग देवै जितना अंक बचे उतनीही सख्या तारों की जाननी चाहिये ॥ २० ॥ (तारानामानि) जन्म १ संपत् २ विपत् ३ क्षेम ४ प्रत्यरि ५ साधक ६ वध ७ मैत्र ८ अतिमैत्र ९ यह नव तारा जन्मके नक्षत्रसे दिन नक्षत्रतक तीन आवृत्ति करके होता है ॥ २१ ॥ (ताराफल) जन्मकी १ दुसरी २ छठी ६ चौथी ४ आठवी ८ नवमी ९ यह छः तारा शुभ है ॥ २२ ॥ यदि चंद्रमा बलवान्भी हैं परंतु तीसरी ३ पांचवीं ५ सातवी ७ तारा क्लेशके देनेवाली होती है ॥ २३ ॥ (जन्मताराका विशेषविचार) जन्मनक्षत्रमें यात्रा, युद्ध, विवाह, चौलकर्म, गृहप्रवेश, यह पांच कर्म वर्जनीय हैं ॥ २४ ॥

कृष्णेबलवतीताराशुक्लपक्षेतुचंद्रमाः । सदाग्राह्याबुधैरेवंकृष्णेतारानचंद्रमाः ॥ २५ ॥ अथावश्यकेदुष्टतारासुदानम् । लवणैर्युवतिप्रातिमामभिनवशूर्पोदरेसमालिख्य । तारादोषोपशमनायहितायदद्याद्विशुद्धये पुंसा । एकत्रिपंचसप्तद्विजायदद्यात्पलानिलवणस्य । क्रमशोविपादिप्रत्यरिमरणाख्यतारासु ॥२६॥ सप्तम्यांतारकायांचदद्यात्स्वर्णंतिलानपि । गुडंतृतीयतारायांपंचम्यांलवणंतथा । दोषापनुत्तयेतासांदद्याच्छाकंत्रिजन्मसु ॥ अथगोचरवर्षदशा । जन्मनाविंशतिः २० सूर्ये तृतीयेद-

श १० चंद्रमाः । चतुर्थेभौमचाष्टौचषष्ठेबुधचतुर्थकं ॥ २७ ॥ सप्तमं दशसौरिःस्यान्नवमेचाष्टमंगुरोः । दशमेराहुविंशत्यातदूर्ध्वंतुभृगोर्दशा ॥ २८ ॥ अथदिनसंख्या । रविदिननख २० संख्याचंद्रमाव्योमबाणैः ५० क्षितितनयगजाश्वी २८ चंद्रजःषट्शराश्च५६ । शनिरसगुण ३६ संख्यावाक्पतिर्नागबाणै ५८ नयनयुगक ४२ राहुःसप्ततिः ७० शुक्रसंख्या ॥ २९ ॥ अथदशाफलम् ॥ पंथाभोगोनुतापश्चसौख्यंपीडाधनंक्रमात् । नाशःशोकश्चसौख्यंचजन्मसूर्यदशाफलम् ॥ ३० ॥

कृष्णपक्षमें तारा बलवान् है और शुक्लपक्षमें चंद्रमा बलवान् जानना परन्तु कृष्णपक्षमें तो ताराही बलवान् हैं चद्रमा नहीं है ॥२५॥ (आवश्यक काममें दुष्ट ताराका दान) लूंण(निमक)की १स्त्री बनावे और शूर्प(छाजला)में स्थापन करके दान करे तो ताराका दोष नहीं है परन्तु विपत्, प्रत्यरि, वध, इन तीन तारामेंतो एक १ तीन ३ पांच ५ या सात ७ पल निमक क्रमसे देवै (पल चार ४ तोलाकी होती है) ॥ २६ ॥ और वध तारामें सुवर्ण, तिलभी देवै तथा विपत् तारामें गुडका दान करै और तीसरी ३ पहली १ तारामें शाक देनाभी लिखा है ॥ २६ ॥ (गोचरदशाविचार) जन्मके १ सूर्यके वीस २० दिनतक सूर्यकी दशा और तीसरे सूर्यके १० दिनतक चंद्रमाकी दशा, चौथे सूर्यके ८ दिनतक मंगलकी दशा और छट्ठे सूर्यके ४ दिनतक बुधकी दशा जाननी ॥ २७ ॥ सातवें सूर्यके १० दिनतक शनैश्वरकी दशा, नौवें सूर्यके ८ दिनतक गुरुकी दशा, दशवें, सूर्यके २० दिनतक राहुकी दशा और बारहवें सूर्यके सपूर्ण दिनतक शुक्रदशा रहती है ॥ २८ ॥ (दशादिनसंख्या) रविकी दशा २० दिन, और चद्रमाकी ५० दिन, मगलकी २८ दिन, बुधकी ५६ दिन, शनिकी ३६ दिन, गुरुकी ५८ दिन, राहुकी ४२ दिन, तथा शुक्रकी ७० दिन दशा भोगती है ॥ २९ ॥ (दशाफल) गमन, भोग, क्लेश, सुख, पीडा, धन, नाश, शोक, सुख, क्रमसे जन्मके सूर्य आदि पूर्वोक्त दशामें फल जानना ॥ ३० ॥

अथदिनदशाप्रकारः । तिथिवारंचनक्षत्रंनामाक्षरसमान्वितम् । नवभिश्चहरेद्भागंशेषंदिनदशोच्यते ॥ ३१ ॥ रविचंद्रौभौमराहूगुरुमंदज्ञकेसिताः । क्रमेणैकादशाज्ञेयाफलंपूर्वोक्तमेवहि ॥ ३२ ॥ अथशनैश्वरफलेविशेषः । शनिचक्रंनराकारंलिखेद्यत्रशनिर्भवेत् । तन्नक्षत्रंमुखेदत्वा यावन्नामनरस्यच ॥ ३३ ॥ तावद्विचारयेत्तत्रज्ञेयंशुभमथाशुभम् । एकं मुखेचनक्षत्रं १ चत्वारि ४ दक्षिणेकरे ॥ ३४ ॥ त्रयं ३ त्रयं ३ पाद-

योश्चवामहस्तेचतुष्टयम् ४ । हृदिपंच ५ त्रयं ३ मौलौनेत्रेगुह्येद्वयं २ द्वयम् ॥३५॥ हानिरास्येकरेदक्षेलाभोवामेचरोगता । हृदिश्रीर्मस्तकेराज्यंपादेपर्यटनंतथा ॥ ३६ ॥ नेत्रेसुखंगुदेमृत्युःशनिचक्रंविचारयेत् । जपपूजाद्विजार्चाभिःकल्याणंजायतेसदा ॥ ३७ ॥

(दिनदशाप्रकार) तिथि, वार, नक्षत्र, और पूछनेवालेके नामके अक्षर मिलावे फिर नो ९ का भाग देवै शेष अंक बचै सोही क्रमसे दिनदशा जानना अर्थात् १ बचे तो सूर्यकी, २ चद्र, ३ मंगल, ४ राहु, ५ गुरु, ६ शनि, ७ बुध, ८ केतु, ९ बचे तो शुक्रकी दशा जाननी और फल पूर्व कहे हुये माफिक जानना ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ (शनिका विशेष फल) मनुष्यके आकारका शनिचक्र लिखै और जिस नक्षत्रपर शनि होवे उस नक्षत्रको मुखमें लिखै फिर जितने पृच्छक मनुष्यका नक्षत्र आवे तबतक क्रमसे लिखता जावै और शुभाशुभका विचार करै अर्थात् एक नक्षत्र १ मुखमें देवै चार ४ दहिने हाथमें, तीन ३ तीन ३ दोनों पगोंमें और चार वायें हाथमें, पाच हृदयमें फिर तीन, मस्तकमे दो २ नेत्रोंमें दो २ गुह्यमें (गुदामें) लिखके फल देखै ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ मुखमे नक्षत्र आवे तो हानि हो, दहिने हाथमे लाभ, वाये हाथमें रोग, हृदयमें श्री (लक्ष्मी), मस्तकमें राज्य, पगोंमें गमन, नेत्रमें सुख और गुदामें जन्मनक्षत्र होवे तो मृत्यु होवै, इस तरह शनिचक्रका विचार है, यदि शानिका अशुभ फल होवे तो जप, पूजा, ब्राह्मणभोजन, आदि करानेसे कल्याण और शांति होती है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

अथशनिगतिः ॥ मुखाच्चरतिगुह्येचगुह्यादायातिलोचनम् । लोचनान्मस्तकंयातिमस्तकाद्वामहस्तकम् ॥ ३८ ॥ वामहस्ताच्चहृदयंहृदयाच्चरणद्वयम् ॥ पञ्चांदक्षिणहस्तंचशनिचक्रेविचारयेत् ॥ ३९ ॥ इतिशनिचक्रम् ॥ अथसार्द्धसप्तवर्षस्यशनैश्चरविचारः । रिःफ १२ रूप १ धन २ भेषुभास्करिःसंस्थितोभवतियस्यजन्मभात् । लोचनोदरपदेषुसंस्थितिःकथ्यतेरविजलोकजैर्जनैः ॥ ४० ॥ अथशनेश्चरणविचारः । जन्मांगरुद्रेषु १।६।११ सुवर्णपादंद्विपंचनंदे २।५।९ रजतस्यपादम् । त्रिसप्तदिक् ३।७।१० ताम्रपदंवदंतिवेदाष्टसार्केष्विह ४।८।१२ लोहपादम् ॥ ४१ ॥ अथपादफलम् । लोहेधनविनाशःस्यात्सर्वसौख्यंचकांचने । ताम्रेचसमताज्ञेयासौभाग्यंराजतेभवेत् ॥ ४२ ॥

(शनिगति) मुखसे गुह्यमें, गुह्यसे नेत्रोंमें नेत्रोंसे मस्तकमे मस्तकसे वाये हा-

थमें ॥ ३८ ॥ बायेंहाथसे हृदयमें हृदयसे पैरोंमें, पैरोंसे दहिने हाथमें शनि आता है ॥ ३९ ॥ (साढे सात ७॥ वर्षके शनिका विचार) जिसकी जन्मराशिसे १२।१। २। शनि होता है उसको साढे सात वर्षका कहते है और बारहवां १२ नेत्रोंमें, जन्मका पेटमें, दूसरा पैरोंमें शनि आया ऐसा लोग कहते हैं ॥ ४० ॥ (शनिके पायों काविचार) १।६।११ शनि सुवर्णके पाये, २।५।९ चांदीके तथा ३।७।१० ताम्बेके और ४।८।१२। लोहेके पाये शनि जानना ॥ ४१ ॥ लोहेके पाये शनि धननाश करै, सुवर्णका सुख देवै, तांबेका सम हे, और चांदीका सौभाग्य देवे ॥ ४२ ॥

अथशनैश्चरवाहनम् ॥ मंदाक्षीच्छशि १ वेद ४ तर्क ६ विशिखा ५ ब्ध्य ७ ग्न्य ३ ष्ट ८ पक्ष २ क्रमाच्छागोऽश्वोभखनीगजोहिमाहिषो-ह्यश्वोवृषोवायसः । हानिर्वैरभयेभ्रमोधनचयोमानाल्पकंभूपतेःसौख्यंरो-गभयंनरस्यददतोमंदस्यवाहाअमी ॥ ४३ ॥ अथशनैश्चरशांतिप्रकारः । यस्यपीडाकरःसौरिस्तस्यशांतिंवदाम्यहम । लिखित्वाकृष्णद्रव्येणतैल-मध्येक्षिपेत्ततः ॥४४ ॥ निक्षिप्यभूमिमध्यस्थंकृष्णपुष्पैःप्रपूजयेत् । तु-ष्टियातिनसंदेहःपीडांत्यक्त्वाशनैश्चरः ॥४५ ॥ अथजन्मराशेःसकाशा-द्वादशभावस्थसूर्यादिग्रहाणांफलम् ॥ सूर्यःस्थानविनाशं १ भयं २ श्रियं ३ मानहा ४ निमथदै ५ न्यम् । विजयं ६ मार्ग ७ पीडां ८ सु-कृतं ९ हंति सिद्धि १० माय ११ मथ हानिम् १२ ॥४६ ॥ चंद्रोऽ-न्नंचधनं २ सौख्यं ३ रोगं ४ कार्यक्षतिं ५ श्रियम् ६ । श्रियं ७ मृ-त्युं ८ नृपभयं ९ सुख १० माय ११ व्ययं १२ क्रमात् ॥ ४७ ॥ भौमोऽरिभीतिं १ धननाश २ मर्थं ३ भयं ४ तथार्थक्षतिमर्थ ६ ला-भम् । धनात्ययं ७ शत्रुभयंच ८ पीडां ९ शोकं १० धनं ११ हानि १२ मनुक्रमेण ॥ ४८ ॥

(शनिके वाहनका विचार) जन्मका शनि होवे तो छागको वाहन जानना चौथा ४ होवे तो अश्वके वाहन, छठा होवे तो खरके वाहन, और पांचवां ५ होवे तो गजके वाहन, सातवां ७ होवे तो महिषके वाहन, तीसरा अश्वके वाहन, आठवां ८वृषके वाहन, दूसरा वायस(काग)के यह वाहन शनिका जानना चाहिये और क्रम, २ हानि, ४ वैर, ६ भय, ५ भ्रमण ७ धनसंचय, ३ मान, ८ सौख्य, २ रोग, इस मुजब वाहनोंका फल जानना चाहिये ॥ ४३ ॥ (शनैश्चरशांतिप्रकार) जिसके शनैश्चर पीडाकारक होवे उसकी शांति कहते हैं. प्रथम लोहेकी शनिकी मूर्ति बनाके

तैलमें रखदेवै फिर भूमिमे रखके कृष्ण पुष्प आदिकरके पूजन करे तो शनैश्चर प्रसन्न होवै और पीडा नहीं करे ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ (जन्मराशिसे सूर्यादि ग्रहोंका फल) सूर्य जन्मका १ स्थाननाश करे दूसरा २ भय करे तीसरा श्री (लक्ष्मी) की प्राप्ति करे ३ चौथा मानहानि ४ पांचवा दीनता ५ छट्ठा विजय ६ सातवां गमन ७ आठवां ८ पीडा नौवां सुकृतनाश ९ दशवां सिद्धि १० ग्यारहवां लाभ ११ और बारहवां १२ हानि करे ॥ ४६ ॥ जन्मका चन्द्रमा अन्नलाभ १ दुसरा धन २ तीसरा सुख ३ चौथा रोग ४ पांचवा कार्यनाश ५ छट्ठा श्रीप्राप्ति ६ सातवा धन ७ आठवां मृत्यु ८ नौवा राजभय ९ दशवां सुख १० ग्यारहवां लाभ ११ बारहवां १२ खरच करे ॥ ४७ ॥ इसी तरह मंगल १ शत्रुभय । २ धननाश । ३ अर्थप्राप्ति । ४ भय । ५ धननाश । ६ धनलाभ । ७ धननाश । ८ शत्रुभय । ९ पीडा । १० शोक । ११ धनलाभ । १२ हानि करे ॥ ४८ ॥

बुधस्तुबंधं १ धन२ मन्यभीतिं ३ धनं४रुजं ५ स्थान ६ मथोचपीडां ७ । अर्थं ८ रुजं ९ सौख्य १० मथात्मसौख्यं ११ अर्थं १२क्षतिंजन्मगृहात्करोति ॥ ४९ ॥ गुरुर्भयं १ धनं २ क्लेशं ३ धन नाशं ४ सुखं ५ शुचिः ६ । मानं ७ रोगं ८ सुखं ९ दैन्यं १० लाभं ११ पीडांच १२ जन्मभात् ॥ ५० ॥ कविःशत्रुनाशं १ धनं २ सौख्य ३ मर्थं ४ सुताप्तिं ५ रिपोः ६ साध्यसंशोक ७ मर्थं ८ । बृहद्वस्त्र ९ लाभं विपत्तिं १० धनाप्तिं ११ तनोत्यात्मजो१२जन्मराशेः सकाशात् ॥५१॥ सर्वनाशं १ शनिर्वित्तनाशं २ विधत्तेधनं३ शत्रु वृद्धिं ४ सुतादेःप्रवृद्धिं ५ । श्रियं ६ दोष७संधिं रिपुं८ द्रव्य नाशं ९ तथादौर्मनस्यं १० धनं ११ बव्हनर्थम् १२ ॥ ५२ ॥ राहुर्हानितथा १ नैःस्वं २ धनं ३ वैरं ४ शुचं ५ श्रियम् ६ । कलिं ७ वसुं ८ चदुरितं ९ वैरं १० सौख्यं ११ शुचंक्रमात् १२ ॥ ५३ ॥ केतुःक्रमाद्रुजं १ वैरं २ सुखं ३ भीतिं ४ शुचं ५ धनम् ६ । गातिं ७ गदं ८ दुष्कीर्तिं ९ चशोकं १० कीर्तिंच ११ शत्रुताम् १२ ॥ ५४ ॥

बुध १ बंधन । २ धन । ३ भय । ४ धन । ५ रोग । ६ स्थान । ७ पीडा । ८ धन । ९ रोग । १० सुख । ११ सौख्य । १२ धननाश करे ॥ ४९ ॥ गुरु १ भय । २ धन । ३ क्लेश । ४ धननाश । ५ सुख । ६ शोक॥ ७ मान । ८ रोग । ९ सुख । १० दीनता । ११ लाभ । १२ पीडा करे ॥ ५० ॥ शुक्र १ शत्रुनाश । २ धन । ३ सुख । ४ धन । ५

पुत्र । ६ शत्रुभय । ७ शोक । ८ धन । ९ वस्त्रलाभ । १० विपत्ति । ११ धन । १२ पुत्रलाभ करताहै ॥ ५१ ॥ शनैश्वर १ सर्वनाश । २ धननाश । ३ धनलाभ । ४ शत्रुवृद्धि । ५ पुत्रवृद्धि । ६ श्रीप्राप्ति । ७ दोषसंग्रह । ८ रिपु । ९ धननाश । १० दुर्मन । ११ धन । १२ अनर्थ करावै ॥५२॥ राहु १ हानि । २ दरिद्र । ३ धन । ४ वैर । ५ शोक । ६ श्रीप्राप्ति । ७ कलह । ८ धन । ९ पाप । १० वैर । ११ सौख्य । १२ शोक करे ॥ ५३ ॥ केतु जन्म १ का रोग । २ वैर । ३ सुख । ४ भय । ५ शोक । ६ धन । ७ गमन । ८ रोग । ९ पाप । १० शोक । ११ कीर्त्ति १२ शत्रुवृद्धि करताहै ॥ ५४ ॥

अथ दुष्टग्रहेषुयात्रादिवर्ज्यम् । अकालचर्यांमृगयांचसाहसंसुदूरयानंगजवाजिवाहनं । गृहेपरेषांगमनंविवर्जयेद्ग्रहेषुराजाविषमस्थितेषु ॥५५॥ अथविषमग्रहेषुशांतिप्रकारः । ग्रहेषुविषमस्थेषुशांतिंयत्नात्समाचरेत् । हानिवृद्धीग्रहाधीनेतस्मात्पूज्यतमाग्रहाः ॥ ५६ ॥ येखेचरागोचरतोष्टवर्गाद्दशाक्रमाद्वाऽप्यशुभाभवंति । दानादिनातेसुतरांप्रसन्नास्तेनाधुनादानविधिंप्रवक्ष्ये ॥ ५७ ॥ तत्रादौदानकालः । बुधस्यघटिकाःपंचसौरेमध्यान्हमेवच । राहुकेतौचरात्रौचजीवेचंद्रेचसंध्ययोः ॥ ५८ ॥ उदयेसूर्यशुक्रौचभौमेचघटिकाद्वये । समेकालेनकर्त्तव्यंदातॄणांप्राणघातकः ॥५९॥ अथसूर्यादिग्रहाणांदानानि । तत्रादौसूर्यस्य । माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुःकौसुंभवासोगुडहेमताम्रं । आरक्तकंचंदनमंबुजंचवदंतिदानंहिविरोचनाय ॥ ६० ॥

(अशुभ ग्रहोंमें यात्राआदिकरणानिषेध) यदि जन्मराशिसे ग्रह दुष्टस्थानमें होवे तो रात्रि आदिमें फिरना तथा शिकार खेलना, हठ करना, दूरदेशमें जाना, हाथी घोडे आदिपें चढना, दूसरेके घरमें जाना इत्यादि काम कदापि नहीं करना चाहिये ॥ ५५ ॥ (दुष्टग्रहोंकी शांतिका प्रकार) यदि अशुभ ग्रह होवेतो शांति जरूर करना योग्य है, कारण हानि और वृद्धि ग्रहोंकेही आधीन हैं इसवास्ते अवश्य ग्रहोंकी पूजनादि करे ॥ ५६ ॥ जो ग्रह गोचरसे या, अष्टवर्गसे, या, दशासे अशुभहैं सो दानोंके देनेसे शुभ होतेहै इसवास्ते दान लिखते हैं ॥ ५७ ॥ (दानका काल) बुधका दान पांच ५ घडी दिन चढे देना और शनैश्वरका मध्यान्हमें, राहु केतुका रात्रिमें, और बृहस्पति चंद्रमाका । संध्याकालमें देना चाहिये ॥५८॥ सूर्य शुक्रका सूर्योदयमें मंगलका दो घडी दिन चढे दान करे परंतु विषम कालमें नहीं करे क्योंकि देनेवालेका प्राण हरते हैं ॥ ५९ ॥ (ग्रहोंका दान) मणि, गोधूम, बछडेसहित धेनु, कुसुंभा, रक्तवस्त्र, गुड, सुवर्ण, ताम्र, रक्तचंदन, कमल, यह सूर्यका दान हैं ॥ ६० ॥

चंद्रस्य।सद्वंशपात्रस्थिततंडुलाश्चकर्पूरमुक्ताफलशुभ्रवस्त्रं। युगोपयुक्तंवृषभंचरौप्यंचंद्रायदद्यात्घृतपूर्णकुंभम् ॥ ६१ ॥ भौमस्य।प्रवालगोधूममसूरिकाश्चवृषोरुणश्चापिगुडःसुवर्णं । आरक्तवस्त्रंकरवीरपुष्पंताम्रंचभौमायवदंतिदानम् ॥ ६२ ॥ बुधस्य । चैलंचनीलंकलधौतकांस्यंमुद्गाज्यगारुत्मतसर्वपुष्पं । दासीचदंतोद्विरदस्थनूनंवदंतिदानंविधुनंदनाय ॥ ६३ ॥ बृहस्पतेःशर्कराचरजनीतुरंगमःपीतधान्यमपिपीतमंबरं। पुष्करागलवणं सकांचनंप्रीतयेसुरगुरोःप्रदीयते ॥ ६४ ॥ शुक्रस्य । चित्रांबरंशुभ्रतुरंगमं चधेनुश्चवज्रंरजतंसुवर्णम् । सत्तंडुलानुत्तमगंधयुक्तंवदंतिदानंभृगुनंदनाय ॥ ६५ ॥ शनैश्चरस्य । माषाश्चतैलंविमलेंद्रनीलंतिलाःकुलित्थामहिषीचलोहम् । कृष्णाचधेनुःप्रवदंतिनूनंदुष्टायदानंरविनंदनाय ॥ ६६ ॥

वांशका पात्र, चावल, कपूर, मोती, श्वेतवस्त्र, वृषभ, चांदी, घृतसे भरा हुवा कुंभ यह चंद्रमाके दान हैं ॥ ६१ ॥ मूँगा, गोधूम, मसूर, लालवृषभ, गुड, सुवर्ण, रक्तवस्त्र, कनेरके रक्त पुष्प, ताम्र यह मंगलका दान जानना ॥ ६२ ॥ नीलवस्त्र, सुवर्ण, कांसी, मूंग, घृत, गेरू, पुष्प, दासी, हाथींदांत, यह बुधके दान हैं॥६३॥ शर्करा, हरिद्रा घोडा, पीतधान्य, पीत वस्त्र, पुषराज, लूण, सुवर्ण, यह बृहस्पतिका दान हैं ॥ ६४ ॥ चित्रविचित्र वस्त्र, श्वेतघोडा, धेनु, हीरा, चांदी, सुवर्ण, चावल, चंदन, यह शुक्रके दान कहते हैं ॥ ६५ ॥ माष, तिलोंका तेल, नीलमणी, तिल, कुलत्थी, महिषी, लोह, कृष्णाधेनु, यह शनिके दान हैं ॥ ६६ ॥

राहोः।गोमेदरत्नंचतुरंगमश्चसुनीलचैलामलकंबलंच । तिलाश्चतैलंखलुलोहमिश्रंस्वर्भानवेदानमिदंवदंति ॥ ६७ ॥ केतोः।वैडूर्यरत्नंसातिलंचतैलं सुकंबलाश्चापिमदोमृगस्य।शस्त्रंचकेतोःपरितोषहेतोश्छागस्यदानंकथितं मुनिंद्रैः ॥ ६८ ॥ अथसाधारणदानानि ॥ भानुस्तांबूलदानादपहरति नृणांवैकृतंवासरोत्थंसोमः श्रीखंडदानादवनिवरसुतोभोजनात्पुण्यदानात् । सौम्यःशास्त्रस्यमंत्राद्गुरुहरभजनाद्भार्गवःशुभ्रवस्त्रात्तैलस्नानात्प्रभातेदिनकरतनयोब्रह्मनत्यापरेच ॥ ६९ ॥ अथग्रहशांत्यर्थंरत्नादिधारणम् ॥ धार्यंतुष्टचैविद्रुमंभौमभान्वोरूप्यंशुक्रेंद्वोश्चहेमेंदुजस्य । मुक्तासूरेर्लोहमर्कात्मजस्यलाजावर्तःकीर्त्तितःशेषयोश्च ॥ ७० ॥ अथग्रहाणांज-

पसंख्या । रवेःसप्तसहस्राणिचंद्रस्यैकादशैवतु । भौमेदशसहस्राणिबुंधचाष्टसहस्रकम् ॥ ७१ ॥ एकोनविंशतिर्जीवेशुक्रेएकादशैवतु । त्रयोविंशतिमंदेचराहोरष्टादशैवतु । केतोःसप्तसहस्राणिजपसंख्याप्रकीर्त्तिता ७२

ल्हशणियारत्न, घोडा, नीलवस्त्र, आंवला, कंबल, तिल, तेल, लोह, यह राहुके दान हैं ॥ ६७ ॥ वैडूर्यमणि तिल. तेल. कंवल. कस्तूरी, शस्त्र, छाग (वकरा) यह केतुके प्रसन्नता करनेवाला दान हैं ॥ ६८ ॥ (साधारण दान) सूर्य तांबूलके दानसे वरस १ भरकी पीडा दूर करता है, चंद्रमा चंदनके दानसे और मंगल ब्राह्मणभोजनसे बुध शास्त्र और मंत्रोंसे, गुरु शिवपूजनसे । शुक्र श्वेतवस्त्रके दानसे और शनैश्वर तेलके मालिशसे तथा राहुकेतु ब्राह्मणको नमस्कार करनेसे शांति होताहै॥६९॥ (ग्रहशांतिकारकरत्न) मंगल, सूर्यके प्रीतिके अर्थ मूँगा धारण करना चाहिये और शुक्र चंद्रमाके अर्थ चांदी और बुधके अर्थ सुवर्ण तथा गुरुके अर्थ मोती, और शनिकी प्रीतिके अर्थ लोह तथा राहुकेतुके अर्थ लाजावर्त धारण करे ॥ ७० ॥ (ग्रहजपसंख्या) सूर्यके ७००० हजार, चंद्रमाका ११००० मंगलका १००० बुधका ८००० और गुरुका १९००० शुक्रका ११००० शनैश्वरका २३००० राहुका१८००० केतुका ७००० हजार जप करना चाहिये परंतु कलियुगमें चौगुणा जप करनसे शांति होती है (कलौ संख्या चतुर्गुणा) इस वाक्यसे ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

अथग्रहपीडोपशमनोपायाः । देवब्राह्मणवंदनाद्गुरुवचःसंपादनात्प्रत्यहंसाधूनामपिभाषणाच्छ्रुतिरवःश्रेयःकथाकारणात् । होमादध्वरदर्शनात् शुचिमनोभावाज्जपाद्दानतोनोकुर्वंतिकदाचिदेवपुरुषस्यैवंग्रहाःपीडनम् ॥ ॥ ७३ ॥ अथग्रहणनक्षत्रफलम् । यस्यैवजन्मनक्षत्रेग्रस्येतेशशिभास्करौ । तज्जातानांभवेत्पीडायेनराःशांतिवर्जिताः ॥ ७४ ॥ जन्मसप्ताष्टरिष्फाङ्कदशमस्थेनिशाकरे । दृष्टोऽरिष्टप्रदोराहुर्जन्मर्क्षेनिधनेऽपिच॥७५ अथजन्मराश्यादौग्रहणशांतिः । सुवर्णनिर्मितंनागंसतिलंकांस्यभाजनं । सदक्षिणंसवस्त्रंचब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ ७६ ॥ सौवर्णराजतंवापिबिंबं कृत्वास्वशक्तितः । उपरागभवक्लेशच्छिदेविप्रायकल्पयेत् ॥ ७७ ॥

इतिश्रीपंडितगौडवैद्यश्रीचतुर्थीलालशर्मणाविरचितेअद्भुतेमुहूर्त्तप्रकाशे तृतीयंगोचरप्रकरणंसमाप्तम् ॥ ३ ॥

(ग्रहोंके शांतिका उपाय) देव और ब्राह्मणोंके वंदनासे तथा गुरुके वाक्य श्रवण करनसे नित्यप्रति साधुवोंके संभाषणसे और वेदध्वनी सुननेसे उत्तम कथा क-

रनेसे होम यज्ञोंके दर्शनसे शुद्ध मनसे तथा भावना जप दानोंसे ग्रहोंकी शांति होती है और ग्रह पीडा नहीं करते है ॥ ७३ ॥ (ग्रहणफल) जिनके जन्मनक्षत्रपे चद्रमा सूर्यका ग्रहण होता है उस नक्षत्रवालोंको पीडा होती है ॥ ७४ ॥ और जन्मराशिको तथा सातवी ७ आठवी ८ बारहवी १२ नोवी ९ दशवों १० राशिको ग्रहण होवे तो ग्रहण देखना नहीं चाहिये यदि देखे तो अरिष्ट होता है ॥ ७५ ॥ (ग्रहणशांति) सुवर्णका नाग (सर्प) बनाके तिलपूरित कासीके पात्रमें स्थापन करे फिर दक्षिणा और वस्त्रसहित ब्राह्मणको देदेवै ॥ ७६ ॥ अथवा सूर्यग्रहणमें सुवर्णका सूर्य और चंद्रग्रहणमें चांदीका चंद्रमा बनाके भक्तियुक्त शक्तिके अनुसार ब्राह्मणको देवे तो ग्रहणकी पीडा नहीं होवे ॥ ७७ ॥ इति श्रीमुहूर्त्तप्रकाशे गोचरप्रकरण तृतीयम् ॥ ३ ॥

अथ नानामुहूर्त्तप्रकरण ४ लिख्यते ।

अथनानामुहूर्त्तप्रकरणम् ॥ तत्रादौनूतनांबरालंकारधारणम् । हस्तादिपंचके ५ पुष्येधनिष्ठारेवतीद्वयोः । त्र्युत्तरे ३ चपुनर्वस्वौरोहिण्यांचशुभेतिथौ ॥ १ ॥ बुधेशुक्रेगुरौवारेनूतनांबरधारणम् । सौवर्णरूप्यरत्नादिभूषणानांधृतिःशुभा ॥ २ ॥ अथस्त्रीणांरक्तवस्त्रसुवर्णचूडादिपरिधानम् ॥ हस्तादिपंचपूषाश्विधनिष्ठासुचकांचनम् । रक्तंपरिदधेद्वस्त्रंभौमार्कगुरुभार्गवे ॥ ३ ॥ अथसौभाग्यवत्यानिषेधः । रोहिण्यांत्र्युत्तरेपुष्येपुनर्वस्वौकदाचन । नदध्यात्सुभगाभूषावस्त्राण्यन्येकुजेपिन ॥ ४ ॥ अथचूडीधारणेविशेषः । अस्तंगतेभृगुसुतेशयनेचविष्णोर्जन्माद्यचाप ९ झष १२ गेदिनपेनदध्यात् । रिक्तेंदुभानुजदिनेशकवर्जितेचशंखंचरक्तपटकंयुवतिःकथंचित् ॥ ५ ॥ अथचूडीचक्रम् । यावद्भास्करभुक्तिभानिदिवसेधिष्ण्यानिसंख्याततोवह्नि ३ भूत ५ गुणा ३ ब्धि ४ सप्त ७ नयनं २ पृथ्वी १ करेंदुः १ क्रमात् । सूर्य्यारौकविसौम्यराहुरविजाजीवःशशिःकेतवःक्रूरेऽसच्चशुभेशुभंचकथितंचक्रेचचूडाव्हये ॥ ६ ॥

अथ नानामुहूर्त्तप्रकरणचौथा लिख्यते । (नवीन वस्त्रादिधारण मुहूर्त्त) ह. चि. स्वा. वि. अनु. पुष्य. ध. रे. अश्वि उत्तरा ३ पुनर्वसु रो. यह नक्षत्र तथा शुभतिथि ॥ १ ॥ बुध. शुक्र. गुरुवार नवीन वस्त्र, सुवर्ण चांदी रत्नोंके आभूषण धारणमें श्रेष्ठ है ॥ २ ॥ (स्त्रियोंके रक्तवस्त्र चूडाआदिको मु०) ह. चि. स्वा. वि. अनु. रे अ. ध इन नक्षत्रोंमें और मगल, आदित्य, गुरु. शुक्रवारमे स्त्रियोंको कांचन आदिका चूडा तथा रक्तवस्त्र धारण करना

योग्यहै ॥ ३ ॥ परतु, गो. उत्तरा ३ पुष्य, पुनर्वसु, और मंगलवारमें सौभाग्यवती स्त्रियोंको आभूषण वस्त्र धारण नहीं करना चाहिये ॥ ४ ॥ (चूडीधारणे विशेषः) शुक्रके अस्तमें और विष्णुके शयनकालमें अर्थात् चातुर्मासमें और जन्मके या धन ९ मीन १२ के सूर्यमें और रिक्ता ४।९।१४ तिथि सोम शनिवारमें और शनिके नवांशमें (शंख) अर्थात् हस्तिदंत लाख आदिका चूडा या नवीन रक्तवस्त्र, स्त्रीको धारणकरना योग्य नहीं हैं ॥ ५ ॥ (चूडीचक्र) सूर्यके नक्षत्रसे दिनके नक्षत्रतक गिने जिनमें प्रथमके तीन ३ नक्षत्र सूर्यका हैं सो अशुभ जानना फिर ५ मंगलका सोभी अशुभ है, अनंतर ३ शुक्रका शुभ है, ४ बुधका शुभ हैं, ७ राहुका अशुभ है, २ शनिका अशुभ, १ गुरुका श्रेष्ठ, २ चंद्रमाका शुभ, और १ केतुका है सो अशुभ जानना॥६॥

अथस्त्रीणांवालबंधमुहूर्त्तः । पौष्णादिभद्वय २ दिवाकरशंकरेषुमूलानिलश्रवणशीतकरोत्तरेषु । सौम्यामरेज्यभृगुभानुदिनेंगनानांमानार्थभोगसुखदःखलुवालबंधः ॥ अथमुहूर्त्तंविनापिकुत्रचिद्वस्त्रधारणम् ॥ राज्ञाप्रीत्यार्पितंवस्त्रंविवाहेचोत्सवादिषु । तथाविप्राज्ञयाधार्यंनिंद्येधिष्ण्येपिवासरे ॥ ७ ॥ अथनवीनवस्त्रक्षालनम् ॥ पुनर्वसुद्वयेऽश्विन्यांधनिष्ठाहस्तपंचके । हित्वार्कार्किबुधान्रिक्तांषष्ठींश्राद्धदिनंतथा । व्रतंपर्वंचवस्त्राणिक्षालयेद्रजकादिना ॥ ८ ॥ अथसूचीकर्म । मृगाश्वित्रानुराधाश्विपुष्यांत्यंरोहिणीकरः । ज्येष्ठासद्वासराःसार्काःसूचीकर्मणिसंमताः ॥ ९ ॥ अथशय्यानिर्म्माणमुहूर्त्तः । रोहिणीचोत्तराज्ञेयाहस्तपुष्यपुनर्वसुः । अनूराधाश्विनीशस्ताखट्वानिर्माणकर्मणि ॥ १० ॥ शुभेयोगेशुभेवारेविदध्यात्खट्वकांनरः । मृताशौचेपंचकेषुरिक्ताऽमाविष्टिवैधृतौ ॥ ११ ॥ पितृपक्षेश्रावणेचभाद्रेमास्यशुभेदिने । वर्जयेद्भौममंदेचखट्वानिर्माणकंसदा ॥ १२ ॥

(स्त्रियोंके वालबंधमु.) रे. अ. ह. आ. मू. कृ. श्र. मृ. उ. ३ इन नक्षत्रोंमें. बुध. गुरु. शुक्र. रवि. इन वारोंमें स्त्रियोंके बालबंधनेसे (शिर गुंथानेसे) मान. धन. भोग. सुख सौभाग्य प्राप्त होता है (कई जगह मुहूर्त्तविनाभी वस्त्रधारण) राजाका दिया हुवा और विवाह आदि उत्सवमें तथा ब्राह्मणकी आज्ञा करके निषिद्ध दिनमेंभी वस्त्रधारण करलेना योग्य है ॥ ७ ॥ (वस्त्रक्षालन) पु. पु. अ. ध. ह. ५ इन नक्षत्रोंमें और शिनि रवि बुधवारके विना अन्य वारोंमें. रिक्ता ४।९।१४ षष्ठी ६ के बिना तिथियोंमें, श्राद्धदिन, व्रत.पर्व. आदिके बिना शुभ दिनमें धोबीकेपाससें वस्त्र धुवाना चाहिये ॥ ८ ॥ (सूचीकर्ममु.) मृ. चि. अनु. अ. पुष्य. रे. रो. ह. ज्ये. यह नक्षत्र.

रवि. गुरु. शु. बु. सोमवार वस्त्र सिमानेमें योग्य हे ॥ ९ ॥ (खाटवनानेकामु०) रो. उ. ३ ह. पु. पु अनु. अ. इन नक्षत्रोंमें और शुभयोग शुभवारोमें खाटबनाना शुभ है ॥ १० ॥ परतु मृत सूतकमे. या पचकोंमें. रिक्ता ४।९।१४ अमावस्या तिथिमें और भद्रा, वैधृति, श्राद्धपक्ष, श्रावण, भाद्रपद, मासमें तथा मगल. शनिवारमे खाट कदापि नहीं बनाना योग्य है ॥ ११ ॥ १२ ॥

अथखट्वाचक्रम् ॥ सूर्य्यर्क्षात्तुचतुष्कंच ४ देयंधिष्ण्यंतुमस्तके । कोण योरष्टनक्षत्रं ८ शाखायामष्ठ ८ संख्यकम् ॥ १३ ॥ खट्वामध्येत्रिकं ३ चैवबेद ४ संख्याचपादयोः । इत्थंखट्वाफलंचक्रेज्ञेयंतत्रशुभाशुभम् ॥ १४ ॥ मस्तकेचशुभंज्ञेयंकोणयोरष्टमृत्युदम् । शाखाष्ट ८ र्क्षंशुभं-प्रोक्तंत्रिकंमध्येसुखप्रदम् ॥ १५ ॥ पादेषुवेद ४ नक्षत्रंहानिमृत्युभय प्रदम् । सूर्य्यभाद्दिनभंगण्यंखट्वाचक्रेसुशोभने ॥ १६ ॥ अथनवीनपा-त्रेभोजनमुहूर्त्तः । रोहिणीयुगले २ हस्तत्रितयेरेवतीद्वये । श्रवणत्रित-येपुष्येपुनर्वस्वनुराधयोः ॥ १७ ॥ त्र्युत्तरेबुधशुक्रेज्यवारेचामृतयोगके । सुवर्णरौप्यपात्रेषुभोजनादिशुभप्रदम् ॥ १८ ॥

(खाटचक्रम्) सूर्यके नक्षत्रसे ४ नक्षत्र खाटके मस्तकका हैं, ८ नक्षत्र कोणका हैं, ८ नक्षत्र शाखाका हैं, ३ मध्यका हैं, ४ पगोंका है, इसप्रकार नक्षत्र देखके फल जानना चाहिये ॥ १३ ॥ १४ ॥ मस्तकका ४ नक्षत्र शुभ हैं, कोणका ८ मृत्युका-रक हैं, शाखाका ८ शुभ हैं, मध्यके ३ सुख देते हैं पगोंका ४ हानि, मृत्यु भय करते हैं इस तरह सूर्यके नक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिणना ॥ १५ ॥ १६ ॥ (नवीन भो-जनपात्रमु०) रो. मृ. ह. चि. स्वा. रे. अ. श्र. ध. श. पु. पु. अनु. उ. ३ इन न-क्षत्रोंमें बुध. शुक्र. गुरु. वारमें अमृतयोगमें सुवर्ण, चांदी, कांसी, पीतल, आदिके थालीमें भोजन करना शुभ है ॥ १७ ॥ १८ ॥

अथनवीनपात्रचक्रम् । सूर्यभाचंद्रपर्यंतंगणनीयंसदाबुधैः । दिक्षुदिक्षु-द्वयंन्यस्यमध्येचैकादशंन्यसेत् ॥ १९ ॥ वर्तुलाकारचक्रस्यभोक्तृपात्र-स्यनिर्णयः । बंधनंसौख्यहानीचलाभंसौख्यंमृतिस्तथा ॥ २० ॥ पुत्र-मायुःशोकवृद्धीपूर्वादिक्रमतोभवेत् । रिक्तानष्टेदुषष्ठीश्चविष्णोःसुतंविव-र्जयेत् ॥ २१ ॥ अथनित्यक्षौरमुहूर्त्तः । पुनर्वसुद्वयं २ क्षौरेश्रुतित्रयं करत्रयम् । रेवतीद्वितयंज्येष्टामृगशीर्षंचगृह्यते ॥ २२ ॥ क्षौरेप्राणहरा-

त्याज्यामघामैत्रंचरोहिणी ।उत्तराकृत्तिकावाराभानुभौमशनैश्वराः॥२३॥
रिक्ताहेयाष्टमी ८ षष्ठी ६ क्षौरेचंद्रक्षयोनिशा । संध्याविष्टयंतगंडांता-
भोजनांताश्वगोगृहम् ॥ २४ ॥

(नवीनपात्रचक्र) सूर्यके नक्षत्रसे दिनके नक्षत्रतक गिनें और दो २ दो २ नक्षत्र पात्रके पूर्व आदि आठों दिशाओंमें स्थापन करे और बीचमें ११ नक्षत्र धरके फिर फल देखैं ॥ १९ ॥ २० ॥ पूर्वआदि दिशावोंके नक्षत्रोंका तथा बीचके नक्षत्रोंका क्र-मसे, बंधन १ सौख्य, २ हार्नी, ३ लाभ, ४ सुख, ५ मृत्यु, ६ पुत्र, ७ आयु, ८ शो-क, ९ इस तरह फल जानना, और रिक्ता ४।९।१४ क्षीणचंद्रमा. छठ ६ विष्णुका श-यनमास वर्जना चाहिये ॥ २१ ॥ नित्यक्षौर 'हजामत' मु०) पु. पु. श्र. ध. श. ह. चि. स्वा. रे. अ. ज्ये. मृ. यह नक्षत्र क्षौर करानेमें श्रेष्ठ हैं ॥ २२ ॥ परंतु मघा. अनु. रो. उ. ३ कृ. और रवि. मंगल. शनि. वार और रिक्ता ४।९।१४ अष्टमी ८ छठ ६ अमावस्या. रात्रि. संध्याकाल. भद्रा. गंडांत. भोजनोत्तर. गौका घर यह हजामत करानेमें प्राणोंको हरनेवाले हैं ॥ २३ ॥ २४ ॥

अथवारेषुविशेषः । मासं १ हरेत्क्षौरमिहायुषोऽर्कःशनैश्चरःपंच ५ कु-
जस्तथाष्टौ ८ । आचार्यभृग्विदुबुधाःक्रमेणदद्युर्दशैकादशपंचसप्त॥२५॥
अथक्षौरेनिषिद्धकालापवादः । नृपाज्ञयाब्राह्मणसंमतेचविवाहकालेमृत-
सूतकेच । बद्धस्यमोक्षेक्रतुदीक्षणासुसर्वेषुशस्तंक्षुरकर्मभेषु ॥ २६ ॥
अथक्षौरेनिषिद्धकालः ॥ भुक्तोऽभ्यक्तोव्रतीयात्रारणोद्योगीकृताह्निकः ।
उत्कटाभरणोरात्रौसंध्ययोरुभयोरपि ॥ २७ ॥ श्राद्धाहेचव्यत्तीपातेव्रते
यन्यऽपराह्णके । शुभेप्सुर्नवमेचाह्निक्षुरकर्मनकारयेत् ॥ २८ ॥ अथरा-
ज्ञांश्मश्रुकर्मः । महीभृतांपंचमपंचमेऽह्निक्षौरंचकार्य्यंहितमुक्तभेषु । न-
लभ्यतेचेच्चतदुक्तधिष्ण्यंतज्ञोदयेवानिखिलंविधेयम् ॥ २९ ॥ राज्य-
कार्येनियुक्तानांनराणांभूपसेविनाम् । श्मश्रुलोमनखच्छेदेनास्तिकालवि-
शोधनम् ॥ ३० ॥

और रविवारको क्षौर करानेसे मास१ की आयु क्षय होती है और शनि५ मासकी. मंगल८मासकी आयु हरता है और गुरु. शुक्र. चंद्रमा. बुधवारको क्षौर करानेसे क्रमसे १०।११।५।७ मासकी आयु वृद्धि होती है॥२५॥ परंतु राजाकी आज्ञामें ब्राह्मणके क-हनेसे. या. विवाहमें. या. मृत्युमें. बंदीके छुटानेमें. यज्ञकी दीक्षामें क्षौर सदैवही शुभ है॥२६॥(क्षौरमें निषेधकाल) भोजनके और तैलाभ्यंगके अनंतर और व्रत (उपवास)

यात्रा जानेवाला, नित्यकर्मके बाद उत्तम आभूषण सहित तथा रात्रि संध्याकालमें श्राद्धके दिन व्यतिपात व्रतके दिन तीसरे पहर और नौवें दिन शुभ चाहे तो क्षौर नही कराना चाहिये ॥ २७ ॥ २८ ॥ और राजालोगोंको पांचवें ५ दिन पूर्व कहे हुये नक्षत्रोंमें कराना योग्य है यदि ग्राह्य नक्षत्रादि नहीं मिले तो उनको दुघडियोंमें कराना श्रेष्ठ है ॥ २९ ॥ परंतु राजाके नोकरोंको अर्थात् मंत्रि मुसद्दि आदिकोंको क्षौर करानेमें शुभ दिनकी कोई जरूरत नही है ॥ ३० ॥

अथनखदंतकृत्यम् । येषुयेषुप्रशंसंतिक्षुरकर्ममहर्षयः । तेषुतेषुप्रशंसंति नखदंतविलेखनम् ॥ ३१ ॥ अथसर्वविद्यारंभमुहूर्त्तः । हस्तादित्रितये ३ तथानिर्ऋतिभेपूर्वात्यभेष्वाश्विनीमित्रर्क्षेचमृगादिपंचसुशुभःप्रारंभ आद्यःस्मृतः । विद्यानांहरिभात्रयेचदिवसेसूर्येभृगोर्वागुरोऽनध्यायाख्यतदाद्यवर्ज्जिततिथौकेंद्रस्थितैःसद्ग्रहैः ॥ ३२ ॥ विद्यारंभेगुरुःश्रेष्ठोमध्यमौभृगुभास्करौ । मरणंशनिभौमाभ्यामविद्याबुधसोमयोः ॥ ३३ ॥ अथराजदर्शनम् । चित्रामृगानुराधासुस्वात्यांचश्रवणद्वये २ । हस्तेपुष्येचरोहिण्यामश्विन्यामुत्तरात्रये ॥ ३४ ॥ लग्नेस्थिरेराजयोगेलग्नेचबलसंयुते । शुभेयोगेशुभेचंद्रेराज्ञांदर्शनमुत्तमम् ॥ ३५ ॥ अथराजसेवामुहूर्त्तः ॥ हस्तद्वयेऽनुराधायांरेवतीयुगलेमृगे । पुष्येबुधेगुरौशुक्रेसत्तिथौ रविवासरे ॥ ३६ ॥ योनिराशिपयोर्मैत्र्यांस्वामीसेव्योऽनुजीविभिः । अथदासीदाससंग्रहेविशेषः । पूर्वोक्तेचतिथौवारेयोनिराशीशयोःशुभे । उत्तरासुचरोहिण्यांदासदास्यादिसंग्रहः ॥ ३७ ॥

और जिस नक्षत्र वारोंमें क्षौर कराना लिखा हो उन्हीं वार आदिमें नख, दंत आदिका कार्य करना शुभ है ॥ ३१ ॥ (विद्यारंभमु०) ह. चि. स्वा. मू. पू. ३ रे. अ. अनु. मृ. आ. पु. पु. अश्ले० इन नक्षत्रोंमें और गुरु शुक्र रविवारमें तथा रिक्ता ४।९। १४ अनाध्याय, तिथियोंके विना अन्यतिथियोंमें और केंद्र १।४।७।१० स्थानमें शुभ ग्रह होनेसे प्रथम विद्याका आरंभ करना श्रेष्ठ है ॥ ३२ ॥ परंतु विद्यारंभमें गुरुवार श्रेष्ठ है और शुक्र, रवि मध्यम हैं तथा शनि मंगल मृत्युकारक हैं बुध सोमको विद्या नहीं आती है ॥ ३३ ॥ (राजदर्शनमु.) चि. मृ. अनु. स्वा. श्र. ध. ह. पु. रो. अ. उ. ३ इन नक्षत्रोंमें तथा स्थिर लग्न राजयोगमें और शुभयोग शुभचद्रमामें राजासे मिलना शुभ है ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ (राजसेवामु.) ह. चि. अनु. रे. अ. मृ. पुष्य इन नक्षत्रोंमें. बुध गुरु शुक्रवारमें श्रेष्ठ तिथिमें और योनी, राशिके स्वामीकी मित्रता होनेसे रा-

जाके, या, मालिकके नोकर रहना श्रेष्ठ है, और इनहीं नक्षत्रादिकोंमें तथा उत्तरा ३ रो. में दास दासी रखना श्रेष्ठ है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

अथराज्याभिषेचनम् ॥ रेवतीद्वितयं २ पुष्योरोहिण्यांमृगमैत्रयोः । श्रवणोत्तरशक्रेषुराज्ञांस्यादभिषेचनम् ॥ ३८ ॥ सौम्यायनेसितेजीवेनास्तगेनचवृद्धगे । राज्याभिषेकःसंपत्त्यैकथितश्चमहर्षिभिः ॥ ३९ ॥ अथाभिषेकेनिषिद्धकालः । नाभिषेकःशुभोवाच्योचैत्रेचैवाधिमासके । नभूसुतेप्रसुप्तेचविष्णौरिक्तासुरात्रिषु ॥ ४० ॥ अथलग्नशुद्धिः । त्रिकोणकेंद्रत्रिधनेषुसौम्यैस्त्रिषष्ठलाभर्क्षगतैश्चपापैः । षष्ठाष्टलग्नव्ययवर्जितेनचंद्रेणराज्ञांशुभदोऽभिषेकः ॥ ४१ ॥ त्रिलाभस्थःशनिःसूर्यश्चतुर्थोवाम्बरे १० गुरुः । यस्याभिषेकःक्रियतेतत्रतस्यमहीस्थिरा ॥ ४२ ॥

(राज्याभिषेकमु.) रे. अ. पुष्य. रो. मृ. अनु. श्र. उ. ३ ज्ये. इन नक्षत्रोंमें और उत्तरायणमें तथा शुक्र बृहस्पति अस्त या वृद्ध नहीं होवे तब राज्याभिषेक श्रेष्ठ है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ परंतु चैत्र, अधिकमास, मंगलवार, विष्णुके शयनके मास, रिक्ता ४।९।१४ तिथि तथा रात्रि त्याज्य है ॥ ४० ॥ (लग्नशुद्धि) त्रिकोण ९।५। केंद्र १।४।७।१०। त्रिधन ३।२ में शुभग्रह होवे और ३।६।११। पापग्रह होवे और ६।८।१।१२ इन स्थानके विना चंद्रमा होवे ॥ ४१ ॥ और ३।११ शनिश्चर हो, ४ रवि हो, १० गुरु होवे तो राज्याभिषेक अति श्रेष्ठ जानना ॥ ४२ ॥

अत्रविशेषः । मृतेराज्ञिनकालस्यनियमोत्रविधीयते । नृपाभिषेकःकर्त्तव्योदैवज्ञेनपुरोधसा॥ ४ ३ ॥अथाश्वकृत्यम् । पुष्यश्रविष्ठाश्विनिसौम्यभेषु पौष्णानिलादित्यकराव्हयेषु । सवासवर्क्षेषुबुधैःस्मृतानिसर्वाणिकार्याणि तुरंगमानाम् ॥ ४४ ॥ अथाश्वचक्रम् ॥ अश्वाकारंलिखेच्चक्रंसाभिजिद्भानिविन्यसेत् । स्कंधेचसूर्यभात्पंचतत्पृष्ठेदशभानिच ॥ ४५ ॥ पुच्छे द्वेस्थापयेत्प्राज्ञश्चतुष्पादेचतुष्टयम् । उदरेविन्यसेत्पंचमुखेद्वेतुरगस्यच ॥ ४६ ॥ अर्थलाभोमुखेसम्यक्वाजीनश्यतिचोदरे । चरणस्थेरणेभंगः पुच्छेपत्नीविनश्यति ॥ ४७ ॥ अर्थसिद्धिर्भवेत्पृष्ठेस्कंधेलक्ष्मीपतिर्भवेत् । अथाश्वाद्यारोहणमुहूर्त्तः । पौष्णाश्विनीवरुणमारुतशीतरश्मीचित्रादितिश्रवणपाणिसुरेज्यचित्तैः । वारेषुजीवशशिसूर्यसितेंदुजानामारोहणंगजतुरंगरथेषुशस्तम् ॥ ४८ ॥

परंतु राजाके मरनेसे उसकी जगह दूसरा राजा करनेमें मुहूर्त्तकी कोई जरूरत नहीं है ॥ ४३ ॥ (अश्वकृत्य) पुष्य. श्र. अश्वि. मृ. रे. स्वा. पुन. ह. ध. इन नक्षत्रोंमें घोडा लेना तथा देना श्रेष्ठ है ॥ ४४ ॥ (अश्वचक्र) अश्वके आकारका चक्र लिखके अभिजित्साहित संपूर्ण नक्षत्र धरै, जैसे, सूर्यके नक्षत्रसे ५ नक्षत्र स्कंधपें और १०पीठपें,२पुच्छपर,४पगों (पैरों)पर,५ पेटपर,२मुखपर, नक्षत्र धरके फल देखै॥४५॥ ॥ ४६ ॥ मुखका २ नक्षत्र धनलाभ करै, पेटके ५ नक्षत्रोंमें घोडा मरजावै, पगोंके ४ नक्षत्रोंमें संग्राममें भगावे, पुच्छके २ नक्षत्रोंमें स्त्री पुत्रनाश होवे, पीठके १० धनलाभ और स्कंधके ५ नक्षत्रोंमें लक्ष्मीवान होवे ॥ ४७ ॥ (अश्वआदिकोंपर चढनेका मु.) रे. अ. श. स्वा. मृ. चि. पुन. श्र. ह. पुष्य. ध. इन नक्षत्रोंमें, तथा गुरु चंद्र रवि शुक्र बुधवारमें हस्ती, घोडा, रथ आदिपें चढना श्रेष्ठ है ॥ ४८ ॥

अथगजकृत्यम् । श्रवणादित्रयेहस्तत्रयेवारेवतीद्वये । मृगेपुष्येऽनुराधायांरोहिण्यांत्र्युत्तरेतथा ॥ ४९ ॥ पुनर्वसौशुभेवारेगजकार्यंशनेर्दिने । अथरथकृत्यम् । पुष्येपुनर्वसौज्येष्ठानुराधारेवतीद्वये ॥ ५० ॥ श्रवणादित्रिभेहस्तत्रितयेरोहिणीमृगे । सार्केसौम्यदिनेसौम्यविलग्नेरथकर्मकृत् ॥ ५१ ॥ अथगजाश्वोष्ट्राणांपल्याणमुहूर्त्तः । श्रवणेशतभेहस्तेपुष्येमूलेमृगेऽश्विभे । पुनर्वसौगजाश्वोष्ट्रपल्याणकरणंशुभम् ॥ ५२ ॥ अथगवांक्रयविक्रयमुहूर्त्तः । पूर्वामैत्रद्वयंमूलेवासवोरेवतीकरे । पुनर्वसुद्वयंग्राह्यंपशूनांक्रयविक्रये ॥ ५३ ॥ अथपशुनिर्गममुहूर्त्तः ॥ अमावास्याष्टमी त्याज्यापूर्णिमाचचतुर्दशी । रविवारोवर्जनीयःपशूनांचविनिर्गमे ॥५४॥

(गजकृत्य) श्र. ध. श. ह. चि. स्वा. रे. अ. मृ. पुष्य. अनु. रो. उ. ३ पुन. इन नक्षत्रोंमें और शुभवार, शनिवारमें गज (हस्तिका) लेना देना श्रेष्ठ है ॥४९॥ (रथकृत्य) पु. पु. ज्ये. अनु. रे. अ. श्र. ध. श. ह. चि. स्वा. रो. मृ. इन नक्षत्रोंमें तथा आदित्य गुरु शुक्र बुध चंद्रवारमें और शुभलग्नमें रथका कार्य श्रेष्ठ है ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ और श्र. श. ह. पुष्य. मू. मृ. अ. पुन. इन नक्षत्रोंमें गज उष्ट्रका पल्याण करना शुभ है ॥ ५२ ॥ (गौके क्रयविक्रयमु.) पू. ३ अनु. ज्ये. मू. ध. रे. ह. पुन. पुष्य इन नक्षत्रोंमें गौआदि पशुओंका क्रयविक्रय करना योग्य है ॥ ५३ ॥ और अमावस्या३० अष्टमी ८ पूर्णिमा१५ चतुर्दशी१४आदित्यवार पशुवोंके देनेमें शुभ है॥५४॥

चित्रोत्तरारोहिणीचश्रवणोपिविवर्जितः । एतेषुपशुजातीनामशुभंनिर्गमेभवेत् ॥ ५५ ॥ अथपशुगृहप्रवेशः । उत्तरासुविशाखायांरोहिण्यांच

पुनर्वसौ । नवम्यांचचतुर्दश्यामष्टम्यांनानयेत्पशुम् ॥ ५६ ॥ अथोष्ट्रमहिष्याद्यानयनेविशेषः ॥ धनिष्ठाद्वितयेपूर्वाषाढातिर्यङ्मुखोडुषु । अजाविमहिषोष्ट्राणांकृत्यंचाश्वतरीशुनाम् ॥ ५७ ॥ अथवल्लीवृक्षादिरोपणम् । रोहिण्युत्तरचित्रासुमैत्रेपुष्येकरेमृगे । रेवत्यांवारुणेचाश्वेद्विदैवेशुभवासरे ॥ ५८ ॥ स्थिरेलग्नेशुभंप्रोक्तंवल्लीवृक्षादिरोपणम् । अथसर्ववस्तुक्रयविक्रयमुहूर्तः । पुष्योभाद्रपदायुग्मंस्वातीचश्रवणाश्विनी । हस्तोत्तरामृगोमैत्रंतथाश्लेषाचरेवती ॥ ५९ ॥ ग्राह्याणिभानिचैतानिक्रयविक्रयणेबुधैः । चंद्रभार्गवजीवाश्ववाराःशकुनमुत्तमम् ॥ ६० ॥

और चि. उ. ३ रो. श्र. इन नक्षत्रोंमें पशुजातिका निर्गम अशुभ है ॥५५॥ और उ. ३ वि. रो. पुन. नवमी ९ चतुर्दशी १४ अष्टमीको ८ गौआदि पशु नहीं ल्याना-योग्य है ॥ ५६ ॥ और ध. श. पू. ज्ये. पुन. ह. अ. मृ. रे. अनु. स्वा. चि. इन नक्षत्रोंमें बकरा महिष उष्ट्र खच्चर श्वान इत्यादि पशुवोंका लेना श्रेष्ठ है ॥ ५७॥ (वेल वृक्ष आदिके लगानेका मु.) रो. उ. ३ चि. अनु. पुष्य. ह. मृ. रे. श. अश्वि. वि. और शुभवारमें तथा स्थिर लग्नमें वेल दरखत आदि लगाना शुभ है ॥ ५८ ॥ (वस्तुक्रयविक्रयमु.) पु. भाद्रपद २ स्वा. श्र. अश्वि. ह. उ. ३ मृ. अनु. आश्ले. रे. इन नक्षत्रोंमें और सोम शुक्र गुरु वारमें तथा शुभ शकुनमें क्रयविक्रय करना श्रेष्ठ है ॥५९॥६० ॥

अथविपणिवाणिज्यमुहूर्त्तः । अनूराधोत्तरापुष्येरेवतीरोहिणीमृगे । हस्तचित्राश्विभेकुर्याद्वाणिज्यंदिवसेशुभे ॥ ६१ ॥ कुंभराशिमपहायसाधुषुद्रव्यकर्मभवमूर्तिवर्त्तिषु । अव्ययेष्वशुभदायिषूद्गमेभार्गवेविपणिरिंदुसंयुते ॥ ६२ ॥ अथनिधिद्रव्यादिवृद्धिसंग्रहमुहूर्त्तः । पुष्येमृगेऽनुराधायांश्रवणत्रितयेऽश्विभे । पुनर्भैत्र्येविशाखायांनिधेर्वृद्धिश्चसंग्रहः॥ ६३ ॥ अथऋणादानमुहूर्तः । संक्रांतौवृद्धियोगेचहस्तर्क्षेरविभौमयोः । नचग्राह्यमृणंयस्मात्तद्वंशेतत्स्थिरंभवेत् ॥ ६४ ॥ ऋणंभौमेनगृह्णीयान्नदेयंबुधवासरे । ऋणच्छेदंकुजेकुर्यात्संचयंसोमनंदने ॥ ६५ ॥ अथकोष्ठादौधान्यस्थितिः । पुनर्भेमृगशीर्षेऽन्त्येऽनुराधाश्रवणत्रये । हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्येरोहिण्यामुत्तरात्रये ॥ ६६ ॥

(दुकान खोलनेका मु.) अनु. उ. ३ पुष्य. रे. रो. मृ. ह. चि. अश्वि. इन नक्षत्रोंमें तथा शुभ वारमें और कुंभ राशिके विना शुक्र चंद्रमासहित लग्नमें तथा

दूसरे दशवें ग्यारहवें लग्नमें शुभ ग्रह होनेसे दुकान खोलना श्रेष्ठ है परंतु बारहवें अशुभ ग्रह नहीं होना चाहिये ॥ ६१ ॥६२॥ (खजानेमें धनसंग्रह करनेका मु.) पुष्य मृ. अनु. श्र. ध. श. अश्वि. पुन. रे. वि. इन नक्षत्रोंमें खजानेमें धन रखना चाहिये ॥६३॥ सक्रांतिमें वृद्धि योगमें तथा हस्तनक्षत्र रवि भौम वारमें किसीका करजा नही करना कारण उसका ऋण (करजा) वंशमें स्थिर होजाता हे ॥ ६४ ॥ और मंगलको किसीका द्रव्य उधारा नहीं लेना तथा बुधवारको किसीका पीछा नहीं देना चाहिये अर्थात् मंगलवारको करजा उतारना और बुधवारको धनसंचय करना श्रेष्ठ है ॥ ६५ ॥ पुन. मृ. रे. अनु. श्र. ध. श. ह. चि. स्वा अश्वि. पुष्य. रो. उ. ३ यह नक्षत्र तथा गुरु शुक्र चद्र रविवार कोठे आदिमें धान रखना शुभ हे ॥ ६६ ॥

गुरौशुक्रेरवींद्वोःसत्कोष्ठादौधान्यरक्षणम् ॥ अथहलप्रवाहः।अनूराधाचतुष्केतुमघादितियुगेकरे । स्वातिश्रुतिविधिद्वंद्वेरेवत्यामुत्तरासुच ॥६७॥ गोद्वये २ स्त्री ६ झषे १२ हालःकार्योहेयःशनिःकुजः । षष्ठी ६ रिक्ता ४।९।१४ द्वादशीच १२ द्वितीया २ द्वय २ पर्वच १५ ॥६८॥ अथहलचक्रम् । त्रिभि ३ स्त्रिभि ३ स्त्रिभिः ३ पंच ५ त्रिभिः ३ पंच ५ त्रिभि ३ द्वयम् २ । सूर्यभाद्दिनभंयावद्धानिवृद्धीहलेक्रमात् ॥६९॥ अथकाष्ठगोमयपिंडसंचयादिचक्रम्। सूर्यर्क्षाद्रसभै ६ रधःस्थलगतैःपाकोरसैःसंयुतःशीर्षेयुग्म २ मितैःशवस्यदहनंमध्येयुगैःसर्पभीः । प्रागाशादिषुवेदभैःस्वसुहृदांस्यात्सङ्गमोरोगभीःक्वाथादेःकरणंसुखंचगदितं काष्ठादिसंस्थापने ॥७०॥ सूर्यभाद्रस ६ तर्का ६ ब्धि ४ नाग८वेदा ४ भिजित्सह । शुभाशुभंक्रमाज्ज्ञेयंकरीषादिषुसंग्रहे ॥७१ ॥ अथतृणकाष्ठसंग्रहादौनिषिद्धकालः। वासवोत्तरदलादिपंचकेयाम्यदिग्गमनगेहगोपनम्। प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहःशय्यकावितरणंचवर्जयेत् ॥ ७२ ॥

(हल जोतनेका मु.) अनु. ज्ये. मू. पू. म. पुन. पुष्य. ह. स्वा. श्र. रो. मृ. रे. उ. ३ इन नक्षत्रोंमें तथा वृष २ मिथुन ३ कन्या ६ मीन १२ लग्नमें और शनि मंगल षष्ठी ६ रिक्ता ४।९।१४ द्वादशी १२ द्वितीया २ ग्रहणके विना शुभ दिनमें हल जोतना चाहिये ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ (हलचक्र) सूर्यके नक्षत्रसे ३ नक्षत्र हानि करै । फिर ३ वृद्धि करै । ३ हानी । ५ वृद्धि । ३ हानि । ५ वृद्धि । ३ हानि । और २ वृद्धि हल जोतनेमें करै ॥ ६९ ॥ (काष्ठ गोमय संचय करनेका चक्र) सूर्यके नक्षत्रसे छः ६ नक्षत्रोंमें रसका पाक । फिर २ नक्षत्रोंमें मुर्देको दाह । ४ नक्षत्रोंमें सर्प-

भय । ४ नक्षत्रोंमें सुहृत्समागम । ४ नक्षत्रोंमें रोग । ४ नक्षत्रोंमें भय । फिर ४ नक्षत्रोंमें काष्ठसंचय करै तो सुख होताहै ॥ ७० ॥ और सूर्यके नक्षत्रसे ६ नक्षत्र शुभ हैं फिर ६ अशुभ हैं और ४ शुभ । ८ अशुभ । ४ शुभ गोमयके संचय करनेमें जानना चाहिये ॥ ७१ ॥ परंतु धनिष्ठाका उत्तरार्द्ध श. पू. भा. उ. भा. रे. यह पंच नक्षत्र दक्षिण दिशाके गमनमें और घरके आच्छादनमें प्रेतदाहमें तथा काष्ठके संग्रहमें और शय्याके विणने (बिनाना) में जरूर वर्जना योग्यहैं ॥ ७२ ॥

अथगृहाच्छादनमुहूर्त्तः । हस्तत्रये ३ धातृयुगेसराधाधस्त्रादियोगेगृहगोपनंच । नंदांपरित्यज्यकुहूंचरिक्तांभौमार्कजादित्यदिनांश्चनिचान् ॥ ॥ ७३ ॥ अथधर्मक्रियामुहूर्त्तः । रेवतीद्वितयेहस्तत्रितयेरोहिणीद्वये । श्रवस्त्रयोत्तरापुष्येपुनर्वस्वनुराधयोः ॥ ७४ ॥ ज्ञेज्यशुक्रेंदुसूर्येषुज्ञेज्यषड्वर्गशालिनि । लग्नेजीवयुतेजीवेबलिष्ठेधर्ममाचरेत् ॥ ७५ ॥ अथशांतिकपौष्टिककर्म । पुनर्वसुद्वयेस्वातौत्र्युत्तरेश्रवणत्रये।रेवतीद्वितयेहस्तेनुराधारोहिणीद्वये।शांतिकंपौष्टिकंकर्मपुण्याहेकीर्त्तितंबुधैः ॥७६॥ अथमंत्रदीक्षा । रोहिण्यांत्र्युत्तरेमौंजीबंधनोदितभादिषु। मंत्रदीक्षाशुभेचाह्निग्रहणेप्यागमोदिता ॥७७॥ अथमंत्रयंत्रव्रतोपवासादिमुहूर्त्तः । उफाहस्ताश्विनीकर्णविशाखामृगभेहानि । शुभेसूर्ययुतेशस्तंमंत्रयंत्रव्रतादिकम् ७८

(गृहाच्छादनमु.) ह. चि. स्वा. रो. मृ. अनु. इन नक्षत्रोंमें और नंदा १।६।११। अमावस्या ३० रिक्ता ४।९।१४ इनके विना तिथियोंमें मंगल शनि रविके विना वारोंमें घरका छाणा शुभ है ॥७३॥ (धर्मक्रियारंभमु.) रे. अ. ह. चि. स्वा. रो. मृ. श्र. ध. श. उ. ३ पुष्य. पुन. अनु. इन नक्षत्रोंमें और बुध गुरु शुक्र सोम रविवारमें और बुध गुरुके शुद्ध षड्वर्गमें और गुरुयुक्त लग्नमें धर्मका कार्य करै ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ (शांतिपुष्टिकर्ममु०) पुन. पु. स्वा. उ.३ श्र. ध. श. रे. अश्वि. ह. अनु. रो. मृ. इन नक्षत्रोंमें तथा पुण्य दिनमें शांति पुष्टि कार्य करना ॥ ७६॥ रो. उत्तरा ३ में तथा यज्ञोपवीतके नक्षत्रोंमें और शुभ दिनमें तथा ग्रहणमें दीक्षा करनी चाहिये ॥७७॥ उ. फा. ह. अ. श्र. वि. मृ. इन नक्षत्रोंमें शुभ तथा रविवारमें मंत्र यंत्र व्रत आदि कार्य करना॥७८॥

अथहोमादौवह्निवासफलम् । सैका १ तिथिर्वारयुताकृता ४ प्ताशेषे गुणे ३ ऽभ्रे०भुविवह्निवासः । सौख्यायहोमेशशि १ युग्म २ शेषेप्राणार्थनाशोदिविभूतलेच ॥ ७९ ॥ अग्नेःस्थापनवेलायांपूर्णाहुत्यामथापिवा । आहुतिर्वह्निवासश्चविलोक्यौशांतिकर्मणि । संस्कारेषुविचारोस्य

नकार्योनापिवैष्णवे। नित्येनैमित्तिकेकार्येनचाब्देमुनिभिःस्मृतः॥८०॥ अथहोमेखेटाहुतिफलम्। सूर्यभात्त्रि ३ त्रिभेचांद्रेसूर्यवित्शुक्रपंगवः। चंद्रारेज्यागुशिखिनोनेष्टाहोमाहुतिःखले ॥ ८१ ॥ अथदैवात्कृतस्य- पापग्रहमुखेहवनस्यशांतिः। क्रूरग्रहमुखेचैवसंजातेहवनेशुभे। शांतिं विधायगांदद्याद्ब्राह्मणायकुटुंबिने॥ ८२ ॥ आयसींप्रतिमांकृत्वानिक्षि- पेत्तामधोमुखीम्। गोमूत्रमधुगंधाद्यैरर्चितांप्रतिमांततः ॥ ८३ ॥ कुंडे निधायसंपूज्यतत्रहोमोविधीयते॥ अथदत्तकपुत्रपरिग्रहमुहूर्त्तः। हस्ता- दिपंचक ५ भिषकूवसुपुष्यभेषुसूर्यक्षमाजगुरुभार्गववासरेषु। रिक्ता ४। ९।१४ विवर्जिततिथिष्वालि ८ कुंभ ११ लग्नेसिंहे ५ वृषे २ भवति दत्तपरिग्रहोयम् ॥ ८४ ॥

(होमे अग्निवासमु.) शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे लेके दिनकी तिथितक गिने फिर१ मिलावै और ४ को भाग देवै यदि ३ या, शून्य बंचे तो पृथ्वीमें अग्निको वास जानना सो यह अग्निका वास होममें सुखकरता है और यदि १।२ बंचे तो प्राण धनका नाश होवे और अग्निका वास स्वर्ग पातालमें जानना चाहिये ॥ ७९ ॥ परंतु यह अग्निवास विवाह आदि सस्कारोंमें तथा विष्णुके यज्ञमें और नित्यके अग्निहोत्रादि- कर्मे, तथा मूलशांत्यादिक नैमित्तिक कर्ममें और जन्मदिन निमित्तक कार्यमें नहीं देखना चाहिये ॥ ८० ॥ (ग्रहोंके मुखमें आहुतिका फल) सूर्यके नक्षत्रसे दिनके न- क्षत्रतक गिनै और तीन ३ तीन नक्षत्र क्रमसे सूर्य बुध शुक्र राहु चंद्र मंगल गुरु शनि केतुके मुखका है सो अशुभ ग्रहके मुखके नक्षत्रोंमें आहुति अशुभ है ॥ ८१ ॥ यदि क्रूर ग्रहके मुखमें आहुती दी जावे तो शांति करके ब्राह्मणके अर्थ गौ देनी चाहिये ॥ ८२ ॥ अथवा लोहेकी मूर्ति बनाके अधोमुखी कुंडमें रखैं फिर गोमूत्रस- हित गंधादिकोंसे पूजा करै फिर उसके ऊपर हवन करे तो दोष नहीं है॥८३॥ (पुत्र खोले (दत्तक) लेनेका मु.) ह.चि.स्वा.वि.अनु.अश्वि.ध.पुष्य. इन नक्षत्रोंमें और रवि मंगल गुरु शुक्रवारकों रिक्ता ४।९।१४ विना अन्य तिथियोंमें और वृश्चिक ८ कुंभ ११ सिंह ५ वृष २ लग्नमें पुत्र खोले लेना चाहिये ॥ ८४ ॥

अथऔषधकरणंतत्सेवनंच। हस्तत्रयेनुराधायांमूलेपुष्येश्रवस्त्रये। मृग- भेरेवतीयुग्मेपुनर्वस्वोर्विजन्मभे। ज्ञेंदुशुक्रेज्यसूर्याणांवासरेसत्तिथावपि ॥ ८५ ॥ द्विःस्वभावेशुभेलग्नेशुद्धेद्यून ७ मृति ८ व्यये १२। भैष- ज्यंशुभदंप्रोक्तंदृष्ट्वाशकुनमुत्तमम् ॥ ८६ ॥ अथरसोत्पादनंरससेवनंच।

विशाखाकृत्तिकामूलेधनिष्ठायांकरेमृगे । ज्येष्ठायामार्द्रभेसौम्यवासरेषु रसक्रिया ॥ ८७ ॥ हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्येऽनुराधांत्येश्रवस्त्रये । पुनर्भेमृगशीर्षेर्केभौमेज्येरसभक्षणम् ॥ ८८ ॥ अथवातरोगादौतैलोपसेवनम् । हित्वाश्लेषामघामूलंद्वीशार्द्राभरणीद्वयम् । मंदेऽब्जेज्ञेस्थितिस्तैलेतृतीयादित्रिकेतिथौ ॥ ८९ ॥ अथरक्तविमोक्षणंविरेकवमनंच । हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्येशतभेरोहिणीद्वये । श्रवणेचानुराधायांज्येष्ठायांरक्तमोक्षणम् ॥ ९० ॥ गुरुभौमार्कवारेषुकार्यंशुभतिथौतथा । विरेकोवमनंशुक्रेचंद्रेचैवोक्तभादिषु ॥ ९१ ॥

(औषध लेनेका मु०) ह. चि. स्वा. अनु. मू. पुष्य. श्र. ध. श. मृ. रे. अश्वि. पुन. जन्मनक्षत्र विना इन नक्षत्रोंमें, बुध सोम शुक्र गुरु रविवारमें तथा शुभ तिथियोंमें, और सप्तम ७ अष्टम ८ द्वादश १२ स्थानोंमें ग्रहरहित द्विःस्वभाव लग्नमें औषधी लेना श्रेष्ठ है परंतु शकुन उत्तम देखना चाहिये ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ वि. कृ. मू. ध. ह. मृ. ज्ये. आ. इन नक्षत्रोंमें तथा शुभ वारोंमें रस बनाना शुभ है ॥ ८७ ॥ और ह. चि. स्वा. आश्वि. पुष्प. अनु. रे. श्र. ध. श. पुन. मृ. इन नक्षत्रोंमें तथा मंगल गुरुवारमें रस भक्षण करना शुभ है ॥ ८८ ॥ और आश्लेषा. मघा. मूल. विशाखा. आर्द्रा. भरणी. कृत्तिका इन नक्षत्रोंके विना अन्य नक्षत्रोंमें और शनि सोम बुधवारमें तृतीया. चतुर्थी पंचमी तिथिमें तेल खाना श्रेष्ठ है ॥ ८९ ॥ ह. चि. स्वा. आश्वि. पुष्य. श. रो. मृ. श्र. अनु. ज्ये. इन नक्षत्रोंमें और गुरु भौम रविवारको तथा शुभतिथिको रक्तमोचन (खून कढाना) और पूर्वोक्त नक्षत्रोंमें शुक्र सोमवारमें जुलाब, वमन करना श्रेष्ठ है ॥ ९० ॥ ९१ ॥

अथतप्तलोहदाहः। शतचित्राऽश्विनीमूलेविशाखाकृत्तिकार्द्रभे। ज्येष्ठाऽऽश्लेषेकुजेर्केगंक्रूरलोहाग्निभैषजम् ॥ ९२ ॥ अथरोगोत्पत्तौनक्षत्रवशात्पीडादिनसंख्या । अश्विनीकृत्तिकामूलेज्वरार्त्तोनववासराः । रोहिण्यामुत्तराभाद्रेपुनर्वसौचपुष्यभे ॥ ९३ ॥ उफायांवासराःसप्तमघायांविंशतिस्तथा । शतभेभरणीचित्राश्रवेचैकादशस्मृताः ॥ ९४ ॥ धनिष्ठायांविशाखायांहस्तभेपक्षएवच । मासंमृगोत्तराषाढेकृच्छ्रादंत्यानुराधयोः ॥ ९५ ॥ पूर्वात्रयेतथाऽऽश्लेषाज्येष्ठार्द्रास्वातिभेष्वपि । रोगोत्पत्तिर्भवेद्यस्यमरणंतस्यनिश्चितम् ॥ ९६ ॥

श. चि. अश्वि. मू. वि. कृ. आ. ज्ये. आश्ले. इन नक्षत्रोंमें मंगल सूर्य शनिवारमें लोहका दाग लगाना शुभहै ॥ ९२ ॥ (रोगकी उत्पत्तिमें नक्षत्रोंके पीडाका दिन) अश्विनी. कृत्तिका. मूलमें ज्वर चढे तो नौ ९ दिन रहै और रो. उ. भा. पुन. पुष्य. उ. फा. इनमें सात दिन ७, मघामें २० दिन, श. भ. चि. श्र. में ११ दिन, ध. वि. ह. में १५ दिन, मृ. उ. षा. में १ मासतक और रे. अनु. बहुत दुःखसे ज्वर दूर हो ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ पू. ३ आश्ले. ज्ये. आ. स्वा. इन नक्षत्रोंमें ज्वर चढा हो तो मृत्युकारक है ॥ ९६ ॥

अथज्वरोत्पत्तौअनिष्टयोगः । आश्लेषाभरणीमूलेस्वातीपूर्वार्द्रभेतथा । शतभेपापवारेचप्रतिपद्द्वादशीदिने ॥ ९७ ॥ चतुर्दश्यांतथाष्टम्यांपौर्णिमायांज्वरोदयः । सनरोमृत्युमाप्नोतिस्ववैद्येनापिरक्षितः ॥ ९८ ॥ अथनक्षत्रशांतिप्रकारः । रोगशांतिंप्रवक्ष्यामिरोगार्त्तानांशरीरिणाम् । बलिपूजांगहोमैश्चजपब्राह्मणभोजनैः ॥ ९९ ॥ यस्मिन्धिष्ण्येयदानृणांरोगःसंजायतेतदा । तद्धिष्ण्यपूजाकर्त्तव्यातदीश्वरसुतुष्टये ॥ १०० ॥ अथरोगनिर्मुक्तस्नानम् । मघापुनर्वसुस्वातीरोहिणीषूत्तरात्रये । आश्लेषायांचरेवत्यांभार्गवेचंद्रवासरे ॥ १०१ ॥ नस्नायाद्रोगनिर्मुक्तःशुभेचंद्रेतथैवच । रिक्तायांनिशिभौमार्कवासरेचरलग्नके ॥ १०२ ॥ दुष्टचंद्रेतथाविष्ट्यांपाताद्यैर्दूषितेहनि । रोगमुक्तोनरःस्नायाद्दानंकुर्यादनंतरम् ॥ १०३ ॥

और आश्ले. भ. मू. स्वा. पू. ३ आ. श. इन नक्षत्रोंमें तथा पापवारमें और १।१२। १४।८।१५ इन तिथियोंमें ज्वर चढे तो रोगीकी मृत्यु होना चाहिये यदि अश्विनीकुमारही रक्षा करैं ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ (रोगशांति) रोगियोंके रोगोंकी शांति लिखतेहैं बलि, पूजा, होम, जप, ब्राह्मणभोजन इत्यादि कर्मोंके करनेसे रोग दूर होताहै ॥ ९९ ॥ और जिस नक्षत्रमें ज्वर होवे उसी नक्षत्रके स्वामीकी पूजा करें तो रोगशांति होवे ॥ १०० ॥ म. पुन. स्वा. रो. उ. ३ आश्ले रे. इन नक्षत्रोंमें और शुक्र सोमवारमें तथा श्रेष्ठ चंद्रमामें रोगी स्नान नहीं करै अर्थात् रिक्ता ४।९।१४ तिथि रात्रि मंगल आदित्यवार चर लग्न अशुभ चंद्रमा भद्रा व्यतीपात आदि निषेध दिनमें रोगीकों स्नान करना योग्यहै ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥

अथसर्पदंशेअनिष्टम् । विशाखाकृत्तिकामूलेरेवत्यार्द्रामघासुच । ऋक्षेऽश्लेषाभिधानेचसर्पदष्टोनजीवति ॥ १०४ ॥ अथसेतुबंधनं । त्र्युत्तरे रोहिणीस्वातीमृगेर्केमंगलेगुरौ । सेतूनांबंधनंशस्तंशुभेलग्नेशुभेक्षिते ॥

॥ १०५ ॥ अथवत्सवासचक्रम् । भ्रमत्यैंद्रीदिशंवत्सोमासानांचत्रिकं-
त्रिकं।आदौभाद्रपदंकृत्वासव्यतोदिक्चतुष्टयम् ॥ १०६ ॥ यात्रांविवा-
हंसंबंधंद्वारंचगृहहर्म्ययोः । भूपतेर्मिलनंयुद्धंवत्सस्याभिमुखंत्यजेत् ॥
॥१०७॥अथग्रामवासफलम् । ग्रामोयत्रभवेद्दक्षेतदाद्याःसप्त ७ मस्तके।
पृष्ठेसप्त ७हृदिसप्त७पादेसप्त७चतारकाः॥१०८॥ मस्तकेचधनीमान्यः
पृष्ठेहीनश्चानिर्धनः । हृदयेसुखसंपत्तिःपादेपर्यटनंफलम् ॥ १०९ ॥

वि.कृ.मू.रे.आ.म.आश्ले. इन नक्षत्रोंमें जिसको सर्प खावे (काटे) सो मृत्युप्राप्त होताहै॥१०४॥ (सेतुबंधमु०)उ.३रो.स्वा.मृ. इन नक्षत्रोंमें मंगल गुरुवारमें शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसहित शुभ लग्नमें पुल बांधना शुभ है ॥१०५॥ (वत्सवासचक्रम्) पूर्वआदि चारों दिशाओंमें क्रमसे वाम मार्गसे भाद्रपद आदि तीनतीन ३ मासोंमें चौथी चौथी दिशामें वत्सरूप देव भ्रमता है अर्थात् भाद्रपद आश्विन कार्तिकको पूर्वमें । और मार्ग. पौष. माघको दक्षिणमें, फा. चै. वै. को पश्चिममें तथा ज्ये. आ. श्रा. मासको उत्तरमें भ्रमता है सो इनके साह्मने यात्रा विवाद संबंध गृह आदिके द्वार नृपतिदर्शन युद्ध नहीं करना चाहिये ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ (ग्रामवासफल) गांवके नक्षत्रसे अपने नक्षत्रतक गिनै जिसमें प्रथम ७ नक्षत्र मस्तकका हैं सो धनवान् तथा मानयुक्त करै फिर पीठका ७ नक्षत्र सो दरिद्री मानहीन करै हृदयका ७ सुखसंपत्ति करै और पगका ७ नक्षत्र हैं सो फिरावै ॥ १०८ ॥ १०९ ॥

अथसेवाचक्रम् । सेवाचक्रेसप्तमौलौपृष्ठेसप्तचतारकाः । कुक्षौसप्तपदेसप्त-
लिखेदभिजितासह ॥ ११०॥ स्वामिभाद्भृत्यभंगण्यंभृत्यभात्स्वामिभंत-
था । सत्फलंमस्तकेकुक्षौनिष्फलंपादपृष्ठयोः ॥ १११ ॥ स्ववर्गंद्विगु-
णीकृत्यपरवर्गेणयोजयेत् । अष्टभिश्चहरेद्भागंयोऽधिकःसऋणीभवेत् ॥
॥ ११२ ॥ इतिश्रीबीकानेरराज्यान्तर्गतश्रीरत्नगढनगरनिवासिनापं-
डितगौडवैद्यश्रीचतुर्थीलालशर्मणाविरचिते अद्भुतेमुहूर्त्तप्रकाशेनानामुहू-
र्त्तप्रकरणंसमाप्तम् ॥ ४ ॥ चतुर्थम् ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

(सेवाचक्र) स्वामीके नक्षत्रसे नोकरके नक्षत्रतक गिनै और नोकरके नक्षत्रसे स्वामीके नक्षत्रतक गिनै जिनमें प्रथम ७ नक्षत्र मस्तकका हैं सो शुभ हैं और ७ नक्षत्र पृष्ठका निष्फल हैं फिर ७ कुक्षिका शुभ हैं और ७ पगोंका निष्फल जानना॥११०॥ ॥ १११ ॥ (वर्गमिलन) प्रथम वर्ग अर्थात् गरुडके वर्गसे अपने वर्गतक गिनके दूणा करै फिर पशु. गाम. या. मनुष्य आदि दूसरेके वर्गकी संख्या मिलावै और आठको

भाग देवै जो अंक बचें सो अलग रखदेवै इसी तरह दूसरेके वर्गको दूणा करके अपने वर्गको मिलावै अनंतर आठका भाग देके शेष अंकको जुदा रखै जिसका अंक जादा होवे सोही (ऋणी) करजेको देनेवाला होताहै अर्थात् दूसरेका विशेष अंक बचें तो शुभहै और अपना अंक कमती शुभ जानना ॥ ११२ ॥ इति मुहूर्त्तप्रकाशे नानामुहूर्त्तप्रकरणम् ॥ ४ ॥

संस्कार प्रकरणम् ५।

॥ अथसंस्कारप्रकरणम् ॥ तत्रादौगर्भाधानम् । ऋतौतुप्रथमेकार्यंपुन्नक्षत्रेशुभेदिने । मघामूलांत्यपक्षांतंमुक्त्वाचंद्रेबलेसति ॥ १ ॥ ऋतुःस्वाभाविकःस्त्रीणांरात्रयःषोडशस्मृताः । तासामाद्याश्चतस्रस्तुनिंदितैकादशीचया ॥२॥ त्रयोदशीचशेषाःस्युःप्रशस्तादशवासराः । युग्मासुपुत्राजायंतेस्त्रियोऽयुग्मासुरात्रिषु ॥३ ॥ अथवर्ज्यकालः । उपप्लवेवैधृतिपातयोश्च विष्ट्यांदिवापारिघपूर्वभागे । संध्यासुपर्वस्वपिमातृपित्रोर्मृतेन्हिपत्नीगमनंविवर्ज्यं ॥ ४ ॥ षष्ठ्यष्टमीपंचदशीचतुर्थीचतुर्दशीमप्युभयत्रहित्वा । शेषाःशुभाःस्युस्तिथयोनिषेकेवाराःशशांकार्यसितेंदुजाश्च ॥ ५॥ अथनक्षत्राणि। विष्णुप्रजेशरविमित्रसमीरपौष्णमूलोत्तरावरुणभानिनिषेककार्ये। पूज्यानिपुष्यवसुशीतकराश्विचित्रादित्याश्चमध्यमफलाविफलाःस्युरन्ये॥६

अथ संस्कारप्रकरणं प्रारभ्यते ॥ प्रथम गर्भाधानका मुहूर्त्त लिखते हैं। प्रथम ऋतुकालमें, और पुरुष संज्ञावाले शुभ नक्षत्रोंमें, मघा. मूल. पक्षांतको त्यागके बलयुक्त चंद्रमामें गर्भाधान संस्कार करना योग्यहै ॥ १ ॥ स्त्रियोंके स्वभावसेही ऋतुकालकी १६ रात्रिहैं उनमें आद्यकी चार ४ रात्री और ग्यारहवी ११ रात्रि तथा तेरहवी १३ रात्रि अशुभहै और बाकीकी १० रात्रि शुभ जानना और उनमें युग्म रात्रियोंमें स्त्रीके गर्भ रहनेसे पुत्र होताहै तथा विषम रात्रियोंमें पुत्री होतीहै ॥२॥ ३ ॥ (स्त्रीसंगमें वर्ज्यकाल) ग्रहण वैधृति व्यतिपात भद्रादिन परिघ योगका पूर्वार्द्ध संध्याकाल पर्व मातापिताके श्राद्धका दिन स्त्रीसंगमें त्याग देवै ॥ ४ ॥ तथा षष्ठी ६ अष्टमी ८ पूर्णिमा १५ चौथ ४ चौदश १४ तिथियोंके विना अन्य तिथि और सोम. गुरु. शुक्र. बुध. यह वार गर्भाधानमें श्रेष्ठहैं ॥ ५ ॥ और श्र. रो. ह. अनु. स्वा. रे. मू. उ. ३ श. यह नक्षत्र श्रेष्ठहैं तथा पुष्य. ध. मृ. अश्वि. चि. पुन. यह नक्षत्र गर्भाधानमें मध्यमहैं बाकीका नक्षत्र निषिद्ध जानना ॥ ६ ॥

अथपुंसवनंसीमंतोन्नयनंच । आर्द्रात्रयं ३ भाद्रयुग्मं २ मृगःपूषाश्रुतिः

करः । मूलत्रयं ३ गुरुःसूर्योभौमेरिक्तां ४।९।१४ विनातिथिम् ॥ ७ ॥ आद्ये १ द्वये २ त्रये ३ मासेलग्नेकन्या ६ झषे १२ स्थिरे २।५।८।११। चापे ९ पुंसवनंकुर्यात्सीमंतंचाष्टमेतथा ॥ ८ ॥ पुंसवनंप्रथमगर्भएवकार्यम् । सकृच्चकृतसंस्काराःसीमंतेनद्विजातयः । यंयंगर्भंप्रसूयंतेससर्वःसंस्कृतोभवेत् ॥ ९ ॥ अथजातकर्म । जातकर्मशिशौजातेपिता तत्कालमाचरेत् । एकादशेह्निवाकुर्याद्वादशेवायथाविधि ॥ १० ॥ अथ जननसमयेदुष्टकालविचारः । तत्रतावत्तिथिगंडांतम् । पूर्णा ५।१०।१५ नंदा १।६।११ स्व्ययोस्तिथ्योःसंधिनाडीद्वयंतथा । गंडांतंमृत्युदंजन्मयात्रोद्वाहव्रतादिषु ॥ ११ ॥ अथलग्नगंडांतम् । कुलीर ४ सिंहयोः ५ कीट ८ चापयो ९ मीन १२ मेषयोः १ । गंडांतमंतरालंस्यात् घटिकार्धंमृतिप्रदम् ॥ १२ ॥

(पुंसवनसीमंतोन्नयनमु.) आ. पु. पु. पू. भा.उ. भा.मृ. रे. श्र. ह. मू. पूर्वाषा. उत्तराषा. यह नक्षत्र तथा गुरु आदित्यवार रिक्ता ४।९।१४ के विना तिथि और पहला १ दूसरा २ तीसरा ३ मास तथा कन्या ६ मिन१२ स्थिर२।५।८।११ लग्न पुंसवन करनेमें श्रेष्ठ हैं और सीमंतोभयन आठवें ८ मासमें श्रेष्ठहै ॥७॥८ ॥ और सीमंतोन्नयन संस्कार प्रथम गर्भहीमें करना चाहिये कारण प्रथम गर्भमें करनेसे फिर जो जो गर्भ रहेगा उन सर्व गर्भोंका संस्कार होगया है ॥९॥ (जातकर्ममु.) जातक कर्म बालकके जन्मनेके अनंतर पिताको करना योग्यहै परंतु जन्मसे ग्यारहवें ११ या बारहवें १२ दिन यथाविधि करना चाहिये ॥ १० ॥ (जन्मकालमें दुष्ट काल होवे सो लिखते हैं) (तिथिगंडांत) पूर्णा ५।१०।१५ और नंदा १।६।११। तिथिके अंतकी २ घडी गंडांतकी हैं सो जन्ममें और यात्रा विवाह यज्ञोपवीतमें मृत्युकारकहैं॥११॥ और कर्क ४ सिंह ५ लग्नकी वृश्चिक ८ धन ९ की मीन १२ मेषके १ अंतकी आधी घडी गंडांतकीहैं ॥ १२ ॥

अथनक्षत्रगंडांतम् । पौष्ण्याश्विन्योःसर्पपित्र्यर्क्षयोश्चयच्चज्येष्ठामूलयोरंतरालं । तद्गंडांतंस्याच्चतुर्नाडिकंहियात्राजन्मोद्वाहकालेष्वनिष्टम् ॥ १३ ॥ क्षेपक—अथगंडांतफलम् । वत्सरात्पितरंहंतिमातरंतुत्रिवर्षतः । धनंवर्षद्वयेनैवश्वशुरंनववर्षकम् ॥१॥ जातंबालंवत्सरेणवर्षैःपंचभिरग्रजं । शालकंचाष्टभिवर्षैरनुक्तान्हंतिसप्तभिः ॥ २॥ तस्माच्छांतिंप्रकुर्वीतप्रयत्ना-

द्विधिपूर्वकं । अरिष्टंशतधायातिसुकृतेशांतिकर्मणि ॥ ३ ॥ अथमूलजननेपादफलम् । मूलाद्यचरणेतातोद्वितीयेजननीतथा । तृतीयेतुधनंनश्येच्चतुर्थोऽपिशुभावहः ॥ १४ ॥ अथज्येष्ठायाश्चरणफलम् । आद्येपादेऽग्रजंहंतिज्येष्ठायांद्वितयेऽनुजं । तृतीयेजननींजातःस्वात्मानंचतुरीयके ॥ १५ ॥ अथाश्लेषाजातफलम् । सर्पांशेप्रथमंराज्यंद्वितीयेतुधनक्षयः । तृतीयेजननीनाशश्चतुर्थेमरणंपितुः ॥ १६ ॥

और रेवती अश्विनी नक्षत्रके अंतकी तथा आश्लेषा मघाके और ज्येष्ठा मूलके अंतकी ४ घडी गंडांत संख्याकीहैं सो यात्रा जन्म विवाहमें अशुभहैं ॥ १३ ॥ (मूलमें जन्मका फल) मूलके पहले पायेमें जन्मे तो पिताका नाश और दूसरेमें माताका तीसरेमें धनका नाश होताहै और चौथा पाया शुभहै ॥ १४ ॥ (जेष्ठाका फल) ज्येष्ठाका प्रथम चरण ज्येष्ठ भाईको मारताहै १ तथा दूसरा छोटे भाईको २ तीसरा माताको ३ और चौथा ४ चरण बालकको नष्ट करताहै ॥ १५ ॥ (आश्लेषाके जन्मका फल) अश्लेषाका प्रथम चरण राज्य प्राप्ति करै दूसरा धननाश करै, तीसरा माताको मारै, और चौथा पाया पिताको नष्ट करताहै ॥ १६ ॥

अथपूर्वार्द्धपरार्द्धेनफलम् । अश्विनीमघमूलानांपूर्वार्द्धेबाध्यतेपिता । पूषाहिशक्रपश्चार्द्धेजननीबाध्यतेशिशोः ॥ १७ ॥ अथाऽन्येपिजननेदुष्टकालाः । दिनक्षयेव्यतीपातेव्याघातेविष्टिवैधृतौ । शूलेगंडेचपरिघेवज्रेचयमघंटके ॥ १८ ॥ कालगंडेमृत्युयोगेदग्धयागेसुदारुणे । कृष्णाचतुर्दशीदर्शेतातसोदरजन्मभे ॥ १९ ॥ तस्मिन्गंडदिनेप्राप्तेप्रसूतिर्यदिजायते । तद्दोषपरिहारायशांतिंकुर्याद्यथाविधि ॥ २० ॥ सर्वेषांगंडजातानांपरित्यागोविधीयते । वर्जयेद्दर्शनंयावत्तस्यषाण्मासिकंभवेत् ॥ २१ ॥ शांतिवातस्यकुर्वीतप्रयत्नाद्विधिपूर्वकम् । सूतकान्तेतदक्षेवातद्दोषस्यापनुतये २२

और अश्विनी मघा मूल इनका पूर्वार्द्ध पिताको बाधा करताहै तथा रेवती ज्येष्ठाका उत्तरार्द्ध माताको नष्ट करताहै ॥ १७ ॥ और तिथिक्षय व्यतिपात व्याघात भद्रा वैधृति शूल गंड परिघ वज्र यमघंट काल मृत्युयोग दग्धयोग कृष्णचतुर्दशी अमावस्या पिताके तथा भाईके जन्मका नक्षत्र इत्यादिक दुष्ट कालोंकीभी गंड संज्ञाहै सो इनमें जन्म होजावे तोभी दोषशांतिके अर्थ यथाविधि शांति करनी चाहिये ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ और संपूर्ण गंडोंमें जन्मे हुये बालकका त्याग करना योग्यहै और छः ६ मासतक बालक देखनाभी निषेद्धहै ॥ २१ ॥ यदि त्यागेभी नहीं तथा देखे विनाभी नहीं रहा

जावें तो विधिपूर्वक सूतकके अंतमें अथवा जन्मके नक्षत्रमें या बारहवें १२ दिन शांति करना चाहिये ॥ २२ ॥

अथसूतिकास्नानम् । हस्तेमृगेऽनुराधायांरोहिण्यांरेवतीद्वये । उत्तरात्रितयेस्वातौजीवार्ककुजवासरे ॥ २ ३ ॥ सूतीस्नानंप्रशस्तंस्याद्विहायार्द्रात्रयंश्रवम् । विशाखाभरणीमूलंचित्राख्यंकृत्तिकांमघाम् ॥ २ ४ ॥ रिक्तां ४।९।१४ बुधशनीषष्ठीं ६ द्वादशींचाष्टमीं ८ तथा । एषुस्नानंयदिकुर्यात्पुनःसूतीनजायते ॥ २ ५ ॥ अथवारेषुविशेषः । स्नाताप्रसूताप्यसुताबुधेचस्नाताचवंध्याभृगुनंदनेन । सौरेमृतिःक्षीरहतिश्चसोमेपुत्रार्थलाभोरविजीवभौमे ॥ २ ६ ॥ अथशतभिषास्नानेविशेषः । स्नानंकुर्यात्तुयानारीचंद्रेशतभिषांगते । सप्तजन्मभवेद्वंध्याविधवादुर्भगाध्रुवम् ॥ २ ७ ॥ अथनामकर्म । पुनर्वसुद्वये २ हस्तत्रये ३ मैत्रद्वये २ मृगे । मूलोत्तर धनिष्ठासुद्वादशै १२ कादशे ११ दिने ॥ २ ८ ॥ अन्यत्रपिशुभेयोगेवारेबुधशशांकयोः । भानोर्गुरोःस्थिरेलग्नेबालनामकृतिःशुभा ॥ २ ९ ॥

(सूतिका स्नानमु.) ह. मृ. अनु. रो. रे. अश्वि. उ. ३ स्वा. इन नक्षत्रोंमें तथा गुरु रवि मंगलवारमें सूतिकास्नान करना श्रेष्ठहै और आ. पुन. पुष्य. श्र. वि. भ. मू. चि. कृ. मघा. यह नक्षत्र तथा रिक्ता ४।९।१४ तिथि और ६।१२। ८ यह तिथि सूतिका स्नानमें निषेद्धहैं ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ और यदि बुधको प्रसूतिस्नान करे तो पुत्ररहित होवे तथा शुक्रको वंध्या होवे और शनिको मृत्यु होवे । सोमवारको दूधनाश होवे और रवि गुरु मंगलवारको सूतिका स्नान करे तो पुत्र धनलाभ होवे ॥ २६ ॥ यदि शतभिषामें स्नान करलेवे तो सात जन्मतक विधवा तथा दुर्भगा होवे ॥ २७ ॥ (नामकर्ममु.) पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. मृ. मू. उ. ३ ध. इन नक्षत्रोंमें और बारहवें १२ ग्यारहवें ११ दिनमें और शुभयोग बुध सोम रवि गुरुवारमें तथा स्थिर लग्नमें नामकर्म करना शुभहै ॥ २८ ॥ २९ ॥

अथनामकर्मणिविवर्ज्याः । पक्षछिद्रांचनवमींहित्वापंचदशींतथा । शेषाः स्युस्तिथयःसर्वानामकर्मणिपूजिताः ॥ ३ ० ॥ अथपक्षछिद्रास्तिथयः । चतुर्दशीचतुर्थीचअष्टमीनवमीतथा । षष्ठीचद्वादशीचैवपक्षछिद्राह्वयाः स्मृताः ॥ ३ १ ॥ क्रमादेतासुतिथिषुवर्जनीयाश्चनाडिकाः । भूता ५ ष्ट ८ मनु १४ तत्वां २४ क ९ दश १० शेषास्तुशोभनाः ॥ ३२ ॥ पू-

र्वाह्णःश्रेष्ठइत्युक्तोमध्याह्नोमध्यमःस्मृतः । अपराह्णंचरात्रिंचवर्जयेन्नामक-र्मणि ॥ ३ ३ ॥ चंद्रताराबलोपेतेनैधनोदयवर्जिते । पूर्वाह्णएवकुर्वीतना-मकर्मशुभेदिने ॥ ३ ४ ॥ अथजलपूजा । पुनर्वसुद्वये २ हस्तेमृगेमूला-नुराधयोः । श्रवेगुरौबुधेचंद्रेसत्तिथौजलपूजनम् । अथनिष्क्रमणम् । मै-त्रेपुष्यपुनर्वसुप्रथमभेपौष्णेनुकूलेविधौहस्तेचैववसुरेश्वरेचमृगभेतारासुश-स्तासुच । कुर्यान्निष्क्रमणंशिशोर्बुधगुरौशुक्रेविरिक्तेतिथौकन्याकुंभतुला-मृगारि ५ भवनेसौम्यग्रहालोकिते ॥ ३ ५ ॥

परंतु पक्षछिद्रतिथि नवमी ९ पंचदशी १५ यह तिथि वर्जनी चाहिये ॥ ३० ॥ पक्षछिद्रतिथि १४।४।८।९।६।१२ इन तिथियोंकी संज्ञाहै सो अति जरूरत होवे तो क्रमसे इन तिथियोंकी ५।८।१४।२५।९।१०। घडी त्याग देनी चाहिये ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ और नामकर्ममें पूर्वाह्ण श्रेष्ठहै और मध्याह्न मध्यमहै तथा अपराह्ण रात्रि सर्वथा वर्ज-नीयहैं ॥३३॥ परंतु नामकर्म शुभ चंद्रमामें और आठवीं ८ राशिके विना लग्नमें तथा पूर्वाह्णमेंहि श्रेष्ठहैं ॥ ३४ ॥ (जलपूजामु.) पुन. पु. ह. मृ. मू. अनु. श्र. इन नक्षत्रोंमें तथा गुरु बुध सोमवारमें और शुभ तिथियोंमें जलवा पूजना श्रेष्ठहै (निष्क्रमणमु.) अनु.पु.पु.अश्वि. रे.ह.ज्ये.मृ.इन नक्षत्रोंमें तथा शुभ चंद्र तारामें और बुध गुरु शुक्रवारमें तथा रिक्ता ४।९।१४ तिथिके विना शुभ तिथियोंमें और शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसहित कन्या ६ कुंभ ११ तुल ७ सिंह ५ लग्नमें बालकको बाहर निकालना श्रेष्ठहै ॥ ३५॥

अथान्नप्राशनम् । आद्यान्नप्राशनेपूर्वा ३ सार्पार्द्रावारुणंयमः । नक्षत्रे-षुपरित्याज्यावारौभौमार्कनंदनौ ॥३ ६॥द्वादशी १२ सप्तमी ७ रिक्ता ४। ९।१४ पर्व १५।३० नंदा १।६।११ स्तुवर्जिताः । लग्नेषुचझषो १२ ग्राह्योवृषः २ कन्याच ६ मन्मथः ॥ ३ ७ ॥ शुक्लक्षःशुभोयोगःसंग्रा-ह्यःशुभचंद्रमाः । मासौषष्ठाष्ट ६।८ मौपुंसांस्त्रीणांमासश्चपंचमः ॥३ ८॥ अथकर्णवेधः । रेवतीद्वितयेपुष्येपुनर्वस्वनुराधयोः । श्रवणाद्वितयेचित्रा मृगेहस्तेशुभेतिथौ ॥ ३ ९ ॥ शुभेवारेहिजन्माहाद्द्वादशेषोडशदिने । क-र्णवेधोथवामासेषष्ठसप्ताष्टमेपिवा ॥ ४ ०॥ नजन्ममासेनचचैत्रपौषेनजन्म-तारासुहरौप्रसुप्ते।तिथावरिक्तेनचविष्टिदुष्टेकर्णस्यवेधोनसमानवर्षे॥ ४ १॥ अथचौल (चूडा) कर्म । पुनर्वसुद्वये २ ज्येष्ठामृगेचश्रवणद्वये २ । ह-स्तत्रये ३ चरेवत्यांशुक्लपक्षोत्तरायणे॥ ४ २॥ लग्नेगो २ स्त्री ६ धनु-९ कुंभ

११मकरे१०मन्मथे३तथा। सौम्येवारेशुभेयोगेचूडाकर्मस्मृतंबुधैः॥४३॥

(अन्नप्राशनमु.) प्रथम अन्नप्राशनमें पू. ३ आश्ले. आ. श. भ. यह नक्षत्र तथा मंगल शनैश्वरवार और १२।७ रिक्ता ४।९।१४।१५।३० नंदा १।६।११ यह तिथि वर्जना चाहिये और मीन १२ वृष २ कन्या ६ मिथुन ३ लग्न तथा शुक्लपक्ष शुभ चंद्रमामें और पुरुषोंको ६।८ मासमें तथा कन्याको ५ मासमें अन्नप्राशन श्रेष्ठहै ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ (कर्णवेधमु.) रे. अश्वि. पु. पु. अनु. श्र. ध. चि. मृ. ह. इन नक्षत्रोंमें तथा शुभवारतिथिमें और जन्मसें १२।१६ दिनमें अथवा ६।७।८ मासमें कर्णवेध शुभहै ॥ ३९ ॥ ४० ॥ परंतु जन्ममास चैत्र पौष जन्मनक्षत्र चातुर्मास रिक्ता तिथि भद्रा और समान वर्षमें कर्णवेध निषेद्धहै ॥ ४१ ॥ (चौलकर्ममु.) पुन. पु. ज्ये. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. रे. इन नक्षत्रोंमें. शुक्लपक्ष उत्तरायणमें और वृष २ कन्या ६ धन ९ कुंभ ११ मकर १० मिथुन ११ लग्नमें तथा शुभयोग वारमें चूडाकर्म करना शुभहै ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

चूडाकर्माणिहेयास्तुजन्ममासश्चजन्मभम्। रिक्ता ४।९।१४ षष्ठींचपर्वाणि १५।३० प्रतिपच्चतिथिष्वपि ॥ ४४ ॥ गुरुभार्गवयोरस्तेबाल्यवार्द्धकयोरपि। केतूदयेऽपिनैवस्यान्मार्गेज्येष्ठेतथाक्षुरम् ॥ ४५ ॥ क्षेपक— सूनोर्मातरिगर्भिण्यांचूडाकर्मनकारयेत्। पंचमाब्दात्प्रागथोर्ध्वंगर्भिण्यामपिकारयेत् ॥ अथाक्षरारंभः ॥ हस्तत्रये ३ हरिद्वंद्वे २ पूर्वा ३ श्वेमृगपंचके ५। मूलेपूष्णिचनक्षत्रेबुधेर्केगुरुशुक्रयोः॥४६॥ देवोत्थानेमीनचापे १२।९ लग्नेवर्षेचपंचमे ५। विद्यारंभोत्रवर्ज्याश्चषष्ठच ५ नध्यायरिक्तकाः ॥ ४७ ॥ सौम्यायनेशुभेमासिस्वेध्यायदिवसेशुभे। स्वेस्वेजीवबुधेशुक्रेलग्नेखेटबलान्विते।हेरंबंविष्णुंवाग्देवींतथाभ्यर्च्येष्टदेवताः। शुभेऽह्नितुनरःकुर्याल्लिप्यारंभंसदाबुधैः ॥ ४८ ॥

परंतु जन्ममास जन्मनक्षत्र रिक्ता ४।९।१४ षष्ठी ६ पर्व १५।३० प्रतिपदा १ तिथि और शुक्रगुरुका अस्त तथा बाल्यवृद्धअवस्था केतुका उदय मार्गशिर ज्येष्ठ यह मास प्रथम क्षौर करानेमें त्यागना चाहिये ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ यदि पुत्रकी माता गर्भिणी होवे तो चौलकर्म नहीं करै परंतु पांच ५ वर्षके उपरांत दोष नहीं है। (अक्षरारंभमु०) ह. चि. स्वा. श्र. ध. पू. ३ अश्वि. मृ. आ. पु. पु.आश्ले. मू. रे. इन नक्षत्रोंमें तथा बुध रवि शुक्र गुरुवारमें बालकको अक्षरारंभ करावै ॥ ४६ ॥ और देवोंके उठनेसे तथा मीन १० धन ९ लग्नमें और पांचवें बरसमें विद्यारंभ करै परंतु षष्ठी ६ अनाध्याय रिक्ता ४।९।१४ त्याग देवै ॥ ४७ ॥ और उत्तरायण शुभमास स्वाध्याय दिनमें तथा ब्राह्मण

आदि वर्ण शुक्र गुरु बुधके बलसहित शुभ लग्नमें गणेश विष्णु सरस्वती इष्टदेवताओं-को पूजके श्रेष्ठ दिनमें बालकको प्रथम अक्षरोंका आरभ करावे तो शुभहै॥४७॥ ४८॥

अथोपनयनम् तत्रमुख्यकालः। व्रतबंधस्तुविप्राणांगर्भाद्वाजन्मतोऽष्टमे। षष्ठेऽब्देसप्तमेमध्योविद्याकामस्यपंचमे ॥ ४९ ॥ षष्ठेचैकादशेऽब्देवाक्षत्रियाणामुदीरितः। वैश्यानांद्वादशेऽब्देस्यादष्टमेगर्भतोऽपिवा ॥ ५० ॥ अथगौणकालः। विप्रस्याषोडशाद्वर्षाद्द्वाविंशात्तुभूभुजाम्। वैश्यानामाचतुर्विंशाद्गौणः कालउदाहृतः ॥ ५१ ॥ अथवर्णेशादिशुद्धिः। निजवर्णेशशाखेशभास्वद्वागीश्वरेंदुषु । वीर्यवत्सुद्विजातीनांव्रतबंधःशुभप्रदः ॥ ५२ ॥ अथवर्णेशाः। जीवशुक्रौतुविप्रेशौभूभुजांरविमंगलौ। विशोब्जोज्ञश्चशूद्राणामंत्यजानांपतिःशनिः ॥ ५३ ॥ अथशाखेशाः। ऋग्वेदेशोगुरुःप्रोक्तोयजुषांभार्गवःपतिः । सामवेदेश्वरोभौमःपतिश्चाथर्वणोबुधः ॥ ५४ ॥

(यज्ञोपवीतम्.) ब्राह्मणोंको गर्भसे अथवा जन्मसे आठवें ८ बरसमें जनेऊ (यज्ञोपवीत) लेना श्रेष्ठहै और छठे६ या सातवेमें ७ लेना मध्यमहै यदि विद्या पढनेकी इच्छा होवे तो पांचवे ५ बरसहीमें लेलेवै ॥ ४९ ॥ और क्षत्रियोंको छठे ६ या ग्यारहवें ११ बरस और वैश्योंको बारहवें १२ या गर्भसे आठवें ८ लेना शुभहै ॥ ५० ॥ यदि ब्राह्मण आठवें वर्ष नहीं लेसके तो सोलह १६ वर्षतक अधिकारहै और क्षत्रियोंको बाईस २२ बरसतक तथा वैश्योंको चोवीस२४ बरसतक लेनेका अधिकारहै॥५१॥ परंतु अपने अपने वर्णका स्वामी और शाखाका पति तथा सूर्य गुरु चंद्रमा बलवान् होनेसे उपनयन लेना शुभहै ॥ ५२॥ गुरु शुक्र ब्राह्मण वर्णका स्वामी हैं रविमंगल क्षत्रियोंका और चद्रमा वैश्योंका बुध शूद्रोंका और शनैश्वर अंत्यजोंका स्वामीहै॥५३॥ऋग्वेदका पति गुरुहै यजुर्वेदका शुक्रहै सामवेदका मंगलहै और अथर्व वेदका पति बुधहै ॥५४॥

अथगुर्वादिशुद्धिः। व्रतेगुरोर्बलंज्ञेयंविवाहेयद्विवक्ष्यते। चंद्रताराबलंपूर्वमुक्तंग्राह्यंबटोःशुभम् ॥ ५५ ॥ जन्म १ त्रिदशमारिस्थः ३।१०।६ पूजयाशुभदोगुरुः। व्रतोद्वाहेचतुर्थाष्टद्वादशस्थो ४।८।१२ मृतिप्रदः ॥ ५६ ॥ अथअष्टमस्थादिगुरुपरिहारः। झष १२ चाप ९ कुलीर ४-स्थोजीवोऽप्यशुभगोचरः । अतिशोभनतांदद्याद्विवाहोपनयादिषु ॥ ॥ ५७ ॥ व्रतेजन्म १ त्रिखारिस्थो ३।१०।६ जीवोपीष्टोर्चनात्सकृत्।

शुभोऽतिकालेतुर्यांष्टव्ययस्थो४।८।१२ द्विगुणार्चनात् ॥५८॥ शुद्धि-र्नैवगुरोर्यस्यवर्षेप्राप्तेऽष्टमेयदि । चैत्रेमीनगतेभानौतस्योपनयनंशुभम् ॥ ॥ ५९ ॥ जन्मभादष्टमेसिंहेनीचेवा १० शत्रुभे ३।६।२।७ गुरौ। मौं-जीबंधःशुभःप्रोक्तश्चैत्रेमीनगतेरवौ ॥ ६० ॥

यज्ञोपवीतमें गुरुका बल देखना और विवाहमें सूर्यका बल और चंद्रताराकाभी उपनयनमें बल देखनेसे बटु(ब्राह्मण)के शुभ होताहै॥५५॥जन्मका एक१तीसरा३दश-वां१० छठा६ गुरु पूजा करके शुभ होताहै और चौथा४आठवां८बारहवां१२ गुरु होवे तो मृत्युकारकहै॥५६॥यदि मीन १२ धन९ कर्क ४ को गुरु होवे तो विवाह यज्ञोपवीत आदिमें अशुभभी श्रेष्ठ जानना॥५७॥ और जन्मका १ तीसरा ३ दशवां १० छठा ६ बृहस्पति एक १ पूजा करके श्रेष्ठहै और बालक वडा हो जावे तो चौथा ४ आठवां८ बारहवां दूणी पूजासें शुभ होताहै ॥५८॥ और यदि बालक आठ ८ बरसका होवे तब गुरु अशुभ स्थानमें होवे तो चैत्रके मीनके सूर्यमें उसका यज्ञोपवीत श्रेष्ठहै ॥ ५९ ॥ और जन्मराशिसे गुरु आठवां होवे या गुरु सिंह ५ मकर १० का होवे या शत्रुके घ-रमें होवे तो चैत्रमें मीनके सूर्यमें उपनयन श्रेष्ठ कहाहै ॥ ६० ॥

बालस्यबलहीनोपिशांत्याजीवोबलप्रदः। यथोक्तवत्सरेकार्यमनुक्तेचोप-नायनम् ॥६१॥ अथकालशुद्धिः। विप्रंवसंतेक्षितिपंनिदाघेवैश्यंघना-न्तेव्रतिनंविदध्यात्। माघादिशुक्लांतिकपंचमासाःसाधारणावासकलद्वि-जानाम् ॥ ६२ ॥ अथसर्वेषांग्राह्यनक्षत्राणि। हस्तत्रयेचश्रवणत्रयेचधा-तृद्वयेत्र्युत्तरमैत्रभेच । पौष्णद्वयेचादितिभद्वयेचशस्तंद्विजानांखलुमौं-जिबंधः ॥ ६३ ॥ अथवर्ज्यनक्षत्राणि। कृत्तिकाभरणीमूलज्येष्ठार्द्रासु-विशाखयोः। पूर्वात्रयेचसार्प्पर्क्षेनकुर्य्याच्चोपनायनम् ॥ ६४ ॥ अथय-जुर्वेदातिरिक्तविप्राणांपुनर्वसौविशेषः। चंद्रतारानुकूलेषुग्रहाब्देषुशुभेष्व-पि। पुनर्वसौकृतोविप्रःपुनःसंस्कारमर्हति ॥ ६५ ॥ अथप्रतिवेदनक्ष-त्राणि। पूर्वाहस्तत्रयेसार्पश्रुतिमूलेषुवह्वृचाम् । यजुषांपौष्णमैत्रार्कादि-त्यपुष्यमृदुध्रुवैः ॥ ६६ ॥

बालकके गुरु बलहीनभीहै परंतु शांति करके शुभ होजाताहै इसवास्ते शांति क-रके यथोक्त बरसमें यज्ञोपवीत करना चाहिये॥ ६१ ॥ (कालशुद्धि) ब्राह्मणोंको व-संत ऋतुमें अर्थात् चैत्रवैशाखमें। और क्षत्रियोंको (ग्रीष्म) ज्येष्ठ आषाढमें और वै-श्योंको, (घनांत) आश्विनकार्तिकमें यज्ञोपवीत लेना श्रेष्ठहै अथवा संपूर्णोंको माघ

फाल्गुन चैत्र वैशाख ज्येष्ठमें लेलेना चाहिये ॥ ६२॥ (यज्ञोपवीतके नक्षत्र) ह. चि. स्वा. श्र. ध. श. रो. मृ. उत्तरा ३ अनु. रे. अश्वि. पुन. पुष्य. इन नक्षत्रोंमें संपूर्णोंको यज्ञोपवीत लेना श्रेष्ठहै ॥ ६३ ॥ (वर्जित नक्षत्र) कृ. भ. मू. ज्ये. आ. वि. पू. ३ आश्ले. इन नक्षत्रोंमें यज्ञोपवीत नहीं लेना चाहिये ॥ ६४ ॥ और यदि चंद्र तारा ग्रह बरस शुभही होवे परंतु पुनर्वसूमें यज्ञोपवीत लेलेवे तो यजुर्वेदी ब्राह्मणके विना फिर संस्कार करने योग्य होताहै ॥ ६५ ॥ (जुदे २ वेदोंका नक्षत्र) पूर्वा ३ ह. चि. स्वा. आश्ले. श्र. मू. यह नक्षत्र तो ऋग्वेदियोंकाहैं और रे. अनु, ह. पुन. पुष्य. मृ. चि. रो. उ. ३ यह यजुर्वेदियोंकाहैं ॥ ६६ ॥

सामगानांहरीशार्कवसुपुष्योत्तराश्विभैः । धनिष्ठादितिमैत्रार्केष्विंदुपौष्णेष्वथर्वणाम् ॥ ६७ ॥ अथग्राह्यास्तिथयः । शुक्लपक्षेद्वितीयाचतृतीयापंचमीतथा । त्रयोदशीचदशमीसप्तमीव्रतबंधने ॥ ६८ ॥ श्रेष्ठास्त्वेकादशीषष्ठीद्वादश्येतास्तुमध्यमाः । एकांचतुर्थींसंत्यज्यकृष्णपक्षेपिमध्यमाः ॥ ६९ ॥ अथवाराः।आचार्यकाव्यसौम्यानांवाराःशस्ताःशशीनयोः । वारौतौमध्यफलदौनिंदिताविंतरौव्रते ॥ ७० ॥ अथलग्नानि । लग्नेवृषे२ धनुः ९ सिंहे ५ कन्या ६ मिथुन ३ योरपि । व्रतबंधःशुभयोगेब्रह्मक्षत्रविशाभवेत् ॥ ७१ ॥ शाखाधिपतिवारश्चशाखाधिपबलंतथा । शाखाधिपतिलग्नंचदुर्लभंत्रितयंव्रते ॥ ७२ ॥

और श्र. आ. ह. ध. पु. उत्तरा ३ अश्वि. यह सामवेदियोंकाहैं और ध. पुन. अनु. ह. मृ. रे. यह. नक्षत्र अथर्वण वेदियोंके यज्ञोपवीत लेनेका जानना ॥ ६७ ॥ (तिथि) शुक्लपक्षमें २।३।५।१३।१०।७ यह तिथि श्रेष्ठहैं और ११।६।१२ यह मध्यमहैं और कृष्णपक्षमें चतुर्थीके विना पूर्वोक्त तिथि मध्यम जानना ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ और गुरु शुक्र बुध यह वार श्रेष्ठहै तथा सोम सूर्य मध्यमहैं और मंगल शनिवार निषेद्धहैं ॥ ७० ॥ और वृष २ धन ९ सिंह ५ कन्या ६ मिथुन ३ यह लग्न संपूर्णके उपनयनमें श्रेष्ठहैं ॥ ७१ ॥ परंतु शाखाके पतिका वार और बल और लग्न यह तीनों दुर्लभहैं यदि मिले तो बहुत श्रेष्ठ जानना ॥ ७२ ॥

अथनिषिद्धानि । कृष्णपक्षेशनौरात्रौप्रदोषेवागलग्रहे । अनध्यायेऽपराह्णेचनकुर्याद्व्रतबंधनम् ॥ ७३ ॥ विनर्तुनावसंतेनकृष्णपक्षेगलग्रहे । अपराह्णेचोपनीतःपुनःसंस्कारमर्हति । अथगलग्रहाः । कृष्णपक्षेचतुर्थींच सप्तम्यादिदिनत्रयं । त्रयोदशीचतुष्कंचअष्टावेतेगलग्रहाः ॥ ७४ ॥ अ-

थात्रलग्नबलम् । त्रिषष्ठाय ३।६।११ गतैःपापैःषडष्टांत्य ६।८।१२ विवर्जितैः । शुभैःषष्ठाष्टलग्नांत्य६।८।१।१२वर्जितेनहिमांशुना ॥७५॥ लग्नस्थितेचरंध्रेच८पापेचमरणंबटोः । सौख्यंस्यात्रिषडायेषु ३।६।११ जडत्वमितरेषुच ॥ ७६ ॥ चंद्रःक्रूरास्तनौनेष्टाःसर्वेरंध्रेव्ययेकविः । सितेंदुलग्नपाःषष्ठेमौंजीविद्यादिकर्मसु ॥ ७७ ॥ अथकेंद्रस्थानांसूर्यादीनां फलं । राजसेवीवैश्यवृत्तिःशस्त्रवृत्तिश्चपाठकः । प्राज्ञोऽर्थवान्म्लेच्छसेवींकेंद्रेसूर्यादिखेचरैः ॥ ७८ ॥ इत्युपनयनकालःसमाप्तः ॥

कृष्णपक्षमें शनिवारमें रात्रि प्रदोषकाल गलग्रह अनाध्याय तिथि और अपराह्न कालमें यज्ञोपवीत अशुभहै ॥ ७३ ॥ परंतु वसंत ऋतुके विना अन्य ऋतुमें कृष्णपक्ष गलग्रह अपराह्नमें यज्ञोपवीत लेलेवे तो फेर संस्कारसे शुद्ध होताहै और वसंतमें दोष नहींहै (गलग्रह) कृष्णपक्षमें चौथ ४ सप्तमी ७ अष्टमी ८ नौमी ९ त्रयोदशी १३ चतुर्दशी १४ अमावस्या ३० प्रतिपदा १ यह आठ ८ तिथि गलग्रह संज्ञाकहीहैं सो निषेद्ध जानना॥७४॥(यज्ञोपवीतमें लग्नबल) तीसरे ३ छट्टे ६ ग्यारहवें ११ पापग्रह होवे और छठे ६ आठवें ८ बारहवें१२स्थानके विना शुभ ग्रह और चंद्रमा होवे तो शुभहै ॥७५॥यदि लग्नमें१ या आठवें८पापग्रह होवे तो बटु(ब्राह्मण)की मृत्यु हो और तीसरे ३ छठे ६ ग्यारहवें ११ पापग्रह होवे तो सुख होवे तथा अन्य स्थानोंमें होवे तो मूर्ख रहैं ॥ ७६ ॥ और चंद्रमा पापग्रह लग्नमें अशुभहै और आठवें ८ संपूर्ण ग्रह तथा बारहवें १२ छठे ६ शुक्र चंद्रमा लग्नका स्वामी यज्ञोपवीत विद्यारंभ आदि कर्ममें अशुभहैं ॥ ७७ ॥ और सूर्य केंद्रमें १।४।७।१० होवे तो राजके काम करनेवाला और चंद्रमा होवे तो वैश्योंकी वृत्ति तथा मंगल होवे तो शस्त्रवृत्ति बुध होवे तो पढना पढाने की वृत्ति गुरु होवे तो पंडित, और शुक्र होवे तो धनवान् या शनि होवे तो म्लेछोंका नोकर होवे ॥ ७८ ॥

अथविवाहार्थेकन्यावरयोर्गुणमेलनम् । तत्रतावत्विवाहोपयोगीकन्यालक्षणानि । मृद्वंगीगूढगुल्फासमकुचनयनावृत्तनाभोरुवक्त्राकृष्णभ्रूनेत्रकेशास्थिरतरसुनखादीर्घनेत्राविलोमा । मृद्वाणीस्वल्पभालालघुललितगमापाणिपादोष्ठरक्तासाकन्योद्वाहिताचेत्सुतधनविपुलान्नायुरारोग्यदा स्यात् ॥ ७९ ॥ अथकन्यादोषाः । निर्गुणाशुक्लसंभाषीक्रोधयुक्तासरोगिणी । विषयोगावंध्ययोगाकुलविध्वंसयोगका ॥८० ॥ दरिद्रजारयोगाच्चहीनाचरणसंयुता । एतद्दोषदशैर्युक्तातांकन्यांनप्रतिग्रहेत् ॥ ८१ ॥

अथवरगुणाः । विद्यावंतंसुरूपंउभयकुलशुचिंज्ञातशीलंदृढांगंनिर्व्याधिंशांतियुक्तंद्विजसुरप्रणतौकिंचिदार्ढ्यंप्रयुक्तम् । सम्यक्पृष्ठोच्चपृच्छांप्रचुरतरधियंमूत्रधारंसुलिंगमेतद्रूपंवरिष्ठंवरमिहवरयेत्कन्यकायाःसुवेशम्॥८२॥कुलंचशीलंचवयश्चरूपंविद्यांचवित्तंचसनाथतांच । एतान्गुणान्सप्तपरीक्ष्यदेयाकन्याबुधैःशेषमचिंतनीयं ॥ ८३ ॥ अथवरदोषाः। मूकोंधोबधिरःकुब्जःस्तब्धःपंगुनपुंसकः । कुष्ठीरोगीह्यपस्मारीदशदोषाःप्रकीर्त्तिताः ॥ ८४ ॥

(अथ विवाहके योग्य कन्या वरके गुण लिखतेहैं) कन्या कोमल अंगवाली, गडे होवे (गुल्फ) टकणेवाली हो और समान कुच नेत्र हो, गोल नाभि पिंडीमुख होवे और काले केशकी भृकुटी होवे, मजबूत सुंदर नख होवे, बडे नेत्र हो, शरीरपर बाल होवे नहीं, कोमल वाणी होवे तो ऐसी स्त्री विवाहनेसें पुत्र धन आयु आरोग्यके देनेवाली होतीहै ॥ ७९ ॥ और गुणरहितवाली मोल लेनेवाली क्रोधिनी रोगिणी विषयोगवाली वध्यायोगकी कुलनाशयोगकी दरिद्र तथा जारयोगकी नीच आचरण करनेवाली इन दश दोषयुक्त कन्याको कदापि नहीं विवाहनी चाहिये ॥ ८० ॥ ८१ ॥ (वरकेगुण) विद्यावान् हो स्वरूप हो पिताका तथा नानेका कुल शुद्ध हो, शीलस्वभाव हो दृढ अंग हो रोगरहित हो शातियुक्त हो, ब्राह्मणोंको तथा देवताओंको प्रणाम करनेवाला हो अर्थात् दयानंदी नास्तिक नहीं हो अच्छी वार्त्ता करनेवाला हो बुद्धिवान् हो, मूत्रकी धार पूर्ण हो, सुंदर (+) हो, रूपवान् हो गुणी होवे तथा श्रेष्ठ वस्त्र धारे हुये होवे तो ऐसा वर कन्याके योग्य करना चाहिये ॥ ८२ ॥ और कुल स्वभाव अवस्था रूप विद्या धन पिता माता, यह सात गुण देखके कन्या देनी चाहिये ॥ ८३ ॥ परंतु गूँगा अंधा बहिरा कूबडा अभिमानी पंगुला नपुंसक कुष्ठी रोगी मृगीरोगवाला यह दश दोष हैं ॥ ८४ ॥

आचारहीनोमूर्खश्चकुरूपश्चोरजारकः । पाखंडीचतथोन्मत्तोगूहकःकुलदूषकः ॥ ८५॥ द्यूतकर्मरतश्चैवदशदोषाःप्रकीर्त्तिताः । एतद्दोषप्रयुक्तायेतेषुकन्यानदीयते ॥ ८६॥ अथजन्मलग्नतोभौमफलम् ॥ लग्ने १ व्ययेच १२ पाताले ४ यामित्रे ७ चाष्टमे ८ कुजे । कन्याभर्तुर्विनाशाय भर्त्ताकन्याविनाशदः ॥ ८७ ॥ एवंविधेकुजेसंस्थेविवाहोनकदाचन । कार्योवागुणबाहुल्येकुजेवाताद्दशेद्वयोः ॥ ८८ ॥ अथभौमपरिहारः । यामित्रे ७ चयदासौरिर्लग्ने १ वाहिबुके४थवा।अष्टमे८ द्वादशे १२ चै-

त्रभौमदोषोनविद्यते ॥ ८९ ॥ अथवंध्यादियोगः । त्यक्ताधवेनोष्णकरे ऽस्त ७ संस्थे बाल्येपिभौमेविधवाप्रदिष्टा। पापग्रहालोकनवर्गयातेकन्यै- ववंध्याभवतीत्यवश्यम् ॥ ९० ॥

आचाररहित मूर्ख कुरूप चोर रंडीबाज पाखंडी बावला(दिवाना)कपटी नीचकुलका ॥८५॥जुवारी यह दश दोष होवे उसको कन्या नहीं देना चाहिये॥८६॥(चुनडी मोलीये मंगलका विचार) लग्नमें १ बारहवें १२ चौथे ४ सातवें ७ आठवें ८ जन्मलग्नसे म- गल होवे तो कन्या भर्त्तारका नाश करनेवाली और भर्त्तार कन्याको मारताहै ॥८७॥ इस तरह मंगल होवे तो विवाह नहीं करना चाहिये परंतु गुण अधिक मिलता होवे या मंगल कन्यावरके एकसा होवे तो विवाह करना श्रेष्ठहै ॥८८॥ (मंगलपरिहार) यदि शनैश्चर जन्मलग्नसे ७।१।४।८।१२ इन स्थानोंमें होवे तो मंगलका दोष नहींहै ॥ ८९ ॥ (वंध्यादियोग) जन्मलग्नसे कन्याके सातवें सूर्य होवे तो पति करके त्या- गीजावे और मंगल होवे तो बालविधवा होवे या सातवें घरमें पापग्रहकी दृष्टि होवे तो वंध्या होवै ॥ ९० ॥

अथविषकन्यालक्षणम् । सूर्यभौमार्किवारेषुतिथिभद्रा २।७।१२ शता- भिधम् । आश्लेषाकृत्तिकाचेत्स्यात्तत्रजाताविषांगना ॥ ९१ ॥ अथवि- षकन्यादोषपरिहारः। सावित्र्यादिव्रतंकृत्वावैधव्यविनिवृत्तये। अश्वत्था- दिभिरुद्वाह्यदद्यात्तांचिरजीविने ॥ ९२ ॥ अथजन्मकालिकदुष्टनक्षत्र- फलम्। मूलजाश्वशुरंहंतिव्यालजाकुलटांगना । विशाखजादेवरघ्नी ज्येष्ठजाज्येष्ठनाशका ॥ ९३ ॥ अथास्यापवादः।आश्लेषाप्रथमःपादःपा- दोमूलांतिमस्तथा । विशाखज्येष्ठयोराद्यास्त्रयःपादाःशुभावहाः ॥ ९४ ॥ अथवधूवरयोर्मेलनम् । वर्णोवश्यंतथातारायोनिश्चग्रहमैत्रकम् । गणकू- टंभकूटंचनाडीचैतेगुणाधिकाः ॥ ९५ ॥ अथोत्तरबलाश्चेतिविज्ञेयास्तुप- रस्परम् । गुणाधिकेवरेकार्योविवाहोवरकन्ययोः ॥ ९६ ॥

(विषकन्याके लक्षण) सूर्य मंगल शनिवारको भद्रातिथी २।७।१२ होवे और आ- श्लेषा कृत्तिका नक्षत्र होवे तब जन्मी हुई कन्या विषकन्या कहातीहै ॥ ९१ ॥ (वि- षकन्याके दोषका उपाय) ज्येष्टसुदी चौदश १४ को सावित्रीका व्रत करै और पीप- लके साथ कन्याका विवाह करके बहुत आयुवाले वरको विवाहदेवे तो दोष नहीं है ॥ ९२ ॥ मूल नक्षत्रमें जन्मनेवाली कन्या ससुरेको मारती है और आश्लेषाकी वेश्या होजातीहै तथा विशाखाकी देवरको और ज्येष्ठामें जन्मनेवाली जेठको मारतीहै॥९३॥

परंतु आश्लेषाका प्रथम चरण, मूलके अंतका चरण और विशाखा ज्येष्ठाका तीन चरण शुभहैं ॥९४॥ (कन्यावरके मिलानेका विचार) वर्ण १ वश्य २तारा ३ योनी४ ग्रहमैत्री ५ गणकूट ६ राशिकूट ७ नाडी ८ यह गुण हैं सो उत्तरोत्तर गुणी समजना चाहिये और वरका अधिक गुण मिलनेसे विवाह करना श्रेष्ठहै ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

अथवर्णप्रीतिः । मीनालिकर्कटा १२।८।४ विप्राःक्षत्रिमेषोहरिर्धनुः १। ५।९ शूद्रोयुग्मंतुलाकुंभो ३।७।११ वैश्यःकन्यावृषोमृगः ६।२।१५ ॥ ९७ ॥ अथवर्णगुणम् । एकोगुणःसदृग्वर्णेतथावर्णोत्तमेवरे । हीनवर्णेवरेशून्यंकेप्याहुःसदृशेऽर्द्धकम् ॥ ९८ ॥ नोत्तमामुद्वहेत्कन्यांब्राह्मणीं चविशेषतः । म्रियतेर्हीनवर्णोयंब्रह्मणासदृशोयदि ॥ ९९ ॥ यदिर्जीवतिभर्त्तातुज्येष्ठपुत्रोविनश्यति । अथवश्यप्रीतिः । युग्मं ३ कुंभस्तुलाकन्याप्राग्दलंधनुषोद्विपात् ॥ १०० ॥ परार्द्धंधनुषश्चैवपूर्वार्द्धंमकरस्यच। केसरीवृषभा २ स्त्वयश्चमेषश्चैतेचतुष्पद्माः ॥ १०१ ॥ नक्रो १० त्तरदलं मीनोजलचारीप्रकीर्त्तितः। कर्कःकीटकसंज्ञश्चवृश्चिकस्तुसरीसृपः॥१०२॥

मीन १२ वृश्चिक ८ कर्क ४ यह राशि ब्राह्मण संज्ञाकीहैं और मेष १ सिंह ५ धन क्षत्रियसंज्ञाकीहैं, मिथुन ३ तुल ७ कुंभ११ शूद्र संज्ञकहैं और कन्या ६ वृष२ मकर १० वैश्यसंज्ञाकीहैं ॥९७॥ दोनोंका एक गुण होवै अथवा वर उत्तम वर्णका होवै तो१ गुण होताहै और हीन वर्णका वर होवे तो ० शून्य जानना कई आचार्य एकसे वर्णमें आधा गुण मानते हैं परन्तु उत्तम वर्णकी या ब्राह्मण वर्णकी कन्या नहीं विवाहनी चाहिये यदि हीन वर्ण विवाहलेवे तो ब्रह्माके सादृश्य होवे तोभी मरजाताहै अथवा वर जीवे तो ज्येष्ठ पुत्र मरताहै ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ (वश्यकेगुण) मिथुन ३ कुंभ ११ तुल ७ कन्या६ धनको पूर्वभाग यह राशि द्विपादसंज्ञकहै धनको उत्तरार्द्ध तथा मकरको पूर्वार्द्ध सिंह ५ वृष २ मेष १ यह चतुष्पद राशि हैं ॥ १०० ॥१०१॥ और मकरको उत्तरार्द्ध मीन १२ यह जलचर हैं और कर्क ४ कीटसंज्ञक हैं वृश्चिक ८ सरीसृपसंज्ञक हैं ॥ १०२ ॥

सिंहंविनावशाःसर्वेद्विपदानांचतुष्पदाः । भक्ष्याजलचरास्तेषांभयस्थाने सरीसृपाः ॥ १०३ ॥ अथवश्येगुणसंख्या । सख्यंवैरंचभक्ष्यंचवश्यमाहुस्त्रिधाबुधाः । वैरेभक्ष्येगुणाऽभावोद्वयोःसख्येगुणद्वयम् ॥ १०४ ॥ अथतारामैत्री । कन्याभंवरभाद्गण्यंवधूभाद्वरभंतथा । नवहृच्छेषभेनेष्टेसप्त ७ पंच ५ त्रि ३ संख्यके ॥ १०५ ॥ एकतोलभ्यतेताराशुभा-

चैवाऽशुभान्यतः । तदासार्द्धोगुणश्चैवतारांशुद्ध्यामिथस्त्रयः ॥ १०६ ॥ उभयोर्नशुभातारातदाशून्यंसमादिशेत् । अथयोनिमैत्री । अश्विनीवासवश्चाश्वोरेवतीभरणीगजः ॥ १०७॥ पुष्यश्चकृत्तिकाछागोनागश्चरोहिणीमृगः । आर्द्रामूलमपिश्वानौमूषकःफाल्गुनीमघा ॥ १.०८ ॥

परन्तु सिंहके विना संपूर्ण चतुष्पद द्विपद मनुष्यके वश हैं और उन्हीके जलचर भक्ष्य हैं तथा सरीसृप भयके देनेवालाहै ॥ १०३ ॥ यह वश्य तीन प्रकारकाहै सख्य १ वैर २ वश्य ३ सो वैरमें तथा भक्ष्यमें गुण नहीं है और सख्यमें दो २ गुण जानना ॥ १०४ ॥ (तारामैत्री) वरके नक्षत्रसे कन्याके नक्षत्रतक गिनै और कन्याके नक्षत्रसे वरके नक्षत्रतक गिनै, फिर दोनों जगें नौ ९ का भाग देवे यदि ७।५। ३ वंचे तो अशुभ जानना ॥ १०५ ॥ यदि एक तरफ तारा शुभ होवे और दूसरी तरफ अशुभ होवे तो डेढ १॥ गुण होताहै और दोनों तरफ तारा शुद्ध होवे तो तीन३ गुण होवे, यदि दोनों तरफ अशुभ तारा होवे तो गुणका अभाव जानना ॥ १०६ ॥ ॥ १०७ ॥ (योनि) अश्विनी धनिष्ठाकी अश्व योनिहै रेवती भरणीकी गजहै पुष्य कृत्तिकाकी छागहै, रोहिणी मृगशिरकी नाग (सर्प) है आर्द्रा मूलकी श्वानहै और पूर्वाफाल्गुनी मघाकी मूषा योनिहै॥ १०८ ॥

मार्जारोदितिराश्लेषागोजातिस्तूत्तरात्रयम् ॥ महिषौस्वातिहस्तौचमृगोज्येष्ठानुराधिके ॥ १०९ ॥ व्याघ्रश्चित्राविशाखाचश्रुत्याषाढेचमर्कटौ । शतंभाद्रपदासिंहौनकुलश्चाभिजित्स्मृतः ॥११०॥ योनयःकथिताभानां वैरंमैत्रीविचार्यताम् । अथयोनिवैरम् । गोव्याघ्रंगजसिंहमश्वमहिषंश्वैणंचबभ्रूरगम्वैरंवानरमेषकंचसुमहत्तद्वद्बिडालोंदुरम्। लोकानांव्यवहारतो तदपिचज्ञात्वाप्रयत्नादिदंदंपत्योर्नृपभृत्ययोरपिसदावर्ज्यंशुभस्यार्थिभिः॥ ॥ १११ ॥ अथयोनिगुणाः । अष्टाविंशातिताराणांयोनयस्तुचतुर्दश । मैत्रंचैवातिमैत्रंचविवाहेनरयोषितोः ॥ ११२ ॥ महद्वैरेचवैरेचस्वभावेचयथाक्रमम् । मैत्रेचैवातिमैत्रेचखेंदुद्वित्रिचतुर्गुणाः । ०।१।२।३।४ ॥ ११३ ॥ अथग्रहमैत्री । शत्रूमंदसितौसमश्चशशिजोमित्राणिशेषारवेस्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्चसुहृदौशेषाःसमाःशीतगोः । जीवेंदूष्णकराःकुजस्यसुहृदोज्ञोरिः सिताकींसमौमित्रेसूर्यसितौबुधस्यहिमगुःशत्रुः समाश्चापरे ॥ ११४ ॥

पुनर्वसु अश्लेषाकी मार्जारहै तीनों उत्तराकी गौ योनी है, स्वाती हस्तकी महिषहै ज्येष्ठा अनुराधाकी मृग योनीहै ॥ १०९ ॥ चित्रा विशाखाकी व्याघ्रहै श्रवण पूर्वाषाढाकी वानरहै, शतभिषा पूर्वाभाद्रपदकी सिंहहै, अभिजित्की नकुल योनीहै इस प्रकार नक्षत्रोंकी योनि जानके वैर मैत्रका विचार करना चाहिये ॥ ११ ॥ गौका व्याघ्रका वैरहै, गजका सिंहका वैरहै, अश्वमहिषका वैरहै श्वानमृगका वैरहै नकुलसर्पका; वानर मेषका; तथा बिलाव मूषेका वैर जानने चाहिये, यह वैर लोकोंके व्यवहारसे कन्यावरके और राजा नोकरके जरूर वर्जने योग्यहै ॥ १११ ॥ इसप्रकार अठाईस २८ नक्षत्रोंके योनिकी चौदा १४ प्रकारकी संज्ञाहै जैसे कन्या वरके, मैत्र १ अतिमैत्र २ महान् वैर ३ वैर ४ स्वभाविक ५ इसी क्रमसे जानना और मैत्रमें ३ तीन गुण अतिमैत्रमें ४ गुण महान् वैरमें शून्य वैरमें १ गुण, स्वभावमें २ है ॥११२॥११३॥ (ग्रहमैत्री) सूर्यके शनि शुक्र शत्रुहै और बुध समहै गुरु मंगल चंद्रमा मित्र है और चंद्रमाके सूर्य बुध मित्र हैं बाकीका सम जानना और मगलके गुरु सूर्य चंद्रमा मित्र है और बुध वैरहै शुक्र शनि सम हैं और बुधके सूर्य शुक्र मित्र है चंद्रमा शत्रुहै बाकीके सम हैं ॥ ११४ ॥

गुरोःसौम्यसितावरीरविर्सुतोमध्योपरेत्वन्यथा।सौम्यार्कीसुहृदौसमौकुजगुरूशुक्रस्यशेषावरी॥ शुक्रज्ञौसुहृदौसमःसुरगुरुःसौरस्यत्वऽन्येरयो । येप्रोक्ताःसुहृदस्त्रिकोणभवनात्तेमीमयाकीर्त्तिताः ॥ ११५ ॥ अथग्रहमैत्रीफलम् । दंपत्योराशियोर्मैत्रीमिथःस्याच्छोभनंतदा । अहितेत्वाहितंविंद्यात्समेवैमध्यमंस्मृतम् ॥ ११६ ॥ अथग्रहमैत्रीगुणाः । तत्रैकाधिपतित्वेतुप्रोक्तंतुगुणपंचकं । चत्वारःसममित्रत्वेद्वयोःसाम्येत्रयोगुणाः ११७ मित्रवैरेगुणश्चैकःसमवैरेगुणार्द्धकम्।परस्परंखेटवैरेगुणशून्यंविनिर्दिशेत् ॥११८॥ अथगणकूटः । अश्विनीमृगरेवत्योर्हस्तःपुष्यःपुनर्वसुः । अनूराधाश्रुतिस्वात्यःकथितोदेवतागणः॥११९॥ तिस्रःपूर्वा३ उत्तराश्चतिस्रोप्यार्द्राचरोहिणी। भरणीचमनुष्याख्योगणोऽसौकथितोबुधैः॥१२०॥

गुरुके बुध शुक्र वैरी शनि समहै बाकीका मित्रहैं और शुक्रके बुध शनी मित्रहैं मंगल गुरु समहैं बाकीका शत्रुहैं और शनिश्चरके शुक्र बुध मित्रहैं गुरु समहैं बाकीका वैरीहै इस प्रकार यह ग्रह त्रिकोण भवनसे हमने मित्र वर्णन कियाहै ॥११५॥ स्त्रीपुरुषके राशिस्वामिकी मित्रता होवे तो दोनोंको शुभ होताहै और शत्रु होवे तो अशुभ फल सम होवे तो मध्यम फल ॥ ११६ ॥ यदि दोनोंकी राशिका एकही पति होवे तो ५ पांच गुण तथा मित्र सम होवे तो च्यार गुण दोनो सम होवे तो तीन गुण जा-

नना॥११७॥ और मित्र वैर होवे तो एक गुण और सम वैरमें आर्ध (आधा) गुण जानना और कन्या वरके राशिके स्वामीका वैर होवे तो गुण नहीं होताहै॥११८॥(गणविचार) अश्वि. मृग. रे. ह. पुष्य. पुन. अनु. श्र. स्वा. यह नक्षत्र देवतागणका हैं॥११९॥१२०॥

कृत्तिकाचमघाश्लेषाविशाखाशततारका । चित्राज्येष्ठाधनिष्ठाचमूलंरक्षोगणःस्मृतः ॥ १२१ ॥ अथगणफलम् । स्वगणेपरमाप्रीतिर्मध्यमादेवमर्त्ययोः । मर्त्यराक्षसयोर्मृत्युःकलहोदेवरक्षसोः ॥ १२२ ॥ अथगणकूटेगुणाः । षट्गुणागुणासादृश्येपंचस्युःसुरमानुषे । नार्यांदेवोनरःपुंसश्चत्वारोवागुणास्त्रयः ॥ १२३ ॥ देवराक्षसयोःशून्यंतथैवनररक्षसोः। अथगणदोषापवादः।मैत्र्यांराशीशयोरंशस्वामिनोर्वरकन्ययोः । नतत्रगुणदोषःस्याद्विवाहःशुभदोमतः।१२४॥यदिरक्षोगणेकन्यावरश्चेन्नृगणोभवेत्।तदोद्वाहोगुणाधिक्येकार्यस्त्वावश्यकेसति॥१२५॥ अथराशिकूटकम् । मृत्युःषट्काऽष्टके६।८।ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवा९त्मजे५ । द्विर्द्वादशे१२ निर्धनत्वंद्वयोरन्यत्र१।३।४।७।१०।११सौख्यकृत॥१२६॥

पूर्वा ३ उत्त. ३ आ. रो. भ. यह मनुष्यगणका नक्षत्र हैं कृ. म. अश्ले. विशाखा. शत. चित्रा. ज्येष्ठा. ध. मू. यह नक्षत्र राक्षसगणका हैं॥ १२१ ॥ कन्यावरका एक गण होवे तो परम प्रीति होवै और देव मनुष्यगण होवे तो मध्यम प्रीति होय और मनुष्यराक्षस होवे तो मृत्यु हो और देवराक्षस गण होवे तो कलह हो ॥ १२२ ॥ दोनोंका एक गण होवे तो गुण ६ होवे और देवमनुष्यका ५ गुण और स्त्री देवता हो पुरुष मनुष्य हो तो तीन ३ गुण और देव राक्षस तथा मनुष्य राक्षस गणका गुण नहींहै ॥ १२३ ॥ परंतु कन्यावरके राशिके तथा नवांशकके स्वामिकी मित्रता होवे तो गणका दोष नहींहे ॥ १२४ ॥ और यदि कन्या राक्षसगणकी होय वर मनुष्य गणका होवे तो गुण अधिक मिलनेसें तथा अति अवश्यकतामें दोष नहींहै॥१२५॥ (राशिकूट) कन्याकी राशिसे वरकी राशि छट्ठी ६ आठवी ८ होवे तो मृत्यु होवे और नवमी ९ पांचवी ५ होवे तो संतानरहित हो या दूसरी २ बारहवी १२ होवे तो दरिद्री होवे और १।३।४।७।१०।११ होवे तो शुभ जाननी ॥ १२६

अथदुष्टराशिकूटापवादः । भवेत्त्रिकोणेबहुपुत्रवित्ताद्विर्द्वादशेचार्थमुपैतिकन्या । षडष्टकेसौख्यफलंविधत्तेस्त्रीणांविवाहोग्रहमैत्रभावे ॥१२७॥ द्विर्द्वादशेवानवपंचमेवाषट्काष्टकेराक्षसयोषितोवा । ऐक्याधिपत्येभवने-

शमैत्रेशुभायपाणिग्रहणंविधेयम् ॥ १२८ ॥ अथनाडीदोषः । ज्येष्ठामूलाश्विनार्द्राख्यद्वयंशतभिषक्द्वयं । उत्तराफाल्गुनीयुग्ममाद्यनाडीयमीरिता ॥ १२९ ॥ चित्रापुष्योऽनुराधाचधनिष्ठाभरणीमृगः । पूर्वाषाढोत्तराभाद्रंपूषैषामध्यनाडिका ॥ १३० ॥ रोहिणीकृत्तिकाश्लेषामघास्वातीद्वयंतथा । रेवतीचोत्तराषाढाश्रवणश्चांत्यनाडिका ॥ १३१ ॥ अथनाडीफलम् । एकनाडिस्थनक्षत्रेदंपत्योर्मरणंध्रुवम् । सेवायांचभवेद्धानिर्विवाहेत्वशुभंभवेत् ॥ १३२ ॥

परंतु दोनोंके राशिस्वामीकी मित्रता होवे और वरकी राशिसे कन्याकी नौवी ९ पाचवी ५ बहुत पुत्र धनके देनेवालीहै और दूसरी २ बारहवीं १२ होवे तो धनवती हो तथा छठी ६ आठवी ८ होवे तो सुख होवे ॥ १२७ ॥ और दूसरी २ बारहवीं १२ नौवी ९ पाचवी ५ छठी ६ आठवी ८ राशि होवे तथा स्त्रीको राक्षस गण होवे तो भी राशिको स्वामी एक होनेसे और राशिके स्वामीकी मित्रता होनेसे विवाह शुभ होताहै ॥ १२८ ॥ (नाडीदोष) ज्ये. मू. अश्वि. आ. पुन. श. पू. भा. उ. फा. ह. यह नक्षत्र आद्यनाडीका हैं ॥ १२९ ॥ चि. पु. अनु. ध. भ. मृ. पू. षा. उ. भा. पू. यह मध्यम नाडीका हैं ॥ १३० ॥ रो. कृ. श्ले. म. स्वा. वि. रे. उ. षा. श्र. यह अंत्य नाडीका नक्षत्र हैं ॥ १३१ ॥ एक नाडीमें स्त्रीपुरुषको नक्षत्र होवे तो मृत्यु हो और नोकर मालकके हानि हो तथा विवाहमें अशुभ हो ॥ १३२ ॥

आदिनाडीपतिंहंतिमध्यनाडीचकन्यकाम् । अंत्यनाडीद्वयोर्हंतिनाडीवेधंविवर्जयेत् ॥ १३३ ॥ अथनाडीप्राशस्त्यं । नाडीकूटंतुसंग्राह्यंकूटानांतुशिरोमणिम् । ब्रह्मणाकन्यकाकंठेसूत्रत्वेनविनिर्मितम् ॥ १३४ ॥ अथावश्यकेनाड्यादिदोषदानानि । हेमाज्यरत्नगोदानंमृत्युंजयजपस्तथा । कुर्यादावश्यकोद्वाहेनाडीदोषापनुत्तये ॥ १३५ ॥ ताम्रंद्विर्द्वादशे दद्यात्सुवर्णंचषडष्टके । गोयुगंनवपंचाख्येस्वर्णंवर्णादिदूषणे ॥ १३६ ॥ हेमान्नंवसनंधेनुंसर्वदोषोपशांतये ॥ अथवर्गप्रीतिः । अवर्गोगरुडोज्ञेयो बिडालःस्यात्कवर्गकः । चवर्गःसिंहनामास्यात्टवर्गःकुक्कुरःस्मृतः ॥ ॥ १३७ ॥ सर्पाख्यःस्यात्तवर्गोपिपवर्गोमूषकोमतः । यवर्गोमृगनामास्यात्तथामेषःशवर्गकः ॥ १३८ ॥

प्रथम नाडी पतिको मारे, मध्य नाडी कन्याको और अंतकी नाडी दोनोंको मारे

इस वास्ते निषेद्धहै परंतु एक नक्षत्रमें जन्मनेवालोंको दोष नहींहै (उक्तंच एकनक्ष-त्रजातानां नाडीदोषोनविद्यते । अन्यर्क्षनाडीवेधेषुविवाहोवर्जितःसदा) ॥ १३३ ॥ यह नाडीविचार संपूर्ण गुणोंमें श्रेष्ठहै और ब्रह्माजीनें कन्याके कंठमें सौभाग्यका यह सूत्र रचाहै परंतु विशेषकरके ब्राह्मणोंके अतिही शुभहै (उक्तंच. नाडीदोषस्तुविप्राणांव-र्णदोषश्चक्षत्रिये गणदोषश्चवैश्येषुयोनिदोषस्तुपादजे) ॥ १३४ ॥ (अवश्यककाममें नाडीआदि दोषका दान) यदि नाडीका दोष होवे तो सुवर्ण. घृत. रत्न. गौ. इनका दान और महामृत्युंजयकाजप करणेसें विवाहमें दोष नहींहै ॥ १३५ ॥ दूसरी २ बा-रहवीं १२ राशिमें तांबेका दान और छठी ६ आठवी ८ में सुवर्ण, नौवी ९ पांचवी ५ में गौदान और वर्ण आदि अशुभ होवे तो सुवर्णदान तथा संपूर्ण दोषनिवारणके अर्थ सुवर्ण अन्न वस्त्र धेनु दान करै तो शुभहै ॥ १३६ ॥ (वर्गप्रीति) अइउए गरुड कखगघङ बिलाव, चछजझञ सिंह, टठडढण श्वान, तथदधन सर्प, पफबभम मूषा, यरलव मृग, शषसह मेष ॥ १३७ ॥ १३८ ॥

अथवर्गवैरम् । वैरीगरुडसर्पौचवैरंतुश्वानमेषयोः । वैरीमूषकमार्जारौवैरं-चमृगसिंहयोः ॥ १३९ ॥ अथद्वितीयःप्रकारः । स्ववर्गात्पंचमःशत्रु श्चतुर्थोमित्रसंज्ञकः । उदासीनस्तृतीयस्तुवर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥ १४० ॥ अथवर्गफलम् । स्ववर्गेपरमाप्रीतिर्मित्रेप्रीतिश्चकथ्यत्ते । उदासीनेप्रीति-रल्पाशत्रुवर्गेमृतिर्भवेत् ॥ १४१ ॥ अथयुंजी (नक्षत्र) प्रीतिः । पौष्णा-दिकंषट्कमुंशतिपूर्वमार्द्रादिकंद्वादश १२ मध्यभागम् । पौरंदराद्यंनवकं ९भचक्रंपरंचभागंगणकाविदग्धाः ॥ १४२ ॥ अथफलम् । पूर्वभागेपतिः श्रेष्ठोमध्यभागेचकन्यका । परभागेचनक्षत्रेद्वयोःप्रीतिर्महीयसी ॥ १४३ ॥ इतिबधूवरयोर्मेलापनम् । अथवाग्दानंवरवरणंच । पूर्वात्रितयमाग्नेयमु-त्तरात्रितयंतथा । रोहिणीतत्रवरणेभगणःशस्यतेतदा ॥ १४४ ॥

गरुडसर्पको वैरहै श्वानमेषको वैरहै, मूसेबिलावको वैरहै. मृगसिंहको वैर जानना ॥ १३९ ॥ अथवा अपने वर्गसे पांचवा वर्ग वैरीहै और चौथा मित्रसंज्ञकहै, तीसरा समहै इस प्रकार तीन भेद जानना ॥ १४० ॥ स्त्रीपुरुषको एक वर्ग होवे तो पूर्णप्रीति होवें, मित्रसंज्ञाके वर्गमेंभी प्रीति होवे और उदासीनमें साधारण प्रीति तथा शत्रुवर्ग होवे तो मृत्यु होवे ॥ १४१ ॥ (युंजीप्रीति) रे. अ. भ. कृ. रो. मृ. यह ६ नक्षत्र पू-र्वभागका हैं, आ. पु. पु. श्ले. म. पू. उ. ह. चि. स्वा. वि. अनु. यह १२ मध्यभा-गका हैं और ज्ये. मू. पू. उ. श्र. ध. श. पू. उ. यह ९ परभागका जानना ॥ १४२ ॥ पूर्वभागमें पति श्रेष्ठ होताहै मध्यभागमें कन्या और परभागमें दोनो स्त्रीपुरुष शुभ

हैं॥१४३॥(सगाईकामुहूर्त्त.) पू. ३ कृ. उ ३ रो. यह नक्षत्र वरको वरनेमें श्रेष्ठ हैं ॥ १४४॥

उपवीतंफलंपुष्यंवासांसिविविधानिच । देयंवरायवरणेकन्याभ्रात्राद्विजेनवा ॥ १४५ ॥ अथकुमारीवरणम् । जन्मतोगर्भाधानाद्वापंचमाब्दात्परंशुभम् । कुमारीवरणंदानंमेखलाबंधनंतथा ॥१४६॥ पंचाङ्गशुद्धिदिवसेचंद्रताराबलान्विते । विवाहोक्तेषुऋक्षेषुकुजवर्जितवासरे॥१४७॥ मासाद्यदिवसंरिक्ता ४।१४ मष्टमींनवमीं ९ तिथिम् । त्यक्त्वान्यदिवसेगंधस्त्रक्तांबूलफलान्वितैः ॥ १४८ ॥ सहवृद्धद्विजगणैर्वरयेत्कन्यकांसतीम् । अरोगिणींभ्रातृमतीमसमानार्षगोत्रजाम् ॥ १४९ ॥ अथकार्यविशेषेजन्मर्क्षनामर्क्षयोःप्राधान्यम् । देशेग्रामेगृहेयुद्धेसेवायांव्यवहारके । नामराशेःप्रधानत्वंजन्मराशिंनचिंतयेत् ॥ १५० ॥

यज्ञोपवीत फल पुष्प वस्त्र बरणके अर्थ कन्याके भ्राता या ब्राह्मणद्वारा वरको देना चाहिये ॥ १४५ ॥ जन्मसे या गर्भसे पांच ५ वरसके उपरांत कन्याकी सगाई तथा मेखलाबंधन करना योग्यहै ॥ १४६ ॥ परंतु पंचांगशुद्धि हो और चंद्र तारा बलवान् हो तथा विवाहके नक्षत्रोंमें मंगलके विना बारोंमें और शुक्लपक्षकी प्रतिपदा१ रिक्ता ४।९।१४।८।९ इन तिथियोंको त्यागके शुभ दिनमें गंध माला तांबूल फलसहित वृद्धब्राह्मणोंकरके श्रेष्ठ कन्याका वरणन अर्थात् सगाई करै परंतु कन्या रोगरहित हो बहुतसे भाइयोंकी (बहिन) हो और अपने गोत्रमें तथा अपने सासन (जात) की नहीं होवे तब सगाई करना श्रेष्ठहै ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ (जन्मराशि तथा नामराशिका विचार) देशके तथा ग्रामके घरके बसनेमें, युद्धमें नोकरी करनेमें, विहारमें इतनी जगें नामकी राशि देखना और जन्मकी राशिको नहीं देखना॥१५०॥

काकिण्यांवर्गशुद्धौचदानेद्यूतेज्वरोदये । मंत्रेपुनर्भूवरणेनामराशेःप्रधानता ॥१५१॥ विवाहेसर्वमांगल्येयात्रादौग्रहगोचरे। जन्मराशेःप्रधानत्वंनामराशिंनचिंतयेत्॥१५२॥अथजन्मराशेरभावेनामराशिमपिग्राह्यम् । विवाहघटनंचैवलग्नजंग्रहजंबलं । नामभाच्चिंतयेत्सर्वंजन्मनज्ञायतेयदा ॥ १५३ ॥ जन्मनज्ञायतेयेषांतेषांनामगवेष्यते । चक्रेऽवकहडेभांशौतन्नाडीकैश्चिदग्निभात् ॥१५४॥ जायापत्योर्भकूटाद्यंगोचराद्याखिलंतथा । अज्ञातेजनिधिष्ण्येतुनामभादेवचिंतयेत् ॥ १५५ ॥ एकस्यापिचदंपत्योरज्ञातेजन्मभेतथा । जन्मभाद्गुरुशुद्ध्यादिमेलनंनामभात्तयोः ॥१५६॥

और परस्परके मिलानेमें या वर्गके मिलानेमें, दान देनेमें, जूवेमें, ज्वरके चढनेमें मंत्रमें, नातेमेंभी नामराशि प्रधानहै ॥ १५१ ॥ और विवाहमें तथा संपूर्ण मंगलीक कार्योंमें, यात्रा, गृहप्रवेश, आदि कामोंमें, और (ग्रहगोचर) ग्रहोंके फल देखनेमें जन्मराशिकी प्रधानताहै सो नामराशिसें नहीं देखना ॥१५२॥ यदि जन्मराशि याद नहीं होवे तो विवाह लग्न, और ग्रहोंका फल नामराशिसेहि देखना योग्यहै ॥१५३॥ परंतु जन्मराशिका अभाव होवे तव नामराशि होडाचक्रके अनुसार लेना चाहिये और कई आचार्य कृत्तिका नक्षत्रसेभी राशि मानते हैं॥१५४॥ स्त्रीपुरुषके राशि आदिका मिलाना और गोचरग्रह आदिका फल जन्मराशि नहीं होनेसें नामराशिसे देखना चाहिये ॥ १५५ ॥ और यदि दोनोंमेसें एककी जन्मराशि याद नहीं होवे तोभी गुरुशुद्धि आदि जन्मराशिसेहि देखे और मिलान तो नामराशिसे करै ॥ १५६ ॥

बहूनियस्यनामानिनरस्यस्युःकथंचन । तस्यपश्चाद्भवंनामग्राह्यंस्वराविशारदैः॥१५७॥ अथस्त्रीणांराशिशुद्धौविशेषः । स्त्रीणांसर्वक्रियाःकार्याविशुद्ध्यास्वामिनःसदा । स्वशुद्ध्यास्वामिशुद्ध्याचगर्भाधानादिकाः क्रियाः ॥१५८॥ विवाहकार्यंकुसुमप्रतिष्ठागर्भप्रतिष्ठावनिताविशुद्धौ।अन्यानिकार्य्याणिधवस्यशुद्धौपत्यौविहीनेप्रमदात्मशुद्ध्या ॥१५९॥ इति श्रीरत्नगढनगरनिवासिनांपण्डितगौडश्रीचतुर्थीलालशर्मणाविरचितेमुहूर्त्तप्रकाशेअद्भुतनिबंधेसंस्कारप्रकरणम् ॥ ५ ॥ पंचमम् समाप्तम् ॥

यदि एक मनुष्यके बहुतसे नाम होवे तो पछाडी(पीछें)का नाम लेना योग्यहै॥१५७॥ (स्त्रियोंके राशिशुद्धिका विशेष विचार) स्त्रियोंका सर्व कार्य पतिकी राशिकी शुद्धिसे करना और गर्भाधान आदि जातकसंस्कारतक दोनोंकी राशिशुद्धिसे करना श्रेष्ठहै ॥ १५८ ॥ और विवाह द्विरागमन, रजोदर्शनशांति, गर्भाधान इत्यादि कार्योंमें स्त्रीकीभी राशिकी अन्य कामोंमें पतिकी राशिसे चंद्र आदिकी शुद्धि जरूर देखनी योग्यहै और पतिके मरनेके अनंतर स्त्रीहीकी राशिसे चंद्रमा आदि देखना चाहिये ॥ १५९ ॥ इतिमुहूर्त्तप्रकाशे संस्कारप्रकरणं पंचमम् ॥ ५ ॥

विवाह प्रकरणम् ६

अथविवाहप्रकरणम् ॥ तत्रतावत्कन्यावरयोर्विवाहकालः ॥ युग्मेऽब्देजन्मतःस्त्रीणांप्रीतिदंपाणिपीडनम् । एतत्पुंसामयुग्मेब्देव्यत्ययेनाशनंतयोः ॥ १ ॥ अत्रकन्याविवाहेविशेषः । अयुग्मेदुर्भगानारीयुग्मेतुविधवाभवेत् । तस्माद्गर्भान्वितेयुग्मेविवाहेसापतिव्रता ॥ २ ॥ मासत्रयादूर्ध्वं

मयुग्मवर्षेयुग्मेपिमासत्रयमेवयावत् । विवाहशुद्धिंप्रवदंतिसर्वेव्यासादयो ज्योतिषिजन्ममासात् ॥ ३ ॥ अथकन्याविवाहेनिषेधकालः । षडब्दमध्येनोद्वाह्याकन्यावर्षद्वयंयतः । सोमोभुंक्तेऽथगंधर्वस्ततःपश्चाद्धुताशनः ॥ ४ ॥ अतोगर्भान्वितेयुग्मेसप्तसंवत्सरात्परम् । आदशाब्दंतुकन्याया-विवाहःसार्ववर्णिकः ॥ ५ ॥ अथकन्यायाःसंज्ञावर्षफलंच ॥ अष्टवर्षाभवेद्गौरीनववर्षाचरोहिणी । दशवर्षाभवेत्कन्याअतऊर्ध्वंरजस्वला ॥ ६ ॥

अथ विवाहप्रकरणं लिख्यते (कन्यावरके विवाहका समय) कन्याका विवाह जन्मसे युग्म ८।१० वर्षोंमें और पुरुषोंका अयुग्म वरसमें करना शुभहैं और विपरीत करनेसें दोनोंका नाश होताहै ॥ १ ॥ (कन्याके विवाहका विशेष विचार) कन्याका विवाह (अयुग्म) नाम एकीके फलावके वरसोंमें करेतो मदभागिनी होवे, और (युग्म) नाम दोकीके फलावसे करैतो विधवा होवे इसवास्ते गर्भसे युग्म ८। १० वरसमें विवाह करे सो कन्या पतिव्रता शुभागिणी होतीहै ॥ २ ॥ (उदाहरण) अर्थात् कन्याके जन्ममासमे (अयुग्म) ७।९।११ वरसके तीन ३ मास जानेसे विवाह शुभहै और (युग्म) ८।१०।१२ वरसके तीन ३ मासके भीतर विवाह श्रेष्ठहै इसप्रकार व्यास वाल्मीक. गर्ग. आदि ऋषि कहते हैं ॥३॥ (निषेधकाल) कन्याका विवाह छः वरस ६ के भीतर नही करना चाहिये कारण दो २ दो २ वरस चंद्रमा, गधर्व अग्नि, कन्याको भोगताहै सो छः ६ वरससे पहले सगाई करनाभी निषेद्धहै ॥४॥ इसवास्ते गर्भसे लेके सात ७ वरसके उपरांत और दश १० वरसके भीतर कन्याका विवाह सपूर्ण वर्णोंको करना शुभहे ॥ ५ ॥ (कन्याके विवाहमें बरसोंका फल) आठ ८ बरसकी कन्याकी गौरी संज्ञाहे और नौ ९ बरसकी रोहिणीसंज्ञकहै दश बरसकी कन्यासंज्ञा कहीहै, और दशसे उपरांत रजस्वलासंज्ञा हो जातीहै ॥ ६ ॥

गौरींददद्ब्रह्मलोकंसावित्रंरोहिणींददत् । कन्यांददत्स्वर्गलोकंरौरवंचरजस्वलाम् ॥ ७ ॥ अथरजस्वलाकन्यायाविशेषनिंदा । प्राप्तेतुद्वादशेवर्षेयःकन्यांनप्रयच्छति । मासिमासिरजस्तस्याःपितापिबतिशोणितम् ॥ ॥ ८ ॥ माताचैवपिताचैवज्येष्ठभ्रातातथैवच । त्रयस्तेनरकंयांतिदृष्ट्वाकन्यांरजस्वलाम् ॥९॥ तस्माद्विवाहयेत्कन्यांयावन्नर्तुमतीभवेत् । विवाहोऽष्टमवर्षायाःकन्यायास्तुप्रशस्यते ॥१०॥ अथविवाहेरविगुरुचंद्रबलम् । वरस्यभास्करबलंकन्यकायागुरोर्बलम् । द्वयोश्चंद्रबलंग्राह्यमितिगर्गेणभाषितम् ॥ ११ ॥ तत्रादौवरस्यरविबलम् । एकादशे ११ तृतीये ३

वा षष्ठे ६ वा दशमेपि १० वा॥वरस्यशुभदोनित्यंविवाहेदिननायकः॥ १२॥

गौरीसंज्ञक कन्याका विवाह करनेसे पिता ब्रह्मलोकको जाताहै और रोहिणीका विवाह करनेसे सूर्यके लोकको और कन्यासंज्ञकके दानसे स्वर्गलोकमें जाताहै और रजस्वलाका विवाह करनेसे रौरव नाम नरकमें पडता है॥ ७ ॥ बारह १२ बरसके बाद जो कन्या नहीं विवाहताहै तो उसका पिता मासमासमें कन्याका शोणित (खून) पीता है ॥८॥ माता पिता ज्येष्ठ भ्राता यह तीनों रजस्वला कन्याको नहीं विवाहे तो नरकको जातें हैं॥९॥इसवास्ते जबतक जितने कन्या रजस्वला नहीं होवे इतनेमें आठ ८ बरस आदिकी कन्याका विवाह श्रेष्ठहै ॥ १० ॥ (विवाहमें सूर्य गुरु चंद्रमाके बलका विचार) वरका सूर्यबल देखना और कन्याका बृहस्पतिका बल और दोनोंका चंद्रमाका बल देखके विवाह करना श्रेष्ठहै ॥ ११ ॥ बरकी जन्मराशिसे ११।३।६ इन स्थानोंमें सूर्य होवे तो विवाहमें शुभहै ॥ १२ ॥

जन्मन्यथ १ द्वितीयेच २ पंचमे ५ सप्तमे ७ पिवा । नवमेचदिवानाथेपूजयापाणिपीडनम् ॥ १३ ॥ अष्टमेचचतुर्थेचद्वादशेचदिवाकरे । विवाहितोवरोमृत्युंप्राप्नोत्यत्रनसंशयः ॥ १४ ॥ अथात्यावश्यकेचतुर्थादिस्थरविशुद्धिप्रकारः । द्विरच्र्योद्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात् । अथावश्यकेविवाहेपूजाद्वयप्राप्तेतस्यपरिहारः । यत्रार्कगुर्वोरपिनैधनां८त्ये १२ जन्मादिदुःस्थानगयोर्द्वयोर्वा । एकस्यपूजामपितत्रकृत्वापाणिग्रहं कार्यमतःकदाचित् ॥ १५ ॥ अथरविपूजाशांतिश्चभास्करंशुद्धसौवर्णंकृत्वायत्नेनमानवः । ताम्रपात्रेस्थापयित्वारक्तपुष्पैःप्रपूजयेत् । रक्तवस्त्रयुगच्छन्नंछत्रोपानधुगान्वितम् ॥ १६ ॥ घृतेनस्नापयित्वाचलड्डुकान् विनिवेद्यच । होमंतिलघृतैःकुर्याद्रविनाम्नाचमंत्रवित् ॥ १७ ॥ समिधोष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरेवच। होतव्यामधुसर्पिर्भ्यांदध्नाचैवघृतेनच॥ १८॥

और १।२।५।७।९ इन स्थानोंमें सूर्य होवे तो पूजा करके विवाहकरै तो शुभहै ॥ ॥ १३ ॥ और आठवें ८ चौथे ४ बारहवें १२ सूर्यमें विवाह करेतो वरकी मृत्यु होवे इसमें संदेह नहीं ॥ १४ ॥ यदि वर बहुत बरसोंमें होगया होवे और अति अवश्यकता होवे तो बारहवें १२ चौथे ४ सूर्यकी दोबेर २ पूजा करनेसे और आठवें ८ सूर्यकी तीन ३ वेर पूजा करनेसे विवाह श्रेष्ठ होताहै, अथवा गुरु सूर्य आटवें ८ बारहवें १२या जन्म आदि पूज्यस्थानोंमें होवे, या दो पूजा लागती होवे तो दोनोंमेंसे एककी यथार्थ पूजा करनेंसेभी अति जरूरतमें विवाह करना शुभहै॥१५॥(सूर्यकी पूजाका वि-

धान) अच्छे सुवर्णकी सूर्यकी मूर्ति बनाके लाल वस्त्रसे लपेटके तावेके पात्रमें स्थापन करे और रक्तचंदन पुष्प आदिकोंकरके पूजा करै छत्ता १ जूता पास रक्खै ॥ १६ ॥ और घृतसे स्नान करावे लड्डुका नैवेद्य अर्पण करै फिर घृत तिलको और शहत घृत दहीसे तर अर्थात खूब चोपडके आककी समिधकी सूर्यके वैदिक या नाममंत्र करके १०८ या २८ अग्निमें आहुती देवै ॥ १७ ॥ १८ ॥

मंत्रेणानेनविदुषेब्राह्मणायप्रदापयेत् । आदिदेवनमस्तुभ्यंसप्तसप्तेदिवाकर ॥ १९ ॥ त्वंरवेतारयस्वास्मानस्मात्संसारसागरात् । सूर्यपीडासुघोरासुकृताशांतिःशुभप्रदा ॥ २० ॥ अथरविदानम् । कौसुंभवस्त्रंगुडहेमताम्रंमाणिक्यगोधूमसुवर्णपद्मं । सवत्सगोदानमितिप्रणीतंदुष्टायसूर्यायमसूरिकाश्च ॥ २१ ॥ इतिरविशुद्धिः ॥ अथकन्यायागुरोर्बलम् । एकादशे ११ द्वितीयेवापंचमेसप्तमेपिवा । नवमेचसुराचार्यःकन्यायाःकथितःशुभः ॥२२॥ षष्ठे ६ जन्मनि १ देवेज्येतृतीयेदशमेऽपिवा। भूरिपूजापूजितःस्यात्कन्यायाःशुभकारकः ॥२३॥ अष्टमे८द्वादशे१२ वापिचतुर्थे ४ वाबृहस्पतौ । पूजातत्रनकर्त्तव्याविवाहेप्राणनाशकः॥२४॥

फिर (आदिदेव) इस मन्त्रको पढके संकल्परीतिसे ब्राह्मणको मूर्तिका दान करै तो सूर्यकी घोरभी पीडा शांति होवे और विवाहमें शुभ होवै ॥१९॥ २० ॥ (सूर्यका दान) पूजा करनेके अनंतर कसुंभेका लाल वस्त्र, गुड, सुवर्ण, ताम्र, लाल मणी, गोधूम, कमल, बछडे सहित धेनु, मसूर यह दान यथाशक्ति दुष्ट सूर्यके अर्थ करे तो शुभ कल्याण होवै ॥ २१ ॥ (कन्याको गुरुकी शुद्धि) कन्याकी जन्मराशिसे ११। २।५।७।९ इन स्थानोंमें गुरु होवे तो विवाहमें शुभ है ॥ २२ ॥ और ६।१।३।१० गुरु होवे तो पूजा करनेसे शुभ होताहै ॥ २३ ॥ और ८।१२।४ इन स्थानोंमें गुरु होवे तो प्राणका नाश करताहै ॥ २४ ॥

अथावश्यकेदोषापवादः ॥ गुरुःस्वोच्चेस्वमैत्रेवास्वांशेवर्गोत्तमेपिवा । शुभस्तुर्याष्टमांत्योपिनीचारिस्थःशुभोप्यसन् ॥ २५ ॥ ऊष १२ चाप ९ कुलीर ४ स्थोजीवोप्यशुभगोचरः । अतिशोभनतांदद्याद्विवाहोपनयादिषु ॥ २६ ॥ सप्तमात्पंचवर्षेसुस्वोच्चस्वर्क्षगतोयदि । अशुभोपिशुभंदद्याच्छुभर्क्षेषुकिंपुनः ॥ २७ ॥ अथकालातिक्रमेविशेषः । अर्कगुर्वो

बलंगौर्यारोहिण्यर्कबलास्मृता । कन्याचंद्रबलाप्रोक्तावृषलीलग्नतोबला ॥ २८ ॥ अष्टवर्षाभवेद्गौरीनववर्षाचरोहिणी । दशवर्षाभवेत्कन्याअत-ऊर्ध्वंरजस्वला ॥ २९ ॥ दशवर्षव्यतिक्रांताकन्याशुद्धिविवर्जिता । त-स्यातारेंदुलग्नानांशुद्धौपाणिग्रहोमतः ॥ ३० ॥

(परिहार)यदि कन्या बडी होगई होवे तथा विवाहकी अति जरूरत होवे और गुरु कर्क ४राशिपर होवे अथवा अपने मित्रकी राशि१।५।८पर होवे या अपने नवांशकपर या अपने वर्गपर होवे या मकरपर होवे अथवा शत्रुकी राशिपर होवे तो अशुभ ४।८ का दोष नहीं शुभ जानना ॥ २५ ॥ और मीन १२ धन ९ कर्क ४ को गुरु होवे तो अ-शुभ ४।८।१२ भी होवे परंतु विवाह यज्ञोपवीत आदि कार्योंमें श्रेष्ठही जानना ॥२६॥ और सात ७ बरससे लेके ग्यारह ११ वर्षतककी कन्याको यदि गुरु अशुभ राशिका ४।८।१२ भीहै परंतु अपनी उच्च ४ राशि या स्वगृह ९।१२ राशिपर होवे तो शुभ जानना और यदि शुभ राशिका होवे तो फिर कहनाही क्याहै॥२७॥गौरी आठ८वरसकी कन्याको सूर्य गुरुका बल देखना और रोहिणी नौ ९ वरसकीको केवल सूर्यकाही बल देखना और कन्या दश वरसकीको चंद्रमाका बल देखना और दश वरससे उ-परांत रजस्वलाको लग्नहीका बल देखना चाहिये ॥ २८ ॥ २९ ॥ दश वरसके अनंतर कन्यासंज्ञा नहीं रहतीहै इसवास्ते उसके विवाहमें तारा चंद्रमा लग्नका बल देखके विवाह करना श्रेष्ठ है ॥ ३० ॥

द्वादशैकादशेवर्षेयस्याःशुद्धिर्नजायते । पूजाभिःशकुनैर्वापितस्यालग्नं-प्रदापयेत् ॥ ३१॥ रजस्वलायदाकन्यागुरुशुद्धिंनचिंतयेत् । अष्टमेपि-प्रकर्त्तव्योविवाहस्त्रिगुणार्चनात् ॥ ३२ ॥ अथगुरुपूजा ॥ कन्यकोद्वाह-कालेतुआनुकूल्यंनविद्यते । ब्राह्मणस्योपनयनेगुरोर्विधिरुदाहृतः॥३३॥ सुवर्णेनगुरुंकृत्वापीतवस्त्रेणवेष्टयेत् । ऐशान्यांधवलंकुंभंधान्योपरिनि-धायच ॥ ३४ ॥ मदनंमधुपुष्पंचपलाशंचैवसर्षपान् । मांसीगुडूच्यया-मार्गोविडंगंशिखिर्नीत्वचा ॥ ३५ ॥ सहदेवीहरिक्रांतासर्वौषधिशतावरी । तथैवाश्वत्थभंगांश्चपंचगव्यंजलंतथा ॥ ३६ ॥ याऔषधीतिमंत्रेणसर्वा-स्त्वस्मिन्विनिक्षिपेत् । कुंभस्योपरिभागेतुस्थापयित्वाबृहस्पतिं ॥ ३७ ॥

बारह१२ग्यारह११बरसकी कन्या रजस्वलासंज्ञाकी होतीहै इसलिये उसके विवाह-में पूजा करके, या शुभ शकुन करके लग्न देना शुभ है॥३१॥ और रजस्वला कन्याको गुरुकी शुद्धि नहीं देखना चाहिये और उसका विवाह तीनगुणी (तिगुनी) पूजासे

आठवे ८ बृहस्पतिमेंभी करलेना चाहिये ॥ ३२ ॥ (गुरुपूजाप्रकार) कन्याके विवाहकालमें और ब्राह्मणके यज्ञोपवीतमें यदि बृहस्पति अशुभ स्थानमें होवे जिसकी विधि लिखते हैं ॥ ३३ ॥ सुवर्णकी गुरुकी मूर्ति बनाके पीतवस्त्रसे वेष्टन करै और धानके ऊपर सुपेद कलश स्थापन करके मदन महुवेका पुष्प पलाशपत्र सरसों जटमासी गिलोय अपामार्ग (ओंगा) वायविडंग शिखिनी वच सहदेई कोयल सर्वोषधी शतावरी पीपलका पत्र पंचगव्य जल यह द्रव्य (या ओषधी) इस मंत्रकरके कलशमें डाले फिर कलशके ऊपर बृहस्पतिका स्थापन करके पूजा करै ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

कृत्वाज्यभागपर्यंतंस्वशाखोक्तविधानतः । पूजयेत्पीतपुष्पाद्यैस्ततोहोमंसमाचरेत् ॥ ३८ ॥ अश्वत्थसमिधश्चाज्यंपायसंसर्पिषायुतं । यवव्रीहितिलाःसाज्यामंत्रेणैवबृहस्पतेः ॥ ३९ ॥ अष्टोत्तरशतंसर्वंहोमशेषंसमापयेत् । ततोहोमावसानेतुपूजयेच्चबृहस्पतिम् ॥ ४० ॥ पीतगंधैस्तथापुष्पैर्धूपैर्दीपैश्चभक्तितः । दध्योदनंचनैवेद्यंफलतांबूलसंयुतम् ॥ ४१ ॥ अर्घ्यंदत्वासुरेशायजपहोमंसमर्पयेत् । पुत्रदारसमेतस्यअभिषेकंसमाचरेत् ॥ ४२ ॥ प्रतिमांकुंभवस्त्रंचआचार्यायनिवेदयेत् । ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाच्छुभदःस्यान्नसंशयः ॥ ४३ ॥

और अग्निस्थापनके अनंतर अपनी शाखा सूत्रके अनुसार आज्यभागपर्यंत घृतका होम करके फिर पीतपुष्प गंधादिकोंसे बृहस्पतिकी पूजा करै तदनंतर पीपलकी समिध घृत पायस शाकल्यकी गुरुके मंत्र करके १०८ आहुती देवै और होमके अंतमें पीत गंध पुष्प धूप दीप दध्योदन तांबूल ऋतुफल आदिकोंकरके पूजाकरै फिर अर्घ्य देके जप होम अर्पण करै और पुत्र स्त्रीसहित यजमानके अभिषेक करै और मूर्त्ति कुंभ वस्त्र आचार्यको देके ब्राह्मणभोजन करावे तो गुरु शुभफलके देनेवाला होताहै ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

इतिबृहस्पतिपूजा ॥ अथगुरोर्दानम् ॥ अश्वंसुवर्णमधुपीतवस्त्रंसपीतधान्यंलवणंसपुष्पं । सशर्करंतद्रजनीप्रयुक्तंदुष्टायशांत्यैगुरवेप्रणीतम् ॥ ॥ ४४ ॥ अथोभयोश्चंद्रबलम् ॥ आद्यश्चंद्रःश्रियंकुर्यान्मनस्तोषंद्वितीयके । तृतीयेधनसंपत्तिश्चतुर्थेकलहागमः ॥ ४५ ॥ पंचमेज्ञानवृद्धिःस्यात्षष्ठेसंपत्तिरुत्तमा । सप्तमेराजसन्मानोमरणंचाष्टमेतथा ॥ ४६ ॥ नवमेधर्मलाभश्चदशमेमनसेप्सितम् । एकादशेसर्वलाभोद्वादशेहानिरे-

वच ॥ ४७ ॥ अथावश्यकेऽनिष्टचंद्रशांतिः । कांस्यपात्रेथसंस्थाप्यसो-मंरजतसंभवम् । श्वेतवस्त्रयुगच्छन्नंश्वेतपुष्पैःप्रपूजितम् ॥ ४८ ॥

(गुरुदान) अश्व, सुवर्ण, शहत, पीतवस्त्र, पीतधान्य, लूण, पीतपुष्प, मिश्री, हलदी यह गुरुके शांतिके अर्थ दान देना योग्य है ॥ ४४ ॥ (चंद्रबल) जन्मको चंद्रमा श्री. प्राप्ति करै १ दूसरा मन प्रसन्न करै २ तीसरा धनकी संपत्ति करै ३ चौथा कलह करै ४ ॥ ४५ ॥ पांचवा ज्ञानकी वृद्धि ५ छठा उत्तम संपत् ६ सातवां राजमें सन्मान ७ आठवां मृत्यु ८ ॥ ४६ ॥ नौवां धर्मलाभ ९ दशवां मनके कार्य सिद्ध करे १० ग्यारहवां सर्वलाभ ११ और बारहवां हानी करे १२ ॥ ४७ ॥ (चंद्रपूजा) यदि चंद्रमा अशुभ ४।८।१२ स्थानमें होवेतो कांसीके पात्रमें चंद्रमाकी चांदीकी मूर्ति स्थापन करके सुपेद वस्त्रसे वेष्टन करै और श्वेतचंदन पुष्प आदिकरके पूजै ॥ ४८ ॥

पादुकोपानहच्छत्रंभोजनासनसयुतं । होमंघृततिलैःकुर्यात्सोमनाम्नाथ-मंत्रवित् ॥ ४९ ॥ समिधोऽष्टोत्तरशरशतमष्टाविंशतिरेववा । होतव्या-मधुसर्पिर्भ्यांदध्नाचैवघृतेनच ॥ ५० ॥ दध्यन्नशिखरेकृत्वाब्राह्मणाय-निवेदयेत् । मंत्रेणानेनराजेंद्रसम्यक्भक्त्यासमन्वितः ॥ ५१ ॥ महा-देवजातिवल्लीपुष्पगोक्षीरपांडुर । सोमसौम्योभवास्माकंसर्वदातेनमोनमः ॥ ५२ ॥ एवंकृतेमहासौम्यःसोमस्तुष्टिकरोभवेत् । इतिचंद्रशांतिः । अथचंद्रदानम् । घृतकलशंसितवस्त्रंदधिशंखंमौक्तिकंसुवर्णंच । रजतं-चप्रदद्याच्चंद्रारिष्टोपशांतयेत्वरितम् ॥ ५३ ॥ इतिरव्यादिशुद्धिप्रकारः। अथविवाहमासाः ॥ माघफाल्गुनवैशाखेयघूढामार्गशीर्षके । ज्येष्ठेवाषा-ढमासेचसुभगावित्तसंयुता ॥ ५४ ॥

और पावडी उपानह छत्र भोजन आसन पास रक्खैं फिर पलासकी समिध शहत घृत दहीसे आर्द्र (भिंगो) करके तिल घृतके सहित चंद्रमाके मंत्र करके १०८ आहुती देवै ॥ ४९ ॥५०॥ और दही चावलके पुंजसहित मूर्तिका दान भक्ति करके (महादेव) इस मंत्रसे करै तो चंद्रमा प्रसन्न होके शांति करै ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ (चन्द्रमाकादान) घृत पूर्ण कलश सुपेदवस्त्र दधि शंख मोती सुवर्ण चांदी यह दान देनेसे चंद्रमाका अरिष्टदोष शीघ्रही दूर होताहै ॥ ५३ ॥ (विवाहके मास) माघ फाल्गुन वैशाख मार्गसिर ज्येष्ठ आषाढ इन महीनोंमें विवाही हुई कन्या श्रेष्ठ भाग्य और धनको भोगनेवाली होती है ॥ ५४ ॥

अथनिषिद्धमासाः ॥ श्रावणेवापिपौषेचकन्याभाद्रपदेतथा ॥ चैत्राश्वयु-

कार्त्तिकेषुयातिवैधव्यतांलघु ॥ ५५ ॥ अथपौषादिषुविशेषः ॥ पौषेपि-कुर्यान्मकरस्थितेर्केचैत्रेभवेन्मेषगतोयदास्यात् । प्रशस्तमाषाढकृतंविवा-हंवदंतिगर्गामिथुनस्थितेऽर्के ॥ ५६ ॥ अथविवाहेजन्ममासादिवर्जनं । जन्ममासेजन्मभेचनचजन्मदिनेबुधः । ज्येष्ठमासेनज्येष्ठस्यविवाहंकारये-त्कचित् ॥ ५७ ॥ नकन्यावरयोज्येष्ठेज्येष्ठयोःपाणिपीडनं । द्वयोरेकत-रेज्येष्ठेनज्येष्ठोदोषमावहेत् ॥५८॥ अथमार्गेविशेषः ॥ मार्गेमासितथाज्येष्ठे-क्षौरंपरिणयंव्रतम् । ज्येष्ठपुत्रदुहित्रोश्चयत्नेनपरिवर्जयेत् ॥५९॥ सिंहेगुरौ-गतेकार्योनविवाहःकदाचन। मेषस्थे चदिवानाथेसिंहस्थोपिशुभप्रदः॥ ६०॥

और श्रावण पौष आश्विन भाद्रपद चैत्र कार्तिक इन महीनोंमें विवाह करनेसे वि-धवा मंदभागिनी होतीहै ॥ ५५ ॥ परंतु पौषमें मकरका सूर्य होवे और चैत्रमें मेषका सूर्य होवे और आषाढमें मिथुनका सूर्य होवे तो गर्गऋषि विवाहको श्रेष्ठ कहताहै ॥ ५६ ॥ और जन्मका मास, जन्मनक्षत्र, जन्मदिन और ज्येष्ठ पुत्र कन्याके विवा-हमें ज्येष्ठ मास वर्जने योग्य है ॥ ५७ ॥ परंच प्रथम वरकन्याका विवाह ज्येष्ठमें नहीं करै और यदि वरकन्यामें एक ज्येष्ठ होवे तथा दूसरा कनिष्ठ होवे तो ज्येष्ठ मासका दोष नहीं है ॥५८॥ और मार्गशिरमें तथा ज्येष्ठमें ज्येष्ठ पुत्र या कन्याका चौल(बाल उतराना) विवाह, यज्ञोपवीत कदापि नही करना चाहिये ॥५९॥ सिंह राशिपर बृह-स्पति होवे तो विवाह नही करै और मेषपर सूर्य आनेसे करै तो विवाह शुभ है॥६०॥

अथविवाहनक्षत्राणि । रोहिण्युत्तररेवत्योमूलंस्वातिमृगोमघा । अनूरा-धाचहस्तश्चविवाहेमंगलप्रदाः ॥ ६१ ॥ अथविवाहेवर्ज्यतिथ्यादि । ष-ष्ठी ६ दर्शो ३० ष्टमीरिक्ता ४।९।१४ कृष्णपक्षांत्यपंचके ११।१२। १३।१४।३० शुक्लाचप्रतिपन्नेष्टा १ स्तिथयोऽन्येतुशोभनाः॥६२॥अ-थरिक्तासुविशेषः । रिक्तासुविधवाकन्यादर्शेऽपिस्याद्विवाहिता । शनैश्च-रदिनेचैवयदारिक्तातिथिर्भवेत् । तस्मिन्विवाहिताकन्यापतिसंतानव-र्द्धिता ॥ ६३ ॥ सौम्यवाराःशुभामध्यौसूर्यमंदौकुजोऽधमः । वर्जयेद्वा-रवेलांचगंडांतंजन्मभंतथा ॥ ६३ ॥ भद्रांक्रकचयोगंचतिथ्यंतंयमघंट-कम् । दग्धातिथिंचभांतंचकुलिकंचाविवर्जयेत् ॥ ६४ ॥ अथवारवेला । तुर्योर्के ४ सप्तम ७ श्चंद्रेद्वितीयो २ भूमिनंदने । चंद्रपुत्रेपंचमश्च ५

देवाचार्येतथाष्टमः ८ ॥ ६५ ॥ दैत्यपूज्येतृतीय ३ श्चशनौषष्ठ ६ श्च-निंदितः । प्रहरार्द्धःशुभेकार्येवारवेलाचकथ्यते ॥ ६६ ॥

(विवाहका नक्षत्र) रोहिणी उत्तरा ३ मूल स्वाति मृगाशिर मघा अनुराधा हस्त-यह नक्षत्र विवाहमें शुभ हैं ॥ ६१ ॥ (वर्जनीक तिथि आदि) ६।३०।८।४।९।१४ कृष्णपक्षमें ११।१२।१३।१४ शुक्लपक्षकी प्रतिपदा १ यह तिथि विवाहमें त्याज्य हैं बाकीकी श्रेष्ठ जानना ॥ ६२ ॥ रिक्ता ४।९।१४ तिथि अमावश्यामें विवाह करे तो विधवा होवे और यदि रिक्ता तिथिके दिन शनैश्चरवार होवे तो विवाही हुई कन्या पतिसंतानके वृद्धि करनेवाली होतीहै ॥ ६३ ॥ विवाहमें शुभवार शुभ हैं और सूर्य शनि मध्यम हैं मंगलवार निषेद्धहै और वारवेला गंडांत जन्म नक्षत्र भद्रा क्रकच योग, तिथिको अंत यमघंट योग, दग्धा तिथि, नक्षत्रका अंत और कुलिक योग विवाहमें वर्जना चाहिये ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ (वारवेला) आदित्यवारको चौथी ४ पहरकी च्यार घडी हैं सो बारबेलाकी हैं सोमवारको सातवी ७ पहरकी ४ घडी. मंगलको दूसरी प्रहरकी ४ घडी. बुधको पांचवीं पहरकी ४ घडी. गुरुवारको आठवीं पहरकी ४ घडी. शुक्रवारको तीसरी पहरकी ४ घडी. और शनिवारको छठी प्रहरकी ४ घडी. बारबेलाकी हैं सो विवाह आदि शुभकार्योंमें निषेद्ध हैं ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

अथगंडांतम् ॥ मासांतेदिनमेकंतुतिथ्यंतेघटिकाद्वयम् । घटिकात्रितयंभान्तेविवाहेपरिवर्जयेत् ॥ ६७ ॥ अथगंडांतफलम् ॥ मासांतेम्रियतेकन्यातिथ्यंतेस्यादपुत्रिणी । नक्षत्रान्तेचवैधव्यंविष्टौमृत्युर्द्वयोर्भवेत् ॥ ६८ ॥ अथकुलिकयोगः । सूर्येचसप्तमी ७ सोमेषष्ठी ६ भौमेचपंचमी ५ । बुधेचतुर्थी ४ देवेज्येतृतीयाभृगुनंदने ॥ ६९ ॥ द्वितीयावर्जनीयाचप्रतिपच्चशनैश्चरे । कुलिकाख्योहियोगोयंविवाहादौनशस्यते ॥ ७० ॥ अथकुलिकादिफलम् । निधनंप्रहरार्द्धेतुनिःस्वत्वंयमघंटके । कुलिकेसर्वनाशःस्याद्रात्रावेतेनदोषदाः ॥ ७१ ॥ अथपरिहारः । मत्स्यांगमगधांध्रषुयमघंटस्तुदोषकृत् । काश्मीरेकुलिकंदुष्टमर्धयामस्तुसर्वतः ॥ ७२ ॥

(गंडांत) संक्रांतिके अंतको १ दिन, तिथिके अंतकी २ घडी. और नक्षत्रके अंतकी ३ घडी. गंडांत संज्ञाकी है सो विवाहमें अशुभ है ॥ ६७ ॥ मासांतमें कन्याको नाश होवे, तिथिके अंतमें पुत्र रहित होवे, और नक्षत्रके अंतमें विवाह करे तो विधवा होवे और भद्रामें करे तो दोनोंकी मृत्यु होवे ॥ ६८ ॥ (कुलिक योग) आदित्यवार सप्तमी ७ तिथि होवे, सोमवार षष्ठी ६ तिथि, मंगलको पंचमी ५ बुधको चतुर्थी ४ शु-

ऋको तृतीया ३ शनिको प्रतिपदा १ द्वितीया २ होवे तो कुलिक योग होताहै सो यह कुलिक योग विवाहमें त्याज्य है ॥ ६९ ॥ ७० ॥ वारवेलामें विवाह करे तो मृत्यु होवे, यमघटमें दरिद्र, और कुलिकमें सर्व नाश होवे परतु इनका रात्रिमें दोष नहीहैं ॥ ७१ ॥ और यमघटयोग, मत्स्य, अग, मगध, आध्र इन देशोंमें और कुलिक काश्मीरमें त्याज्य है परतु वारवेला सपूर्ण देशोंमें त्यागना चाहिये ॥ ७२ ॥

अथदग्धातिथयः । मीने १२ चापे ९ द्वितीयाच २ चतुर्थी ४ वृष २ कुंभयोः ११ । मेष १ कर्कटयोः ४ षष्ठी ६ कन्यायां ६ मिथुने ३ ष्टमी ८ ॥ ७३ ॥ दशमी १० वृश्चिके ८ सिंहे ५ द्वादशी १२ मकरे १० तुले ७ । एताश्चतिथयोदग्धाःशुभेकर्मणिवर्जिताः ॥ ७४ ॥ अथदग्धातिथिफलम् । विवाहेविधवानारीयात्रायांमरणंध्रुवम् । निष्फलंकृषिवाणिज्यंविद्यारंभेचमूर्खता ॥ ७५ ॥ गृहप्रवेशेभंगःस्याच्चूडायांमरणंभवेत् । ऋणदानेफलंनास्तिव्रतदानेचनिष्फले ॥ ७६ ॥ अथहोलाष्टकम् । शुक्लाष्टमी ८ समारभ्यफाल्गुनस्यादिनाष्टकम् । पूर्णिमाऽवधिकंत्याज्यंहोलाष्टकमिदंशुभे ॥ ७६ ॥ अथपरिहारः । शुतुद्र्यांचविपाशायामैरावत्यांत्रिपुष्करे । होलाष्टकंविवाहादौत्याज्यमन्यत्रशोभनम् ॥ ७७ ॥ अथविवाहेदशदोषाः । लत्ता १ पातो २ युति ३ वेंधो ४ जामित्रं ५ बुधपंचकम् ६ । एकार्गलो ७ पग्रहौच ८ क्रांतिसाम्यंतथापरं ९ ॥ ७८ ॥

(दग्धा तिथि) मीन धनके सूर्यमें द्वितीया २ दग्धा तिथि है, वृष कुंभके सूर्यमें चतुर्थी ४ और मेष कर्कमें षष्ठी ६ कन्या मिथुनमें अष्टमी ८ वृश्चिक सिंहमें दशमी १० और मकर तुलके सूर्यमें द्वादशी १२ तिथि दग्धा है, सो यह दग्धा तिथि शुभकार्यमें त्याज्य है ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ दग्धा तिथिमें विवाह करे तो कन्या विधवा होवे, यात्रा करे तो मृत्युहो, खेती वाणिज्य करेतो निष्फल होजावे, विद्यारभ करे तो मूर्ख रहै ॥ ७५ ॥ गृहप्रवेश करे तो नाश होवे, चूडाकर्म (चौल) करे तो मृत्युहो, धन देवेतो निष्फलहो जावे, और व्रतदान करे तो फल नहीं होवे ॥ ७६ ॥ (होलाष्टक) फाल्गुन सुदि अष्टमीसे पूर्णिमातक आठ दिन ८ होलाष्टकका हैं सो विवाह आदि शुभ कार्योमें त्यागना चाहिये ॥ ७७ ॥ परंच शतद्रु नदीके या विपाशाके उज्जयिनी पुष्करराजके समीप देशोंमें त्याज्यहै और अन्य देशोंमें शुभ है ॥ ७८ ॥

दग्धातिथिश्चविज्ञेया १० दशदोषामहाबलाः । एतान्दोषान्परित्यज्य-

लग्नंसंशोधयेद्बुधः ॥७९॥ तत्रादौवेधज्ञानार्थंपंचशलाकाचक्रम् ॥ पंचो-र्ध्वंस्थापयेद्रेषापंचतिर्यङ्मुखस्तथा । द्वयोश्चकोणयोर्द्वेद्वे चक्रंपंचशला-ककम् ॥ ८० ॥ ईशान्येकृत्तिकादेयाक्रमादन्यानिभानिच । ग्रहास्तेषु-प्रदातव्यायेचयत्रप्रतिष्ठिताः ॥ ८१ ॥ लग्नस्यनिकटेयाचगताभवतिपू-र्णिमा ॥ तन्नक्षत्रेस्थितश्चंद्रोदातव्योगणकोत्तमैः ॥ ८२ ॥ पौर्णमास्यां चयदृक्षंफलंतस्यैकमासकं।यावन्नान्याभवेत्पूर्णातमेवाब्जंविचारयेत्॥८३॥

(दशदोष) लात १ पात २ युति ३ वेध ४ यामित्र ५ बुध पंचक (बाण) ६ एकार्गल ७ उपग्रह ८ क्रांतिसाम्य ९ दग्धातिथि १० यह दशदोष महा बलवान् हैं सो इनको त्यागके विवाह करना श्रेष्ठहै ॥ ७९ ॥ (पंचशलाकाचक्रं) पांच रेखा ऊपरको काढै (खैंचे) और पांच रेखा टेढी निकालें फिर दो दो रेखा कोणोंमें लिखे तो पंचशलाका चक्र होताहै ॥ ८० ॥ इस चक्रके ईशानकोणमें कृतिका लिखे फिर क्रमसे प्रदक्षिण मार्गसे बाकीका २७ नक्षत्र लिख देवै और जिस जिस नक्षत्रपर जो जो ग्रह होवे सोभी लिख देना चाहिये ॥ ८१ ॥ और लग्नके नजदीक गई हुई पूर्णिमाको सूर्योदयमें जो नक्षत्र होवे उसी नक्षत्रके ऊपर चंद्रमा लिखना योग्य है ॥८२॥ और पूर्णिमाका जो नक्षत्र है उसका फल एक १ मासतक जानना जबतक दूसरी पूर्णिमा नहीं आवे तबतक पूर्व पूर्णिमाकाही चंद्रमा विवाहमें योग्य जानना ॥ ८३ ॥

अथलत्तादोषः ॥ नक्षत्रंद्वादशंभानुस्त्रितयं ३ लत्तयाकुजः । षष्ठं ६जी-

कृ रो	मृ	आ	पु	पु	आ	
भ						म
अ						पू
रे	पं	च	श	ला		उ
उ	का	च	क्र	म्		ह
पू						चि
श						स्वा
ध श्र अ	उ	पू	मू	ज्ये	अ	वि

वोष्टमं ८ मंदोहंतिदक्षिणतःसदा ॥ ८४ ॥ वामेनसप्तमं७चांद्रिर्नवमं९ सिंहिकासुतः । हंतिभं-पंचमं५ शुक्रोद्वाविंशं२ २ पूर्णचंद्रमाः ॥८५॥अ-थलत्ताफलम् । रवेर्लत्ताहरेद्वित्तंकुजस्यकुरुते-मृतिम् । बृहस्पतेर्बंधुनाशंशनेःकुर्यात्कुलक्षयम् ॥ ८६ ॥ बुधस्यकुरुतेत्रासंलत्ताराहोर्विनाशनम् । शुक्रस्यदुःखदानित्यंत्रासदाचकलानिधेः ॥ ८७ ॥ अथपातदोषः। सूर्ययुक्ताच्चनक्षत्रादेषुपातोभिजायते । मघा १ श्लेषा २ चचित्रा ३ च-सानुराधा ४ चरेवती ५ ॥ ८८ ॥ श्रवणोपिचषष्ठोयं ६ पातदुष्टोनिगद्यते । अश्विनीमवधिंकृत्वागणयेल्लग्नभावविम् ॥ ८९ ॥ पावकःपवमान-श्चविकारिःकलहोपरः।मृत्युक्षयश्चविज्ञेयाःपातषट्कस्यलक्षणम् ॥८९॥

(लातदोषविचार) सूर्य अपने नक्षत्रसे बारहवें नक्षत्रकों को लात मारताहै, मगल तीसरे ३ को गुरु छट्टे ६ को, शनैश्वर आठवें ८ को प्रदक्षिणाके मार्गसे लात मारताहै ॥ ८४ ॥ और बुध सात ७ वें नक्षत्रको, राहु नौवें ९ नक्षत्रको, शुक्र पांचवें५ को और पूर्ण चद्रमा बाईसवें २२ नक्षत्रको वाममार्गसे लात मारताहै ॥ ८५ ॥ सूर्यकी लात धन हरै, मंगलकी लात मृत्यु करै, बृहस्पतिकी बांधवोंका नाश करै, शनिकी लात कुलका क्षय करै ॥ ८६ ॥ बुधकी लात त्रास देवै, राहुकी लात विनाश करै, शुक्रकी लात दुःख करै और चद्रमाकी लात त्रास देवै ॥ ८७ ॥ (पातदोष) सूर्यके नक्षत्रसे विवाहके नक्षत्रतक गिणके लकीर काढै और मघा आदि पातके नक्षत्रोंपर चिन्ह करता जावे फिर अश्विनीसे विवाहके नक्षत्रतक गिने यदि विवाहके नक्षत्रकी संख्यापर मघा आश्लेषा चित्रा अनुराधा रेवती श्रवण इन नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र आजावे तो पातदोष लगताहै ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

अथपातफलम्।पातेनपतितोब्रह्मापातेनपतितोहरिः । पातेनपतितःशंभुस्तस्मात्पातंविवर्जयेत्॥९०॥इतिपातदोषः।अथयुतिदोषः।यत्रगृहेभवेच्चंद्रोग्रहस्तत्रयदाभवेत्।युतिदोषस्तदाज्ञेयोविनाशुक्रंशुभाशुभम्॥९१॥अथयुतिफलम्।दारिद्र्यंरविणाकुजेनमरणंसौम्येननस्युःप्रजादौर्भाग्यंगुरुणासितेनसहितेचंद्रेचसापत्नकम् । प्रव्रज्यार्कसुतेनसेदुजगुरौवांच्छंतिकेचिच्छुभंद्व्या २ द्यैर्मृत्युरसद्ग्रहैःशशियुतैर्दीर्घप्रवासःशुभैः ॥ अथयुतिदोषापवादः । स्वक्षेत्रगःस्वोच्चगोवामित्रक्षेत्रगतोविधुः । युतिदोषायन भवेद्दम्पत्योःश्रेयसेतदा ॥ अथवेधदोषः । एकरेखास्थितैर्वेधोदिननाथादिभिर्ग्रहैः । विवाहेतत्रमासंतुनर्जीवतिकदाचन ॥ ९२ ॥

यह पातदोष पूर्वोक्त नक्षत्रोंका पावक पवमान विकारि, कलह, मृत्यु, क्षय, इन छः नामोंका है सो नाम जैसाही फल जानना चाहिये ॥९०॥ पातदोष करके ब्रह्मा विष्णु महेशभी पतित होजावे इसवास्ते पातदोष वर्जना योग्य है ॥९१॥ (युतिदोष) जिस राशिपर चंद्रमा होवे और उसी राशिपर जो ग्रह होवेतो उसीका शुक्रके विना शुभ अशुभ युतिदोष होताहै रविके साथ चद्रमा होवेतो दरिद्री होवे औरमगलके साथ होवेतो मृत्यु होवे बुधके साथ होवेतो सतान नष्ट होवे गुरुके साथ होवेतो दौर्भाग्य होवे और शुक्रके साथ होवेतो सपत्नी (सौतका) का दुःख होवै शनिके साथ चंद्रमा होवेतो सन्यासिनी हो जावै और कई आचार्य बुध गुरुके साथ चंद्रमाको शुभ कहते है और दो २ या ३ पाप ग्रह चद्रमाके साथ होवेतो मृत्यु करै और शुभ ग्रह होवेतो परदेशका वास करै यदि चंद्रमा कर्कको होवे या

वृषको होवे या अपने मित्रकी राशि ५।९।१२।१।८ पर होवेतो युतिदोष नहीं है कन्यावरको शुभ करताहै (वेधदोष) विवाहनक्षत्रके सन्मुख एक रेखापर सूर्य आदि जो ग्रह होवे तो उसीका वेध जानना इस वेधमें यदि विवाह करै तो एक मासभी वर या कन्या नहीं जीवे ॥ ९२ ॥

अश्विनीपूर्वफाल्गुन्याभरणीचानुराधया । अभिजिच्चापिरोहिण्याकृत्तिकार्चाविशाखया ॥ ९३ ॥ मृगश्चोत्तरषाढेनपूर्वाषाढातथार्द्रया । पुनर्वसुश्चमूलेनतथापुष्यश्चज्येष्ठया ॥ ९४ ॥ धनिष्टयातथाश्लेषामघापिश्रवणेनच । रेवत्युत्तरफाल्गुण्याहस्तेनोत्तरभाद्रपात् ॥ ९५ ॥ स्वातीशतभिषाविद्धाचित्रयापूर्वभाद्रपात् । विद्धान्येतानिवर्ज्यानिविवाहेभानिकोविदैः ॥ ९६ ॥ अथवेधफलम् । रविवेधेचवैधव्यंकुजवेधेकुलक्षयः । बुधवेधेभवेद्वंध्याप्रव्रज्यागुरुवेधतः ॥ ९७ ॥ अपुत्राशुक्रवेधेचसौरेचंद्रेचदुःखिता । परपुरुषरताराहौकेतौस्वच्छंदचारिणी ॥ ९८ ॥

यह वेध अश्विनीका पूर्वाफाल्गुनीका होताहै और भरणी अनुराधाका रोहिणी अभिजित्का, कृत्तिका विशाखाका ॥ ९३ ॥ मृगशिरका उत्तराषाढाका, आर्द्रा पूर्वाषाढाका, मूलका पुनर्वसुका, ज्येष्ठा पुष्यका ॥ ९४ आश्लेषा धनिष्ठाका, श्रवणमघाका, रेवती उत्तराफाल्गुनीका हस्त उत्तराभाद्रपदका, स्वाती शतभिषाका, चित्रा पूर्वाभाद्रपदका, वेध होताहै सो वेधयुक्त नक्षत्र विवाहमें वर्जना चाहिये ॥९५॥९६॥ रविका वेध होवे तो कन्या विधवा होवे, मंगलका होवे तो कुलनाश होवे, बुधका होवे तो वंध्या होवे गुरुका होवे तो स्यामण (साधुइनि) होवे॥९७॥ और शुक्रका वेध होवे तो पुत्ररहित होवे चंद्रमा या शनिका वेध होवेतो दुःखी होवे राहुका वेध होवेतो परपुरुषोंमें रत होवे और केतुका वेध होवेतो कन्या अपने मनमत्ते चले ॥ ९८ ॥

अथावश्यकेवेधापवादः । लग्नेशुभग्रहोवाथलग्नेशोलाभगोथवा । सौम्यैर्दृष्टोयुतोवापिकालहोराशुभस्यवा ॥ ९९ ॥ वेधदोषस्तदानस्याद्विवाहादौसतांमतम् ॥ अथजामित्रम् । चतुर्दशंच १४ नक्षत्रंजामित्रंलग्नभात्स्मृतम् ॥ १०० ॥ शुभयुक्तंतदिच्छंतिपापयुक्तंविवर्जयेत् । चंद्रचांद्रिशुक्रजीवाजामित्रेशुभकारकाः ॥ १०१ ॥ स्वर्भानुभानुमंदाराजामित्रेनशुभप्रदाः । चंद्राद्वालग्नतोवापिग्रहावर्ज्याश्चसप्तमे ॥ १०२ ॥ तत्रस्थिताग्रहानूनंव्याधिवैधव्यकारकाः । इतिजामित्रदोषः ॥ अथबुधपं-

चक्रम् ॥ धार्यास्तिथि १५ मास १२ दशा १० ष्ट ८ वेदाः ४ संक्रांतितोयातदिनैश्चयोज्याः । ग्रहै ९ र्विभागोयदिपंच ५ शेषंरोगस्तथा १ ग्नि२ र्नृप३ चौर ४ मृत्युः५ ॥ १०३ ॥ अथबाणानांसशल्पता ॥ यद्यर्कवारेकिलरोगपंचकंसोमेचराज्यंक्षितिजेचवह्निः । शनौचमृत्युःसुरमंत्रिचौर्य्यंविवाहकालेपरिवर्जनीयम् ॥ १०४ ॥

और यदि लग्नमें शुभ ग्रह होवे या लग्नका पति ग्यारहवें ११ होवे या शुभ ग्रह लग्नपतिको देखता होवे, या शुभ ग्रहका होरा होवेतो अतिजरूरतमें वेधका दोष नहीं है यह श्रेष्ठ पुरुषोंका मत है ॥९९॥ (यामित्रदोष) विवाहके नक्षत्रसे चौदहवा १४ नक्षत्र यामित्रसंज्ञक है सो शुभ ग्रहोंकरके सहित होवे तो शुभ जानना और पापग्रहोंकरके युक्त होवेतो अशुभ होताहै अर्थात् चंद्र बुध शुक्र बृहस्पति यह यामित्रमें शुभकारक हैं ॥ १०० ॥ १०१ ॥ और राहु सूर्य शनि मंगल यह अशुभहैं और चंद्रमासे या लग्नसे सातवें ७ स्थानमें ग्रह वर्जना चाहिये यदि ग्रह होवे तो रोग वैधव्य कारक होताहै ॥ १०२ ॥ (बुधपंचक बाणका विचार)१५।१२।१०।८।४ इन अंकोंमें सक्रांतिका गया हुवा दिन क्रमसे जूदा २ मिलावे और संपूर्ण जगह नौका ९ भाग देवें, जहा पांच ५ बचे सोही क्रमसे, रोग १ अग्नि २ नृप ३ चौर ४ मृत्यु ५ बाण जानना अर्थात् १५ अकमें ८।१७।२६सूर्यका अश मिलनेसे रोगबाण होता है, और १२ में २।११।२०।२९ अंश मिलनेसे अग्निबाण, और १० में ४।१३।२२ मिलनेसे नृपबाण, तथा ८ में ६।१५।२४ मिलनेसे चौर और४अंकमें१।१०।१९।२८ गतसूर्यका अश मिलनेसे मृत्युबाण होताहै॥१०३॥ (बाणोंके भरे रीते (खाली) का विचार) यदि आदित्यवारको रोगबाण लगेतो भरा जानना और सोमवारको राज्यबाण, मंगलवारको अग्निबाण, शनिवारको मृत्युबाण, और गुरुवारको चौरबाण भरा होताहै सो विवाहमें अशुभ है ॥ १०४ ॥

अथबाणानांकालभेदेनपरिहारः । रोगंचौरंत्यजेद्रात्रौदिवाराजाग्निपंचकम् । उभयोःसंध्ययोर्मृत्युमन्यकालेनानिंदितः ॥ १०५ ॥ अथकर्मविशेषेवर्ज्यम् ॥ नृपाख्यंनृपसेवायांगृहगोपेग्निपंचकम् ॥ यानेचौरंव्रतेरोगंत्यजेन्मृत्युंकरग्रहे ॥ १०६ ॥ अथैकार्गलदोषः । योगांकेविषमेचैको १ ज्ञेयोष्टाविंशतिः २८ समे । अर्द्धंकृत्वाश्विनीपूर्वमंकभंमूर्ध्निदीयते ॥ १०७ ॥ विष्कंभेचाश्विनीदेयाप्रीतौस्वातिर्निगद्यते । सौभाग्येचविशाखास्यादायुष्मान्भरणीयुतः ॥ १०८ ॥ शोभनेकृत्तिकादेयात्वनुराधातिगंडके ।

रोहिणीचसुकर्माख्येधृतौज्येष्ठाप्रकीर्त्तिता ॥ १०९ ॥ गंडेमूलंमृगःशूले-
वृद्धौचार्द्रानिगद्यते । पूर्वाषाढाध्रुवेप्रोक्ताव्याघातेचपुनर्वसुः ॥ ११० ॥
हर्षणेचोत्तराषाढावज्रेपुष्यःप्रकीर्त्तितः । अभिजिच्चतथासिद्धावाश्लेषाव्य-
तिपातके ॥ १११ ॥ वरीयसिश्रुतिर्देयापरिघेचमघातथा । शिवेधनि-
ष्ठादातव्यासिद्धौपूर्वांचफाल्गुनी ॥ ११२॥ साध्येशतभिषादेयाशुभेचो-
त्तरफाल्गुनी । पूर्वाभाद्रपदाशुक्लेहस्तेब्रह्माप्रकीर्त्तितः ॥ ११३ ॥

(परिहार) रोगबाण चौरबाण रात्रिमें निषेद्धहैं, और राज अग्निबाण दिनमें त्याज्य हैं, दोनों संध्याकालमें मृत्युबाण निषेद्धहैं अन्यकालमें निषेद्ध नहीं है ॥ १०५ ॥ राजबाण तो राजाके नौकर रहनेमें अशुभहै और अग्निबाण घरके छाणेमें, चौरबाण यात्रामें, रोगबाण यज्ञोपवीतमें और मृत्युबाण विवाहमें निषेद्धहैं और अन्यकार्योंमें निषेद्ध नहीं है ॥ १०६ ॥ (एकार्गलदोष) विवाहके दिन जो योग होवे उसकी यदि विषम संख्या होवें तो १ फिर मिलावे और समसंख्या होवे तो २८ मिलावै फिर आधा करै और अश्विनीसे गिनके जितनी संख्याके अंकका नक्षत्र होवे सोही नक्षत्र रेखाके मस्तक ऊपर लिखै फिरबाकीके नक्षत्र और योगक्रमसे लिखना चाहिये ॥ १०७ ॥ नक्षत्र योगका लिखना ऊपर स्पष्टही है ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥

उत्तराभाद्रपच्चैंद्रेचित्रादेयाचवैधृतौ । सूर्यचंद्रमसोर्योगेभवेदेकार्गलस्त-
था ॥ ११४ ॥ अथैकार्गलचक्रम् । त्रयोदश १३ तिरोरेखाएकोर्ध्वा-
मूर्ध्निविस्तृता । योगांकेप्राप्तनक्षत्रेज्ञेयमेकार्गलंबुधैः ॥ ११५ ॥ अथै-
कार्गलफलम् । यात्रायांमरणंविद्यादारंभेकार्यनाशनम् । वैधव्यंस्याद्वि-
वाहेचदाहश्चवसतांगृहे ॥ ११६ ॥ अथोपग्रहदोषः । अष्टमं ८ पंचमं५
चाष्टादशं १८ वाथचतुर्दशं १४ द्वाविंशैको २२ नविंशंच १९ त्रयोविं-
शं २३ तथैवच ॥ ११७ ॥ चतुर्विंशं २४ तथैतानिनक्षत्राणिपष्टसूर्य-
भात् । उक्तान्युपग्रहाख्यानित्याज्यान्युद्वाहनादिषु ॥ ११८ ॥ अथो-
पग्रहफलम् । गृहप्रवेशेदारिद्र्यंविवाहेमरणंभवेत् । प्रस्थानेविपदःप्रो-
क्ताउपग्रहदिनंयदि ॥ ११९॥ वाल्हीकेकुरुदेशेचवर्जयेत्त्रुपग्रहम्। य-
त्संख्यचरणेखेटस्तत्संख्यंचरणंत्यजेत् ॥ १२० ॥

यदि विवाहके नक्षत्रके सन्मुख रेखापर सूर्य आजावे तो एकार्गल दोष होताहै

॥११४॥ और तेरह १३ लकीर आडी निकाले और एक लकीर ऊभी निकाले तब एकार्गलचक्र होताहै सो इस चक्रकी एक लकीरपर योगके अकमें विवाहके नक्षत्रके सन्मुख सूर्य आजावे तो एकार्गल होता है ॥ ११५ ॥ इस एकार्गलदोषमें यात्रा करे तो मृत्यु होवे गृहारंभ करेतो कार्यका नाश होवे और विवाह करेतो विधवा होवे, गृहप्रवेश करे तो अग्निसे घर दग्ध हो जावे ॥११६॥ (उपग्रहदोष) सूर्यके नक्षत्रसे ८।५।१८।१४।२२।१९।२३।२४ यह आठ नक्षत्र उपग्रहसज्ञक हैं सो विवाह आदि कार्योंमें त्याज्य है ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ इस नक्षत्रोंमें गृहप्रवेश करे तो दारिद्र होवे विवाह करे तो मृत्यु होवे यात्रा करै तो विपदा होवे ॥ ११९ ॥ परंच यह उपग्रहदोष बाल्हीकदेशमें और कुरुक्षेत्रमें त्याज्य है अथवा नक्षत्रके जिस चरणपर ग्रह होवे उसी संख्याको चरण त्यागदेवै ॥ २० ॥

अथक्रांतिसाम्यदोषः । ऊर्ध्वास्तिस्रस्तिरस्तिस्रोमध्येमीनं १२ लिखेद्बुधः। सूर्यचंद्रमसौदृष्टौक्रांतिसाम्यंनिगद्यते ॥ १२१ ॥

	१	१२	११	
२				१०
३	क्रा	ति		९
४	सा	म्य		८
	५	६	७	

मीनः १२ कन्यकया ६ युक्तोमेषः १ सिंहेन ५ संगतः । मकरेण १० वृष.क्रांताश्चापो ९ पिमिथुने ३ नच ॥१२२॥ कर्केण ४ वृश्चिको ८ विद्धोवेधश्चतुल ७ कुंभयोः ११ । क्रांतिसाम्यकृतोद्वाहोनजीवतिकदाचन॥१२३॥

अथफलम् ॥ क्रांतिसाम्यंयदाकुंभे ११ तदातद्दहतेतनुम् । पितुर्विनाशंमीनेचमेषेचपतिनाशनम् ॥ १२४ ॥ वृषे २ कुक्षिभवापीडाभिथुने ३ कामचारिणी । वंध्यास्त्रीचतथाकर्के ४ करोतिकुरुतेगृहम् ॥ १२५ ॥ इतिक्रांतिसाम्यम् ॥ अथैकार्गलादिदोषपरिहारः । एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्त्तर्युदयास्तदोषाः। नश्यंतिचंद्रार्कबलोपपन्नंलग्नेयथार्कोभ्युदयेतमिस्रा ॥ १२६ ॥

(क्रांतिसाम्य) तीन ३ लकीर ऊभी निकाले और तीन ३ आडी निकाले फिर बीचकी रेखाके उपर मीन १२ लिखै और क्रमसे मेषादिराशि वाममार्गसे लिखदेवै यदि एक रेखापर सूर्य चद्रमा आवे तो क्रांतिसाम्यदोष लागताहैं ॥ १२१ ॥ सो यह क्रांतिसाम्य मीन १२ कन्याको ६ मेष १ सिंह५को, मकर १० वृष २ को, मिथुनधन ९ को, कर्क ४ वृश्चिक ८ को, तुल ७ कुंभ ११ को जानना सो इनमें विवाह करनेसे मृत्यु होती है ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ यदि कुभका क्रांतिसाम्य होवे तो शरीरको दग्ध करै मीनका पिताको नाश करै मेषका पतिको मारै, वृषका कुक्षिपीडा करै

मिथुनका स्त्रीको बदचलन करै, कर्कका वंध्या करै ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ (एकार्गलादि दोषका परिहार) एकार्गलदोष, उपग्रह, पातदोष, लातदोष, यामित्र, कर्तरीदोष, लग्नको तथा सप्तम स्थानको दोष यदि चंद्रमा सूर्य बलवान होवे तो संपूर्ण दूर हो-जावे जिस तरह सूर्यका उदय होनेसे रात्रि (अंधकार) दूर हो जावे ॥ १२६ ॥

अथदेशभेदेनदोषपरिहारः । उपग्रहर्क्षकुरुबाह्लिकेषुकलिंगवंगेषुचपाति-तंभम् । सौराष्ट्रशाल्वेषुचलत्तितंभंत्यजेत्तुविद्धंकिलसर्वदेशे ॥ १२७ ॥ मतांतरम् । लत्तामालवकेदेशेपातश्चकुरुजांगले । एकार्गलंचकाश्मीरे-वेधंसर्वत्रवर्जयेत् ॥ १२८ ॥ युतिदोषोभवेद्गौडेयामित्रस्यचयामुने । वे-धदोषस्तुविंध्याख्येदेशेनान्येषुकेषुच ॥ १२९ ॥ तिथयोमासदग्धाख्या-दग्धलग्नानितान्यपि । मध्यदेशेविवर्ज्यानिनदूष्याणीतरेषुच ॥ १२९॥ अथमध्यसंज्ञकदेशाः। मद्रारिमेदमांडव्यसाल्विनीयोज्जिहानसंख्याताः। मरुवत्सघोषयामुनसारस्वतमत्स्यमाध्यमिकाः ॥ १३० ॥ माथुरकोप-ज्योतिषधर्मारण्यानिशूरसेनाश्च। गौरग्रीवोदेहिकपांडुगुडाश्वत्थपांचालाः ॥ १३१ ॥ साकेतकंककुरुकालकोटिकुकुराश्चपारियात्रनगः । औदुंब-रकापिष्ठलगजाह्वयाश्चेतिमध्यमिदम् ॥ १३२ ॥

उपग्रहदोष कुरुक्षेत्र वाल्हिकदेशमें अशुभ है और पातदोष कलिंग वंगदेशमें, लातदोष सौराष्ट्र. शाल्वदेशमें वर्जनीक हैं तथा वेधदोष संपूर्ण देशोंमें त्याज्य है ॥१२७॥ (दूसरा मत) लातदोष मालवेमें अशुभ है और पातदोष कुरुक्षेत्र, जांगलदेशमें त्याज्य है एकार्गलदोष काश्मिरमें और वेधदोष संपूर्ण देशोंमें वर्जना चाहिये॥१२८॥ युतिदोष गौडदेशमें, यामित्र जमनाके नजदीकके देशमें, वेधदोष विंध्याचलके स-मीप निषेद्ध हैं अन्य देशोंमें निषेद्ध नहीं हैं ॥१२८॥ और दग्धा तिथि, दग्धलग्न, म-ध्यदेशमें अर्थात् आर्यावर्त्तक्षेत्रभरमें निषेद्ध हैं अन्यजगहमें नहीं है ॥ १२९ ॥ (म-ध्यदेशका लक्षण) मद्र, अरि, मेद, मांडव्य,साल्व, नीप,उज्जिहान, मरुदेश(मारवाड), वत्सघोष, यामुन, सारस्वत, मत्स्य, मथुरा, उपज्योतिष, धर्मारण्य, शूरसेन, गौर-ग्रीव, देहिक, पांडु, गुड, अश्वत्था, पाचाल, साकेत, कंक, कुरुक्षेत्र, कालकोट, कुकुर, पारिपात्रनग, औदुंबर. पिष्ठल, हस्तनापुर, इतने देशोंकी मध्यदेश संज्ञाहै अर्थात् हि-माचल विंध्याचलके बीचमें द्वारिकासे लेके प्रयागतक मध्यदेशहै॥१३०॥१३१॥१३२॥

---

१ टी०मनुः-हिमवद्विंध्ययोर्मध्यंयत्प्राक्विनशनादपि । प्रत्यगेवप्रयागाच्चमध्यदेशःप्रकीर्त्तितः । इति । विनशनंनामप्रभासक्षेत्रद्वारकासमीपेसरस्वतीतीर्थंज्ञेयं । तदुक्तंमहाभारतेवनपर्वणि। १३० अ याये. एतद्विनशनंनामसरस्वत्याविशांपते । एतत्प्रकाशतेतीर्थंप्रभासंभास्करद्युते॥१॥

अथकर्त्तरीदोषः । लग्नात्पापावृज्वऽनृजूव्यया १२ थें २ स्थौयदातदा । कर्त्तरीनामसाज्ञेयामृत्युदारिद्र्यशोकदा ॥ १३३ ॥ अथकर्त्तरीदोषापवादः । पापयोःकर्त्तरीकर्त्रोःशत्रुनीचगृहस्थयोः । यदात्वस्तगयोर्वापिकर्त्तरीनैवदोषदा॥ १३४॥अथमर्मवेधादिचतुष्कदोषः। मर्मवेधः १ कंटकश्च२ शल्यं३ छिद्रं ४ चतुर्थकम्।एतद्दोषचतुष्कंचपरित्याज्यंप्रयत्नतः १३५ लग्नेपापेमर्मवेधःकंटकोनवपंचमे । चतुर्थेदशमेशल्यंछिद्रंभवतिसप्तमे ॥ १३६ ॥ मरणंमर्मवेधेस्यात्कंटकेचकुलक्षयः । शल्पेचनृपतेर्भीतिःपुत्रनाशश्चछिद्रको ॥ १३७ ॥ अथविवाहलग्नानि ॥ तुलाच ७ मिथुनं३ कन्या ६ पूर्वार्द्धोधनुषो ९ वृषः २ । एतेलग्नाःशुभानित्यंमध्यमाश्चापरे १।४।५।८।१०।११।१२ स्मृताः ॥ १३८ ॥

(कर्तरीदोष) विवाहलग्नके बारहवें १२ दूसरे २ स्थानमें पापग्रह मार्गी वक्री होवे तो कर्त्तरीनाम दोष होताहै सो यह कर्तरी मृत्यु दरिद्र शोकके करनेवाला होताहै ॥ १३३ ॥ यदि कर्त्तरीदोष करनेवाला पापग्रह शत्रुकी राशिपर या नीच राशिपर होवे या अस्तका होवे तो कर्त्तरीदोष नहीं है ॥ १३४ ॥ लग्नमें पापग्रह होवे तो मर्मवेधदोष होताहै और नौवें ९ पांचवें ५ होवे तो कंटकदोष, चौथे ४ दशवें १० शल्पदोष तथा सातवें ७ स्थान पापग्रह होवे तो छिद्रदोष होताहै ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ मर्मवेधमें विवाह करे तो मृत्यु होवे, कंटकमें कुलका क्षय; शल्पमें राजको भय और छिद्रदोषमें करे तो पुत्रका नाश होवे ॥१३७॥ (विवाहलग्न) तुल७मिथुन३ कन्या ६ धनको पूर्वार्द्ध९वृष२यह लग्न विवाहमें श्रेष्ठहै और बाकीका लग्न मध्यम जानना॥१३८

अथपंग्वंधादित्याज्यलग्नानि ॥ दिनेसदांधावृष २ मेष १ सिंहा ५ रात्रौचकन्या ६ मिथुनं ३ कुलीराः ४ । मृगस्तुलालि १०।७।८ र्वधिरोपराह्णेसंध्यासुकुब्जाघट ११ धन्व ९ मीनाः १२ ॥ १३९ ॥ अथफलम् ॥ दिवांधोवरहंताचरात्र्यंधोधननाशकः । दुःखदोबाधिरोलग्नःकुब्जोवंशविनाशकः ॥ १४० ॥ अथैषांपरिहारः । लग्नायभवनेयदिवारवौवादिवांधलग्नंनहितत्रदोषम् । रात्र्यंधलग्नेयदिइंदुकेंद्रेसंध्याकविःकेंद्र १।४।७।१० शुभंविवाहे ॥ १४१ ॥ पंग्वंधकादिलग्नानिमासशून्याश्च राशयः । गौडमालवयोस्त्याज्याअन्यदेशेनगर्हिताः ॥ १४२ ॥ अथविवाहेशुभनवांशाः ॥ गोतुला २।७ युग्म ३ कन्यानां ६ नवांशाःशुभ-

दाःस्मृताः । धनुष्यः ९ प्रथमोभागोविवाहेन्येचनिंदिताः ॥ १४३ ॥ अथ त्याज्यनवांशपरिहारः। अंशस्यपतिरंशेचतन्मित्रंवाशुभोपिवा । पश्येत्तदाशुभोज्ञेयःसर्वेदोषाश्चनिष्फलाः ॥ १४४ ॥

वृष २ मेष १ सिंह ५ यह लग्न दिनमें अंधाहैं और कन्या ६ मिथुन ३ कर्क ४ यह लग्न रात्रिमें अंधा है मकर १० तुल ७ वृश्चिक ८ यह अपराह्ममें (बहिरा) हैं, कुंभ ११ धन ९ मीन १२ यह सध्यासमयमें कूबडा हैं ॥ १३९ ॥ दिनके अंधलग्नमें विवाह करे तो वर मरै, और रात्रिके अंध लग्नमें करे तो धननाश होवे, बहरे लग्नमें अपराह्ममें विवाह करे तो दुःख होवे, संध्याकालमें कूबडेलग्नमें विवाह करे तो वंशका नाश होवे ॥ १४० ॥ लग्नसे ग्यारहवें ११ स्थानमें यदि सूर्य होवेतो दिवांधलग्नका दिनमें दोष नहीं और चंद्रमा केंद्रमें होवे तो रात्रिके अंधेलग्नमें दोष नहीं है, यदि शुक्र केंद्रमें होवे तो संध्याके कूबडे लग्नोंका विवाहमें दोष नहीं है ॥ १४१ ॥ पंगला, अंधालग्न और मासशून्य राशि गौड मालव देशमें निषेद्ध है अन्य देशमें निषेद्ध नहीं है ॥ १४२ ॥ (विवाहमें शुभनवांशक) वृष, तुल, मिथुन, कन्या, धनके पूर्वभागका नवांशक विवाहमें शुभ हैं और बाकीका अशुभ जानना ॥ १४३ ॥ नवांशकका पति नवांशकमें होवे, या उसको मित्र या शुभ ग्रह होवे, या शुभ ग्रह नवांशकको देखता होवे तो नवांशक शुभ जानना और संपूर्ण दोष निष्फल जाताहै ॥ १४४ ॥

लग्नेवर्गोत्तमेवेंदौद्युनाथेलाभगेथवा । केंद्रकोणेगुरौदोषानश्यंतिसकला- अपि ॥ १४५ ॥ अथविवाहलग्नेविश्वाप्रदाग्रहाः । केंद्रेसप्तमहीनेच १। ४।१० द्वित्रिकोणे २।३।९।५ शुभाःशुभाः । धने २ शुभःसदाचंद्रः पापःषष्ठे ६ चशोभनाः ॥ १४६ ॥ तृतीयैकादशे ३।११ सर्वेसौम्याः पापाः शुभप्रदाः । तेचसर्वेसप्तमस्था ७ मृत्युदावरकन्ययोः ॥ १४७॥ पातालां४वरयो१०द्विपंच २।५ नवमे९ लग्नेषु १ सौम्याग्रहाःक्रूराःषष्ठ६ गताःशशीधन२ युतःसर्वेत्रयै३ कादशे११ । यात्रारंभविवाहकार्यसमये राज्याभिषेकेनृणांजामित्रं७ग्रहवर्जितंयदिभवेत्सर्वेपितेशोभनाः॥ १४८॥ अथग्रहाणांविश्वाः । रवौसार्द्धत्रयोभागा ३॥ श्चंद्रेपंच५गुरौत्रयम् ३। द्वे२ शुक्रेद्वे २ बुधेचैवभागाविश्वप्रदाअमीप्रत्येकंसार्द्धभागाश्चमंदमंगल- राहुषु । ग्रहाबलयुताविश्वान्प्रयच्छंतिनदुर्बलाः ॥ १४९ ॥ अथरेखा- प्रदाग्रहाः । लग्नादेकादशेसर्वेलग्नपुष्टिकराग्रहाः । तृतीये ३ चाष्टमे ८ सूर्यःसूर्यपुत्रश्चशोभनः ॥ १५० ॥

लग्नमें वर्गोत्तम राशिपर चंद्रमा होवे अथवा सूर्य ग्यारहवें ११ होवे, या केंद्रमें गुरु होवे तो संपूर्ण दोष दूर होताहै ॥ १४५ ॥ (विश्वा देनेवाला ग्रह) सातवे ७ स्थानके विना केंद्र १।४।१० स्थानमें और दूसरे २ तीसरे ३ नौवें ९ पांचवें ५ स्थानमें शुभ ग्रह शुभ है और दूसरे २ चंद्रमा सदैव श्रेष्ठ है पापग्रह छठे ६ स्थानमें शुभ हैं ॥ १४६ ॥ तीसरे ३ ग्यारहवें ११ संपूर्ण ग्रह शुभ है और सातवें ७ स्थान संपूर्णही ग्रह वरकन्याको मृत्युकारक होते है ॥ १४७॥ ४।१०।२।५।९।१ इन स्थानोंमें शुभ ग्रह विश्वा देते हैं, पापग्रह छठे ६ स्थानमें और चंद्रमा दुसरे २ स्थानमें, संपूर्ण ग्रह तीसरे ३ ग्यारहवें ११ स्थानमें विश्वा देते है ॥ इन ग्रहोंका सातवें ७ स्थानके विना लिखितरीतिसे यात्रा गृहारंभ विवाह, राज्याभिषेक, आदि कार्योंमें विश्वा देखे तो शुभ होताहै ॥ १४८ ॥ (ग्रहोंके विश्वाकी संख्या) सूर्यका ३॥ विश्वा, चंद्रमाका ५ गुरुका ३ शुक्र बुधका २ मंगल, शनि, राहु को १॥ विश्वा जानना परंच ग्रह बलवान् होवे सो विश्वा देवै और दुर्बलग्रह विश्वा नहीं देसक्ताहैं ॥१४९॥ (रेखाके देनेवाला ग्रह) लग्नसे ग्यारहवें ११ सपूर्ण ग्रह शुभ हैं और तीसरे ३ आठवें ८ सूर्य शनिश्वर शुभ होता है॥१५०॥

चंद्रोधने २ तृतीये ३ चकुजःषष्ठे ६ तृतीयके ३ । बुधेज्यौनव ९ षट् ६ द्वि२ त्रि३ चतुः४ पंच५ दश१० स्थितौ ॥ १५१ ॥ शुक्रोद्वि २ त्रि ३ चतुः ४ पंच५ धर्म९ कर्म१० तनु१ स्थितः । राहुर्दशा१० ष्ट८ षट्६ पंच ५ त्रि३ नव ९ द्वादशे १२ शुभः ॥ १५२ ॥ अथविवाहलग्नेभंगदाग्रहाः । लग्नेशनैश्वरःसूर्योलग्नारिनिधने १।६।८ शशीलग्नेऽष्टमे८ महीसूनुरष्टमे८ बुधवाक्यती ॥१५३ ॥ राहुस्तूर्येविलग्ने१ चनिधनारि ८।६ गतोभृगुः । द्यूनेतु७ खेचराःसर्वेविवाहेभंगदाःस्मृताः ॥ १५४ ॥ कुजेखे १० द्वादशे १२ मंदोलग्नेशोनिधनारिगः ८।६ तृतीये३ भार्गवश्चंद्रोव्यये १२ तेनैवशोभनाः ॥ १५५ ॥ अथभंगदग्रहापवादः ॥ नीचराशि ६ गतेशुक्रे शत्रुक्षेत्रगतेऽपिवा । भृगुषट्कोत्थितोदोषोनास्तितत्रनसंशयः ॥ १५६ ॥

चंद्रमा दूसरे २ तीसरे ३ शुभ हैं, मंगल छठे ६ तीसरे ३ बुध, गुरु, नौवें ९ छठे ६ दूसरे २ तीसरे ३ चौथे ४ पांचवें ५ दशवें १० शुभ है ॥ १५१ ॥ शुक्र २।३।४।५।९ १०।१ इन स्थानोंमें शुभ होताहै और राहु १०।८।६।५।३।९।१२ शुभ जानना और रेखा देताहै ॥१५२॥ (लग्नमै भंग देनेवाला ग्रह) लग्नमें शनैश्वर सूर्य अशुभहै, लग्न १ छठे ६ आठवें ८ चंद्रमा अशुभहै, लग्न आठवें ८ मंगल और आठवें ८ बुध बृहस्पति भंग देताहै ॥१५३॥ राहु चौथे ४ लग्नमें १ और आठवें ८ छठे ६ शुक्र अशुभहै सातवें ७ संपूर्ण ग्रह विवाहमें भंग देते हैं ॥ १५४ ॥ मंगल दशवें १० शनि बारहवें १२

लग्नको स्वामी ८।६ शुक्र ३ चंद्रमा १२ श्रेष्ठ नहींहै ॥ १५५ ॥ (भंग देनेवाले ग्रहोंका परिहार) शुक्र कन्याको होवे या शत्रुकी राशि ५।४ पर होवेतो आठवें छठे शुक्रका दोष नहींहै ॥ १५६ ॥

अस्तगेनीचगे ४ भौमेशत्रुक्षेत्रगतेऽपिवा । कुजाष्टमोद्भवोदोषोनकिंचिद-पिविद्यते ॥ १५७ ॥ नीचराशिगते ८ चंद्रेनीचांशकगतेऽपिवा । चंद्रे-षष्ठाष्ट ६।८ रिष्फ १२ स्थेदोषोनास्तिनसंशयः ॥१५८॥ काव्येगुरौवा-सौम्येवायदाकेंद्र १।४।७।१० त्रिकोण १।५गे । नाशयंत्यखिलादोषाः पापानीवहरिस्मृतेः ॥ १५९॥ किंकुर्वंतिग्रहाःसर्वेयस्यकेंद्रेबृहस्पतिः । मत्तमातंगयूथानांशतंहंतिचकेसरी ॥ १६० ॥ शुक्रोदशसहस्राणिबुधो-दशशतानिच । लक्षमेकंतुदोषाणांगुरुर्लग्नेव्यपोहति ॥ १६१ ॥ अथ-विवाहलग्नेक्रमेणग्रहफलम् ॥ वाराहिसंहितायां—मूर्त्तौकरोतिविधवांदिन-कृत्कुजश्चराहुर्विनष्ठतनयांरविजोदरिद्रां । शुक्रःशशांकतनयश्चगुरु-श्चसाध्वीमायुक्षयंचकुरुतेऽत्रचशर्वरीशः ॥ १६२ ॥

मंगल अस्तको होवे अथवा कर्कको होवे या शत्रुकी राशि ३।६ पर होवेतो आठवें ८ छठे६मंगलका दोष नहींहै॥१५७॥ चंद्रमा वृश्चिक८को होवे अथवा वृश्चिक नवांश-कमें होवेतो छठे६आठवें८चंद्रमाका दोष नहीं है॥ १५८ ॥ और शुक्र या गुरु बुध केंद्र १।४।७।१० स्थानमें या त्रिकोण ९।५ में होवेतो संपूर्ण दोषोंको दूर करताहै जैसे ह-रिका नाम पापोंको दूर करताहै ॥१५९॥ जिस लग्नसें बृहस्पति केंद्र १।४।७।१० स्था-नमेंहै तो फिर अन्य ग्रह क्या करसक्ते हैं जैसे सैंकडोंही हस्तियोंको सिंह मार डा-लताहै ॥ १६० ॥ यदि विवाहके लग्नमें शुक्र होवेतो १०,००० दोष दूर करताहै बुध १००० दोष दूर करताहै यदि बृहस्पति लग्नमें होवेतो लक्ष दोष दूर करताहै॥१६१॥ (बारह भावोंका फल) लग्नमें सूर्य मंगल होवेतो विधवा करै, राहु होवेतो संतानको मारे, शनि होवेतो दरिद्रणी करै और शुक्र, बुध, गुरु, होवेतो पतिव्रता करै यदि चंद्रमा लग्नमें होवेतो आयुक्षय करै ॥ १६२ ॥

कुर्वंतिभास्करशनैश्चरराहुभौमा दारिद्रचदुःखमतुलंनियतंद्वितीये। वित्ते-श्वरीमविधवांगुरुशुक्रसौम्या नारींप्रभूततनयांकुरुतेशशांकः॥ १६३ ॥ सूर्येंदुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीये कुर्युस्त्रियंबहुसुतांधनभागिनींच । व्यक्तं-दिवाकरसुतःकुरुतेधनाढ्यां लक्ष्मींददातिनियतंकिलसिंहिकेयः॥ १६४॥

स्वल्पंपयोभवतिसूर्यसुतेचतुर्थे दौर्भाग्यमुष्णकिरणंकुरुतेशशीच। राहुर्विनष्टतनयांशितिजोल्पवीर्यां सौख्यान्वितांभृगुसुरेज्यबुधाश्चकुर्युः॥१६५

नष्टात्मजांरविकुजौखलुपंचमस्थौ चंद्रात्मजोबहुसुतांगुरुभार्गवौच। राहुर्ददातिमरणंरविजस्तुरोगं कन्याप्रसूतिनिरतंकुरुतेशशांकः ॥१६६॥

षष्ठस्थिताःशनिदिवाकरराहुभौमा जीवस्तथाबहुसुतांधनभागिनींच। चंद्रःकरोतिविधवामुशनादरिद्रां वेश्यांशशांकतनयःकलहप्रियांच॥१६७

सौरारजीवबुधराहुरवींदुशुक्रा दद्युःप्रसह्यमरणंखलुसप्तमस्थाः। वैधव्यबंधनभयंक्षयवित्तनाशं व्याधिप्रवासमरणंनियतंक्रमेण ॥ १६८॥

दूसरे सूर्य,शनि, राहु, मंगल होवेतो दरिद्र दुःख करै, गुरु शुक्र बुध होवेतो धनवती सोभाग्यवती करै चंद्रमा दूसरे होवेतो बहुतसे पुत्र देवै ॥ १६३ ॥ तीसरे सूर्य चंद्रमा, मंगल, गुरु, शुक्र बुध शनि राहु होवेतो बहु पुत्र और धन करै ॥ १६४ ॥ चौथे शनिकन्याके दुग्धको नाश करै, सूर्य चद्रमा मंदभाग्य करै. राहु संतान नष्ट करै, मंगल निर्वीर्य करै, और शुक्र, गुरु, बुध, होवेतो सुख देवै ॥ १६५ ॥ पांचवें सूर्य मंगल संतानको नष्ट करै, बुध गुरु शुक्र बहुत पुत्र देवै, राहु मृत्यु करै, शनि रोग करै, चंद्रमा होवेतो बहुतसी कन्या देवै ॥ १६६ ॥ छठे शनि, सूर्य, राहु, मंगल, गुरु, होवेतो बहुतसे पुत्र धन देवै चंद्रमा विधवा करै, शुक्र दरिद्रणी करै, बुध,वेश्या या कलह करनेवाली करताहै ॥१६७॥ सातवें श. मं. गु. बु. रा. सू. चं. शु. यह संपूर्ण ग्रह मृत्यु वैधव्य बंधन भय नाश धननाश रोग परदेशमें मृत्यु क्रमसे करते हैं ॥ १६८ ॥

स्थानेष्टमेगुरुबुधौनियतंवियोगं मृत्युंशशीभृगुसुतश्चतथैवराहुः। सूर्यःकरोतिविधवामधनींकुजश्च सूर्यात्मजोबहुरुजांपतिवल्लभांच ॥ १६९ ॥

धर्मस्थिताभृगुदिवाकरभूमिपुत्र जीवाःसुधर्मनिरतांशशिजःसुभोगाम् । राहुश्चसूर्यतनयश्चकरोतिवंध्यां नारीं प्रभूततनयांकुरुतेशशांकः॥१७०॥

राहुर्नभस्थल१० गतांविधवांकरोति पापेपरांदिनकरश्चशनैश्चरश्च । मृत्युंकुजोऽर्थरहितांकुटिलांचचंद्रःशेषाग्रहाधनवतींबहुवल्लभांच॥ १७१॥

आये११रविर्बहुसुतांधनिनींशशांकःपुत्रान्वितांक्षितिसुतोरविजोधनाढ्यां। आयुष्मतींसुरगुरुर्भृगुजःसुपुत्रीं राहुःकरोतिसुभगांसुखिनींबुधश्च ॥ १७२॥ अंत्ये१२धनव्ययवतींदिनकृद्दरिद्रां वंध्यांकुजःपररतांकुटिलांचराहुः । साध्वींसितेज्यशशिजाबहुपुत्रपौत्र युक्तांविधुःप्रकुरुतेव्य-

यगोदिनांधाम् ॥ १७३ ॥ अथगोधूलिकलग्नम् । तत्रतावद्गोधूलि-
समयः । यदानास्तंगतोभानुर्गोधूल्यापूरितंनभः । सर्वमंगलकार्येषुगोधू
लिश्चप्रशस्यते ॥ १७४ ॥

आठवें गुरु बुध पतिका वियोग करै, चंद्रमा शुक्र राहु मृत्यु करै, सूर्य विधवा करै, मंगल दरिद्रणी करै, शनिश्चर रोगणी और पतिके प्यारी करै ॥ १६९ ॥ नौवें शुक्र रवि, मंगल, गुरु, बुध, होवेतो उत्तम धर्म करनेवाली और भोग भोगनेवाली करते हैं, राहु, शनि, वंध्या करै, चद्रमा बहुत पुत्र देवै ॥ १७० ॥ दशवें राहु विधवा करै, सूर्य, शनि, पापणी करै मंगलमृत्यु करै, चंद्रमा दरिद्रणी कुटिला करै और गुरु, शुक्र, बुध, धनवती पतिवल्लभा करै ॥ १७१ ॥ ग्यारहवें सूर्य बहुत पुत्र देवै, चंद्रमा धनवती करै मंगल पुत्रवती करै, शनि धनवती करै, गुरु आयु देवै, शुक्र उत्तम पुत्र करै, राहु सौ-भाग्य करै. बुध सुख देवै ॥ १७२ ॥ बारहवें सूर्य बहुत खरच करनेवाली दरिद्रणी करै मंगल वंध्या करै, राहु परपुरुषोंमें रत कुटिला करै, शुक्र, गुरु, बुध बहुतसे पुत्र पोता देवै और चंद्रमा दिनांध रोग करै ॥१७३॥ (गोधूलीलग्नका विचार) सूर्य अस्त नहीं होया होवे और जंगलसे आती हुई गौके पगोंकी रेतीसे आकाश भर जावे तब गो-धूलीक समय होताहै सो संपूर्ण मंगलीक कार्योंमें श्रेष्ठहै ॥ १७४ ॥

अर्धास्तात्पूर्वमप्यूर्ध्वंघटिकार्द्धंतुगोरजः । सकालोमंगलेश्रेयान्विवाहा-
दौशुभप्रदः ॥ १७५ ॥ निदाघेत्वर्द्धबिंबेकेंपिंडीभूतेहिमागमे । मेघका-
लेतुपूर्णेऽस्तेप्रोक्तंगोधूलिकंशुभम् ॥ १७६ ॥ अथदेशभेदादिनागोधू-
लीमुख्यता । प्राच्यानांचकलिंगानांमुख्यंगोधूलिकंस्मृतं । गंधर्वादिवि-
वाहेषुवैश्योद्वाहेचयोजयेत् ॥ १७७ ॥ रात्रौलग्नंयदानास्तितदागोधू-
लिकंशुभम् । शूद्रादीनांबुधाःप्राहुर्नद्विजानांकदाचन ॥ १७८ ॥ लग्न-
शुद्धिर्यदानास्तिकन्यायौवनशालिनी । तदावैसर्ववर्णानांलग्नंगोधूलिकं-
शुभम् ॥ १७९ ॥ अथगोधूलिलग्नेग्रहबलम् । यत्रचैकादशश्चंद्रो ११
द्वितीयो२वातृतीयकः३।गोधूलिकःसविज्ञेयःशेषाधूलिमुखाःस्मृताः १८०

सूर्य आधा अस्त हो जावे तबसे पहलेकी आधी घडी और अस्त होनेके बाद आ-धी घडी गोधूली लग्नकीहै सो यह लग्न विवाहादिकोंमें श्रेष्ठ हैं ॥ १७५ ॥ ग्रीष्म ऋतुमें सूर्य आधा अस्त होनेसे, और शरद ऋतुमें सूर्य चक्रके आकार हो जानेसे और वर्षा ऋतुमें सूर्य अस्त होनेसे श्रेष्ठ गोधूली होताहै ॥ १७६ ॥ यह गोधूलिलग्न पूर्वके देशोंमें तथा कलिंग देशमें और गांधर्व आदि विवाहोंमें और वैश्योंके विवाहमें अति श्रेष्ठहै

॥ १७७ ॥ ब्राह्मणोंके तो रात्रिमें शुद्ध लग्न नहीं होवे तब लेना चाहिये और शूद्रोंके तो गोधूली लग्नमेंहि विवाह करना शुभहै ॥ १७८ ॥ यदि लग्न शुद्ध नहीं मिले और कन्या युवान हो जावे तो ब्राह्मण आदि संपूर्ण वर्णोंको गोधूली लग्न शुभहै ॥१७९॥ गोधूली लग्नसे चद्रमा ११।२।३ स्थानमें होवे तब श्रेष्ठ गोधूली होताहै नहीं तो अन्य गोधूली जानना ॥ १८० ॥

अथगोधूल्यांभंगदाग्रहास्त्याज्याःदोषाश्च ॥ अष्टमे८जीवभौमौचबुधश्चभार्गवोष्टमे । लग्नेषष्ठा६ष्टग ८श्चंद्रोगोधूलेर्नाशकस्तदा ॥ १८१ ॥ षष्ठे ६ऽष्टमे८मूर्त्तिगते१शशांकेगोधूलिकेमृत्युमुपैतिकन्या । कुजेष्टमे ८ मूर्त्तिगतेऽथवास्ते ७ वरस्यनाशंप्रवदंतिगर्गाः ॥ १८२ ॥ षष्ठाष्टमे ६।८ चंद्रजचंद्रजीवेक्षोणीसुतेवाभृगुनंदनेवा । मूर्त्तौ१चचेंद्रेनियमेनमृत्युर्गोधूलिकंस्यादिहवर्ज्जनीयम् ॥ १८३ ॥ कुलिकंक्रांतिसाम्यंचलग्ने १षष्ठाऽष्टमे ६।८ शशी । तदागोधूलिकस्त्याज्यःपंचदोषैश्चदूषितः ॥ १८४॥ अथविवाहांगकार्यमुहूर्त्तः ॥ कार्यविवाहकार्यांगंविवाहोदितभेजनैः । विबलंचविधुंहित्वाहित्वात्रि३षष्ठ६नव९मंदिनम् ॥ १८५ ॥ विशाखांभरणींचित्रांज्येष्ठाख्यामश्विनींशतम् । आर्द्राचतुष्टयं ४ हित्वाकुर्याद्वैवाहिकंविधिम् ॥ १८६ ॥

गोधूली लग्नसे आठवें ८ गुरु, मंगल, बुध, शुक्र, होवे और १।६।८ चंद्रमा होवेतो गोधूली अशुभ होताहै ॥ १८१ ॥ ६।८।१ इन स्थानोंमें चद्रमा होवेतो कन्या मरजावे, और ८।१।७ मगल होवेतो वरकी मृत्यु होवे यह गर्गका वाक्यहै ॥ १९२ ॥ चंद्रमा बुध, गुरु मंगल शुक्र ६।८ होवे और लग्नमें चंद्रमा होवेतो निश्चय मृत्यु होवे ॥ १८३ ॥ कुलिकयोग, कातिसाम्यदोष, तथा १।६।८ चंद्रमा होवेतो पंच दोषोंकरके दूषित गोधूली लग्न अशुभहै और त्यागने योग्यहै, परंतु आजकाल भूदेवलोग मत्सरतासे विवाहवृंदावन आदि तुच्छ ग्रंथोका प्रमाण दिखाके ऊपर लिखा हुवा दोष गोधूलीलग्नमें नहीं देखते हैं सो बडी भूलहै कहा तो गर्ग नारद पराशर, आदि महर्षियोंका वाक्य, और कहां विवाहवृंदावन आदि आधुनीक तुच्छ पुस्तकोंका प्रमाण परंतु कलिकालकी महिमा अपारहै ॥ १८४ ॥ (विवाहके पहले होनेवाला कर्म) विवाहसे पहले होनेवाला कर्म विवाह आरंभ (वान वठाणा हलदी हाथ करना सावा पूजने आदि कर्म) विवाहके नक्षत्रोंमें और श्रेष्ठ चंद्रमामें तथा विवाहसे पहले ३।६।९ दिन त्यागके शुभ दिनमें करना चाहिये ॥ १८५ ॥ परंतु विशाखा भ.चि.ज्ये. अश्वि-श. आ. पु. पु. अश्ले. इन नक्षत्रोंको त्यागके विवाहकार्य करना शुभहै ॥ १८६ ॥

हेरंबपूजनंतैलंसकलंचांकुरार्पणम् । भूषणंकंकणाद्यंचवेदिकामंडपादिक-म् ॥ १८७ ॥ अथतैलाभ्यंगेविशेषः । तैलाभ्यंगेरवौतापंसोमेशोभाकु-जेमृतिः । बुधेधनंगुरौहानिःशुक्रेदुःखंशनौसुखम् ॥ १८८ ॥ अथवा-रदोषपरिहारः । रवौपुष्पंगुरौदूर्वांभौमेवारेचमृत्तिका । शुक्रेतुगोमयंद-द्यात्तैलाभ्यंगंनदोषभाक् ॥ १८९ ॥ अथतैलादिलापनेदिनसंख्याः । मेषादिराशिजातानांकुर्यात्तैलादिलापनम् । शैल ७ दिक् १० वाण ५ सप्तां ७ ग १ इषु ५ पंचे ५ षवः ५ शराः ५ । वाण ५ शैला७स्त्रय३ श्चैवक्रमात्कैश्चिदिर्तीरितम् ॥ १९० ॥ अथविवाहवेदिकामंडपस्तंभनि-वेशनंच । चतुरस्रांकरोच्छ्रांचचतुर्हस्तांसुवेदिकाम् । वेश्मनोवामभागे-चकुर्यात्स्तंभोपशोभिताम् ॥ १९१ ॥ सूर्येंगना ६ सिंह ५ घटेषु ७ शैवे स्तंभोलि ८ कोदंड ९ मृगेषु १० वायौ । मीना १२ ज १ कुंभे११नि-र्ऋतौविवाहेस्थाप्योऽग्निकोणेवृष २ युग्म ३ कर्के ॥ १९२ ॥

गणेशपूजन तैलाभ्यंग अंकुरार्पण भूषण कंकण आदिका धारण विवाहवेदी मंडप आदि संपूर्ण कार्य शुभ दिनमें करै ॥ १८७ ॥ आदित्यवारको तैल लगावे तो ज्वर आवै, सोमवारको सोभा, मंगलको मृत्यु, बुधको धनप्राप्ति, गुरुको हानि, शुक्रको दुःख और शनिवारको तैल लगावे तो सुख होवै ॥ १८८ आदित्यवारको तेलमें पुष्प डालके तैल लगानेमें दोष नहीं, गुरुवारको दूर्वा, मंगलको मृत्तिका, शुक्रको गोमय डालके लगावे तो दोष नहींहै ॥ १८९ ॥ मेष आदि राशिवालोंको क्रमसे ७।१०। ५।७।६।५।५।५।५।५।७।३ इतने दिन पहले तैलाभ्यंग करना शुभहै ॥ १९० ॥ विवा-हके अर्थ (चतुरस्र) च्यार कोटवाली एक हाथ ऊँची च्यार ४ हाथ लंबी घरके वाम भागमें स्तंभोंकरके शोभित वेदी बनानी चाहिये ॥ १८१ ॥ विवाहके मंडपका स्तंभ सूर्य कन्या६ सिंह ५ तुलको ७ होवेतो ईशान कोणमें स्थापन करै और ८।९। १० को होवेतो वायुकोणमें धरै १२।१।११ होवेतो निर्ऋति कोणमें और २।३।४ को सूर्य होवेतो अग्निकोणमें स्तंभ धरना शुभहै ॥ १९२ ॥

अथविवाहानंतरमंडपोद्वासनम् । मंडपोद्वासनंषष्ठंहित्वाकुर्यात्समेहनि । पंचमेसप्तमेवापिशुभर्क्षेशुभवासरे ॥१९३॥ अथविवाहानंतरंवधूप्रवेशः॥ लग्नादह्निसमेपंचसप्तकेप्यथषोडशात् । ततस्त्वापंचमाद्वर्षादोजाहेमासि-वत्सरे ॥१९४ ॥ यथेच्छंतुततोबध्वाःप्रवेशःशुभदःस्मृतः । श्रवणादि-

तये २ मूलेऽनुराधारोहिणीमृगे ॥१९५॥ हस्तत्रये२ मघापुष्येत्र्युत्तरे३ रेवतीद्वये । प्रवेशःशुभदोबध्वाःसोमेशुक्रेगुरौशनौ ॥१९६॥ अथप्रथमाब्दमासविशेषणबध्वानिवासदोषः । उद्वाहात्प्रथमेज्येष्ठेयदिपत्युगृहेवसेत् । पत्युर्ज्येष्ठंतदाहंतिपौषेतुश्वशुरंतथा ॥ १९७ ॥ श्वश्रूंसाषाढमासेतुचाधिमासेस्वकंपतिम्। आत्मानंतुक्षयेमासितातंतातगृहेमधौ ॥१९८॥

विवाहके अनतर छट्ठा ६ दिन त्यागके सम दिनमें अथवा पांचवें ५ सातवें ७ दिनमें शुभ नक्षत्र वारको मंडप उठाना श्रेष्ठहै ॥ १९३ ॥ (वधूप्रवेश) विवाहके अनंतर विवाहसे सम दिनमें अथवा पांचवे ५ या सातवें ७ दिनमें सोलह १६ दिनके भीतर २ अथवा पांच वरसतक विषम १।३।५ संख्याके बरस मास दिनमें वधूप्रवेश करे तो शुभहै ॥ १९४ ॥ पांच बरसके उपरांत अपनी इच्छासे कोईसे बरसमें कर लेना शुभहै परंतु श्र. ध. मू. अनु. रो. मृ. ह. चि. स्वा. म. पुष्य. उत्तरा ३ रे. अश्वि. इन नक्षत्रोंमें सोम, शुक्र, गुरु शनिवारमें वधूप्रवेश करना चाहिये॥१९५॥१९६॥ यदि विवाहसे प्रथम ज्येष्ठमें स्त्री पतिके घरमें रहे तो अपने ज्येष्ठको मारतीहै और पौषमें रहे तो सुसरेको, आषाढमें रहे तो सासूको, अधिक मासमें रहे तो अपने पतिको मारतीहै और क्षयमासमें रहे तो अपनी आत्माको नाश करतीहै, यदि चैत्रमें अपने पिताके घरमें रहजावे तो पिताको मारतीहै ॥ १९७ ॥ १९८ ॥

अथद्विरागमनम् । विवाहाद्विषमेवर्षेकुंभमेषालिगेरवौ । बलिन्यर्केविधौजीवेशुभाहेचाश्विनीमृगे ॥ १९९ ॥ रेवतीरोहिणीपुष्येत्र्युत्तरेश्रवणत्रये । हस्तत्रयेपुनर्वस्वौतथामूलानुराधयोः ॥ २०० ॥ कन्या६ मीन १२ तुले७ युग्मे३ वृषे२ प्रोक्तबलान्विते । लग्नेपद्मदलाक्षीणांद्विरागमनमिष्यते ॥२०१॥ भौमार्कवर्जितावारागृह्यंतेचद्विरागमे । षष्ठी६ रिक्ता ४।९।१४ द्वादशीच १२ सामावास्याचवर्जिता ॥ २०२ ॥ अथमासेषुविशेषः ॥ माघफाल्गुनवैशाखेशुक्लपक्षेशुभेदिने । गुर्वादित्यविशुद्धौस्यान्नित्यंपत्नीद्विरागमे ॥ २०२ ॥ चैत्रेपौषेहरिस्वप्नेगुरोरस्तेमलिम्लुचे । नवोढागमनंनैवकृतेपंचत्वमाप्नुयात् ॥ २०३ ॥ अथसंमुखशुक्रादौनिषेधम् । अस्तंगतेभृगोःपुत्रेतथासंमुखमागते । नष्टेजीवेनिरंशौवानैवसंचालयेद्वधूं ॥ २०४ ॥

(द्विरागमनम्.) विवाहसे विषम १।३।५ बरसमें और कुंभ ११ मेष १ के सू-

यमें और वरकन्याको सूर्य चंद्रमा गुरु बलवान् होनेसे शुभ दिनमें द्विरागमन (मुकलावा) श्रेष्ठहै ॥ १९९ ॥ अश्वि. मृ. रे. रो. पुष्य. उ. ३ श्र. ध. श. ह. चि. स्वा. पुन. मू. अनु. यह नक्षत्र शुभ हैं ॥ २०० ॥ कन्या ६ मीन १२ तुल ७ मिथुन ३ वृष २ इन बलयुक्त लग्नोंमें स्त्रीयोंका द्विरागमन करना ॥ २०१ ॥ मंगल शनिके विना संपूर्ण वार शुभ हैं ६।४।९।१४।१२।३० यह तिथि निषेद्ध हैं ॥ २०२ ॥ माघ फाल्गुन वैशाख शुक्लपक्ष शुभदिन श्रेष्ठ हैं गुरु आदित्यकी शुद्धि देखना चाहिये ॥ २०२ ॥ चैत्र, पौष, देवशयनके मास, गुरुका अस्त अधिकमासमें यदि स्त्री पतिके घर जावे तो मृत्यु होवे ॥ २०३ ॥ शुक्र अस्त होवेतो अथवा सन्मुख होवे या गुरुका अस्त होवे, या गुरुअंशहीन होवेतो द्विरागमन नहीं करना ॥ २०४ ॥

गर्भिण्याबालकेनापिनववध्वाद्विरागमे। पदमेकंनगंतव्यंशुक्रेसंमुखदक्षिणे ॥२०५॥ गुर्वणीस्रवतेगर्भंबालोपिमरणंव्रजेत्।नवावधूर्भवेद्वंध्याशुक्रेसंमुखदक्षिणे ॥ २०६ ॥ अथप्रतिशुक्रदोषापवादः । एकग्रामेपुरेवापिदुर्भिक्षेराष्ट्रविल्हवे । विवाहेतीर्थयात्रायांप्रतिशुक्रोनविद्यते ॥ २०७ ॥ पौष्णादावश्विपादांतंयावत्तिष्ठतिचंद्रमाः । तावच्छुक्रोभवेदंधःसन्मुखंगमनंशुभम् ॥ २०८ ॥ पित्रागारेयदिस्त्रीणांस्तनपुष्पोद्गमोवेत् । गमनंप्रतिशुक्रेपिप्रशस्तंपतिवेश्मेनि ॥ २०९ ॥

यदि शुक्र सन्मुख होवेतो गर्भिणी स्त्री या बालकसहित स्त्री और नवीन मुकलावे वाली स्त्री एक पगभी नहीं मेले और शुक्र यदि दक्षिणभागमें होवे तोभी नहि जाना चाहिये ॥ २०५ ॥ यदि शुक्रके सन्मुख या दाहणेमें गर्भणी जावेतो गर्भ गिरजावै बालककों लेकरजावेतो बालकमरे, द्विरागमनमें नवीन स्त्री जावेतो वंध्या होवे॥२०६॥ परंतु एक ग्राममें या नगरमें या राजकेबिगडनेमें, और दुर्भिक्षमें, विवाहमें, तीर्थयात्रामें सन्मुख शुक्रका दोष नहिंहै ॥ २०७ ॥ रेवतीसें कृत्तिकाके प्रथम चरणतक मेषके चंद्रमामें शुक्र अंधा रहताहै सो सन्मुख गमन करणेमें दोष नहि है॥ ॥ २०८ ॥ पिताके घरमें यदि कन्या रजस्वला होजावे तो पतिके घर जाती होईकों शुक्रका दोष नहि है ॥ २०९ ॥

अथत्रिरागमनम् ॥ आदित्यहस्तेऽन्त्यमृगाश्विमैत्रेतथाश्रविष्ठास्वपिवातपित्रे।वध्वास्तृतीयेगमनेप्रशस्तंस्याद्योगिनीशूलतमोविशुद्धौ ॥ २१० ॥ विवाहेगुरुशुद्धिश्चभृगुशुद्धिर्द्विरागमे । त्रिगमेराहुशुद्धिश्चचंद्रशुद्धिश्चतुर्गमे ॥ २११ ॥ इति श्रीबीकानेरराज्यान्तर्गतश्रीरत्नगढनगरनिवा-

सिनापंडितगौडवैद्यश्रीचतुर्थीलालशर्मणाविरचितेअद्भुतेमुहूर्त्तप्रकाशेवि-
वाहप्रकरणंषष्ठंसमाप्तम् ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

(त्रिरागमनमु.) स्त्रीयोंकों तीसरीदफे जानेमें आदित्यवार ह. रे. मृ. अश्वि. अ-
नु. श्र. स्वा. म. यह नक्षत्र श्रेष्ठहै परंतु गमनकालमें योगिनी दिशाशूल देखना चा-
हिये ॥ २१० ॥ विवाहमें कन्याकों गुरुकी शुद्धि और द्विरागमनमें शुक्रकाबल, त्रि-
रागमनमें राहुकी शुद्धि और चतुर्थगमनमें केवल चंद्रमाकी शुद्धि देखनी चाहिये ॥
॥ २११ ॥ इति मुहूर्त्तप्रकाशे विवाह प्रकरणं षष्ठं समाप्तम् ॥ ६ ॥

यात्राप्रकरणम् ७

अथयात्राप्रकरणम् ॥ अथयात्रांप्रवक्ष्यामि वसिष्ठाद्यनुसंमताम् । यात्रा-
तुद्विविधाज्ञेया सौम्याक्रूरातथैवच ॥ १॥ धनाद्यर्थेभवेत्सौम्याक्रूरायुद्धे-
प्रकीर्त्तिता । प्रोच्यतेऽत्रमयासौम्याक्रूराज्ञेयाऽन्यशास्त्रतः ॥ २ ॥ तत्र-
तावद्यात्राकालस्तत्फलंच ॥ मेष १ सिंह ५ धनुः ९ संस्थेयात्राशस्तांशु-
मालिनि । कुंभे११नक्रां१०गना६युग्म३शुक्रभ२।७स्थेतुमध्यमा॥३॥
कर्का४लि८मीनगे१२कैंतु यात्रानिंद्यतरास्मृता (ज्योतिस्तत्वेविशेषः)
सिंहे५धनुषि९मीनेच १२ स्थितेसप्ततुरंगमे । यात्रोद्वाहगृहारंभक्षौरक-
र्मीणिवर्जयेत् ॥ ४ ॥ अथनिषिद्धतिथयः । षष्ठ्यष्टमीद्वादशिकारिक्ता-
मावर्जितासुच । यात्राशुक्लप्रतिपदिनिधनायभवेदिति ॥ ५ ॥ अथया-
त्रायांशुभाऽशुभवासराः। अर्केक्लेशमनर्थकंचगमनेसोमेचबंधुप्रियं चांगा-
रेऽनलतस्करज्वरभयप्राप्नोतिचार्थंबुधे । क्षेमारोग्यसुखंकरोतिचगुरौला-
भश्चशुक्रेशुभो मंदेबंधनहानिरोगमरणान्युक्तानिगर्गादिभि बुधवारेतुप्र-
स्थानंदूरतःपरिवर्जयेत् ॥ ६ ॥

अथ यात्राप्रकरण प्रारभ्यते ॥ इसके अनंतर वसिष्ठ, नारद, गर्ग, आदि महर्षियोंके
मतानुसार यात्रावर्णन करतेहै यात्रा दोप्रकारकीहैं सौम्या तथा क्रूरा १ धन व्यापार
तीर्थ आदिके अर्थ हो सो सौम्या, और युद्ध राजकार्य आदिके अर्थ होसो क्रूराजा-
नना परंतु हमने तो इस ग्रंथमें सोम्या अर्थात् धन्याद्यर्थ यात्राही लिखी है, क्रूर या-
त्रातो मुहूर्त्तचिंतामणी–मुहूर्त्तमार्तंड–मुहूर्त्तगणपति आदि ग्रंथोंसें जानलेना २ (अब
यात्राका समय लिखतेहै) मेष, सिंह, धन, इन राशियोंपर सूर्य होवेतो श्रेष्टयात्रा और
कुंभ. मकर. कन्या, मिथुन वृष, तुल इनमें होवेतो मध्यमा तथा कर्क, वृश्चिक, मीन,

इनपें सूर्य होवेतो निंदित यात्रा जाननी ॥ ३ ॥ (ज्योतिस्तत्वमें विशेष लिखाहै) सिंह, धन, मीन, इनपें सूर्य होवेतो यात्रा विवाह गृहारंभ चौलकर्म नहीं करना चाहिये (यात्रामें त्याज्य तिथयः) षष्ठी अष्टमी द्वादशी (रिक्ता) चौथ नवमी चतुर्दशी अमावास्या शुक्लपंक्षकी प्रतिपदा इन तिथियोंमें यात्राकरे तो मृत्यु होवै ॥५॥ (अथ यात्राके शुभ अशुभ वारली.) आदित्यवारकों गमनकरैतो क्लेश और अनर्थ होवे सोमवारमें बंधु तथा प्रिय वस्तुका लाभहो मंगल वारकों अग्नि, चौर, रोगज्वरका भयहो, बुधवारकों अर्थकी प्राप्तिहो. गुरुवारकों क्षेम (कुशल) आरोग्य, सुख, प्राप्तिहो शुक्रवारकों शुभलाभ होवे और शनिवारकों गमनकरै तो बंधन- हानि, रोग, मृत्यु, होवे ऐसा गर्गादिमुनियोंने कथन कियाहै यहां जो बुधवार श्रेष्ठ मानागयाहै सो सौम्यवार होनेसे शुभ मानागया परंतु यात्रामें तो बिलकुल निंदितहै क्योंकी बुधकेदिन तो प्रस्थानभी नहीं लिखाहै ॥ ६ ॥

अथयात्रायामुत्तममध्यमनेष्टनक्षत्राणि । धनिष्ठाश्रवणोहस्तोऽनुराधारेवतीद्वयम् । मृगःपुनर्वसुःपुष्यःश्रेष्ठान्येतानिभानिच ॥ ७ ॥ मूलंपूर्वात्रयंज्येष्ठारोहिणीशततारकाः। उत्तराणांत्रयंयानेमध्याऽन्येतानिभानिच॥८ चित्रात्रयंमघाऽश्लेषाकृत्तिकार्द्राभरण्यपि । वर्ज्यान्येतानिधिष्ट्यानियात्रायांजन्मभंतथा ॥९॥ अथअत्यावश्यकेवर्ज्यनक्षत्राणांत्याज्यघटिकाः। कृत्तिकाभरणीपूर्वामघानांघटिकाःक्रमात् । एकविंश२१ तिसप्त७थषोडशै१६कादश११त्यजेत् ॥ १० ॥ ज्येष्ठाऽश्लेषाविशाखासुस्वात्यांचापिचतुर्दश १४ । भृगोर्मतेसंकटेपिसर्वांस्वातींमघांत्यजेत् ॥ ११ ॥ अथदिक्शूलम् । शनौचंद्रेत्यजेत्पूर्वांदक्षिणांचदिशंगुरौ । सूर्येशुक्रेपश्चिमांचबुधेभौमेतथोत्तरां ॥ १२ ॥

(अब यात्राके शुभाशुभ नक्षत्र लिखतेहैं) धनिष्ठा श्र. ह. अनुराधा रे. अ. मृ. पुनर्वसु. पुष्य यह नक्षत्र श्रेष्ठहै ॥ ७ ॥ मूल पूर्वातीनो ज्येष्ठा, रो. शतभिश उत्तरा तीनों यह मध्यमहै ॥ ८ ॥ चित्रा स्वा. वि. मघा श्लेषा कृ. आर्द्रा भरणी जन्मनक्षत्र यह नक्षत्र यात्रामें वर्जनीकहे ॥ ९ ॥ (यदि अति जरूरत होवेतो निषिद्ध नक्षत्रोंकी घडी त्यागदेनी सो लिखतेहैं) कृत्तिकाकी २१ घडी भरणीकी ७ घडी तीनों पूर्वाकी १६ घ. मघाकी ११ त्यागदेनी चाहिये ॥ १० ॥ ज्ये. श्ले. वि. स्वा. इन नक्षत्रोंकी१४घडी त्याज्यहै परंतु भृगुजीके मतमेंतो स्वाती, मघा, यह दो नक्षत्र सर्वथाही त्याज्यहै ॥ ११ ॥ (दिक् शूल.) शनि और सोमवारकों पूर्वदिशामें गमन नहीं

करना और गुरुवारकों दक्षिणमें सूर्य शुक्रवारकों पश्चिममें तथा बुध भौमवारकों उत्तरदिशामें गमन नहीं करना चाहिये ॥ १२ ॥

अथविदिक्शूलम् । आग्नेय्यांचगुरौचंद्रेनैर्ऋत्यांरविशुक्रयोः। ईशान्यांचंद्रजेवायौमंगलेगमनंत्यजेत् ॥ १३ ॥अथनक्षत्रशूलं । दिक्शूलंपूर्वदिग्भागेजेष्ठायांशनिसोमयोः । पूर्वाभाद्रपदेयाम्यांतथैवगुरुवासरे ॥ १४॥ रवौशुक्रेचरोहिण्यांपश्चिमायांत्यजेद्बुधः । उदीच्यामुत्तराफाल्गुन्यभिधेमंगलेबुधे ॥१५॥ अथशूलफलम्।शूलसंज्ञानिधिष्ण्यानिशूलसंज्ञाश्चवासराः । यायिनांमृत्युदाःशीघ्रमथवाचार्थहानिदाः ॥१६॥ अथअत्यावश्यकेशूलपरिहारः । सूर्यवारेघृतंप्राश्यसोमवारेपयस्तथा । गुडमंगारकेंवारेबुधवारेतिलानपि ॥ १७ ॥ गुरुवारेदधिप्राश्यशुक्रवारेयवानपि । माषान्भुक्त्वाशनेर्वारेगच्छन्शूलेनदोषभाक् ॥ १८ ॥

(विदिक् शूल) गुरुवार चंद्रवारकों अग्निकोनमें नहि जावे और आदित्य शुक्रवारकों नैऋत्यदिशामें तथा बुधवारकों ईशानमें और मगलवारकों वायु कोनमें गमन नहीं करै ॥१३॥ (नक्षत्र शूल) ज्येष्ठा नक्षत्रमें तथा शनि सोमवारनें पूर्वमें दिशा शूलहै, पूर्वाभाद्रपद, गुरुवारनें दक्षिनमें ॥ १४ ॥ रोहिणी, सूर्य, शुक्रवारकों पश्चिममें उत्तराफाल्गुनी तथा मंगल बुधवारकों उत्तरदिशामें दिशा शूल जानना ॥ १५ ॥ (शूल फलम्) शूल संज्ञावाले नक्षत्र तथा शूलसंज्ञक वार सन्मुख जानेवालोंके मृत्युदायकहै और धनकानाश करताहै ॥१६॥ (अतिजरूरतमें सन्मुख दिशा शूलकी उपाय) आदित्यवारकों गमनसमयमें घृत चाटे, सोमवारकों दुग्ध दानकरै भौमवारकों गुडका दानदेवे, बुधवारकों तिल दान या, भक्षणकरै ॥ १७ ॥ गुरुवारकेदिन दहीखावे, शुक्रवारकों यव (जो) भक्षनकरै और शनिवारकों माष (उडद) का दानदेकें गमनकरै तो शूलका दोष नहीहै यह दिशा शूलका दोष तथा परिहार सन्मुख शूलकाहीहै कारन ज्योतिष शास्त्रमें सन्मुखही वर्जितहै, दक्षिण (दाहनी) शूलका कहीभी लेख निषेद्ध का नहीं परंतु लोकाचारकोभी धारण करना चाहिये॥१८॥

तांबूलंचंदनंमृच्चपुष्पंदधिघृतंतिलाः । वारशूलहराण्यर्कादानाद्धारणनोऽदनात् ॥ १९ ॥ अथकालपाशः । अर्कोत्तरेवायुदिशाचसोमेभौमेप्रतीच्यांबुधनैर्ऋतेचायाम्येगुरौवह्निदिशाचशुक्रेमंदेचपूर्वेप्रवदंतिकालं ॥२० कालस्याभिमुखःपाशोवैपरीत्यंतयोर्निशि । तावुभौसंमुखौत्याज्यौवामदक्षिणगौशुभौ ॥ २१ ॥ अथयामार्द्धात्मकोराहुः । अष्टसुप्रहरार्द्धेषु ८

प्रथमाद्येष्टाहर्निशम् । पूर्वस्यांवामतोराहुस्तुर्यांतुर्यां ४ दिशंव्रजेत् ॥ २२ ॥

राहुःप्राच्यांततोवायुदक्षिणेशानपश्चिमे । अग्नावुत्तरनैर्ऋत्यांप्रहरार्द्धंचतिष्ठति ॥ २६ ॥

ईशान ४	पूर्व १	आग्नेय ६
उत्तर ७	राहुचक्रम्	दक्षिण ३
वायव्य २	पश्चिम ५	नैर्ऋत्य ८

अथराहुफलम् । द्यूतेयुद्धेविवादेचयात्रायांसंमुखस्थितं । राहुंविवर्जयेद्यत्नाद्यदीच्छेत्कर्मणःफलम् ॥ २४ ॥

(दूसरा उपाय) आदित्यवारकों तांबूल, सोमकों चंदन, मंगलकों मृत्तिका (मट्टी) बुधकों पुष्प, गुरुकों दही, शुक्रकोंघृत, शनिवारकों तिलकादान तथा धारन, या भक्षण करकें गमनकरे तो शूलका दोष नहीं ॥ १९ ॥ (कालपाश) आदित्यवारकों उत्तरदिशामें कालदिनमें रहताहै, सोमकों वायुकोनमें, मंगलकों पश्चिममें बुधकों नैऋत्यकोनमें, गुरुकों दक्षिनमें, शुक्रकों अग्निकोनमें और शनिवारकों पूर्वदिशामें कालरहताहै ॥ २० ॥ और कालके सन्मुख दिशामें पाश (फांसी) जानना और रात्रिमें दिनसे दोनों विपरीत रहताहै अर्थात् कालकी दिशामें फाश और फासकी दिशामें कालहो जाताहै सो यह दोनोंही काल तथा फाश सन्मुख निषेद्धहै और वाम भागमें तथा दक्षिनभागसें श्रेष्टहै ॥ २१ ॥ (प्रहरार्द्ध संज्ञक राहु) प्रथम प्रहरसे लेकें आठवी प्रहरतक पूर्व आदि अष्टदिशाओंमें वाम मार्गसे चार चार घडी राहु रहताहै अर्थात् प्रथम प्रहरकी पहली चार घडियोंमें तो पूर्वदिशामें रहताहै फिर दूसरी प्रहरकी चार घडीमें वायुकोनमें चला जाताहै और तीसरी प्रहरमें दक्षिनमें, चोथी प्रहरमें ईशानमें, पांचवी प्रहरमें पश्चिममें, छठी प्रहरमें अग्नि कोनमें, सातवी प्रहरमें उत्तरमें आठवीं प्रहरकी चारघडियोंमें नैऋत्यकोनमें राहु रहताहै ॥ २२ ॥ अर्थात् पूर्वसें वायुकोंणमें फिर दक्षिणमें, दक्षिणसें ईशानमें, फिर पश्चिममें, पश्चात् अग्निकोनमें, फिर उत्तरमें, उत्तरसे नैऋत्यकोनमें चारघडी रहताहै ॥ २३ ॥ (राहुफलं) जूवा, युद्ध, विवाद, यात्रा, इत्यादिकार्योमें यत्नसे सन्मुख राहु वर्जना चाहिये यदि शुभ फल कार्यकी सिद्धि चाहेतो धनाद्यर्थ यात्रामें दक्षिण (दहना) राहु और वामभागमे योगिनी श्रेष्टहै ॥ २४ ॥

अन्यच्चःयात्रायांदक्षिणेराहुर्योगिनीवामतःशुभा॥अथयोगिनी। प्रति १ पन्नवमी ९ पूर्वेईशान्यांदर्शे ३० चाष्टमी ८ । तृ ३ तीयैकादशी ११ अग्नौयाम्यांपंच ५ त्रयोदशी ॥ २५ ॥ द्वादशीचचतुर्थीचनैर्ऋत्येयोगिनीसदा । षष्ठीचतुर्दशीचैवपश्चिमायांवसेत्सदा ॥ २६ ॥ सप्तमीपूर्णिमाचैववायव्ये-य्योगिनीवसेत् । द्वितीयादशमीयुक्ताशिवावसातिउत्तरे ॥ २७ ॥ अथयो-

गिनीफलम् ॥ योगिनीसुखदावामेपृष्टेवांच्छितदायिनी । दक्षिणेधनहं-त्रीचसंमुखेमरणप्रदा ॥ २८ ॥ (ज्योतिःसारेपि) पृष्टेचशुभदाप्रोक्तावा-मेचैवविशेषतः । योगिनीसाभवेन्नित्यंप्रयाणेशुभदानृणाम् ॥ २९ ॥ (ज्योतिस्तत्वेपि) वामेशुभकरादेवीपृष्टेसर्वार्थसाधिनी । बधबंधकरीचा-ग्रेदक्षिणेमृत्युदायिनी ॥ ३० ॥

(योगिनी) प्रतिपदा नवमीको पुर्वदिशामें योगिनी रहती है अमावास्या अष्टमी को ईशानकोनमें, तृतीया एकादशीको अग्निकोनमें, पचमी त्रयोदशीको दक्षिनमें रहतीहै ॥ २५ ॥ द्वादशी चतुर्थीको नैऋत्यकोणमें, षष्टी चतुर्दशीको पश्चिममें और सप्तमी पूर्णिमाको वायुकोनमें, द्वितीया दशमीको शिवानामयोगीनी उत्तरदिशामें रहतीहै ॥ २६ ॥ २७ ॥ (योगिनी फलम्) वामभागमें योगिनी सुख देती है (पृष्टे) पिछाडीकी अर्थात् पीठकी योगनी मनवाच्छितकार्य करतीहै और दहणी योगिनी चौर, राज, शत्रु, आदिद्वारा धननाश करतीहै तथा सन्मुख योगिनी मृत्युकारकहै ॥ २८ ॥ (ज्योतिःसारे) पिछाडीकी योगिनी शुभकारक और बांवी योगिनी अतिही शुभफलके देनेवाली होतीहै ॥२९॥ (ज्योतिस्तत्वमेंभी लिखाहै) वामभागमें देवी योगिनी शुभ करनेवालीहै पिछाडीकी सपूर्ण प्रयोजन सिद्ध करतीहै और सन्मुख योगिनी वध बंधन करै तथा दहनी योगिनी मृत्युके देनेवालीहै ॥ ३० ॥

ज्योतिर्निबंधेपि । दक्षसंमुखयोगिन्यांगमनंनैवकारयेत् । कृतेव्याधिम-वाप्नोतिह्यर्थहानिंपदेपदे ॥ ३१ ॥ रिपोर्जयार्थिनांयानेयोगिनीदक्षिणे-शुभा । व्यवहारार्थिनांयानेवामेशस्तासमीरिता ॥ ३२ ॥ अथदिशापर-त्वेसन्मुखचंद्रः । मेषेचसिंहेधनपूर्वभागेवृषेचकन्यामकरेचयाम्यां । तुले-चकुंभेमिथुनेप्रतीच्यांकर्कालिमीनेदिशिचोत्तरस्याम् ॥ ३३ ॥ अथचंद्र-फलम् । सन्मुखेह्यर्थलाभायदक्षिणेसुखसंपदा । पृष्ठतोमरणंदद्याद्वामेचं-द्रेधनक्षयः ॥ ३४ ॥ अथसन्मुखचंद्रेविशेषफलम् । करणभगणदोषंवा-रसंक्रांतिदोषं कुतिथिकुलिकदोषंयामयामार्द्धदोषं । कुजशनिरविदोषंरा-हुकेत्वादिदोषं हरतिसकलदोषंचंद्रमासन्मुखस्थः ॥ ३५॥ अथकुंभमी-नचंद्रेवर्जितकर्म । शय्यावितानंप्रेताग्निक्रियाकाष्ठतृणार्जनम् । याम्य-दिग्गमनंकुर्यान्नचंद्रेकुंभमीनगे ॥ ३६ ॥

(ज्योतिर्निबंधे) दहनी और सन्मुख योगिनीमें गमन कदापि नहीं करना चाहि-

ये यदि करैतो व्याधि (रोग) धननाश जावे जहांहि होवेगा ॥ ३१ ॥ शत्रुकों जीतने वालोंकों दहनी योगिनी श्रेष्ठहै और धन तीर्थ व्यवहार करनेवालोंकों यात्रामें बांवी योगिनी श्रेष्ठ कही है परंतु आजकल भूदेव लोभके तथा ईर्षाकेवशहोके दहनी योगिनीमें धनाद्यर्थ यात्रा मुहूर्त देतेहैं सो शास्त्र विरुद्धहै और अशुभ फलही जहां तहां देखतेहैं सो विचार करना चाहिये दहनी योगिनी देनेमें मुहूर्त्तचिंतामणी, मुहूर्त्तमार्तंड, मुहूर्त्तगणपति, नृपतिजयचर्या, इत्यादि ग्रंथोंका प्रमाण देते हैं परंतु यह नहीं विचारते हैंकी इन ग्रंथोंमें क्रूर यात्रा राजाके शत्रु जीतनेकीहै या धनाद्यर्थके निमित्त सौम्ययात्रा लेना लिखीहै ॥ ३२ ॥ (दिक् चंद्रमा) मेष १ सिंह ५ धन ९ का चंद्रमा पूर्वमें रहताहै, वृष २ कन्या ६ मकर १० का दक्षिनमें, तुल ७ कुंभ ११ मिथुन ३ का पश्चिममें और कर्क ४ वृश्चिक ८ मीन १२ का चंद्रमा उत्तर दिशामें रहताहै, ॥३३॥ (चंद्रफल) सन्मुख चंद्रमा धनका लाभ करै दक्षिन भागमें सुख संपत्तिकरै, पछाडीका मृत्युकरै और बांवां चंद्रमा धनका नाशकरै ॥ ३४ ॥ (सन्मुख चंद्रमाका विशेष फल) करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रांतिदोष, दुष्टतिथिदोष, कुलिकदोष, प्रहरार्द्ध वारवेलादोष, मंगल, शनि, रवि, राहु, केतुके दोष, सन्मुख चंद्रमा दूर करताहै ॥ ३५ ॥ (पंचक वर्जितकर्म) कुंभ ११ मीन १२ के चंद्रमामें, खाटबनाना, प्रेतकादाह प्रेतक्रिया, काष्ठ, घास आदिका लेना, दक्षिनदिशामें गमन, इत्यादि कार्य नहीं करना चाहिये ॥ ३६ ॥

अथघातचंद्रः । चंद्र१भूत५ग्रहा९नेत्रा२रसा६दिग्१०वह्नि३सागराः ७ । वेदा४ष्टक८शिवा११दित्या १२ घातचंद्राःप्रकीर्त्तिताः ॥ ३७ ॥ प्रयाणकालेयुद्धेचकृषौवाणिज्यसंग्रहे । वादेचैवगृहारंभेवर्जयेत्घातचंद्रमाः ॥३८॥ अथघाततिथ्यादि । घाततिथिंघातवारंघातनक्षत्रमेवच । यात्रायांवर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसुशोभनम् ॥ ३९ ॥ मेषेरविर्मघाप्रोक्ताषष्ठी प्रथमचंद्रमाः।वृषभेपंचमोहस्तश्चतुर्थीशनिरेवच॥४०॥मिथुनेनवमस्वाती अष्टमीचंद्रवासरः।कर्कद्विरनुराधाचबुधःषष्ठीप्रकीर्त्तिता॥४१॥ सिंहेषष्ठश्चंद्रमाश्वदशमीशनिमूलके।कन्यायांदशमश्चंद्रःश्रवणःशनिरष्टमी॥४२॥

(घात चंद्रविचार इसमें यह वचन है) मेषराशिनें जन्म १ को चंद्रमा घातीकहै, वृषने पांचवों मिथुननें नोवों कर्कने दूसरो सिंहने छट्टो कन्याने दशवों तुलनें तीसरो वृश्चिकने सातवों धनने चोथो मकरने आठवों कुंभने ग्यारवों मीननें वारहवों चंद्रमा

१ नारदः । यात्रायांयुद्धकार्येषु घातचंद्रंविवर्जयेत् । विवाहेसर्वमांगल्येचौलादौव्रतबंधने । घातचंद्रोनैवचिंत्यइतिपाराशरोऽब्रवीद् ।

घातीकहै ॥ ३७ ॥ धनार्थ्य यात्रामें युद्धमें खेती करनेमें वाणिज्य संग्रहमें और विवादमें तथा गृहारंभमें घातीक चंद्रमा वर्जना चाहिये ॥ ३८ ॥ घाततिथ्यादि) घाततिथि, घातवार, घातनक्षत्र, संपूर्ण यात्राहीमें वर्जितहै परतु अन्यकार्यमें तो श्रेष्ठ जाणना ॥ ३९ ॥ मेषराशिको आदित्यवार, मघानक्षत्र, षष्टीतिथि, जन्मका चंद्रमा घातीक जानना, वृषराशिको पांचवा चद्रमा, हस्त, चतुर्थी, शनिवार घातीकहै ॥४०॥ मिथुनको नौवों चंद्रमा, स्वाति, अष्टमी, सोमवार घातीकहै ॥ कर्कको दूसरो चंद्रमा अनुराधा, बुध, षष्टी तिथि घातीकहै ॥ ४१ ॥ सिंहको छठो चंद्रमा दशमी, शनि, मूल नक्षत्र, और कन्याको दशवों चंद्रमा, श्रवण, शनिवार, अष्टमी तिथि घातीकहै ॥ ४२ ॥

तुलेगुरुर्द्वादशीस्याच्छतंतृतीयचंद्रमाः । वृश्चिकेरेवतीसप्त७दशमीभार्गवस्तथा ॥ ४३ ॥ धनेचतुर्थेभरणीद्वितीयाभार्गवस्तथा । मकरेष्टमीरोहिणीद्वादशीभौमवासरः ॥ ४४ ॥ कुंभेएकादशश्चार्द्राचतुर्थीगुरुवासरः । मीनेचद्वापशःसार्पेद्वितीयाभार्गवस्तथा ॥ ४५ ॥ अथदिगीशा-

रा	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म.	कु	मी
चंद्र	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
वार	रवि	श	सो	बु	शनि	श	गु	शु	शु	म	गु	शु
नक्ष	मघा	ह	स्वा	अनु	मू	श्र	शत	रे	भ	रो	आ	श्ला
तिथि	५	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

ग्रहाः । रविःशुक्रोमहीसूनुःस्वर्भानुर्भानुजोविधुः । बुधोबृहस्पतिश्चेतिदिशामीशास्तथाग्रहाः ॥ ४६॥ दिगीशाहेशुभायात्राप्रष्ठाहेमरणंध्रुवम् । अथदिग्द्वारराशयः । पूर्वादिदिक्षुमेषाद्याःक्रमाद्दिग्द्वारराशयः ॥ ४७ ॥ नतच्छुद्धिवसात्सर्वेतद्दिग्यातुःशुभप्रदाः । तद्वर्गाश्चतदंशाश्चज्ञातव्यावैतथाविधाः ॥ ४८ ॥

तुलको गुरुवार, द्वादशी, तीसरो चंद्रमा शतभिषा नक्षत्र घातीकहै, वृश्चिकको रेवती, दशमी, सातवों चंद्रमा शुक्रवार घातीकहै ॥ ४३ ॥ धनको चौथा चद्रमा, भरणी, द्वितीया, शुक्रवार घातीक, और मकर राशिको आठवों चंद्रमा, रोहिणी, द्वादशी, मंगलवार घातीकहै ॥ ४४ ॥ कुंभको ग्यारहवों चंद्रमा, आर्द्रानक्षत्र, चतुर्थी गुरुवार घातीक और मीन राशिको वारहवां चद्रमा, अश्लेषानक्षत्र, द्वितीया शुक्रवार घातीकहै ॥ ४५ ॥ (दिगीशाग्रहाः) रवि पूर्वको अधिपति १ शुक्र अग्नि कोणका २ मंगल दक्षिनका ३ राहु नैऋत्यकोणका ४ शनि पश्चिमका ५ चंद्रमा वायव्य कोनका ६ बुध उत्तरका ७ बृहस्पति ८ ईशान कोनका अधिपतिहै ॥४६॥ दिशाके ग्र-

लकके वारकौं यात्रा करेतो शुभहै, और पीठके वारकी यात्रामें मरण होताहै (दि-ग्द्वारराशि) मेष १ सिंह ५ धन ९ पूर्वके दिग्द्वार राशिहै, वृष २ कन्या ६ मकर १० दक्षिण दिग्द्वार राशि जानना, मिथुन ३ तुल ७ कुंभ ११ पश्चिमके दिग्द्वार राशिहै, और कर्क ४ वृश्चिक ८ मीन १२ उत्तरमें दिग्द्वार राशि जानना ॥४७॥ दिग्द्वारकी शुद्धिके बिगर और दिग्द्वार राशिके तथा इनके नवांशक बलके बिगर यात्रा शुभ फल दायक नहीं होतीहै ॥ ४८ ॥

अथलग्नविचारः । चरलग्नेप्रयातव्यंद्विस्वभावेतथानरैःलग्नेस्थिरेनगंतव्यंयात्रायांक्षेममीप्सुभिः ॥ ४९ ॥ (द्वितीयःप्रकारः) लग्नेकार्मुक९मेष १तौलि७गमनेकार्योविलंबान्नृणांपंचत्वंमकरेतथैवचघटे११तद्वत्फलंवृश्चिके । सिंहेकर्कटकेवृषेपरिगतःसर्वार्थसिद्धिंलभेत्कन्यामीनगतस्तथैवमिथुनेसौख्यंशुभान्नंबसुः ॥ ५० ॥ अथस्थिरलग्नपरिहारःदिग्द्वारभेलग्नगतेयात्रार्थविजयप्रदालग्नेदिग्प्रतिलोमेसाहानिदाशत्रुभीतिदा ॥५१॥ जन्मराशौलग्नगतेतदीशेवाविलग्नगे । अभीष्टफलदायात्राराशीशश्चेच्छुभःग्रहः ॥ ५२ ॥ अथत्याज्यलग्नौ । कुंभःकुंभनवांशश्चलग्नेत्याज्यःप्रयत्नतः । मीनलग्नेतदंशेवायातुर्मार्गोतिदुःखदः ॥ ५३ ॥ अथसमयबलयात्रा । पूर्वाह्णेऽप्युत्तरांगच्छेत्प्राचींमध्यंदिनेतथादक्षिणांचापराह्णेतुपश्चिमामर्द्धरात्रिके ॥ ५४ ॥

(लग्नविचार) चरलग्नमें अर्थात् मेष १ कर्क ४ तुल ७ मकर १० लग्नमें और द्विस्वभाव अर्थात् मिथुन ३ कन्या ६ धन ९ मीन १२ लग्नमें यात्रा करनी चाहिये परंतु स्थिरलग्नमें अर्थात् वृष २ सिंह ५ वृश्चिक ८ कुंभ ११ इन लग्नोंमें कदापि कल्याणकी कामनावाला गमन नहींकरे॥४९॥ (दूसरा प्रकार) धन ९ मेष१ तुल ७इन लग्नोंमें गमनकरनेसे कार्यविलंबसे सिद्ध होताहै और मकर १० कुंभ ११ वृश्चिक ८ यह लग्न मृत्युकारकहै, सिंह ५ कर्क ४ वृष २ इनमें गमन करनेसे संपूर्ण प्रयोजन सिद्ध होताहै और कन्या ६ मीन १२ मिथुन ३ लग्नमें जानेसे सुख, अन्न, धन प्राप्ति होवै ॥५०॥ (स्थिरलग्न परिहार) यद्यपि लग्न स्थिर होवे परंतु दिग्द्वारलग्न होवेतो विजय, लाभकेदेनेवाली यात्रा होती है और लग्न यदि चरभी है परंतु दिग्प्रति लोम अर्थात् पीठ पीछेके लग्नमें गमन करनेसे हानी और शत्रुभय होताहै ॥ ५१ ॥ यदि जन्मकी राशि यात्राके लग्नमें होवे अथवा राशिका पति लग्नमें होवेतो जानेवालेका मनोरथ सिद्धि देनेवाली यात्रा होतीहै परंतु राशिका पति शुभग्रह होना चाहिये

॥ ५२ ॥ (त्याज्यलग्न) कुंभलग्न और कुंभका नवांशक यात्राके लग्नमें सर्वथा त्यागदेना चाहिये और मीन लग्न अथवा मीनका नवांशकभी जानेवालेको मार्गमें दुःख देताहै इसलिये त्याज्यहै ॥ ५३ ॥ (समय बलयात्रा) उत्तर दिशामे प्रातः काल गमन करै पूर्वको मध्याह्नमें और दक्षिणको अपराह्नमें अर्थात् तीसरे प्रहर और पश्चिमको अर्द्धरात्रिमें गमन करना चाहिये ॥ ५४ ॥

नतत्रांगारकोविष्टिर्व्यतीपातोनवैधृतिः । सिद्ध्यंतिसर्वकार्याणियात्रायां-दक्षिणेरवौ ॥५५ ॥ अथअभिजित्मुहूर्त्तप्रशंसा । सर्वेषांवर्णानामभिजि-त्संज्ञकोमुहूर्त्तःस्यात् । अष्टमोदिवसस्यार्द्धेत्वभिजित्संज्ञकःक्षणः॥५६॥ सब्रह्मणोवराज्ञित्यंसर्वकामफलप्रदः । चक्रमादायगोविंदःसर्वान्दोषान्नि-कृन्तति ॥ ५७ ॥ अभिजिन्नबुधेशस्तंयाम्यांतुगमनेतथा । अन्यदिग्ग-मनेशस्तंसर्वसिद्धिःप्रजायते ॥ ५८ ॥ तिथ्यादिषुनिषिद्धेषुचंद्रताराविलोमतः । उषांगोधूलियोगंवास्वीकृत्यगमनंभवेत् ॥ ५९ ॥ प्राच्यांमुषांप्रतिच्यांचगोधूलिवर्जयेन्नरः।दक्षिणेचाभिजिच्चैवमुत्तरेचनिशांतथा ६०

इस प्रकार समय बलको देखके गमन करनेसे मंगलका दोष, भद्रा, व्यतीपात, वैधृतीका दोषभी नहीं लगताहै और संपूर्ण कार्य सिद्ध होताहै क्योंकी उसवक्त रवि दक्षिण (दहना) रहताहै ॥ ५५ ॥ (अभिजिन्मुहूर्त्त,) संपूर्ण वर्णोंको अभिजित् मुहूर्त्त गमन करनेमें श्रेष्ठ है और अभिजित् मध्याह्नमें आठवां मुहूर्त्त होताहै ॥५६॥ यह अभिजित् मुहूर्त्त ब्रह्माके वरदानसे सर्वकाम फलके देनेवालाहै और भगवान् गोविंद चक्रलेके संपूर्ण दोषोंको दूर करताहै ॥५७ ॥ परंतु यह अभिजित् मुहूर्त्त बुधवारको तथा दक्षिणकी यात्रोंको वर्जनीक है और अन्य दिशामें गमन करनेसे सर्व सिद्धि देताहै ॥ ५८ ॥ यदि तिथि, वार, नक्षत्र आदि निषेद्ध होवे और चंद्र तारा विलोम अर्थात् वामभाग अथवा पृष्ठ भागमें होवे और जानेकी जरूरत होवेतो उषाकालमें अर्थात सूर्योदयसे पहले या गोधूली लग्नमें जाना श्रेष्ठहै ॥५९॥ परंतु पूर्वदिशामें उषाकाल वर्जनीक है और पश्चिमदिशामें गमनकरती समय गोधूली निषेद्धहै और दक्षिणजानेवालेको अभिजित् और उत्तर यात्रामें अर्द्ध रात्री त्याज्य है ॥ ६० ॥

अथयात्रायांजन्मराशितश्चंद्रविचारः । चतुर्थेद्वादशेचंद्रेवारेभौमशनैश्चरे प्रस्थितेपिनगंतव्यमत्यन्तगर्हितेदिने ॥ ६१ ॥ जन्मभेजन्ममासेवायो-गच्छेदष्टमेविधौ । आयुःक्षयमवाप्नोतिव्याधिंचवधबंधने ॥६२॥ अथचं-द्रताराबलप्रशंसा । नविष्कुंभोनवागंडोनव्यतीपातवैधृतौ । चंद्रतागब-

लेप्राप्तेदोषागच्छन्त्यसंमुखाः॥ अथयात्रायांशुक्रास्तादिदोषः। शुक्रेवास्तं-गतेजीवेचंद्रेवास्तमुपागते।तयोर्बाल्येवार्द्धकेचसायात्राभयरोगदा॥ ६३ ॥ वक्रेनीचगतेखेटैर्जितेचास्तंगतेभृगौ । यात्रांनैवप्रकुर्वीतलक्ष्म्यायुर्बलहा-निदा ॥ ६४ ॥ अथप्रतिशुक्रम् । दिशियत्रोदेतिशुक्रस्तांदिशंनव्रजेन्न-रः । नव्रजेत्संमुखेज्ञेपिशुभंपृष्ठोपिवामतः ॥ ६५ ॥ प्रतिशुक्रकृतंदोषंहं-तिशुक्रोग्रहानहि । भृग्वादिगोत्रजातानांनदोषःप्रतिशुक्रजः ॥ ६६ ॥

(चंद्र विचार) चौथे तथा बारहवें चंद्रमामें और मंगल शनिवारको तथा निंदित (खराब) दिनमें प्रस्थान रखदिया होवेतोभी गमन मत करो ॥६१॥ जन्मनक्षत्र, जन्ममास, अष्टम चंद्रमें गमन करै तो, आयुक्षय, व्याधि (रोग) बध, बंधनको प्राप्तहोताहै ॥ ६२ ॥ (चंद्रताराबल प्रशंसा) यदि तारा तथा चंद्रमा बलवान् होवेतो विष्कुंभ, गंड, व्यतीपात, वैधृति, आदि बहुतसे दोष नाश होजातेहै, (शुक्र अस्तादि दोष विचार) शुक्रका अस्तहो, या (जीव) बृहस्पति अस्तहो या चंद्र अस्तहो अथवा शुक्र बृहस्पति बालक, या वृद्धहो तो यात्रा भय, रोगकी देनेवाली होतीहै॥६३॥ और शुक्र वक्रीहो, या नीचका अर्थात् कन्याकाहो, या अन्य ग्रहोंकरके जीत्या हुवाहो, या अस्तका होतो यात्रा नहीं करनी चाहिये क्योंकी लक्ष्मी, आयु, बलहानिके देनेवाली होतीहै ॥ ६४ ॥ (सन्मुख शुक्र विचार) जिस दिशामें शुक्र उदय होताहो या बुध उदय होताहो तो उस दिशामें गमन नहीं करै यदि पृष्ठ भागमें, या वाम भागमें होवेतो शुभहै ॥ ६५ ॥ सन्मुख शुक्रका दोष शुक्रही दूरकर सक्ताहै अन्य सूर्यादि ग्रह नहीं करसक्तेहै परंतु भृगुगोत्रमें जन्मनेवालोंको सन्मुख शुक्रका दोष नहींहै ॥६६॥

अथप्रतिशुक्रदोषापवादः । रेवत्यांमेषगेचंद्रेभवत्यंधोभृगोःसुतः। यात्रादौनैवदोषायसंमुखोदक्षिणेऽपिवा ॥६७॥ वसिष्ठःकाश्यपेयोऽत्रिभरद्वाजःसगौतमः । एतेषांपंचगोत्राणांप्रतिशुक्रोनविद्यते॥ ६८॥अथसामान्य-यात्रायांप्रतिशुक्रादिदोषाऽभावः । नृणांप्रथमयात्रायांप्रतिशुक्रादिदूषण-म्।जयार्थिनोनृपस्यापिनान्येषांतुकदाचन॥ ६९॥ अर्द्धोदयोपरागादौपु-ण्ययोगेसुदुर्लभे । तीर्थार्थीतुसुखंयायात्कालेष्वस्तादिकेष्वपि ॥ ७० ॥ एकग्रामेविवाहेचदुर्भिक्षेराजविप्लवे । द्विजक्षोभेनृपक्षोभेप्रतिशुक्रोनविद्यते ॥ ७१ ॥ अथप्रथमयात्रायामावश्येप्रतिशुक्रेदानम् । सितमश्वंसितंछत्रं हेममौक्तिकसंयुतम् । ततोद्विजातयेदद्यात्प्रतिशुक्रप्रशांतये ॥ ७२ ॥

(सन्मुख शुक्रके दोषका परिहार) रेवती नक्षत्रमें और मेषराशिमें चंद्रमारहै तब तक शुक्र अंधा रहताहै सो यात्रामें और स्त्रियोंके आने जानेमें सन्मुख, या दक्षिण शुक्रका दोष नहींहै ॥ ६७ ॥ और वसिष्ठ, काश्यप, अत्रि, भरद्वाज और गोतम इन पांच गोत्रमें जन्मनेवालोंको सन्मुख शुक्रका दोष नहींहै ॥ ६८ ॥ (दूसरी रीतिसें सन्मुख शुक्रका परिहार) मनुष्योंको प्रथम (नवीन) यात्रामें और जयकी कामनावाले राजाके गमनमें सन्मुख शुक्रका दोषहै और सदैव जाने आनेवालोंको दोष नहीं है ॥ ६९ ॥ और अर्द्धोदय योगमें या सूर्य चंद्रमाके ग्रहणमें और अन्यकोई दुर्लभ पुण्य योगमें तीर्थयात्रा जानेवालेको शुक्रके अस्तका, या सन्मुखका दोष नहीं ॥ ७० ॥ और एकग्राम या नगरके जाने आनेमें और विवाहमें, दुर्भिक्षमें, राजनाश होनेमें ब्राह्मणोंके क्रोधमें और राजाके भयमें सन्मुख शुक्रका दोष नहीं है ॥ ७१ ॥ (प्रथम यात्राकी जरूरतमें शुक्रदान) श्वेत घोडा १ श्वेत छत्र १ सुवर्ण, मोतीसचा, ब्राह्मणको दानदेके गमन करे तो प्रतिशुक्रका दोष नहीं है ॥ ७२ ॥

अथलग्नशुद्धिः । हित्वासप्तमगंशुक्रंकेंद्रे १।४।७।१० कोणे ९।५ शुभाःशुभाः । पापाश्चोपचये ३।१०।११।६ शस्तायानेनोदशमः १० शनिः ॥ ७३ ॥ चंद्रस्तुगमनेनेष्टोलग्ना १ रि६ व्यय १२ रंध्रगः ८द्यूने७ षष्ठा६ष्ट८रिःफ१२स्थोलग्नेशोऽपिनशोभनः ॥ ७४ ॥ बुधेज्यभृगुपुत्राणामेकश्चेत्केंद्र १।४।७।१० कोणगः ९।५ तदायोगोऽत्रगमनेक्षेमोभवतियायिनाम् ॥ ७५ ॥ लग्नदोषाश्चयेकेचित्ग्रहदोषास्तथापरे । तेसर्वे विलयंयांतिलग्नेगुरुभृगूयदा ॥ ७६॥ अथाऽऽवश्यकेहोराप्रकारः । वारात्षष्ठस्यषष्ठस्यहोरासार्द्धद्विनाडिका । अर्कशुक्रौबुधश्चंद्रोमंदोजीवधरासुतौ ॥ ७७ ॥ गुरुर्विवाहेगमनेचशुक्रोबोधेसौम्यःसर्वकार्येषुचंद्रः । कुजेचयुद्धंरविराजसेवामंदेचवित्तंइतिहोरयोगाः ॥ ७८॥

(लग्नशुद्धि) एक सप्तम स्थानमें शुक्रके विना (केंद्र) अर्थात् लग्न १ चतुर्थ सप्तम दशम स्थानमें और (त्रिकोन) नवम पंचम स्थानमें शुभग्रह शुभ जानना और (उपचय) अर्थात् तीसरे छठे दशवें ग्यारहवें पापग्रह श्रेष्ठहै परंतु शनैश्चर दशवें स्थानमें श्रेष्ठ नहींहै ॥ ७३ ॥ और यात्रामें लग्न १ छठे बारवें आठवें चंद्रमा निषेद्धहै और सातवें छठे आठवें बारहवें लग्नका स्वामीभी नेष्टहै ॥७४ ॥ यदि बुध, बृहस्पति, शुक्रमेंसे एकभी ग्रह केंद्रमें १।४।७।१० अथवा त्रिकोनमें ९।५ होवेतो जानेवालोंको कल्याण करनेवाला योगहै ॥ ७५ ॥ और यदि लग्नमें बृहस्पति, या शुक्र होवेतो लग्नदोष, ग्रहदोष संपूर्ण विलय होजाताहै ॥ ७६॥ (अब अवश्यक यात्राके लिये होरा

अर्थात् दो घडिया मुहूर्त्त लिखतेहैं) जो बार हो उसी वारका होरा (दुघडिया) प्रथम प्रातःकाल अढाई २॥ घडिका होताहै फिर उसी बारसे छठे छठे वारका होरा जानना जैसे आदित्यवारको प्रथम आदित्यका, फिर दूसरा शुक्रका, तीसरा बुधका, चोथा चंद्रमाका, पांचवां शनिका, छट्टा बृहस्पतिका, सातवां मंगलका जानना इसीतरह सोमवार आदिवारोंमें जानना चाहिये ॥ ७७ ॥ गुरुकी होरामें विवाहकरना, शुक्रकीमें यात्रा, बुधकीमें विद्यारंभ, और संपूर्ण कार्योंमें चंद्रमाकी होरा श्रेष्ठहै और मंगलकी होरामें युद्ध, रविकी होरामें राजसेवा, शनिकी होरामें धनस्थापन करना श्रेष्ठहै ॥७८॥

यस्यग्रहस्यवारेपिकर्मकिंचित्प्रकीर्त्तितं । तस्यग्रहस्यहोरायांसर्वंकर्मविधीयते ॥ ७९ ॥ अथयात्रायांनिषिद्धानि । प्रतिष्ठोद्वाहमुत्साहंव्रतंचौलंचसूतकम् । असमाप्यनगंतव्यमार्त्तवंयोषितामपि ॥ ८० ॥ अथाऽकालवृष्टिः । पौषादिचतुरोमासान्प्राप्तावृष्टिरकालजा । व्रतंयात्रादिकंतत्रवर्जयेत्सप्तवासरान् ॥ ८१ ॥ मतांतरम् । मार्गान्मासात्प्रभृतिमुनयोव्यासवाल्मीकिगर्गाश्चै त्रंयावत्प्रवर्षणविधौनेतिकालंवदंति । नाडीजंघःसुरगुरुमुनिर्वक्तिवृष्टेरकालौमासावेतौनशुभफलदौ पौषमाघौनशेषाः यस्मिन् देशेयोवर्षाकालस्ततोन्यत्राकालवृष्टिरितिसिद्धांतः ॥ ८२ ॥ भूयान्दोषोमहावृष्टावल्पदोषोऽल्पवर्षणे । नदोषोवृष्टिजस्तावद्यावद्भूर्नपदांकिता ॥ ८३ ॥ अहंपौषेद्व्यहंमाघेदिनमेकंतुफाल्गुने । चैत्रेघटीद्वयंदोषोनायंगर्भसमुद्भवे ॥ ८४ ॥

और जिसवारमें जो कर्म करना लिखाहै सो तिस ग्रहके होरामें कार्य करलेना चाहिये॥७९॥(यात्रामें निषेद्धकर्म)प्रतिष्ठा, विवाह, उत्साह, यज्ञोपवीत, चौलकर्म, सूतक, स्त्रीकेरजोदर्शनकी शुद्धि, इत्यादिकार्य होवेतो समाप्ति होजानेके पहले गमन नहीं करना चाहिये ॥८०॥ (अकाल वृष्टि विचार) पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र, इन च्यार मासमें वृष्टि होवेतो अकाल वृष्टि (वर्षा) जानना, सो यह अकाल वृष्टि होनेसें सातरोजतक यज्ञोपवीत, यात्रा, आदि शुभ कार्य नहीं करना योग्यहै, यह नारदका मतहै ॥ ८१ ॥ (दूसरामत कहतेहैं) मंगशिरको आदिलेकें चैत्रतक व्यास, वाल्मिक, गर्ग आदि महर्षि अकाल वर्षा मानतेहैं और नाडीजंघ ऋषि तथा बृहस्पति कालवृष्टिके पौष, माघ, यह दो मासही कहतेहैं अन्य नहीं है, अब यहां निर्णय होना चाहिये कारण यहां जो तीन पक्ष वर्णन कियेसो तीनोंहीं मान्यहै परंतु जिस देशमें जो वर्षाका कालहै जिस वर्षासे जो अन्नपैदा होताहै उसीकों वर्षाकाल समजना चा-

हिये और इसीसे अन्यकालको अकालवृष्टिका काल जानना यह सिद्धांतहै और मारवाडदेशमें तो ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विनके विना संपूर्णही मास अकालवृष्टिकाहै ॥ ८२ ॥ इस अकालवृष्टि समयमें जादा वर्षा होवेतो बहुत दोष जानना यदि कम वरषा होवेतो थोडा दोष जानना यदि बिल्कुलही थोडी वरषा होवेतो जवतक पृथिवीपें मनुष्य आदि नहीं फिरें और शूकीहुई रेती न निकले जवतकही दोष जानना चाहिये ॥ ८३ ॥ पौषमें वरषा होवेतो तीन दिन माघमें दो दिन, फाल्गुनमें एकदिन, चैत्रमें दोघडी शुभकार्यमें त्याज्यहै यदि बादलही हुवा होवेतो दोष नहींहै ॥ ८४ ॥

अथावश्यकेअकालवृष्टिदोषपरिहारः । सूर्यचंद्रमसोर्बिंबेकृत्वाहेममयेतदा । दत्वानत्वानरोयायात्कार्येऽत्यावश्यकेसति ॥ ८५ ॥ अथैकस्मिन्दिनेयात्राप्रवेशयोर्विचारः । एकस्मिन्नपिदिवसेयदिचेद्गमनंप्रवेशश्च । प्रतिशुक्रवारशूलंनचिंतयेद्योगिनींपूर्वम् ॥ ८६ ॥ प्रवेशनिर्गमौस्यातामेकस्मिन्नपिवासरे । तदाप्रावेशिकंचिंत्यंबुधैर्नैवतुयात्रिकम् ॥ ८७ ॥ प्रवेशान्निर्गमश्चैवनिर्गमाच्चप्रवेशनम् । नवमेजातुनोकुर्य्याद्दिनेवारेतिथावपि ॥ ॥ ८८ ॥ अथयात्रादिनकृत्यम् । हुताशनंतिलैर्हुत्वापूजयेत्तुदिगीश्वरम् । तथाप्रणम्यभूदेवानाशीर्वादैर्नरोव्रजेत् ॥ ८९ ॥ अथत्याज्यकर्माणि । क्रोधक्षौररतिश्रमामिषगुडघृताश्रुदुग्धासवः । क्षाराभ्यंगभयाऽसितांवरवमिस्तैलंकटूक्त्यद्रमे । क्षीरक्षौररतीःक्रमात्त्रि ३ शर ५ साप्त ७ हंपरंतद्दिनेरोगंरुयात्त्वकंसितान्यतिलकंप्रस्थानकेपीतिच ॥ ९० ॥

(अकाल वर्षाके परिहार) यदि अकाल वर्षा होगई होवे और यात्रा जानेकी जरूरत होतो सुवर्णका सूर्य और चंद्रमा वनाके ब्राह्मणको दान करै और नमस्कार करके गमन करै ॥ ८५ ॥ (गमन प्रवेशका विचार) यदि एकही दिनमें गमन और प्रवेश होवेतो सन्मुख शुक्र, वारशूल, योगिनी आदि नहीं देखना चाहिये ॥ ८६ ॥ और एक दिनके गमन प्रवेशमें प्रवेशकाही मुहूर्त्त लेना योग्यहै और गमनके मुहूर्त्तकी कोई जरूरत नहींहै ॥ ८७ ॥ और प्रवेशसें पहले दिनमें गमन और गमनसे नोवें दिनके वार तिथिमें प्रवेश कदापि नहीं करना ॥ ८८ ॥ (यात्रादिनकर्म) अग्निमें तिलोंका होम करकें तथा दिशाके पतिको और ब्राह्मणोंको पूजकें प्रणाम करै फिर आशीर्वादलेकें गमन करै ॥ ८९ ॥ (त्याज्यकर्म) क्रोध, क्षौर (हजामत) स्त्रीसंग, खेचल, मांस, गुड भक्षण जृवा अश्रुपात (रोना) दुग्ध, मद्यपान, खारभक्षण, तैलाभ्यं-

ग, भय, कालावस्त्र, वमन, तैल तथा कडवा पदार्थ भक्षण नहीं करै परंतु दुग्धपान तीन दिन पहलें और क्षौर (हजामत) पांचदिन पहले, स्त्रीसंग सातदिन पहलें और यदि स्त्री रजस्वला होजावे या रोग होजावेतो यात्राका दिन अर्थात् मुहूर्त्तही त्याग देना चाहिये और श्वेतचदनके विना तिलक नहीं करना योग्यहै ॥ ९० ॥

यात्राकालेतुसंप्राप्तेमैथुनंयोनिषेवते रोगार्त्तःक्षीणकोशश्चसनिवर्त्तेतवानवा ॥ ९१॥ अवमान्यस्त्रियंविप्रान्विरुद्ध्यस्वजनैःसह ऋतुमत्यांचभार्यांचगच्छन्मृत्युमवाप्नुयात् ॥ ९२ ॥ ऋतुस्नानोत्तरंनार्यायात्रात्वावश्यकीयदि । कृतभोगोनरोयायाद्दानंशांतिंविधायच ॥९३ ॥ अथगमनसमयकृत्यम् । स्वस्यदेवस्यवागेहात्गुरोर्वामुख्ययोषितः । हविष्यंप्राश्यमतिमान्ब्राह्मणैरनुमोदितः ॥ ९४ ॥ (श्र)एवन्सन्मंगलान्येवसंयायाद्विजयीनरः । गम्यदिक्संमुखंदत्वावहन्नाडीयपदंपुरः ॥ ९५ ॥ व्रजेदिग्गीशंहृदयेनिधाययथेंद्रमैंद्र्यामपराश्चतद्वत् । सुशुक्लमाल्यांवरभृन्नरेंद्रोविसर्जयेद्दक्षिणपादमादौ॥ ९६ ॥

यात्राकों जाते समय जो पुरुष स्त्री संग करताहै सो रोगयुक्त और धनरहित होकें पीछा आताहै अथवा नहींबी आताहै ॥ ९१ ॥ जो कोई पुरुष अपनी स्त्रीका, ब्राह्मणोंका या मातापिता भाई बांधवोंका तिरसकार करके अथवा उनके साथ वैर करकें तथा रजस्वला स्त्रीकों ऋतुदान दिये विना गमन करताहै सो मृत्युकों प्राप्त होताहै॥९२॥ यदि स्त्री रजस्वला शुद्धि स्नान करलिया होवे और जानेकी अत्यंतही जरूरत होवेतो दान देके तथा शांति करके स्त्रीका संग करै और तदनंतर गमनके करनेमें दोष नहीं है ॥ ९३ ॥ (गमन समय कृत्यम्) निज अपने घरमें, या देवालयमें, गुरुके घरमें, या अपनी मुख्य प्यारी स्त्रीके स्थानमें उत्तम पदार्थ भक्षण करकें और ब्राह्मणोंके हुकम करकें ॥ ९४ ॥ श्रेष्ठ मंगलीक शब्द सुनता हुवा लाभकी कामनावाला मनुष्य गमनकरै परंतु जिस दिशामें जानाहो उसी दिशाके सन्मुख खडा होकें तथा जो स्वर चलताहो उसी पगकों अगाडी रखकें गमन करना चाहिये ॥ ९५ ॥ प्रथम दिशाके अधिपतिका हृदयमें ध्यान करें जैसें पूर्वकों जानेवाला इंद्रका और दक्षिणकों जानेवाला धर्मराजका, पश्चिमकों वरुणका, उत्तरकों कुबेरका ध्यानकरकें शुद्ध श्वेतवस्त्र धारण किया हुवा अगाडी दक्षिण (दहना) पग (पैर) रखकें गमन करै ॥ ९६ ॥

स्नातःसितांवरधरःसुमनाःसुवेशःसंपूजितोऽमरगुरुद्विजगोदिगीशः। कृत्वाप्रदक्षिणशिखंत्रिशिखंकृताशीर्गच्छेन्नरःशकुनशूचितकार्य्यसिद्धिः॥

॥ ९७ ॥ निमित्तशकुनादिभ्यःप्रधानोहिमनोजयः । तस्मात्प्रियासतांनृणांफलसिद्धिर्मनोजयात् ॥ ९८ ॥ अथस्वरविचारःशशिप्रवाहेगमनादिशस्तंसूर्यप्रवाहेनहिकिंचनोपि प्रष्टुर्जयःस्याद्वहमानभागेरिक्तेचभागेविफलंसमस्तम् ॥९९॥ अस्मिन्विशेषःअथचंद्रस्वरकृत्यम् । प्रवेशोद्वाहयात्राश्ववस्त्रालंकारधारणं । संधिःशुभानिकर्माणिकार्याणींदुस्वरोदये ॥ अथसूर्यस्वरकृत्यं । कुर्यात्सूर्यस्वरेयुद्धंव्यवहारंचभोजनम् । मैथुनंविग्रहंद्यूतंस्नानंभंगंभयंतथा ॥ अथनाडीलक्षणं । नाडीडावामगाचांद्रीपिंगलादक्षिणारवेः । सुषुम्नाशांभवीमिश्रासातुयोगींद्रगोचरा ॥ अथसुमहूर्त्तेस्वगमनविलंबेप्रतिनिधित्वेनप्रस्थानम् ॥ तस्मिन्मुहूर्त्तेस्वयमप्रयाणेप्रयोजनापेक्षतयाचदैवात् । गंतव्यदेशाभिमुखप्रदेशेप्रस्थानमाहुः शुभदंनराणाम् ॥ १०० ॥ अथप्रस्थानद्रव्याणि । यज्ञोपवीतकंशस्त्रंमधुचस्थापयेत्फलम् । विप्रादिक्रमतःसर्वेस्वर्णधान्यांवरादिकम् ॥ १०१ ॥ छत्राद्यंध्वजमक्षसूत्रमथवायज्ञोपवीतंद्विजैर्वैश्यस्यस्वकदेहवस्त्रतुरगौ क्षत्रस्यखड्गोधनुः । ग्रामोपांतनदीद्विजामरगृहोद्यानेचवापीतटे स्थानेचापिमनोरमेप्रकथिताप्रस्थानयात्राशुभा ॥ १०२ ॥

परंतु स्नान, और श्वेतवस्त्र धारनकरके प्रसन्नचित्तसें देवता, गुरु, ब्राह्मण, दिशाधिपतिकी पूजनकरै और उनकी आशीषलेके अग्निको परिक्रमादेवै फिर उत्तम शकुन देखता हुवा कार्यकी सिद्धिके अर्थ गमनकरै ॥ ९७ ॥ शकुन, मुहूर्त्त आदिसें प्रधान चित्तकी प्रसन्नताहै इसवास्ते जब चित्त प्रसन्न हो तब जानेवालोंके कार्य सिद्ध होतेहैं ॥ ९८ ॥ स्वरविचार) चंद्रमाके स्वरमें अर्थात् बावे स्वरमें गमन प्रवेश आदि करना श्रेष्ठहै और सूर्यके स्वरमें अर्थात् दहने स्वरमें युद्ध, व्यवहार आदि करना शुभ होताहै और प्रश्न करने वालेको जिधर स्वर हो उधर बैठके प्रश्न करेतो सर्व कार्य सिद्धहो और विपरीत होवेतो अशुभहै ॥ ९९ ॥ (प्रस्थान) यदि यात्राके मुहूर्त्तमें कोई कार्य वशसें जाना नही होता दिखेतो उसी मुहूर्त्तमें जानवाली दिशाके सन्मुख प्रस्थान रखना श्रेष्ठहै ॥ १०० (प्रस्थान द्रव्य) ब्राह्मण प्रस्थानमे यज्ञोपवीत रक्खे, क्षत्री खड्ग आदि शस्त्ररखै और वैश्य सहत रखदेवै अथवा तीनोंहीं सुवर्ण, धान्य अर्थात् चावल और वस्त्र रखदेवै ॥ १०१ ॥ अथवा ब्राह्मणको छत्र, ध्वजा, माला, यज्ञोपवीत आदि रखना योग्यहै और वैश्यको अपना शुद्ध वस्त्र, अश्व, और क्षत्रिको खड्ग (तलवार)

धनुष (कवाण) रखना चाहिये परंतु ग्रामके समीप नदी, या ब्राह्मणके घर, या देव-मंदिर, बगीचा, बावडी आदि रमणीक शुद्धस्थानमें रक्खेतो शुभयात्रा होती है॥१०२

अथप्रस्थानदेशाः । गेहाद्गेहान्तरंगर्गःसीम्नः सीम्नांतरंभृगुःवाणक्षेपं-भरद्वाजोवसिष्ठोनगराद्बहिः ॥ १०३ ॥ प्रस्थानेपिकृतेनोयान्महादोषा-न्वितेदिने । अथदिङ्नियमेनप्रस्थानस्थितिः । सप्ताहान्येवपूर्वस्यांप्र-स्थानंपंचदक्षिणे । पश्चिमेत्रीणिशस्तानिसौम्यायांतुदिनद्वयम् ॥१०४॥ धृतप्रस्थानकोवापिस्वयंसंप्रस्थितोपिवा । ततोपिगमनेचिंत्यंसच्चंद्रशकु-नादिकम् ॥ १०५ ॥ अथप्रस्थानकर्तुर्नियमाः । त्रिरात्रंवर्जयेत्क्षीरंपं-चाहंक्षौरकर्मच । तदहश्चावशेषाणिसप्ताहंमैथुनंत्यजेत् ॥१०६ ॥ अथ-वर्षादिषुछत्रादिधारणम् । वर्षातपादिकेछत्रीदंडीरात्र्यटवीषुच।शरीरत्रा-णकामोवैसोपानत्कःसदाव्रजेत् ॥ १०७ ॥ नोर्द्ध्वंनतीर्य्यग्दूरंवानिरी-क्षन्पर्य्यटेद्बुधः । युगमात्रंमहीपृष्टंनरोगच्छेद्विलोकयन् ॥ १०८ ॥

गर्ग,ऋषिकामत छोटे ग्रामका अपने घरसें दूसरे घरमें प्रस्थान रखनेकाहै और भृगुजी-का बडे ग्राममें ग्रामकी सीमासें बाहरकाहै भारद्वाजका सहरमें वाण प्रक्षे (जाने)पें होवे तितनी दूरकाहै और वसिष्ठजीका मत नगरका नगरसें बाहर रखनेका जानना चाहिये ॥ १०३ ॥ प्रस्थान रखनेके अनंतरभी यदि निषेद्ध दिन अर्थात् अकाल वृष्टि या धूर पडी होतो नहीं जाना योग्यहै (प्रस्थान स्थिति) पूर्व यात्रामें सात रोजतक प्रस्थान-की अवधिहै दक्षिणमें पांच दिनकी पश्चिममे तीन दिनकी और उत्तरमें दो दिनकी अवधि जानना ॥ १०४ ॥ प्रस्थानलेके जानेमेंभी और प्रस्थान रखती समयमेंभी चं-द्रमाकाबल, तथा श्रेष्ठ शकुन तो देखनाहीं चाहिये ॥१०५॥ (प्रस्थान रखनेंके अनंतर नियम प्रस्थान रखनेके पहलेंही तीन रोजतक दुग्ध नहीं खावे और पांचरोज पहलें क्षौर (हजामत) त्यागदेवै और सातरोज पहलें स्त्रीसग त्यागदेना चाहिये॥१०६॥ वर्षा, या घाम, होवेतो छत्र धारण करै और रात्रिमें, या जंगलमें जाना होवेतो दंड(छडी)धारण करै और शरीर रक्षाके अर्थ जूता सदैव धारकें गमन करै ॥ १०७ ॥ गमन करते हुये कों ऊपरकों, या टेढा, नहीं देखणा चाहिये दूरसें च्यार हाथ जमीनतक देखता हुवा गमन करै ॥ १०८ ॥

चतुष्पाथान्नमस्कुर्याच्चैत्यव्रक्षंतथैवच । देवालयंगुरून्वृद्धान्स्वपूज्यान् वृषभंचगाम् ॥ अथयात्रायांशकुनाः । तत्रातावतशुभाः ॥ दधिदूर्वाक्ष-तारौप्यंपूर्णकुंभोथसर्षपाः । दीपोगोरोचनादर्शोप्रज्वलन्हव्यवाहन ॥

॥ १०९ ॥ वेदघोषःशुभावाचोजयमंगलसंयुताः । शंखदुंदुभिवीणादिमृदुमर्दलनिःस्वनाः ॥ ११० ॥ सिद्धमन्नंचतांबूलंमीनोदुग्धंघृतंमधु । मदिरारुधिरंमांसंभक्ष्यंनानाविधंफलम् ॥ १११ ॥ इक्षवःसितपुष्पाणिपद्ममुद्धृतगोमयम् । ध्वजःसिंहासनंछत्रंनृपाणांकुशमायुधम् ॥११२॥ दोलावितानसद्वस्त्रंरत्नालंकारदीपिका । विप्रोभूपोगुरुर्वृद्धःपुत्रपौत्रादिभिर्वृतः ॥ ११३ ॥ दैवज्ञःकन्यकायोषासुभगापुत्रसंयुता । वरांगनातपस्वीचवदान्योथनरःशुचिः ॥ ११४ ॥

यदि रस्तेमें चोराया (चोघटा) यज्ञ स्थानका वृक्ष, देवालय, गुरु, वृद्ध, माता-पिता आदिपूज्य, वृषभ, गौ, आदि मिलेतो नमस्कार करै और दक्षिण भागमें लेवै ॥ १०९ ॥ (यात्राके श्रेष्ठ शकुन) दहीं, दुर्वा, चावल, चांदी, जलपूर्ण कुंभ, सरसों, दीपक, गोरोचन, दर्पण, जलती हुई अग्नि ॥ १०९ ॥ वेदकाशब्द, श्रेष्ठ वचन, जयमंगलशब्द, शंख दुंदुभी वंसरी ढोल आदिका शब्द ॥११०॥ पक्वान्न, तांबूल, मच्छी दुग्ध, घृत, सहत, मदिरा, रुधिर, मांस, भक्ष्य पदार्थ, नानातरहके फल ॥ १११ ॥ ईष, श्वेतपुष्प, कमल, उठाया हुया गोमय, ध्वजा, सिंहासन, छत्र, राजाओंका आयुध, ॥११२॥ पालखी, चाननी, श्रेष्ठ वस्त्र, रत्न, आभूषण, (दीवट) लालटेन, ब्राह्मण, राजा, गुरु, वृद्ध, पुत्रपौत्रसहित मनुष्य ॥ ११३ ॥ ज्योतिसी, कन्या पुत्रसहित सुहागणस्त्री, वेश्या, तपस्वी, दानी, शुद्ध पुरुष ॥ ११४ ॥

रजकोधौतवस्त्रंचशवंरोदनवर्जितम् । तोयार्थीपूर्णकुंभश्चानुगःपृष्ठेमृदोंजनम् ॥ ११५ ॥ गजोवाजीरथोधेनुःसवत्सातुविशेषतः । श्वेतोवृषोऽन्यवर्णोपिवद्धैकश्चेत्तदाशुभः ॥ ११६ ॥ वर्णीस्वमित्रमुष्णीषंदर्भोहंसोमयूरकः । नकुलश्चभरद्वाजश्चाषश्छागस्तथैवच ॥ ११७ ॥ चित्तोत्साहकरंवस्तुशुभान्येतानिदर्शनात् । कीर्त्तनाच्छ्रवणंश्रेष्ठंश्रवणात्तुविलोकनम् ॥ ११८ ॥ दर्शनात्स्पर्शनंचैषांदध्यादीनांगमादिषु । शुभदंदर्शनंयेषामभिवाद्यैवतान्नरः ॥११९॥ कृत्वादक्षिणतःसर्वान्गच्छन्सिद्धिमवाप्नुयात् । पुरतःशब्दएहीतिशस्यतेनतुपृष्ठतः ॥ १२० ॥

धोबी, धोयावस्त्र, रोदन रहित मुर्दो, पृष्ठ भागमें जलकी कामनावाली, जल कुंभ, मट्टी, अंजन, ॥११५॥ हस्ती घोडा, रथ, वछडासहित धेनु, श्वेतवृषभ, रसीसें वंध्याहुया वृषभ इत्यादि सन्मुख मिलैतोश्रेष्ठहै ॥ ११६ ॥ वर्नन करता विप्र, मित्र, पागडी,

दर्भी, हंस, मयूर, नकुल, भारद्वाजपक्षी, पपैया, बकरा ॥ ११७ ॥ चित्तकी प्रसन्नता करनेवाली वस्तु, इत्यादि सन्मुख देषणमें शुभदायकहै कहनेसे सुनना श्रेष्ठ जानना और सुननेसे देखा हुवा शकुन श्रेष्ठ होताहै ॥ ११८ ॥ देखनेसे यात्रामें दहि आदिको स्पर्शकरना श्रेष्ठहै और जिनको देखनाही शुभ माना गयाहै जैसे मारवाड देशमें सोनचिडी, श्वेतचिडी जंगलकी देखनेमेंहीश्रेष्ठहैं सो उनको नमस्कार करलेना चाहिये ॥ ११९ ॥ यह संपूर्ण वस्तु कही हुई सन्मुख मिलेतो गमन समयमें दक्षिण भागमें लेनेसे सिद्धि होताहै, अगाडीको आवो ऐसा शब्द कोई सन्मुख कहै तो श्रेष्ठहै और पीछेसे चलो ऐसा शब्द कोई कहै सो श्रेष्ठहै ॥ १२० ॥

गच्छेतिपश्चाच्छुभदःपुरस्ताच्चविगर्हितःरिक्तः । कुंभोऽनुकूलस्थःशस्तोऽम्भोऽर्थीयियासतः ॥ १२१ ॥ चौर्य्यविद्यावणिज्यार्थमुद्यतानांविशेषतः ॥ १२२ ॥ शुभाशुभानिकर्माणिनिमित्तानिस्युरेकतः । एकतस्तुमनोयातुस्तद्धिशुद्धंजयावहम् ॥ १२३ ॥ अथदुःशकुनाः । कार्पासंकृष्णधान्यंचलोहकारश्चरोदनम् । लोहंचरक्तपुष्पाणिगुडस्तैलंक्षुतंतथा ॥ १२४ ॥ पिण्याकंतृणतक्राणिभस्मास्थिलवणंतुषः । पाषाणेंधनचर्माणिसधूमोवह्निरौषधम् ॥ १२५ ॥ मत्तोवांतःखलोहिंस्रोमुंडितश्चबुभुक्षितः । जटिलश्चतथारोगीसंन्यासीमलिनोरिपुः ॥ १२६ ॥

पीसेतो चलो ऐसा शब्द शुभ होताहै और जलरहित कुंभलिये हुये गैलसे जलकामनाके वास्ते आता होवेतो श्रेष्ठ जानना चाहिये ॥ १२१ ॥ यह शकुन, चौरको, विद्याकामना और वानिज्य कामनावालेको विशेषतासे श्रेष्ठ जानना ॥१२२॥ जितना शुभ अशुभ कर्महै तथा शकुनहै सो एक तरफ और जाने वालेका प्रसन्न चित्त एक तरफहै परंतु चित्त प्रसन्नतासे जैसा कार्य सिद्ध होताहै वैसा अन्यवातोंसे नहीं होताहै ॥ १२३ ॥ (अथ दुष्ट शकुन) कपाश, तिल उडदआदि कृष्णअन्न, लोहार रुदन, लोह, रक्तपुष्प, गुड, तैल छींक ॥ १२४ ॥ तिल, खल, तृण, तक्र, भस्मी, हड्डी, लूण, तुष, पत्थर, काठ, चर्म, धूंवांसहित अग्नि, औषधी, इत्यादि सन्मुख निषेद्धहै ॥ १२५ ॥ उन्मत, वमनकृत, खल, हिंसक, शिरमुंडा हुवा वुवुक्षित अर्थात भूख मरता हुवा, जटाधारी, रोगी, सन्न्यासी, मलीन, शत्रु, ॥ १२६ ॥

खंजोनग्नांगहीनश्चतैलाभ्यक्तोथगर्भिणी । कषायवस्त्रधारीचमुक्तकेशोऽथपाशवान् ॥ १२७ ॥ वंध्याचश्रृंखलेचौरःषंढोयानंपलायनम् । खरोष्ट्रमहिषारुढाःकुवाक्यश्रवणंतथा ॥ १२८ ॥ कृष्णसर्पोथमंडुकःसरठोग्रामसूकरः । कृपणःपतितोव्यंगःकुब्जोंधोवधिरोजडः ॥ १२९ ॥

आर्द्रवासोथविधवास्वर्णकारोरजस्वला । उपानत्कर्दमांगीचपुरीषंचव- सातृणम् ॥ १३० ॥ तथारजस्वलापुष्पंकृष्णोक्षामहिषोवृषः । स्वगेह- दहनंयुद्धंमार्जाररंस्वगृहेकलिः ॥ १३१ ॥ गोक्षुतंप्राणिनामंगशिरःश्रो- त्रप्रकंपनम् । मार्जारोमार्गरोधश्चस्खलनंरिक्तकुंभकः ॥ १३२ ॥

खोडा, नंगा, अंगहीन, तैललगायाहुवा, गर्भणीस्त्री, भगवा भेषधारी, खुला के- शवाला, रस्सी लिया हुवा ॥१२७॥ बंध्यास्त्री, बेडीडाला हुवा चौर, नपुंसक, भागता हुवा घोडाआदि वाहन, खर, उष्ट्र, महिषपेंचढाहुवा, खोटीजबानका सुनना ॥१२८॥ कालासर्प, मंडुक, सरठ (किरडा) ग्रामके सूर, कृपण पतित, काना अंधा, कूबडा, बोला, (बहरा) मूर्ख ॥ १२९ ॥ गीला वस्त्र पहरे हुवा, विधवास्त्री सुनार, रजस्वला, जूता, कादा लगा हुवा, विष्टा, चर्वी, सूकातृण ॥ १३० ॥ कालावृषभ, भैंसा, सांढ, अपने घरका दग्ध होना, लडाई होना, मार्जार, घरमें कलह, ॥ १३१ ॥ गौकी छिंक, श्वान आदि जीवका शिर तथा कान हिलाना, मार्जारका आगेहोकरजाना, अखड (ठोकर) ना, रीता घडा मिलना ॥ १३२ ॥

एतेदुःशकुनायानेसर्वकार्यनिषेधकाः । शिंकाविडालसर्पाभ्यांमार्गरोधो- मृतेर्वचः ॥ १३३ ॥ मार्जारंमाहिषंयुद्धंशुनःकर्णप्रकंपनम् । अतिधूमा- चितोवह्निःषडेतेमरणप्रदाः ॥ १३४ ॥ क्यासितिष्ठआगच्छकिंतेतत्रग- तस्यतु । अन्येशब्दाश्चयेनिष्ठास्तेविपत्तिकराअपि ॥ १३५ ॥ सूकरी- कोकिलापल्लीछुच्छुकापिंगलारला । पोतकीचशिवासर्वेपुमाख्यावामगाः शुभाः ॥ १३६ ॥ मध्याह्नोत्तरतःश्रेष्ठौचाषवभ्रूचवामगौ । खरोलूक- शृगालानांवामेपृष्ठेशुभःस्वनः ॥ १३७ ॥ श्रीकंठोवानरोमासःश्वेतचट- कस्तथारुरुः । श्वाऋक्षोवायसःश्रेष्ठाःस्त्रीसंज्ञाश्चापिदक्षिणे ॥ १३८ ॥

इत्यादि दुष्ट शकुन यात्रामें कार्यका नाश करतेहैं और छिंक होना, बिलाव या सर्प मार्गकोरोकै, मृत्युका वचन सुनै ॥ १३३ ॥ मार्जार महिषका युद्ध होताहो या कुत्ता कानकों फट् फट् करताहो, भौतसे धुंवेकी अग्निआतीहो तो यहमृत्युके देने- वाले षोटे शकुन जानना चाहिये ॥ १३४ ॥ कहांजाताहै, खडारहे, पीछाआव, वहांजानेमें क्या तेरे प्रयोजनहै, इत्यादि बहुतसे अनिष्ट शब्द विपतिके करनेवाले जानना चाहिये ॥१३५॥(पक्षी शकुन) सूरडी,(शूकरी)कोकिला, छिपकली, छुछुका, पिंगला, रला, पातकी शिवा (गादडी-) और संपूर्ण पुर्वसंज्ञक जानवर वामभागमें श्रेष्ठहै ॥ १३६ ॥ पपैया, नोलिया यह बीचसेति वाम भागको जाना श्रेष्ठ मानाहै,

खर, उल्लूक, गादडा, इतने जानवरोका शब्द (बोलना) वामभागमें और पीठमें श्रेष्ठहै ॥ १३८ ॥ मयूर, वानर, भास (शिकरा) पक्षी श्वेतचिडी अर्थात् जिसको सोनचिडी तथा भवानीभी कहतेहैं रुरुजातिकामृग, श्वान रिच्छ, कागला और स्त्री संज्ञक जानवर दक्षिणभागमें लेना श्रेष्ठहै ॥ १३८ ॥

प्रदक्षिणगताःशस्तायानेतुमृगपक्षिणः । शृगालःसारमेयश्चदक्षिणाद्वामगःशुभः ॥ १३९ ॥ अथदुष्टशकुनपरिहारः । दृष्टेनिमित्तेप्रथमेअमंगल्यविनाशनम् । केशवंपूजयेद्विद्वान्स्तवेनमधुसूदनम् ॥ १४० ॥ द्वितीयेतुततोदृष्टेप्रतीपेप्रविक्षेद्गृहम् । अत्यावश्येतुसघृतंस्वर्णंदत्वाव्रजेत्सुखम् ॥ १४१ अथछिंकाशकुनेविशेषः ॥ छिंकाशब्दंप्रवक्ष्यामिपूर्वेस्यामशुभंफलम् । आग्नेय्यांशोकदुःखंस्यादरिष्टंदक्षिणेतथा ॥ १४२ ॥ नैर्ऋत्यांचशुभंप्रोक्तंपश्चिमेमिष्टभक्षणं । वायव्येधनलाभस्तुउत्तरेकलहस्तथा ॥ १४३ ॥ ईशान्यांचशुभंज्ञेयमात्मछिंकामहद्भयम् । ऊर्ध्वेचैवशुभंज्ञेयंमध्येचैवमहद्भयम् ॥ १४४ ॥

यात्रामें मृग तथा पक्षी प्रादक्षिण (दहना) आवेतो श्रेष्ठहै गादडा, श्वान, यह दक्षिण भागसें वामभागमें आवेतो शुभहै, ॥१३९॥ (दुष्ट शकुन परिहार) यदि प्रथमही अशुभ शकुन होवेतो कृष्ण भगवानकी पूजन करै और सहस्रनामसे स्तुति करके गमन करै ॥ १४० ॥ यदि दूसरा शकुनभी खोटा होवेतो पीछा घरको आजाना चाहिये यदि अतिही जरूरत होवेतो घृतसहित सुवर्णका दानकरके गमन करै ॥१४१॥ (छींकाका विचार) गमन समयमें पूर्वको छींक होवेतो अशुभ फलहै, अग्निकोनमें होवेतो शोक, दुख, होवे दक्षिणमें होवेतो अरिष्ट होवै, ॥ १४२ ॥ नैर्ऋत्य कोनमें होवेतो श्रेष्ठ जानना, पश्चिममें होवेतो मिष्टान्न मिलै, वायव्य कोनमें होवेतो लाभ होवै, उत्तरमें होवेतो कलह होवै ॥ १४३ ॥ ईशानकोनमें होवेतो शुभहै यदि खुद जानेवालेहीको छींक होजावे तो महान्भय होवै ऊपरको छींक होवेतो श्रेष्ठ जाणो और बीचमें होवेतो महान्भय होताहै ॥ १४४ ॥

बुधैःछिंकारवंश्रुत्वापादछायांचकारयेत् । त्रयोदशयुतांकृत्वाचाष्टभिर्भागमाहरेत् ॥ १४५ ॥ लाभःसिद्धिर्हानिशोकभयंश्रीदुःखनिष्फले । क्रमेणैवफलंज्ञेयंगर्गेणचयथोदितम् ॥ १४६ ॥ अथयात्रानिवृत्तौप्रवेशमुहूर्त्तःकुर्यात्प्रवेशंयात्रायानिवृत्तौनिजमंदिरे । श्रेष्ठोवारेगुरौशुक्रेबुधेचंद्रेशनैश्चरे ॥१४७॥ चित्रोत्तरानुराधाख्येरोहिणीरेवतीमृगे । त्यक्त्वारिक्ता-

ममांसूर्यभौमंलग्नंचरंलवम् ॥ १४८ ॥ स्वस्यनाशःप्रवेशेस्यात्पूर्वासुभरणीमघे । आर्द्राऽश्लेषाभिधेमूलेज्येष्ठायांपुत्रनाशनम् ॥१४९॥ कृत्तिकायांगृहेदाहोविशाखायांमृतिःस्त्रियाः । स्थिरेंगेशेशुभैरर्थकेंद्रकोणत्रिलाभगैः ॥ १५० ॥ पापैर्लाभत्रिषट्संस्थैःशुद्धेतुर्ये४तथाष्टमे । प्रवेशोनॄणांहिशुभोविजनुर्भाष्टमेस्मृतः ॥ १५१ ॥ इति श्रीरत्नगढनगरनिवासिनापंडितगौडश्रीचतुर्थीलालशर्मणाविरचितेज्योतिर्षोधप्रकाशेधनाद्यर्थयात्राप्रकरणसप्तमम् ॥ ७ ॥ ॥ छ ॥

प्रथम छींकाका शब्द सुणतेही शरीरकी छायाको पैरोंसेमापै और जितनेपैंड होवे उनमें फिर तेरह मिलाके आठका भाग देवै ॥ १४५ ॥ यदि एक बचेतो लाभहो, दो, बचेतो सिद्धि, तीन बचेतो हानि, च्यार बचेतो शोक, पांच बचेतो भय छ बचेतो श्रीः, सात बचेतो दुख, आठ बचेतो कार्य निष्फल होवै ॥ इस प्रकार गर्गाचार्यनें छींकका फल कहाहै ॥ १४६ ॥ (प्रवेश मुहूर्त्त,) यात्रासे निवर्त होके अपने घरमें गुरु, शुक्र, बुध, चंद्र, शनिवारको प्रवेश होना श्रेष्ठहै ॥ १४७ ॥ चित्रा, तीनो उत्तरा, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, मृगशिर, इननक्षत्रोंमें और रिक्ता ४।९। १४ अमावस्याके विना अन्यतिथियोमें और सूर्यवार, मगलवार, चरलग्न १।४। ७।१० त्यागके गृहमें प्रवेश होना श्रेष्ठहै ॥ १४८ ॥ यदि तीनो पूर्वा भरणी, मघामें प्रवेश होवेतो आपका नाशहो और आर्द्रा, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठामें प्रवेश होवेतो पुत्रका नाशहो, ॥१४९॥ कृत्तिकामें होतो अग्निसे घर जलै विशाखामें होवेतो स्त्रीकी मृत्युहोवे, स्थिरलग्नहोवे या लग्नेश स्थिरराशिपेंहोवे और शुभग्रह केंद्र१।४।७। १० त्रिकोन ९।५ तीसरे ग्यारहवेमें होवेतो धनप्राप्ति होताहै १४ पापग्रह ११।३।६ होवे तथा चौथा आठवा स्थान ग्रह रहितहोवे और जन्मराशि आठवें नहीं होवेतो घरमें प्रवेश होना शुभहै ॥ १५० ॥ इति मुहूर्त्त प्रकाशे यात्रा प्रकरण सप्तमम् ॥ ७ ॥

वास्तुप्रकरणम् ८

अथवास्तुप्रकरणम् ॥ तत्रतावद्गृहारंभकालः । अथातःसंप्रवक्ष्यामिगृहकालविनिर्णयम् । यथाकालंशुभंज्ञात्वातदाभवनमारभेत् ॥ १ ॥ पौषफाल्गुनवैशाखमाघश्रावणकार्त्तिकाः । मासास्युर्गृहनिर्माणेपुत्रारोग्यशुभप्रदाः ॥ २ ॥ चैत्रेव्याधिमवाप्नोतियोनवंकारयेद्गृहं । वैशाखेधनरत्नानिज्येष्ठेमृत्युस्तथैवच ॥ ३ ॥ आषाढेभृत्यरत्नानिपशुवर्गमवाप्नुयात् ।

श्रावणेमित्रलाभंतुहानिंभाद्रपदेतथा ॥ ४ ॥ युद्धंचैवाश्विनेमासिकार्ति-केधनधान्यकम् । धनवृद्धिमार्गशीर्षेपौषेतस्करतोभयम् ॥ ५ ॥ माघेत्व-ग्निभयंविंद्याल्लक्ष्मीर्वृद्धिश्चफाल्गुने । शुक्लपक्षेभवेत्सौख्यंकृष्णेतस्करतो-भयम् । अथसौरमानेनविशेषःधनु९ मिथुन३ कन्यायां६ मीनेच१२यदि-भानुमान्नकर्त्तव्यंतदागेहंकृतंदुःखमवाप्यते ॥ ६ ॥

अथवास्तुप्रकरणलिख्यते ॥ प्रथम नवीन घरके आरंभके कालका निर्णय लिखतेहैं क्योंकि शुभ समय जानकें घरका आरंभ करना चाहिये ॥ १ ॥ पौष, फाल्गुन, वैशाख, माघ, श्रावण, कार्तिक, इन महीनोंमें नवीन घर करेतो पुत्र आरोग्य शुभ होताहै ॥ २ ॥ चैत्रमें घर बनानेसे रोग होताहै, वैशाखमें धन रत्न प्राप्त होताहै, ज्येष्ठमें मृत्यु होवे ॥ ३ ॥ आषाढमें नोकर रत्न गौ आदि पशुवोंका लाभ, श्रावणमें मित्रोंका-लाभ और भादवेमें हानि होतीहै ॥ ४ ॥ अश्विनमें युद्ध, कार्त्तिकमें धनधान्य, मार्गशिरमें धनकी वृद्धि, और पौषमें चोरोंका भय होताहै, माघमें अग्निका भय, फाल्गुनमें लक्ष्मीकी वृद्धि होतीहै और शुक्लपक्षमें सुख और कृष्णपक्षमें चोरोंका भय होताहै परंतु धन मिथुन कन्या मीनके सूर्यमें यदि नवीन घर करावें तो दुःख होताहै ॥६॥

अथगृहारंभेग्राह्यास्तिथयः। द्वितीयाचतृतीयाचषष्ठीचपंचमीतथा सप्तमी दशमीचैवद्वादश्येकादशीतथा ॥ ७ ॥ त्रयोदशीपंचदशीतिथयःस्युःशुभावहाः । अथनिषिद्धतिथिफलम् ॥ दारिद्र्यंप्रतिपत्कुर्यात्चतुर्थीधन-हारिणी८अष्टम्युच्चाट८नींचैवनवमीशत्रुवर्द्धिनी । दर्शेराजभयंज्ञेयंभूते-चौरभयंतथा ॥९॥ अथगृहारंभनक्षत्राणि । त्र्युत्तरेऽपिचरोहिण्यांपुष्येभे-त्रेकरद्वये । धनिष्ठाद्वितयेपौष्णेगृहारंभःप्रशस्यते ॥ १० ॥(विश्वकर्मप्रकाशेविशेषः) मृदुध्रुवस्वातिपुष्यधनिष्ठाद्वितयेकरे । मूलेपुनर्वसौसौम्यवा-रेप्रारंभणंशुभम् ॥ ११ ॥ अथत्याज्यवारादि । आदित्यभौमवर्ज्यास्तु-सर्वेवाराःशुभावहाः । केचिच्छनिंप्रशंसंतिचौरभीतिस्तुजायते ॥ १२ ॥

(गृहारंभकीतिथि) २।३।६।५।७।१०।१२।११।१३।१५ यह तिथि घरके आरंभमें श्रेष्ठहै ॥ ७ ॥ प्रतिपदामें घरका आरंभ करेतो दरिद्री होवे, चौथ धनकों हरै, अष्टमी उच्चाटनकरै, नौमी शत्रुओंकोवढावे, अमावस्या राजका भय करै, चौदश चोरोंका भय करै ॥८॥९॥ (घरके आरंभका नक्षत्र) उत्तरा ३ रो. पुष्य अनु. ह. चि. ध. श. रे. मृ. स्वा. मू. पुन. इन नक्षत्रोंमें ग्रहारंभ करना शुभहै ॥१० ॥११॥ आदित्य मंगलके बिना संपूर्ण वार शुभहै परंतु शनिवारमें करनेसें चोरोंका भय होताहै ॥ १२॥

वज्रव्याघातशूलेषुव्यतिपातातिगंडयोः। विष्कुंभेगंडपरिघेवर्जयोगेनकारयेत्॥१३॥मासदग्धंवारदग्धंतिथिदग्धंचवैधृतिं। उत्पातैर्दूषितमृक्षंवर्जयेत्दर्शसंज्ञकम् ॥ १४ ॥ अथनिषिद्धतिथ्यादिफलम् । तिथौरिक्तेदरिद्रत्वंदर्शेगर्भनिपातनम्। कुयोगेधनधान्यादिनाशःपातश्चमृत्युदः १५ वैधृतिसर्वनाशायनक्षत्रैक्येतथैवच । पापवारेदरिद्रत्वंशिशूनांमरणंभवेत् ॥ १६ ॥ कुयोगस्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्थाभवारजाः। विवाहादिषुयेवर्ज्यास्तेवर्ज्यावास्तुकर्मणि॥१७॥अथगृहारंभेग्राह्यामुहूर्त्ताः। श्वेतेमैत्रेऽथमाहेंद्रेगंधर्व्वाभिजिद्रौहिणेतथावैराजसावित्रेमुहूर्त्तेगृहमारभेत् ॥ १८ ॥

वज्र, व्याघात, शूल, व्यतिपात, अतिगंड, विष्कुंभ, गंड, परिघ इन योगोमें गृहारंभ नहीं करै ॥ १३ ॥ मासदग्ध, वारदग्ध, तिथिदग्धा, वैधृतियोग, और भूकंप आदि उत्पातोंके दिनका नक्षत्र, अमावस्या जरूर वर्ज देनाचाहिये ॥ १४॥ और रिक्तातिथि दरिद्र करै, अमावस्या गर्भको नाश करै, निषेद्ध योग धनधान्यको नाशकरै और व्यतिपात मृत्युकरै ॥ १५ ॥ वैधृति तथा जन्म नक्षत्र सर्व नाश करै, पाप वार दरिद्रकरै और बालकोंकी मृत्यु करै ॥ १६ ॥ तिथिवारसें होनेवाला निषेद्धयोग और तिथि नक्षत्रसें होनेवाला दोष जो विवाहमें त्यागेगये हैं सोही नवीन घरके आरभमें त्यागदेना चाहिये ॥१७॥ और श्वेत, मैत्र, माहेंद्र, गांधर्व अभिजित् रोहिणी, वैराज, सावित्र, इन मुहूर्त्तोंमें गृहारंभ शुभहै ॥ १८ ॥

चंद्रादित्यबलंलब्ध्वालग्नेशुभनिरीक्षिते निषिद्धेष्वपिकालेषुस्वानुकूलेशुभेदिने ॥ १९ ॥ अथतृणदारुगृहारंभेमासदोषाऽभावः।पाषाणेष्टयादिगेहादिनिंद्यमासेनकारयेत् । तृणदारुगृहारंभेमासदोषोनविद्यते ॥ २० ॥ निंद्यमासेपिचांद्रस्यमासेनशुभदंगृहम्। चरलग्नेचरांशेचसर्वथापरिवर्जयेत् ॥ २१ ॥ अथगृहारंभेवृषचक्रम् । आरंभेवृषभंचंक्रंस्तंभेज्ञेयंतुकूर्मकं। प्रवेशेकलशंचक्रंवास्तुचक्रंबुधैःस्मृतम् ॥ २२ ॥ वास्तुचक्रंप्रवक्ष्यामियच्चव्यासेनभाषितम्। यद्दक्षेवर्ततेभानुस्तत्रादौत्रीणिमस्तके ॥ २३ ॥ चतुष्कमग्रपादेस्यात्पुनश्चत्वारिपश्चिमे।पृष्ठेचत्रीणिऋक्षाणिकुक्षौचत्वारिदक्षिणे ॥ २४ ॥ चत्वारिवामितःकुक्षौपुच्छेभत्रयमेवच । मुखेभत्रयमेवस्युरष्टाविंशतितारकाः ॥ २५ ॥

चंद्रमा सूर्य बलवान् होवे और लग्नको शुभ ग्रह देखता होवे तथा शुभ दिन होवे

तो निषेद्ध कालमेंभी गृहारंभ श्रेष्ठहै ॥ १९ ॥ पाषाण मट्टी आदिका घर निंदित महीनोंमें नहीं करे और तृण दारु(काष्ठ)आदिके गृहारंभमें मास दोष नहीं है॥२०॥निंदित मासमेंभी चांद्रमासके हिसाबसे गृहारंभ शुभहै परंतु चरलग्न और चर नवांशक सर्वथाही वर्जनीकहै ॥ २१ ॥ (वास्तुचक्रम्) गृहारंभमें वास्तु चक्र देखना, स्तंभस्थापनमें कूर्म चक्र और गृह प्रवेशमें कलशचक्र देखना चाहिये यह तीन प्रकारके वास्तु चक्रहै ॥ २२ ॥ अब व्यासजीकरकें कहा हुवा वास्तु चक्र कहतेंहै, सूर्यके नक्षत्रसें ३ नक्षत्र वास्तुके मस्तक शिरकाहै, फिर ४ अगाडीके पग (पैर) काहै, ४ पछाडीके पगकाहै, तीन पीठकाहै. ४ दक्षिणकूखकाहै, ४ वामकूखकाहै, तीन पुच्छकाहै, फिर३ मुखकाहै इसतरह २८ नक्षत्र जाणना ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

अथफलम् । शिरस्ताराग्निदाहायगृहोद्वासोग्रपादयोः । स्थैर्यस्यात्पश्चिमेपादेपृष्ठेचैवधनागमः ॥ २६ ॥ कुक्षौस्याद्दक्षिणेलाभोवामकुक्षौदरिद्रता । पुच्छेस्वामिविनाशःस्यान्मुखेपीडानिरंतरम् ॥ २७ ॥ अथखननमुहूर्त्तः । तत्रतावद्भूशयनविचारः । प्रद्योतनात्पंच५नगांक९सूर्य्य१२नवदु१९षड्विंश२६मितानिभानि ॥ शेतेमहीनैवगृहंविदध्यात्तडागवापीखननंनशस्तम् ॥ २८ ॥ द्वितीयःप्रकारः । वाणा५सत्य७शिवा११नवा९तिथि१५नखा२०द्वाविंश२२त्रिविंशकाः २३ अष्टाविंशति२८ वासरेचशयनेसंक्रांतिघस्रंत्यजेत् ॥ २९ ॥ अधामुखेचनक्षत्रेशुभेह्निशुभवासरे । चंद्रतारानुकूल्येचखननारंभणंशुभम् ॥ ३० ॥

शिरके ३ नक्षत्रोंमें गृहारंभ करेतो घर अग्निसें दग्ध होवे, अगाडी पगके४ नक्षत्रोंमे घर शूना रहै, पिछाडीके पगके ४ नक्षत्रोंमें स्थिर होवे, पीठके ३ नक्षत्रोंमें धन प्राप्ति होवे ॥ २६ ॥ दक्षिण कूखके ४ नक्षत्रोंमें लाभ होवे, वाम कूखके ४ नक्षत्रोंमें दरिद्र होवे, पुच्छके ३ नक्षत्रोंमें स्वामिका नाश होवे और मुखके ३ नक्षत्रोंमें गृहारंभ करेतो पीडा होवे ॥ २७ ॥ (भूमिशयनका विचार) सूर्यके नक्षत्रसें ५।७।९।१२।१९।२६ इतने नक्षत्रोमें भूमि सोतीहै सो घर नहीं करना और तलाव, बावडी, कूवा आदि खोदना नहीं चाहिये ॥ २८ ॥ (दूसरा प्रकार) सूर्यकी संक्रांतिसे ५।७।११।९।१५।२०।२२।२३।२८ इतने दिनोंमें पृथ्वी सोतीहै सो गृहारंभ नहीं करना ॥ २९ ॥ मू. अश्ले. म. पू. ३ वि. भ. कृ. इन अधोमुख नक्षत्रोंमें और शुभ दिनवारमें चंद्र तारा बलवान् होनेसे घरके खोदनेका आरंभ करना श्रेष्ठहै ॥ ३० ॥

अथगृहारंभखननेशेषचक्रम् । कन्या६सिंहे५तुला७यांभुजगपतिमुखंशंभुकोणेग्निखातं । वायव्येस्यातदास्यंत्वलि८धन९मकरे१०ईशखातं-

वदंति। कुंभे ११ मीने १२ चमेषे १ नैऋत्यतिदिशिमुखंखातवायव्यकोणे। चाग्न्येकोणेमुखंवैवृष२ मिथुन३ गतेकर्कटे ४ रक्षखातम्। अथसुगमतया-गृहेखातदिक्स्पष्टीकरणम्। आग्नेयांखननंकुर्यात्सिंहाद्राशित्रये ५।६। ७ रवौ। ईशान्यांचतथाचोक्तंवृश्चिकादित्रये ८।९।१० रवौ॥ कुंभा-दित्रितये ११।१२।१ वायौनैर्ऋत्यांवृषभत्रये २।३।४ ॥ ३१ ॥ अ-थदेवालयादिषु विशेषः। देवालयेत्रयेमीना १२ त् गेसिंहा५द्रवौस्थिते। ज-लाशयेमृगाद्यास्तेमुखमीशाद्विलोमतः ॥ ३२ ॥ अथगृहारंभेलग्नानि-तत्फलंच। नाशंदिशंतिमकरालि८ कुली४ रलग्नेमेषे१ घटे ७धनुषि९ कर्म सुदीर्घसूत्रम्। कन्या६ झषे१२ मिथुनगे३ ध्रुवमर्थलाभंज्योतिर्विदःक-लश११ सिंह५ वृषेषु२ सिद्धिम् ॥ ३३ ॥ अथलग्नबलविचारः। द्विः स्वाभावेस्थिरेलग्नेशुभैर्व्यष्टांत्यगैर्ग्रहैः पापैःआयारिगैःकुर्यान्मंदिरारंभणं-बुधः ॥ ३४ ॥ जन्मभात्त्रैपचयभेलग्नेवर्गेतथैवच प्रारंभणंप्रकुर्वीत नैध-नंपरिवर्जयेत् ॥ ३५ ॥

(खोदनेमें शेषका चक्र) कन्या सिंह तुल के सूर्यमें शेषका मुख ईशानकोनमें होताहै इसवास्ते अग्निकोनमें खोदना चाहिये, और वृश्चिक धन मकर के सूर्यमें वायुकोनमें मुखहै सो ईशानकोनमें खोदना कुंभ मीन मेष के सूर्यमें नैऋत्यकोनमें मुखहै सो वायुकोनमें खोदना शुभहै और वृष मिथुन कर्क के सूर्यमें अग्निकोनमें मुखहै सो नैऋत्यकोनमें खातकरना श्रेष्ठहै ॥ ३१ ॥ (मंदिर आदिके खननेका वि-चार) देवमंदिरके आरंभमें मीन की संक्रांतिसे और घरके आरंभमें सिंहसें और तलाव आदि जलाशयोंके आरंभमें मकर के सूर्यसें तीन तीन राशियोंसे ईशान आदि दि-शामें वामक्रमसेति वास्तुका मुख जानना ॥ ३२ ॥ (गृहारंभका लग्न) मकर वृश्चिक कर्क लग्नमें गृहारंभ करेतो नाश होवे मेष तुल धनमें दीर्घ सूत्री (आलसी) होवे, कन्या मीन मिथुन में धनका लाभ होवे और कुंभ सिंह वृष लग्नमें करेतो सिद्धि होवे ॥ ३३ ॥ द्विस्वभाव, या स्थिर लग्न होवे और बारहवें आठवें स्थानके विना ग्यारहवें छट्टे पापग्रह होवेतो गृहारंभ करना शुभहै ॥ ३४ ॥ जन्मराशिसें ३।१०।११।६ इनराशियोंको लग्नमें तथा नवांशकमें घरका आरंभ श्रेष्ठहै परंतु आठवी राशि वर्जना चाहिये ॥ ३५ ॥

पापैस्त्रि३ षष्ठा६ य११ गतैःसौम्यैःकेंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ गैः निर्माणंकारयेद्धीमानष्टमस्थैःखलैर्मृतिः ॥ ३६ ॥ अथभावफलानि।

लग्नेऽर्केवज्रपातःस्यात्कोशहानिश्चशीतगौ । मृत्युर्विश्वंभरापुत्रेदारिद्र्यं-रविनंदने ॥ ३७ ॥ जीवेधर्मार्थकामाःस्युःपुत्रोत्पत्तिश्चभार्गवे । चंद्रजे-कुशलाशक्तिर्यावदायुःप्रवर्त्तते ॥ ३८ ॥ द्वितीयस्थेरवौहानिचंद्रेशत्रु-क्षयंभवेत् ॥ भूमिजेबंधनंप्रोक्तंनानाविघ्नानिभानुजे ॥ ३९ ॥ बुधेद्र-विणसंपत्तिर्गुरौधर्माभिवर्द्धनम् । यथाकामविनोदेनभृगौकामंव्रजेत्फलम् ॥ ४० ॥ तृतीयस्थेषुपापेषुसौम्येष्वेवविशेषतः । सिद्धिःस्यादचिरादेवय-थाभिलखितंप्रति ॥ ४१ ॥ चतुर्थस्थानगेजीवेपूजासंपद्यतेनृपात् । चंद्र-जेचार्थलाभःस्याद्भूमिलाभश्चभार्गवे ॥ ४२ ॥ वियोगःसुहृदांभानौमंत्रभे-दोमहीसुते । बुद्धिनाशोनिशानाथेसर्वनाशोर्कनंदने ॥ ४३ ॥

पापग्रह तीसरे छठे ग्यारहवें होवे और शुभग्रह केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ मेहो-वेतो गृहारंभ करना श्रेष्ठहै और आठवें पापग्रह होवेतो मृत्यु होतीहै ॥ ३६ ॥ (द्वादश भावोंका फल) लग्नमें सूर्य होवेतो घरपर बिजली पडे,-चंद्रमा होवेतो खजानेका नाश होवे मंगल होवेतो मृत्युकरै शनि होवेतो दरिद्रकरे, गुरु होवेतो धर्मार्थ कामकी प्राप्ति-करै, शुक्र होवेतो पुत्रकी उत्पत्ति करै, बुध होवेतो कुशलताकरै और शक्ति आयुपर्यंत बढै॥३७॥३८॥ दूसरे सूर्य हानिकरै, चंद्रमा शत्रुनाशकरै, मंगल बंधन करै, शनि नाना विघ्न करै, बुध धनका लाभ करै, गुरु धर्मकी वृद्धि करै, शुक्र आनंद करै ॥३९॥४०॥ तीसरे संपूर्ण पाप और शुभग्रह सिद्धि मनवांछित कार्य करै ॥ ४१ ॥ चौथे गुरु राजासे सन्मान करावै, बुध धनका लाभ करै शुक्र भूमिका लाभ करै, सूर्य बांधवोंका वियोग करै मंगल विचारमें भेद करै, चंद्रमा बुद्धि नाश करै शनि सर्व नाश करै ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

पंचमेतुसुराचार्येमित्रंवसुधनागमः । शुक्रेपुत्रसुखावाप्तिरत्नलाभस्तथेंदु-जे ॥ ४४ ॥ सुतदुःखंसहस्रांशौशशाङ्केकलहःस्मृतः । भौमेकार्यविरो-धःस्यात्सौरेबंधुविमर्दनम् ॥ ४५ ॥ षष्ठस्थानगतेसूर्येरोगनाशंविनिर्दि-शेत् । चंद्रेपुष्टिःकुजेप्राप्तिःसौरेशत्रुबलक्षयः ॥ ४६ ॥ गुरौमंत्रोदयः प्रोक्तोभृगौविद्यागमोभवेत् । सम्यग्ज्ञानार्थकौशल्यंनक्षत्रपतिनंदने ॥ ॥ ४७ ॥ सप्तमस्थानगेजीवेबुधेदैत्यपुरोहिते । गजवाजिधरित्रीणांक्र-माल्लाभंविनिर्दिशेत् ॥ ४८ ॥ भास्करेकीर्त्तिभङ्गःस्यात्कुजेविपदमादि-शेत् । हिमगौक्लेशआयासःपतङ्गेव्यङ्गताभयम् ॥ ४९ ॥ नैधने-चसहस्रांशौविद्विषोजनितापदः । हानिःशीतमयूखेचभौमेसौरेचरुग्भयम्

॥ ५० ॥ बुधेमानधनप्राप्तिर्जीवेचविजयोभवेत् । शुक्रेस्वजनभेदः स्यान्मंत्रज्ञस्यापिदेहिनः ॥ ५१ ॥

पांचवें गुरु मित्र धनका लाभ करै, शुक्र पुत्रका सुखकरै, बुध रत्नोंका लाभकरै॥ सूर्य पुत्रका दुखकरै चंद्रमा कलहकरै, मंगल कार्यमें विघ्न करै शनि बाधवोंका नाश करै ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ छट्ठे सूर्य रोगका नाशकरै चंद्रमा क्षीणकरै, मगल प्राप्तिकरै शनि शत्रुओंका नाशकरै, गुरु मंत्रका लाभकरै शुक्र विद्याका लाभकरै बुध चतुराई देवै ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ सातवें गुरु बुध शुक्र हस्ति घोडा पृथ्विका लाभकरै सूर्य कीर्त्ति नाशकरै मंगल विपदा देवै, चंद्रमा क्लेश करै शनि भय करै ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ आठवें सूर्य द्वेष करै चंद्रमा हानिकरै मंगल शनि रोगका भयकरै बुध मानकी धनकी प्राप्ति करै गुरु विजय करै शुक्र बांधवोंमें भेद करै ॥ ५० ॥ ५१ ॥

वागीशेनवमस्थानेविद्याभोगादिनंदनम् । बुधेविविधभोगश्चशुक्रेचविजयोभवेत् ॥ ५२ ॥ चंद्रेधातुक्षयःप्रोक्तोधर्महानिश्चभास्करे । कुजेचार्थक्षयोविद्यादृविजेधर्मदूषणम् ॥ ५३ ॥ दशमस्थानगेशुक्रेशयनासनसिद्धयः । सुराचार्येमहत्सौख्यंविजयंस्त्रीधनंबुधे ॥ ५४ ॥ मार्तंडेचसुहृद्वृद्धिश्चंद्रेशोकविवर्द्धनम् । भौमेरत्नागमःप्रोक्तःकोणेकीर्तिविलोपनम् ॥ ॥५५॥ लाभस्थानेषुसर्वेषुलाभस्थानंविनिर्दिशेत् । व्ययस्थानेषुसर्वेषुविनिर्देश्योव्ययःसदा ॥५६ ॥ स्वोच्चेपूर्णफलःप्रोक्तःपादोनंस्वर्क्षगोग्रहः । स्वत्रिकोणेर्द्धफलदःपादंमित्रगृहाश्रितः ॥ ५७ ॥ समर्क्षेरिपुराशौचसमकष्टफलौग्रहौ । नीचस्थोनिष्फलःप्रोक्तोवर्गेसत्फलदःस्मृतः ॥ ५८ ॥

नोवें गुरु विद्याभोग आनंदकरै बुध नाना भोग देवै शुक्र विजयकरै, चंद्रमा धातु नाशकरै सूर्य धर्मका नाशकरै मंगल धन नाशकरै शनि धर्ममें दूषणकरै ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ दशवें शुक्र शय्या आसनका लाभकरै गुरु महान् सुख देवै, बुध स्त्री धनका लाभकरै. सूर्य सुहृदोंकी वृद्धिकरै चंद्रमा शोक बधावै मंगल रत्न लाभकरै शनि कीर्तिका नाश करै ॥ ५४ ॥५५ ॥ ग्यारहवें स्थान संपूर्ण ग्रह लाभकरै और बारवें संपूर्णही व्यय खर्च करै ॥ ५९ ॥ अपनी उच्च राशिपर ग्रह होवेतो पूर्ण फल करै अपनी राशिपर होवेतो तीन हिस्सेका फल देवै अपनी राशिसे त्रिकोण ९।५ में होवेतो आधा फल करै और मित्रकी राशिका होवेतो एक हिस्सेकाकरै ॥ ५७ ॥ समग्रहकी राशिपर या शत्रुकी राशिपर होवेतो सम और दुष्ट फल देवै और नीच राशिका निष्फल होताहै अपने वर्गमें ग्रह श्रेष्ठ फल करताहै ॥ ५८ ॥

अथगृहायुर्दायोगाः । गुरुर्लग्नेरविःषष्ठे ६ चूने ७ सौम्येसुखे ४ सिते । तृतीयस्थेर्कपुत्रेचतद्गृहंशतमायुषम् ॥ ५९ ॥ भृगुर्लग्नेंबरे १० सौम्येलाभ ११ स्थानेचभास्करेगुरुःकेंद्र १।४।७।१० गतोयत्रशतवर्षाणितिष्ठति ॥६०॥हिबुके ४ ज्येंबरे १० चंद्रेलाभेचकुजभास्करौ। आरंभःक्रियतेयस्य-अशीत्यायुःक्रमाद्भवेत् ॥ ६१ ॥ लग्नेभृगौपुत्रगे ५ ज्येषष्ठेभौमेतृतीयगे । रवौयस्यगृहारंभेसचतिष्ठेच्छशद्वयम् ॥ ६२ ॥ लग्नस्थौगुरुशुक्रौचरिपुराशि ६ गतेकुजे ॥ सूर्य्येलाभगतेयस्यद्विशताब्दानितिष्ठति ॥ ६३ ॥ स्वोच्चस्थो १२ भृगुर्लग्नेस्वोच्चे ४ जीवेसुख ४ स्थिते । स्वोच्चे ७ लाभ ११ गतेमंदेसहस्राणांसमास्थितिः ॥ ६४ ॥ स्वोच्चैःस्वभवनेसौम्यैर्लग्नस्थैर्वापिकेंद्रगैः । प्रारंभःक्रियतेयस्यशतद्वयंसतिष्ठति ॥ ६५ ॥ कर्कलग्नगतेचंद्रेकेंद्रस्थानेचवाक्पतिः। मित्रस्वोच्चस्थितैःखेटैर्लक्ष्मीस्तस्यचिरंभवेत्॥ ६६ ॥

(घरको आयुके देनेवाले योग) गुरु लग्नमें होवे सूर्य छट्ठे होवे, बुध ७ होवे, शुक्र ४ होवे, शनि ३ होवेतो घरकी १०० बरसकी आयु होवे ॥ ५९ ॥ शुक्र लग्नमें होवे, बुध १० होवे, सूर्य ११ होवे गुरु केंद्र १।४।७।१० में होवेतो आयु १०० वर्षकी जानना ॥६०॥ गुरु ४ होवे, चंद्रमा १० होवे, मंगल सूर्य ११ होवेतो ८० बरसकी आयु होवे॥६१॥शुक्र लग्न १ में होवे, गुरु ५ होवे, मंगल ६ होवे, सूर्य ३ होवेतो घरकी आयु२०० बरसरहै ॥ ६२ ॥ लग्नमें गुरु शुक्र होवे, मंगल ६ होवे, सूर्य ११ होवेतो २०० बरसकी आयु होवे ॥६३॥ लग्नमें शुक्र मीनका होवे, गुरु कर्कका ४ होवे, शनि तुलका होवेतो सहस्र बरसकी आयु होतीहै ॥ ६४ ॥ उच्चस्थानोंमें शुभ ग्रह होके लग्नमें या केंद्र १।४।७।१० मे होवेतो २०० बरसकी आयु होतीहै ॥ ६६ ॥ लग्नमें कर्कका चंद्रमा होवे, केंद्र १।४।७।१० स्थानमें गुरु होवे बाकीके ग्रह मित्रके घरमें या उच्च राशिपर होवेतो घर करनेवालेके सदा लक्ष्मी रहतीहै ॥ ६६ ॥

इज्योत्तरात्रयाहींदुविष्णुधातृजलोडुषु। गुरुणासहितेष्वेषुकृतंगेहंश्रिया-युतम् ॥ ६७ ॥ द्विदैवत्वाष्ट्रवारीशरुद्रादितिवसूडुषु । शुक्रेणसहितेष्वेषुकृतंधान्यप्रदंगृहम् ॥ ६८ ॥ हस्तार्यमत्वादस्रष्ट्रचानुराधोडुभेषुच । बुधेनसहितेष्वेषुधनपुत्रसुखप्रदम् ॥ ६९ ॥ अथनिषिद्धयोगाः । शत्रुक्षेत्रगतैःखेटैर्नीचस्थैर्वापराजितैः । प्रारंभेयस्यभवनेलक्ष्मीस्तस्यविनश्यति ॥ ७० ॥ एकोपिपरभागस्थोदशमेसप्तमेपिवा।वर्णाधिपेबलैर्हीनेतद्गृहं-

परहस्तगं ॥ ७१ ॥ लग्नगेशशिनिक्षीणेमृत्युस्थानेचभूसुते।प्रारंभःक्रियतेयस्यशीघ्रंतद्धिविनश्यति ॥ ७२ ॥

पुष्य.उ.३आश्ले.मृ. श्र. रो. श. इन नक्षत्रोंपर गुरु होनेसे गृहारंभ करेतो लक्ष्मीवान् होताहै ॥६७॥ विशाखा. चि. श. आ. पुन. ध. इन नक्षत्रोंपर शुक्र होनेसे गृहारंभ करेतो बहुतधान्य होनेवाला घर होताहै ॥६८॥ ह. उ. फा. चि. अश्वि. अनु. इन नक्षत्रोंपर बुध होनेसे गृहारंभ करेतो पुत्रोंका सुख होताहै ॥६९॥ (निषेद्धयोग) अपने शत्रुकी राशियोंपर ग्रह होवे या नीच राशिपर होवें, या पाप ग्रहों करके जीता हुवा होवेतो गृहारंभ करनेसे लक्ष्मीका नाश होताहै ॥ ७० ॥ एकभी ग्रह दशवें सातवें स्थानमें पर भागमें होवे और वर्णका स्वामी निर्बल होवेतो घर दूसरेके चला जाताहै ॥ ७१ ॥ लग्नमें क्षीण चंद्रमा होवे. आठवें मंगल होवेतो गृहारंभ करनेसे थोडेही दिनोंमें नाश होताहै ॥ ७२ ॥

अथखननविधिः । ज्योतिशास्त्रानुसारेणसुदिनेशुभवासरे । सुलग्नेसुमुहूर्त्तेचसुस्नातःप्राङ्मुखोगृही ॥ ७३ ॥ गणेशंगंधपुष्पाद्यैर्लोकपालानथग्रहान् । पूजयेत्क्षेत्रपालांश्चक्रूरभूतांश्चबाह्यतः ॥ ७४ ॥ ब्रह्माणंवास्तुपुरुषंतद्देहस्थाश्चदेवताः । गृहादेःशिल्परूपत्वात्विश्वकर्मापिपूजयेत् ॥ ७५ ॥ लोहदंडंचसंपूज्यभैरवंचतथैवच । तद्दिक्पालान्नमस्कृत्यपृथिवींचविशेषतः ॥ ७६ ॥ तत्रसंपूजयेद्विप्रान्दैवज्ञंचतथैवच। ततःकुर्याद्गृहारंभंसर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ ७७ ॥ अथशिलान्यासः । दक्षिणपूर्वकोणेकृत्वापूजांशिलांन्यसेत्प्रथमां।शेषाःप्रदक्षिणेनस्तंभाश्चैवंप्रतिष्ठापयाः ७८

(पाया खोदनेका विधान) ज्योतिष शास्त्रके अनुसार शुभ दिनमें और श्रेष्ठ लग्न मुहूर्त्तमें स्नान किया हुवा गृहस्थि पूर्वको मुख करके गंध पुष्प आदि द्रव्योंसे गणपति लोकपाल सूर्यादि नवग्रहोंकी और क्षेत्रपाल, क्रूरभूतगण, ब्रह्मा, वास्तु पुरुष, गृहदेवता विश्वकर्मा आदिदेवोंकी पूजनकरै ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ और लोहदंड (करणी कस्सी) आदिकों पूजके भैरवकी, पृथ्विकी पूजनकरै फिर इंद्रादि दिग्पालोंको नमस्कार करके ब्राह्मणोंकी, ज्योतिषीकी पूजनकरै अनंतर गृहारंभ करनेसे सर्व सिद्धिका देनेवाला होताहै॥७६॥७७॥(शिलास्थापनमु.)प्रथम शिला दक्षिणके पूर्वके विचमें अर्थात् अग्निकोनमें स्थापन करनी चाहिये फिर बाकीकी प्रदक्षिण क्रमसे स्थापनकरै॥७८

शिलान्यासेनक्षत्राणि।शिलान्यासःप्रकर्त्तव्योगृहाणांश्रवणेमृगे।पौष्णेहस्तेचरोहिण्यांपुष्याश्विन्युत्तरात्रये ॥७९॥ अथस्तंभन्यासः । प्रासादेषु-

चहर्म्येषुगृहेष्वन्येषुसर्वदा।आग्नेय्यांप्रथमंस्तंभंस्थापयेत्तद्विधानतः॥८०॥ अथस्तंभस्थापनेकूर्मचक्रम् । तिथिस्तुपंचगुणिताकृत्तिकाद्यृक्षसंयुता । तथाद्वादशमिश्राचनवभागेनभाजिता ॥ ८१ ॥ जलेवेदा४मुनि७श्चंद्र१ स्थलेपंच५द्वयं२वसु८त्रि ३ षट्क ६ नव ९ चाकाशेत्रिविधंकूर्मलक्षणम् ॥ ८२ ॥ अथफलम् । जलेलाभस्तथाप्रोक्तःस्थलेहानिस्तथैवच । आकाशेमरणंप्रोक्तमिदंकूर्मस्यचक्रकम् ॥ ८३ ॥ अथस्तंभचक्रम् । सूर्याधिष्ठितभद्वयंप्रथमतोमध्येतथाविंशतिस्तंभाग्रेरस६ संख्ययामुनिवरैरुक्तं-मुहूर्त्तंशुभम् । स्तंभाग्रेमरणंभवेद्गृहपतेर्मूलेधनार्थक्षयोमध्येचैवतुसर्वसौख्यमतुलंप्राप्नोतिकर्त्तासदा ॥ ८४ ॥

शिलास्थापन, श्र. मृ. रे. ह. रो. पुष्य. अश्वि. उ.३इन नक्षत्रोंमें करनासो शुभहै ॥ ७९ ॥ इसीप्रकार राजालोगोंके घरमें और देवमंदिर, धनवानोंके घरमें प्रथम स्तंभ अग्निकोनमेंहीं स्थापन करना चाहिये ॥ ८० ॥ (स्थंभस्थापनमें कूर्मचक्र) वर्तमान तिथिकों पांच गुणी करै और कृतिकासे लेकर दिनके नक्षत्रतककी संख्या मिलावे और बारह फिर मिलावै अनंतर नौका भागदेवै, यदि ४।७।१ बचेतो कुर्मका जलमें निवासहै और ५।२।८ बचेतो स्थलमें जानना, यदि ३।६।९ बचेतो आकाशमें वसताहै ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ जलमें निवास होवेतो लाभकरै, स्थलमें होवेतो हानिकरै और आकाशमें होवेतो मृत्यु करै ॥८३॥ (स्थंभचक्र) सूर्यके नक्षत्रसे २ नक्षत्रतो स्थंभके मूलकाहै फिर २० मध्य भागकाहै, ६ नक्षत्र अग्रभागकाहै सो अग्रभागके ६ मृत्युकरै मूलका २ धनका नाशकरै, मध्यका २० नक्षत्र अतुल सुख करै ॥ ८४ ॥

धनिष्ठापंचकेनैवकुर्यात्स्तंभसमुच्छ्रयम् । सूत्राधारशिलान्यासप्राकारादिसमारभेत् ॥ ८५ ॥ अथद्वारशाखारोपणमुहूर्त्तः । द्वारस्थापननक्षत्राण्युच्यंतेऽश्विनिचोत्तराहस्तपुष्यश्रुतिमृगस्वातीपूषाश्चरोहिणी ॥ ८६ ॥ प्रतिपत्सुनकर्त्तव्यंकृतेदुःखमवाप्नुयात् । द्वितीयायांद्रव्यहानिःपशुपुत्रविनाशनम् ॥ ८७ ॥ तृतीयारोगदाज्ञेयाचतुर्थीभंगकारिणी।कुलक्षयकरीषष्ठीदशमीधननाशिनी ॥ ८८ ॥ विरोधकृदमापूर्णाशेषाश्चातिथयः शुभाः । पंचमीधनदाचैवमुनिनंदावसौशुभम् ॥ ८९ ॥ अथद्वारशाखारोपणेलग्नशुद्धिः । केंद्रत्रिकोणेषुशुभैःपापैस्त्र्या ३।११ यारिगै६स्तथा। द्यूनां७वरे१०शुद्धियुतेद्वारशाखावरोपणम् ॥ ९० ॥

परंतु ध. श. पू. भा. उ. भा. रे. इन पंचकोमें स्तंभ स्थापन नहीं करना चाहिये और सूत्राधार, शिलान्यास, भीत आदि करना शुभहै ॥८५॥ (चोगट चोढनेकामु.) घरके मुख्यद्वारकी चोगट चढानेमें अश्विनी, उ. ३ ह. पुष्य. श्र. मृ. स्वा. रे. गे. यह नक्षत्र शुभहै॥८६॥प्रतिपदाकों करेतो दुख होवे, द्वितीयाको धनकी हानि होवे, तृतीया रोग करै, चौथ भंगकरै, छठ कुलक्षयकरै, दशमी धननाशकरै ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ अमावस्या पूर्णिमा विरोधकरै, बाकीकी तिथि संपूर्ण शुभहै, पंचमी धनदेवै सप्तमी नौमी अष्टमी शुभहै॥८९॥(लग्नशुद्धि) शुभग्रह केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ में होवे, पापग्रह ३।६।११ स्थानमें होवे और ७।१० यह स्थान ग्रहरहित होवे तब चोगट रोपणा शुभहै ९०

अथवारादिशुद्धिः । शुभंस्याच्छुभवारेचपंचकेनत्रिपुष्करे । आग्नेयधिष्ण्येसोमेहिनकुर्यात्काष्ठरोपणम् ॥ ९१ ॥ प्रणम्यवास्तुपुरुषंदिक्पालंक्षेत्रनायकम् । द्वारशाखारोपणंचकर्त्तव्यंतदनंतरम् ॥ ९२ ॥ शुभंनिरीक्ष्यशकुनमन्यथापरिवर्जयेत् । कुड्यंभित्वानकुर्वीतद्वारंतत्रसुखेप्सुभिः ॥ ९३ ॥ अथद्वारचक्रम् । द्वारचक्रंप्रवक्ष्यामियदुक्तंब्रह्मणापुरा । सूर्यभाद्भचतुष्कंचद्वारस्योपरिविन्यशेत् ॥ ९४ ॥ द्वेद्वेकोणेप्रदातव्यंशाखायुग्मेचतुश्चतुः ४ अधश्चत्रीणिदेयानिवेदा ४ मध्येप्रतिष्ठिताः ॥९५॥ राज्यंस्यादूर्ध्वनक्षत्रेकोणेषूद्वासनंभवेत् । शाखयोर्लभतेलक्ष्मीअधश्चैवमृतिंलभेत् ॥ ९६ ॥

शुभवारोंमें श्रेष्ठहै और पंचक, त्रिपुष्कर योग, कृत्तिका नक्षत्र, सोमवार यह निषेद्धहै ॥ ९१ ॥ प्रथम वास्तु पुरुषको दिग्पाल क्षेत्रपालको प्रणामकरके शाखा रोपन करना चाहिये ॥९२॥ और श्रेष्ठ शकुन देखके द्वार शाखा रोपना यदि अशुभ शकुन होवेतो उसदिन नहीं करना चाहिये, और भीतको फोडके सुखकी कामना वालेको द्वार दरवाजा कदापि नहीं करना चाहिये॥९३॥ (द्वार चक्र) अब ब्रह्माजीका कहाहुवा द्वारचक्र वर्णन करतेंहै, सूर्यके नक्षत्रसे ४ नक्षत्र द्वारके ऊपर लिखना और दो दो च्यारों कोनोंमें देवै, फिर च्यार च्यार दोनों शाखापर रखै, तीन नीचे लिखे, च्यार बीचमें लिखे ॥९४॥९५॥ ऊपरका ४ नक्षत्र राज्य प्राप्ति करै, कोनोंका ८ घरको शून्यकरै, शाखाका ८ लक्ष्मीकरै, और नीचेका ३ मृत्युकरै, बीचका ४ सुखकरै ॥ ९६ ॥

मध्येषुलभतेसौख्यंचिंतनीयंसदाबुधैः । अथगृहेमुख्यद्वारनियमम् । कर्के ४ नक्र १० हरि ५ कुंभ ११ गतेऽर्केपूर्वपश्चिममुखानिगृहाणि । तौलि ७ मेष १ वृष २ वृश्चिक ८ यातेदक्षिणोत्तरमुखानिचकुर्यात् ॥ अन्यथायदिक-

रोतिदुर्मतिर्व्याधिशोकधननाशमश्नुते । मीनचापमिथुनां३ गना६ गते-
कारयेन्नगृहमेवभास्करे ॥ ९७ ॥ अत्रविशेषः । अथद्वारादौवेधविचारः
कोणमार्गभ्रमिद्वाराकर्दमस्तंभभूरुहे देवालयप्रकूपानांवेधोद्वारेथसंमुखे
अथवेधापवादःगेहोच्चेद्विगुणाधिक्येप्रांतरेसंस्थितेसति नैवकोणेषुवेधः
स्याद्भित्तिमार्गोत्तरेपिच॥अथगृहोपस्करचुल्लीमुहूर्त्तः। पूर्वार्द्रारोहिणीपुष्ये-
उत्तरात्रितयेऽश्विभे । स्थितिर्महानसस्येष्टागृहोपस्करणैःसह ॥ ९८ ॥
शनिवारेदरिद्रत्वंशुक्रेऽन्नधनमेवच । गुरुवारेलभेल्लक्ष्मींबुधेलाभंभवेत्स-
दा ॥ १॥ भौमवारेमृतिभार्यासोमेधनक्षयंभवेत् । रविवारेभवेद्रोगिश्चु-
ल्लीस्थापनकर्मणि ॥ २ ॥ अथचुल्लीचक्रम् । सूर्यर्क्षाद्रस६ पृष्ठभैःसुखयु-
तंवेदैः४ शिरोमृत्युदंवाहौनाग८सुसौख्यभोगमतुलंगर्भेशरैः५नाशयेत् ।
द्वौद्वौ२ भुक्तिकरौकलत्रमरणंपौद्वयं २ चक्रमात् चुल्लीचक्रविचारणंसु-
धिषणैःप्रोक्तंहिगर्गादिभिः ॥ ९९ ॥

(मुख्य द्वारका मास) कर्क मकर के सूर्यमें पूर्वको दरवाजाकरै, तुल मेषके सू-
र्यमें दक्षिनकोकरै, सिंह कुंभके सूर्यमें पश्चिमकोकरै और वृष वृश्चिकके सूर्यमें उत्तर-
को द्वार करना शुभहै, यदि इस्से विपरीत करेतो मूर्ख रोग धननाशको प्राप्त होताहै
और मीन धन मिथुन कन्याके सूर्यमें द्वार कदा चित्तभी करना नहीं चाहियै ॥ ९७ ॥
(चूल्हेकामु.) पूर्वा रो. पुष्य उ. अश्वि. इननक्षत्रोंमें पाक (रसोई) करनेकी सामग्री
स्थापन करकें चूल्हा स्थापन करना शुभहै ॥ ९८ ॥ शनिवारको चूल्हा करैतो दरिद्र
होवे, शुक्रको अन्न धन मिलै, गुरुको लक्ष्मी मिलै, बुधको लाभ होवे १ मंगलवारको
स्त्रीमरै, सोमको धन नाश होवे, आदित्यवारको रोगी होवे ॥ २ ॥ (चूल्ही चक्रम्)
सूर्यके नक्षत्रसे ६ नक्षत्र पीठकाहै सो सुखकरै, च्यार शिरका मृत्युकरै, आठ बाहुका
सुखकरै पांच गर्भका नाशकरै फिर दो नक्षत्र हाथका हैसो भोग पदारथकरै दो पगों-
काहै सो स्त्री नाशकरै इस प्रकार चूल्ही चक्र गर्ग आदि मुनियोंने कहाहै ॥ ९९ ॥

अथगृहेकूपकरणेफलम् । भूतिंपुष्टिंपुत्रहानिंपुरंध्रीनाशंमृत्युंसंपदंशत्रुबा-
धां । किंचित्सौख्यंशंभुकोणादिकुर्यात्कूपेमध्येगेहमर्थक्षयंच ॥ १०० ॥
अथकूपारंभनक्षत्राणि । हस्तःपुष्योवासवंवारुणंचमैत्रंपित्र्यंत्रीणिचैवोत्त-
राणि । प्राजापत्यंचापिनक्षत्रमाहुःकूपारंभेश्रेष्टमाद्यामुनिंद्राः ॥ १०१ ॥
अथवारफलम् । रविवारेजलंनास्तिसोमेपूर्णंजलंभवेत् । वालुकाभौमवा-

रेतुबुधेबहुजलंभवेत् ॥ १०२॥ गुरौचमधुरंतोयंशुक्रेक्षारंप्रजायते । शनैश्चरेजलंनास्तिकीर्त्तितंवारजंफलम् ॥ १०३ ॥ अथवाप्यारंभेविशेषनक्षत्राणि॥स्वात्यश्विपुष्यहस्तेषुमैत्रेचैवपुनर्वसौ। रेवत्यांवारुणेचैववापीकर्मप्रशस्यते ॥ १०४ ॥

(घरमें कूवा बनानेका विचार) घरके ईशानमें कूवा होवेतो विभव करै, पूर्वमें पुष्टि करै, अग्निकोनमें पुत्र नाश करै, दक्षिनमें स्त्री नाश करै, नैऋत्यकोनमें मृत्यु करै, पश्चिममें संपदाकरै, वायुकोनमें शत्रुकी बाधाकरै, उत्तरमें किंचित्सुख करै और घरके बीचमें कूवा होवेतो घरके धनका नाश करै ॥१००॥ (अथ कूपके आरंभका नक्षत्र) हस्त पुष्य ध. श. अनु. म. उ. ३ रो. यह नक्षत्र कूवाके करानेमें श्रेष्ठहै ॥ १०१ ॥ आदित्यवारको कूवा करावेतो जल नहीं निकले, सोमवारको बहुत जल निकले, मंगलको वालु रेती निकलै, बुधवारको बहुत जल होवे ॥ १०२ ॥ गुरुको मीठा जल, शुक्रको खारा जल और शनिवारको बिलकुल जल नहीं आवै ॥१०३॥ (वावडीके नक्षत्र) स्वा. अश्वि. पुष्य. ह. अनु. पुन. रे. श. इन नक्षत्रोंमे बावडीकाआरंभ शुभहै ॥ १०४ ॥

अथकूपवापीचक्रम् । कूपवाप्योस्तुचक्रंवैविज्ञेयंविबुधैःशुभम् । रोहिणीगर्भमेतस्यत्रित्रिऋक्षाणिचंद्रभम् ॥ १०५ ॥ मध्येपूर्वेतथाग्नेयेयाम्येचैवतुनैर्ऋते । पश्चिमेचैववायव्यांसौम्यशूलिदिशिक्रमात्॥ १०६॥ शीघ्रंजलंनजलंमध्यमजलंमजलंबहुजलं च । अमृतजलंबहुक्षारंसजलंमध्यजलंक्रमात्ज्ञेयम्॥
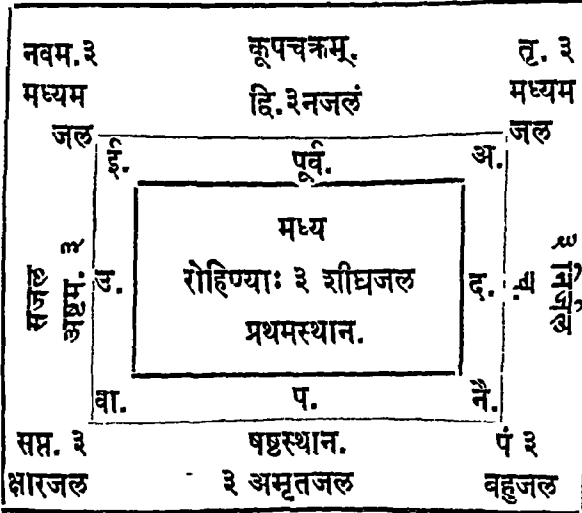
॥ १०७॥ अथलग्नानिमत्स्ये १२ कुलीरे ४ मकरे १० बहुजलंतथैवचार्द्धंवृष २ कुंभयो ११ श्च । अलौ ८ चतौलौ ७ चजलाल्पतामता शेषाश्चसर्वेऽजलदाःप्रकीर्त्तिताः ॥ १०८ ॥

(कूप बावडीका चक्र) अब कूप बावडीका चक्र लिखतेहैं, रोहिणी नक्षत्रसे दिनके नक्षत्रतक तीन तीन नक्षत्र देखै, प्रथम तीन नक्षत्र मध्यकाहै, सो उनमें शीघ्र जल आवै, तीन पूर्वका हैसो जल नहीं मिले, ३ अग्निकोनकामें मध्यम जल होवे, ३ दक्षिनकामें निर्जल रहै, ३ नैऋत्यकोनकेमें वहुतजल निकले, ३ पश्चिमके नक्षत्रोंमें अमृत जल आवै, ३ वायुकोनकामें खाराजल निकले, उत्तरका ३ में शीघ्र जल और ईशानके ३ नक्षत्रोंमें मध्यम जल निकले ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ (लग्न विचार) मीन कर्क मकर इन लग्नोंमें बहुत जल होवे, वृष कुंभ वृश्चिक तुलमें थोडा जल रहै और मेष मिथुन सिंह कन्या धन इन लग्नोंमें कूवे बावडी तलावका आरंभ करैतो जल नहीं रहै ॥ १०८ ॥

अथतडागादिखननक्षत्राणि । मूलाग्नेयमघाद्विदैवभरणीसार्प्पाणिपूर्वात्रयंज्योतिर्विद्भिरधोमुखंचनवकंभानामिदंकीर्त्तितम् ॥ वापीकूपतडागगर्तपरिखाखातोनिधेरुद्धृतिःक्षेपोद्यूतबिलप्रवेशगणितारंभाःप्रसिद्धचंति च ॥ १ ॥ अथतडागारंभनक्षत्राणि । मैत्रेन्दुपौष्णोत्तररोहिणीषुदेवेज्यवारीश्वरवारिभेषु । प्रारंभणसर्वजलाशयानांकार्य्यंसितेंद्वंशकवारलग्ने ॥ २ ॥ अथतडागचक्रम् । सूर्यभाच्चंद्रभंयावत्गणयेत्सर्वथाबुधः । दिक्षुदिक्षुद्वयंन्यस्यमध्येपंचनियोजयेत् ॥ १०९ ॥ षट्कंदद्याद्वारिवाहेफलंतस्यविचारयेत् । पूर्वस्यांवारिशोषःस्यादाग्नेय्यांसलिलंबहु॥ ११०॥ दक्षिणस्यांवारिनाशोनैर्ऋत्याममलंजलं । पश्चिमायांजलंस्वादुवायव्यांवारिशोषणम् ॥ १११ ॥ उत्तरस्यांस्थिरंतोयमैशान्यांकुत्सितंजलं । मध्येपूर्णजलंज्ञेयंवाहेचामृतसंज्ञकम् ॥ ११२ ॥

(तलाव कूवा बावडी कुंड आदि खोदनेका नक्षत्र) मू. कृ. म. वि. भ. अश्ले. पूर्वा ३ यह अधोमुख संज्ञाके नक्षत्रहै सो इनमें बावडी, कूवा, तलाव, गर्त, खाई, खजाना आदिका खोदना और जूवा, नीचेको प्रवेश होना, गणित विद्यारंभ करना श्रेष्ठहै॥१०९॥(तलावके चिननेका "चेजाका" नक्षत्र) अनु.मृ. रे.उ.३रो.पुष्य.श.इननक्षत्रोंमें और शुक्र चंद्रमाके नवांशक, वार, लग्नमें तलाव आदिका आरंभ श्रेष्ठहै॥११०॥ (तडाग चक्रम्) सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रतक गिनै, दो दो नक्षत्र तलावके पूर्व आदि आठ दिशामें स्थापन करै फिर पांच बीचमें धरै, छ जलके वहनेकी तरफ धरके फल विचारै, पूर्वका२नक्षत्र जल सुकावै, अग्नि कोनका२बहुत जल रखै, दक्षिणका २ जलको नाशकरै, नैऋत्यका २ जलसाफ रखै, पश्चिमका २ जलस्वाद रखै, वायु-

कोनका २ जलसुकावै, उत्तरका २ बहुतादिनतक जलरक्खें, ईशानका २ नक्षत्र मलीनजलकरै, और मध्यका ५ नक्षत्र तलावको जलसे परिपूर्ण रक्खें, जल प्रवाहके स्थानका ६ नक्षत्र अमृतजल करै ॥ १११ ॥ ११२ ॥

अथपुरग्रामप्रकारादिनिर्माणमुहूर्त्तः । प्राकारपत्तनग्रामनिर्मितौसूत्रसाधनम् । प्रशस्तंस्याच्छुभेकालेगेहारंभोक्तभादिषु ॥ ११३ ॥ अथदेवालयमठाद्यारंभः । गृहारंभोक्तनक्षत्रैर्मठंकुर्यात्तुसाश्विभैः। सर्वदेवालयंतैस्तुपुनर्भश्रवणान्वितैः॥ ११४॥
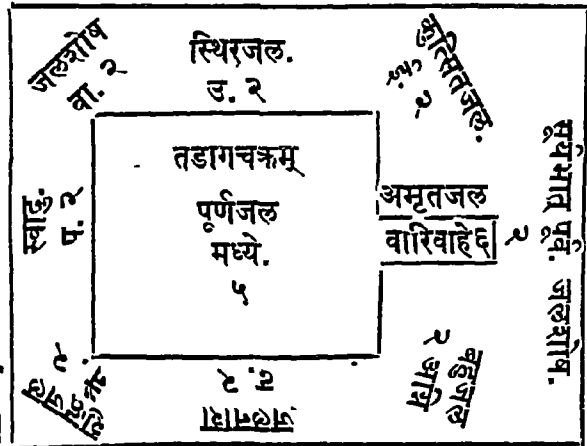
अथजैनालयाद्यारंभमुहूर्त्तः । पूर्वाद्राभरणीधिष्ण्येरोहिण्यांचस्थिरोदये । शुभाहेजैनगेहस्यप्रपादयोंःकृतिःशुभा ॥ ११५ ॥ अथगृहप्रवेशः । प्रवेशंनवगेहस्यकुर्यात्सौम्यायनेनरः । प्रारंभोदितमासेपिकृत्वाप्राग्वास्तुपूजनम् ॥ ११६ ॥

(नगर सहर ग्रामकी सफील (दिवाल) बनानेकामु.) यदि पुर, ग्राम, गढ, आदिके बाहरका भीत दिवाल बनाना होवे और सूत्र साधन करना होवेतो गृहारंभके, पूर्वोक्त श्रेष्ठ नक्षत्र मुहूर्त्तमें कराना शुभहै ॥११३॥ (देवमंदिर, मठ, धर्मशाला आदिके बनानेका मु.) यदि देवोंका मंदिर करना होवेतो गृहारंभके नक्षत्रोंमे और पुनर्वसु, श्रवण नक्षत्रमेंकरना, और मठ बनाना होवेतो अश्विनी सहित गृहारंभके नक्षत्रोंमें करना श्रेष्ठहै ॥ ११४ ॥ पूर्वा,३ आ. भ. रो. इन नक्षत्रोंमें, स्थिर लग्नोंमें और श्रेष्ठ दिनमें जैनमतवालोंका मंदिर, जलकीपो (प्याऊ) गुंफा, करनी शुभहै ॥ ११५॥ इति गृहाद्यारंभ, (गृहप्रवेशका विचार,) नवीन घरका प्रवेश उत्तरायन सूर्यमें और गृहारंभके महिनोंमें वास्तुकी पूजन करकें करना श्रेष्ठहै ॥ ११६ ॥

माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाःशस्तानवेगृहे । जीर्णाद्यौश्रावणोमार्गःकार्त्तिकोपिप्रशस्यते ॥ ११७ ॥ माघेर्थलाभःप्रथमप्रवेशेपुत्रार्थलाभःखलुफाल्गुनेच । चैत्रेऽर्थहानिर्धनधान्यलाभोवैशाखमासेपशुपुत्रलाभः॥ ११८॥

ज्येष्ठेचमासेषुपरेषुनूनंहानिप्रदःशत्रुभयप्रदश्च। शुक्लेचपक्षंसुतरांविवृद्धचै कृष्णेचयावद्दशमीचतावत् ॥ ११९ ॥ अथनूतनगृहप्रवेशेत्याज्यमासाः। कुलीर४कुंभ११कन्यार्के६मार्गोर्ज्जेचमधौशुचौ। नववेश्मप्रवेशंतुसर्वथापरिवर्जयेत्॥१२०॥अथजीर्णगृहादौविशेषः। पुनर्विनिर्मितेजीर्णेगृहेप्युक्तस्तथैवाहि। आवश्यकेप्रवेशेनोकुर्यादस्तविचारणाम्॥१२१॥

माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, यह मास नवीन घरके प्रवेशमें शुभहै और श्रावण, मार्गशिर कार्तिक पुरानें घरके प्रवेशमें श्रेष्ठ जानना ॥ ११७ ॥ माघमें प्रवेशकरेतो धनको लाभ होवे फाल्गुनमें पुत्रको धनको लाभकरै, चैत्रमें धनकी हानि होवे, वैशाखमें धन धान्यका लाभ होवे और ज्येष्ठमें पशु पुत्रको लाभ होवे, बाकीका महीना हानि करताहै और शत्रुका भय करताहै और शुक्ल पक्षमें तथा कृष्णपक्षकी दशमीतक नवीन घरका प्रवेश करेतो वंशकी वृद्धि होवे ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ (नवीन घरके प्रवेशमें निषेद्ध मास,) कर्क कुंभ कन्या इनके सूर्यमें और मार्गशिर, कार्तिक, चैत्र, आषाढ, इनमहिनोंमें नवीन घरका प्रवेश सर्वथा नहीं करना चाहिये ॥ १२० ॥ पुराने घरको फेर नवीन करेहुयेमें तथा पुरानेघरमें प्रवेशकरेनो अति जरूरतहोनेसें शुक्र आदिके अस्तका और महीनोंका विचार नहीं करना चाहिये ॥ १२१ ॥

अथप्रवेशेद्वारवशात्तिथयः। नंदायां १।६।११ दक्षिणंद्वारंभद्रायां २।७।१२ पश्चिमेनतु। जयाया ३।८।१३ मुत्तरद्वारंपूर्णायां५।१०।१५ पूर्वतोविशेत् ॥ १२२ ॥ अथवारास्तत्फलंच ॥ गुरुशुक्रबुधाख्येषुवारेषुचसुखार्थदम्। प्रवेशेतुशनौस्थैर्यंकिंचिच्चौरभयंभवेत् ॥ १२३ ॥ व्यर्कारवारंतिथिषुरिक्तामावर्जितेषुच। यदिवायदिवारात्रौप्रवेशोमंगलप्रदः ॥ १२४ ॥ अथगृहप्रवेशनक्षत्राणि। चित्रोत्तराधातृशशांकमित्रवस्वंत्यवारीश्वरभेषुनूनम्। आयुर्द्धनारोग्यसुपुत्रपौत्रसत्कीर्त्तिदःस्यात्त्रिविधःप्रवेशः ॥ १२५ ॥

(गृह प्रवेशकी तिथि) नंदा १।७।११ तिथिमें दक्षिण द्वारके घरमें प्रवेश करना शुभहै, भद्रातिथि २।७।१२ में पश्चिम द्वारके घरमें और जया तिथियोंमें ३।८।१३ उत्तर द्वारके घरमें, पूर्णा ५।१०।१५ तिथिमें पूर्वके द्वारके घरमें प्रवेश होना श्रेष्ठहै ॥ १२२ ॥ बृहस्पतिवार, शुक्र, बुधवार प्रवेशमें शुभहै और स्थिर कार्य शनिवारकोभी करना लिखाहै परंतु चौरोंका भय होताहै ॥ १२३ ॥ आदित्य मंगलके विना वारोंमें रिक्ता ४।९।१४ अमावस्याके विना तिथियोंमें दिन होवे चाहिये रात्रि होवे गृहप्रवेश

मंगलके देनेवाला होताहै ॥१२४॥ (नवीन घरमें प्रवेशका नक्षत्र.)-चि. उ. ३ रो. मृ. अनु. ध. रे. श. इन नक्षत्रोंमें तीनोंहीं प्रवेश करेतो आयु, धन, आरोग्य, श्रेष्ठ पुत्र पौत्र कीर्त्ति प्राप्त होताहै ॥ १२५ ॥

अथजीर्णगृहप्रवेशेविशेषः ॥ धनिष्ठाद्वितयेपुष्येत्र्युत्तरेरोहिणीद्वये । चित्रास्वात्यनुराधांत्येप्रविशेज्जीर्णमंदीरम् ॥ १२६ ॥ अथनिषिद्धनक्षत्राणि । अर्कानिलेयादितिदस्रविष्णुऋक्षेप्रविष्टंनवमंदिरंयत् । अब्दत्रयात्तत्परहस्तयातंशेषेषुधिष्ण्येषुचमृत्युदंस्यात् ॥ १२७ ॥ अथवास्तुपूजननक्षत्राणि । चित्राशतभिषास्वातीहस्तःपुष्यःपुनर्वसुः । रोहिणी रेवतीमूलंश्रवणोत्तरफाल्गुनी ॥ १२८ ॥ धनिष्ठाचोत्तराषाढाभाद्रपदोत्तरान्विताः । अश्विनीमृगशीर्षंचअनुराधातथैवच ॥ १२९ ॥ वास्तुपूजनमेतेषुनक्षत्रेषुकरोतियः । सप्राप्नोतिनरोलक्ष्मीमितिशास्त्रेषुनिश्चयः ॥ १३० ॥ अथवास्तुपूजाऽकरणेअनिष्टफलम् । वास्तुपूजामकृत्वायः प्रविशेन्नवमंदिरे ॥ रोगान्नानाविधान्क्लेशानश्नतेसर्वसंकटम् ॥ १३१ ॥ गृहादिकरणेयत्रनार्चितावास्तुदेवताः । तत्रशून्यंभवेत्सद्मरक्षोविघ्नादिभिर्हतम् ॥ १३२ ॥

(पुराने घरका नक्षत्र) ध. श. पुष्य. उ.३रो. मृ. चि. स्वा. अनु रे. इन नक्षत्रोंमें पुराने घरका प्रवेश शुभहै ॥ १२६ ॥ (निषेद्ध नक्षत्र) ह. कृ. पुन. अश्वि. श्र. इन नक्षत्रोंमें नवीन घरमें प्रवेश करेतो तीन बरसके बाद दूसरेका घरहो जावे और बाकीके निषेद्ध नक्षत्रोंमें करेतो मृत्यु होवे ॥ १२७ ॥ (वास्तु पूजाका नक्षत्र.) चि. श. स्वा. ह. पु. पु. रो. रे. मू. श्र. उ. फा. ध. उ.३अश्वि. मृ. अनु. इन नक्षत्रोंमें वास्तुकी पूजा करेतो लक्ष्मी प्राप्त होवे ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ यदि वास्तुकी पूजा शांति करे विना नवीन घरमें प्रवेश होवेतो रोग नाना क्लेश सर्व प्रकारका संकट भोगताहै ॥ १३१ ॥ नवीन घर, दुकान, बैठक, शाला आदि नवीन करके वास्तुकी पूजा शांति नहीं करेतो वह स्थान राक्षस भूत प्रेतोंके विघ्नोंसे शूना (शून्य) होजाताहै ॥ १३२ ॥

निर्माणेमंदिराणांचप्रवेशेत्रिविधेपिवा । वास्तुपूजाप्रकर्त्तव्यासर्वदाशुभकांक्षिणा ॥ १३३ ॥ अथत्रिविधप्रवेशलक्षणम् । अपूर्वसंज्ञःप्रथमःप्रवेशोयात्रावसानेसतुपूर्वसंज्ञ । द्वंद्वाभयस्त्वग्निभयादिजातःप्रवेशएवंत्रिविधःप्रदिष्टः ॥ १३४ ॥ नवप्रवेशेत्वथकालशुद्धिर्नद्वंद्वसौपूर्विकयोः

कदाचित् । अथविशेषलक्षणं । अपूर्वोनवगेहादौप्रवेशोमुनिभिस्मृतः ॥ १३५ ॥ सपूर्वस्तुप्रवासांतेपूर्वाऽपूर्वइतःपरः । आरंभोदितभैर्मासैः कार्योऽपूर्वःप्रवेशकः ॥ १३६॥ पूर्वाऽपूर्वोश्विनीमूलश्रवोपेतैःकरस्थितैः। सपूर्वस्तूत्तराचित्रानुराधारेवतीमृगे ॥ १३७ ॥ रोहिण्यांकथितःप्राज्ञैः प्रवेशस्त्रिविधोगृहे । द्वंद्वसौपूर्विकगृहेमासदोषोनविद्यते ॥ १३८ ॥

इसवास्ते नवीन घर आदिके तीनों प्रकारके प्रवेशमें शुभकी कामनावालेको वास्तु पूजा करनी चाहिये॥१३३॥(तीन प्रकारके प्रवेशका लक्षण) नवीन घरमें प्रवेश होवे सो अपूर्वसंज्ञकहै और यात्राके अनंतर प्रवेश होवेसो पूर्वसंज्ञकहै, अग्नि आदि द्वारा नष्टहुये घरमें प्रवेश होवेसो द्वंद्वसंज्ञक होताहै इसप्रकार प्रवेश तीन प्रकारकाहै ॥ १३४ ॥ नवीन घरके प्रवेशमे काल शुद्धि देखना और पूर्वसंज्ञक द्वंद्वसंज्ञक प्रवेशमें कालकी जरूरत नहींहै अपूर्वसंज्ञा नवीन घरके प्रवेशकी मुनियोंने कहींहै और यात्राके अनंतरके प्रवेशकी पूर्वसंज्ञाहै और तीसरी अग्नि आदिके द्वारा नष्ट हुयेघरके प्रवेशकी पूर्वापूर्व संज्ञाहै सो गृहारंभके नक्षत्र महीनों करकें अपूर्व प्रवेश शुभ होताहै और अ. मू. श्र. ह. इन नक्षत्रोंमें पूर्वाऽपूर्व शुभहै और उ.३ चि. अनु. रे. मृ रो. इन नक्षत्रोंमें पूर्वप्रवेश शुभहै इसप्रकार तीन भेद प्रवेशका जानना परंतु द्वंद्वसंज्ञक प्रवेशमें तथा पूर्वसंज्ञक प्रवेशमें मास आदिका दोष नहींहै ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥

अथत्याज्याः । कुयोगेपापलग्नेचचरलग्नेचरांशके । शुभकर्मणियेवर्ज्यास्तेवर्ज्योऽस्मिन्प्रवेशने ॥ १३९॥ क्रूरयुक्तंक्रूरविद्धंमुक्तंक्रूरग्रहेणच । यद्गंतव्यन्नतच्छस्तंत्रिविधोत्पातदूषितं ॥ १४० ॥ लत्तयानिहतंयच्चक्रांतिसाम्येनदूषितं । प्रवेशेत्रिविधेत्याज्यंग्रहणेनाभिदूषितम् ॥ १४१ ॥ स्थिरलग्नेस्थिरांशेचप्रवेशःशुभदःस्मृतः । चरलग्नेचरांशेषप्रवेशोनशुभावहः ॥ १४२ ॥ अकपाटमनाच्छन्नमदत्तबलिभोजनम् । गृहंनप्रविशेदेवविपदामाकरंहितत्॥ १४३ ॥अथलग्नशुद्धिः । केंद्र १।४।७।१० त्रिकोणा९।५य११धन२ त्रि३ संस्थैःशुभैस्त्रिषष्ठाय ३।६।११गतैःखलैश्च । लग्नांत्य१।१२ षष्ठाष्टम ६।८वर्जितेनचंद्रेणलक्ष्मीनिलयप्रवेशः॥ १४४॥

(त्याज्य योगादि) मृत्यु आदि दुष्टयोगमें, पापग्रहकी राशिके लग्नमें, चरलग्न चरनवांशकमें और शुभकर्ममें वर्जे हुये दुष्ट दिनोंमें गृहप्रवेश नहीं करना ॥ १३९ ॥ पापग्रह करके युक्त नक्षत्र और पापग्रहोंसे वेधित नक्षत्र तथा पापग्रहों करके त्यागाहुवा नक्षत्र, या पापग्रह आनेवाला नक्षत्र, या उत्पातोंके दिनका नक्षत्र, लात लगा हुवा न-

क्षत्र और कांतिसाम्य दोष, या ग्रहणका नक्षत्र, तीनो प्रकारके प्रवेशमें त्यागना चाहिये॥१४०॥१४१॥ स्थिरलग्न स्थिरनवांशमें गृहप्रवेश शुभहै और चरलग्न चरनवांशकमें अशुभहै॥१४२॥परंतु किंवाड(कपाट) रहितहो और ऊपरसे आच्छादन नहीं किया हुवाहो तथा वास्तुशांति ब्राह्मण भोजनादिसें रहित होतो उस घरमे प्रवेश नही होना चाहिये कारण दुखके करनेवाला होताहै ॥ १४३ ॥ शुभग्रह केंद्र १।४।७।१० त्रिकोन९।५।११।२।३स्थानमें होवे पापग्रह ३।६।११ इन स्थानोमे होवे और १।१२।६।८ इनस्थानोंके विना चंद्रमा अन्यस्थानमे होवेतो गृहप्रवेश करना शुभदायकहै ॥ १४४ ॥

प्रवेशलग्नान्निधन८स्थितोयःक्रूरग्रहःक्रूरगृहेयदिस्यात् । प्रवेशकर्त्तारमथत्रिवर्षाद्धंत्यष्टवर्षैःशुभराशिगश्चेत्॥ १४५॥अथस्थानशुद्धिः । विवाहेसप्तमंशुद्धंयात्रायामष्टमंतथा । दशमंचगृहारंभेचतुर्थंचप्रवेशने॥ १४६॥ स्थिरलग्नेस्थिरेराशौनैधनेशुद्धिसंयुते । गृहप्रवेशःशुभदोलग्नेकेंद्रेगुरौभृगे ॥ १४७ ॥ अथाष्टमगेचंद्रेविशेषः । अष्टमस्थेनिशानाथेयदियोगशतैरपि। तदातेनिष्फलाज्ञेयावृक्षाज्रहताद्रव॥ १४८॥क्षीणचंद्रोन्त्यषष्ठाष्टसंस्थितोलग्नतस्तथा। भार्याविनाशनंवर्षात्सौम्ययुक्तेत्रिवर्षतः॥ १४९॥ अथप्रवेशेविशेषविचारः । कृत्वाशुक्रंपृष्ठतोवामतोर्कंविप्रान्पूज्यानग्रतःपूर्णकुंभं।हर्म्यंरम्यंतोरणस्राग्वितानैःस्त्रीभिःस्रग्वीतमाल्यैर्विशेत्तत्॥ १५०॥

यदि लग्नसे आठवें स्थानमे पापग्रह पापराशिपर होवेतो प्रवेश करनेवालेको तीसरे वर्षमें मारताहै और शुभग्रहकी राशिपर होवेतो आठ बरससे मारे ॥ १४५ ॥ विवाहमें सातवां घर ग्रहरहित शुभ होताहै और यात्रामें आठवां गृहारंभ दशवां और गृहप्रवेशमें चौथा स्थान शुद्ध चाहिये ॥ १४६ ॥ स्थिरलग्न स्थिरनवांशक होवे आठवां स्थान शुद्ध होवे और लग्नमें या केंद्रमें गुरु शुक्र होवे तो गृहप्रवेश शुभके देनेवाला होताहै ॥ १४७ ॥ यदि आठवें चंद्रमा होवेतो सैकडो योग निष्फल हो जाताहै जैसे वज्र करके वृक्ष नष्ट होजातेहै ॥ १४८ ॥ लग्नसे छठे (६) आठवें क्षीण चंद्रमा होवेतो एक बरससें स्त्री मरजावै और शुभग्रह होवेतो तीन बरससे मरे ॥ ४९ ॥ शुक्रको पछाडी तथा अर्कको वामभागमें करकें ब्राह्मणोंकों पूजकें अगाडीको जलसें पूर्ण किया हुवा कुंभ सुंदर तोरनमाला चाननी आदिसे विभूषित घरमें गीत गाती हुई स्त्रियों करके सहित प्रवेश करै ॥ १५० ॥

अथवामार्कलक्षणम् । रंध्रा८त्पुत्रा५द्धना२दाया ११ त्यंचस्वर्केस्थितेक्रमात् । पूर्वाशादिमुखंगेहंविशेद्वामोभवेद्यतः ॥ १५१ ॥ अथप्रवेशे-

कलशचक्रम् । भू १ र्वेदपंचकं ४।४।४।४।४ त्रि ३ स्त्रिः ३ प्रवेशेकलशेऽर्कभात् । मृतिर्गतिर्धनंश्रीःस्याद्वैरंशुक्स्थिरतासुखम् ॥ १५२ ॥ अथप्रवेशकृत्यम्। कृत्वाग्रतोद्विजवरानथपूर्णकुंभंदध्यक्षताम्रदलपुष्पफलोपशोभम् । दत्वाहिरण्यवसनानितथाद्विजेभ्योमांगल्यशांतिनिलयंस्वगृहंविशेच्च ॥ १५३ ॥ गृह्योक्तहोमविधिनाबलिकर्मकुर्यात्प्रासादवास्तुशमनेचविधिर्यउक्तः । संतर्पयेद्विजवरानथभक्ष्यभोज्यैःशुक्लांबरःस्वभवनंप्रविशेत्सुरूपम् ॥ १५४ ॥ अथसर्वदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्ताः । तावत्सामान्यतःसर्वेषांदेवानांप्रतिष्ठाकालः।अथातःसंप्रवक्ष्यामिप्रतिष्ठाकालमुत्तमम् । चैत्रेवाफाल्गुनेवापिज्येष्ठेवामाधवेतथा ॥ १५५ ॥ माघेवासर्वदेवानांप्रतिष्ठाशुभदाभवेत् । प्राप्यपक्षंशुभंशुक्लमतीतेदक्षिणायने ॥१५६॥

(वामोरवि) पूर्वको मुखवाले घरमे आठवें स्थानसे पांच स्थानोंमें सूर्य होनेसे वामो रवि होताहै, और दक्षिण द्वारमें पांचवें स्थानसे पांच घरोंमें सूर्य वामोरविहै, पश्चिम मुखके घरमें दूसरे स्थानसे पांच स्थानोंमें और उत्तर मुखके घरमें ग्यारहवें स्थानसे पांच स्थानोंमें सूर्य होनेसे वामोरवि होताहै॥१५१॥ (कलशचक्रम्) सूर्यके नक्षत्रसे १ नक्षत्र मृत्युकरै, ४ घर छुटावे, ४ धनकरै, ४ श्रीकरै, ४ वैरकरै, ४शोककरै, ३ स्थिरताकरै, ३ सुखकरै ॥१५२॥ प्रथम ब्राह्मणोंकों सुवर्ण वस्त्र देवै फिर उनको अगाडी करकें और दधि चावल आमके पान पुष्प नारेल आदिसें पूर्ण कलश लेकें मंगलीक शांति युक्त शब्दोंसें घरमें प्रवेश होवे॥१५३॥ परंतु पहले दिन वास्तुशांतिके लिखेमुजब होम बलि कर्मकरके और ब्राह्मणोंको भक्ष्य भोज्य पदार्थ भोजन कराके नवीन सुपेद वस्त्र पहरा हुवा श्रेष्ठ घरमें प्रवेश होवै ॥ १५४ ॥ (सर्व देवोंके प्रतिष्ठाका मुहूर्त्त) चैत्र, फाल्गुन, ज्येष्ठ वैशाख, माघ इन महिनोंमें तथा शुक्लपक्षमें उत्तरायन सूर्य आनेसे सर्व देवोंकी प्रतिष्ठा शुभहै ॥ १५५ ॥ १५६ ॥

पंचमींचद्वितीयाचतृतीयासप्तमीतथा । दशमीपौर्णमासीचतथाश्रेष्ठात्रयोदशी ॥ १५७ ॥ आसुप्रतिष्ठाविधिवत्कृताबहुफलाभवेत् । यातिथिर्यस्यदेवस्यतस्यांवातस्यकीर्त्तिता ॥ १५८ ॥ प्रतिपद्धनदस्योक्तापवित्रारोहणेतिथिः । श्रियोदेव्याद्वितीयाचतिथीनामुत्तमास्मृता ॥ १५९॥ तृतीयातुभवान्याश्चचतुर्थीतत्सुतस्यच । पंचमीसोमराजस्यषष्ठीप्रोक्तागुहस्यच॥१६०॥ सप्तमीभास्करेप्रोक्तादशमीवासुकेस्तथा।एकादशीऋ-

षीणांचद्वादशीचक्रपाणिनः ॥१६१॥ त्रयोदशीत्वनंगस्यशिवस्योक्ता-चतुर्दशी । ममचैवमुनिश्रेष्ठपौर्णमासीतिथिस्मृता ॥ १६२ ॥

और ५।२।३।७।१०।१५।१३ इन तिथियोंमें प्रतिष्ठा करनेसे बहुत फलको देतीहै अथवा जिस देवताकी जो तिथिहै उसी तिथिमें प्रतिष्ठा शुभहै ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ प्रतिपदामें कुबेरकी प्रतिष्ठा शुभहै द्वितीयामें लक्ष्मीकी, तृतीयामें भवानीकी, चौथमें गणेशकी, पंचमीमे चंद्रमाकी, छठमें स्वामिकार्तिककी, सप्तमीमें सूर्यकी, दशमीमे वासुकीसर्पकी, एकादशीमें ऋषियोंकी, द्वादशीमें विष्णुकी, त्रयोदशीमें कामदेवकी, चतुर्दशीमें शिवकी, और पूर्णिमामें ब्रह्माकी प्रतिष्ठा शुभहै॥१५९॥१६०॥१६१॥१६२॥

अथवाराः । सोमोबृहस्पतिश्चैवशुक्रश्चैवतथाबुधः एतेवाराःशुभाःप्रोक्ताःप्रतिष्ठायज्ञकर्मणि ॥ १६३ ॥ अथनक्षत्राणि । आषाढेद्वेतथामूलमुत्तराद्वयमेवच । ज्येष्ठाश्रवणरोहिण्यःपूर्वाभाद्रपदस्तथा ॥ १६४ ॥ हस्ताऽश्विनी रेवतीचपुष्योमृगशिरस्तथा । अनुराधातथास्वातीप्रतिष्ठासुप्रशस्यते ॥ १६५ ॥ चंद्रताराबलोपेतेपूर्वाह्णेशोभनेदिने । शुभलग्नेशुभांशेचकर्तुर्नोनिधनोदये ॥१६६॥ अयनेविषुवतद्वत्षडशीतिमुखेतथा । सुराणांस्थापनंकार्य्यंविधिद्दष्टेनकर्मणा ॥१६७॥ अथमुहूर्त्ताः । प्राजापत्येतुशयनंश्वेतेतूत्थापनंतथा।मुहूर्त्तेस्थापनंकुर्यात्पुनर्ब्राह्मेविचक्षणः ॥१६८

सोम, गुरु, शुक्र, बुध यह बार प्रतिष्ठामें शुभहै॥१६३॥पू.षा.उ.षा.मू.उ.२ज्ये.श्र. रो.पू.भा.ह.अश्वि.पुष्य.मृ.अनु.स्वा. यह नक्षत्र संपूर्ण प्रतिमामें श्रेष्ठहै ॥१६४॥१६५॥ चंद्रमा तारा बलवान् होवे तथा शुभदिनको प्रातःकाल होवे, श्रेष्ठ लग्न शुभ नवांशक होवे, यजमानके जन्मकी आठवी राशि विना लग्न होवे अथवा अयनपलटती होवे तथा मेष तुल धन मिथुन कन्याकी संक्रांतिका पुण्य दिन होवेतो विधिपूर्वक देवताओंका स्थापन करना श्रेष्ठहै ॥१६६॥१६७॥ प्राजापत्य मुहूर्त्तमें देवोंको शयन करावे और श्वेतमुहूर्त्तमें उठाना (जाग्रत) शुभहै. ब्राह्ममुहूर्त्तमें स्थापन करना श्रेष्ठहै ॥ १६८ ॥

दिनमध्यगतेसूर्य्येमुहूर्त्तेऽभिजिदष्टमे । सर्वकामसमृद्धःस्यात्सर्वोपद्रववर्जितः ॥ १६९ ॥ अथदेवतांतरेणकालविशेषः । तावत्शिवप्रतिष्ठाकालः । उत्तराशागतेभानौलिंगस्थापनमुत्तमम् । दक्षिणेत्वयनेपूज्यंद्विवर्षाद्भैभयावहम् ॥ १७० ॥ स्वगृहेस्थापनंनेष्ठंतथावैदक्षिणायने । स्थापनंतुप्रकर्त्तव्यंशिशिरादावृतुत्रये ॥ १७१ ॥ प्रावृषिस्थापितंलिंगंभवेद्वरदयोगदम् । हेमंतेज्ञानदंलिंगंशिशिरेसर्वभूतिदम् ॥ १७२ ॥ ल-

क्ष्मीप्रदंवसंतेचग्रीष्मेचजयशांतिदं । यतीनांसर्वकालेतुलिंगस्यारोपणं-मतम् ॥ १७३ ॥ माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढेषुपंचसु । श्रावणेचन-भस्येचलिंगस्थापनमुत्तमम् ॥ १७४ ॥

अथवा मध्याह्नमें सूर्यआनेसे आठवां अभिजितमुहूर्त्तहै सो संपूर्णदोषोंको दूरक-रके कार्य सिद्धकरताहै उसमें स्थापनकरै ॥ १६९ ॥ (जुदेजुदे देवोंकीप्रतिष्ठाकावि-चार) उत्तरायणसूर्यमें लिंगस्थापनकरना शुभहै यदिदक्षिणायनमेंकरेतो दो वरसके अनंतर भयहोताहै ॥ १७० ॥ अपने घरमें तथा दक्षिणायनमें लिंगस्थापन नहींकरना और शिशिर, वसंत, ग्रीष्मऋतुमें स्थापन करना चाहिये ॥१७१॥ प्रावृटकालमें लिं-गस्थापन कराहुवा वरकों देताहै, हेमंतमें ज्ञान देताहै, शिशिरमें संपत्ति देताहै॥१७२॥ वसंतमें लक्ष्मीदेताहै, ग्रीष्मऋतुमें जयशांतिकरै और यतिसन्यासियोंको सदैव लिंग-स्थापनकरना शुभहै ॥१७३॥ माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ यह मास और श्रावण, भाद्रपदभी लिंगस्थापनमें शुभहै ॥ १७४ ॥

लग्नंचवृश्चिकःसिंहोमेषोमिथुनकर्कटौ । तथाकन्यातुलाकुंभौवृषभश्चप्र-शस्यते ॥ १७५ ॥ अथविष्णुप्रतिष्ठायांविशेषः । मार्गशीर्षकमाघौद्वौ-निंदितौब्रह्मणापुरा । मासेषुफाल्गुनःश्रेष्ठश्चैत्रोवैशाखएवच ॥ १७६ ॥ पूर्वपक्षेशुभेकालेस्थिरेचोर्ध्वमुखेऽपिभे । अनुकूलेचलग्नेचहरिःस्थाप्योन-रैस्तथा ॥ १७७ ॥ चरराशिंपरित्यज्यस्थिरराशिंप्रगृह्यच । सुप्रशस्ते मुहूर्त्तेवैप्रतिष्ठांकारयेद्धरेः ॥ १७८ ॥ अथदेवीप्रतिष्ठाकालः । गुरौमेष-गतेशुक्रेदेवींचाथप्रतिष्ठयेत् । इहैवसभवेद्धन्योमृतोगच्छेत्परंपदम् ॥ ॥ १७९ ॥ तस्मान्मेषगतेशुक्रेउत्तमानवमीस्मृता । तथामाघाश्विनौमा-सौउत्तमौपरिकीर्त्तितौ ॥ १८० ॥

वृश्चिक सिंह मेष मिथुन कर्क कन्या तुल कुंभ वृष यह लग्न श्रेष्ठहैं॥१७५॥ (वि-ष्णुकी प्रतिष्ठाका विशेषविचार) मार्गशिर, माघ यह २ महीना विष्णुकी प्रतिष्ठामें ब्रह्माकरके पूर्व त्यागाहुवाहै और फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, यह श्रेष्ठहै ॥ १७६ ॥ शु-क्लपक्ष होवे स्थिरकाल होवे और (उर्ध्वमुखी) उ. ३ रो. पुष्य. आ. श्र. ध. श. यह नक्षत्रहोवे, श्रेष्ठलग्न होवे तब विष्णुस्थापन करना शुभहे ॥ १७७ ॥ चरराशिके ल-ग्नोंको त्यागके स्थिरराशिके लग्नमें श्रेष्ठमुहूर्त्तमें विष्णुस्थापनकरै ॥ १७८ ॥ (देवीकी प्रतिष्ठाका विचार) गुरु शुक्र मेषराशिपर होवे तब देवीस्थापनकरेतो इसलोकमें ध-न्य धन्यहोकें मरनेकेवाद परममोक्षको जाताहै ॥१७९॥ इसवास्ते मेषके शुक्रमें नौमी तिथिमें और माघ, आश्विनके मासमें देवीप्रतिष्ठा श्रेष्ठहै ॥ १८० ॥

नतिथिर्नचनक्षत्रंनोपवासोत्रकारणम् । मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः ॥ १८१ ॥ महिषासुरहंत्र्यश्चस्थाप्यावैदक्षिणायने । सर्वकालंप्रकर्त्तव्यंकृष्णपक्षेविशेषतः ॥ १८२ ॥ रात्रिरूपायतोदेवीदिवारूपोमहेश्वरः । अतःस्वकालपूजाभिःसिद्धिदापरमेश्वरी ॥ १८३ ॥ अथदेवताविशेषेणनक्षत्रविशेषः । विष्णोःपूर्वोदितेभेतुराधाचित्राद्वयोःसिते । रोहिणीश्रवणज्येष्ठापुष्येचाभिजितीरितम् ॥ १८४ ॥ विधिवासवयोःसम्यक्प्रतिष्ठापनमार्यकैः । भानोर्हस्तेऽनुराधायांकुबेरस्कंदयोरपि॥ १८५॥

देवीकी प्रतिष्ठामें तिथि नक्षत्र उपवास व्रत आदिकी जरूरतनहीहै कारण मातृका भैरव, वराह, नृसिंह, वामन, दुर्गा, यहदेवता दक्षिणायन सूर्यमेंही स्थापनकरना शुभहै और सदैवमुहूर्त्तश्रेष्ठहै परंतु कृष्णपक्षमें विशेष श्रेष्ठहै ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ कारण रात्रीरूपा देवीहै और दिनरूपमहादेवहै इसवास्ते अपनेअपने समयमेंही देवीपूजाकरनेसे फलको देतीहै ॥ १८३ ॥ (जुदेजुदे देवोंका नक्षत्र) विष्णुकी पतिष्ठाका नक्षत्र पहिले लिखचुकेहैसोही जानना, और ब्रह्मा, इंद्रके स्थापनमें, अनु. चि. स्वा. मृ. रो. श्र. ज्ये. पुष्य. अभि. यह नक्षत्र शुभहै ॥ सूर्यके स्थापनमें हस्त नक्षत्र शुभहै, कुबेर स्वामिकार्तिकके अनुराधा शुभहै ॥ १८४ ॥ १८५ ॥

मूलेदुर्गादिकानांचश्रवणेसुगतस्यहि । रेवत्यांधर्महेरंबफणिप्रमथरक्षसाम् ॥ १८६ ॥ यक्षभूताऽसुराणांचवाग्देव्याःस्थापनंस्मृतम् । व्यासागस्त्यग्रहाणांचवाल्मीकेःपुष्यभेतथा ॥ १८७ ॥ यत्रसप्तर्षयोयांतिधिष्ण्येतेषांतुतत्रच । सर्वेषामेवरोहिण्यामुत्तरात्रितयेतथा ॥ १८८ ॥ धनिष्ठायांदिगीशानांप्रतिष्ठापनमीरितम् । अथलग्नानि । सिंहेसूर्यःशिवोद्वंद्वेलग्नेस्थाप्यःस्त्रियां६हरिः । कुंभेवेधश्चरेक्षुद्राद्यंगदेव्यस्थिरेऽखिलाः ॥ ॥ १८९ ॥ अथलग्नादिस्थग्रहफलम् । लग्नस्थाःसूर्यचंद्रारराहुकेत्वर्कसूनवः । कर्तुर्मृत्युप्रदाश्चान्येधनधान्यसुखप्रदाः ॥ १९० ॥

दुर्गा भैरवआदि क्रूरदेवोंका मूलनक्षत्रमें स्थापन श्रेष्ठहै जैनीयोंका पारशनाथ तथा बौद्ध श्रवणमें शुभहै, धर्मराज, गणेशजी, शेषनाग, शिवकेगण, राक्षस, यज्ञ, भूत, दैत्य, सरस्वती, यह रेवतीमें स्थापनकरना श्रेष्ठहै, और व्यास, वाल्मीक, अगस्त्य, सूर्यादिग्रहोंका स्थापन पुष्यनक्षत्रमें शुभहै ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ सप्तऋषिलोग जिस नक्षत्रपर होवे उसीमें श्रेष्ठहै और रो. उ. ३ यह संपूर्णदेवोंके अर्थ श्रेष्ठहै और इंद्रादि दिग्पालोंका स्थापन धनिष्ठानक्षत्रमें शुभजानना ॥ १८८ ॥ (प्रतिष्ठाके लग्न) सूर्यको

सिंहलग्नमें स्थापनकरै, शिवकों मिथुनमें, विष्णुको कन्यामें, ब्रह्माको कुंभमें, क्षुद्रदेवता चरलग्नमें, कुलकीदेवीआदि स्थिरलग्नमें स्थापनकरना श्रेष्ठहै ॥ १८९ ॥ (लग्नआदि १२ भावोंकाफल) प्रतिष्ठाके लग्नमें सूर्य, चंद्रमा, मंगल, राहु, केतु, शनैश्चर होवेतो कर्ताकी मृत्युकरै और गुरु, शुक्र, बुध होवेतो धनधान्य सुखदेवै ॥ १९० ॥

द्वितीयेनेष्टदाःपापाःशुभाश्चंद्रश्चवित्तदाः । तृतीयेनिखिलाःखेटाःपुत्रपौत्रसुखप्रदाः ॥ १९१ ॥ चतुर्थेसुखदाःसौम्याःक्रूराश्चंद्रश्चदुखदाः । हानिदाःपंचमेक्रूराःसौम्याःपुत्रसुखप्रदाः ॥ १९२ ॥ पूर्णःक्षीणःशशिस्तत्रपुत्रदःपूत्रनाशनः । षष्ठेशुभाःशत्रुदाःस्युःपापाःशत्रुक्षयप्रदाः ॥ ॥ १९३ ॥ पूर्णःक्षीणोपिवाचंद्रःषष्ठेऽखिलरिपुक्षयं । करोतिकर्तुरचिरात्आयुःपुत्रधनप्रदः ॥ १९४ ॥ व्याधिदाःसप्तमेपापाःसौम्याःसौम्यफलप्रदाः । अष्टमस्थानगाःसर्वेकर्तुर्मृत्युभयप्रदाः ॥ १९५ ॥ धर्मेपापाघ्नंतिसौम्याःशुभदाःशुभदःशशिः । भंगदाःकर्मगाःपापाःसौम्याश्चंद्रश्चकीर्त्तिदा ॥ १९६ ॥

दूसरे पापग्रह होवेतो अशुभकरै और शुभग्रहचंद्रमा होवेतो धनदेवै ॥ और तीसरे संपूर्णहीग्रह पुत्रपौत्र सुखको देतेहैं ॥१९१॥ चौथे शुभग्रह सुख देतेहैं, पापग्रह दुख करै, पांचवें पापग्रह हानीकरै सौम्यग्रह तथा पूर्णचंद्रमा पुत्रका सुख देवै ॥ १९२ ॥ छठे शुभग्रहशत्रुका भयकरै पापग्रह शत्रुका नाशकरै और चंद्रमा छठे पूर्ण होवे या क्षीण होवेतोभी संपूर्णशत्रुका नाशकरके कर्ताकों आयु, पुत्र धन देताहै ॥ १९३ ॥ ॥१९४॥ सातवें पापग्रह रोगकरै, शुभग्रह शुभफलदेवै, आठवें संपूर्णग्रह मृत्युभयको देतेहै ॥ १९५ ॥ नोवेंपापग्रह नाशकरै, शुभग्रह शुभफलदेवै और दशवें पापग्रह भंगदेवे, शुभग्रह चंद्रमा कीर्त्तिकरै ॥ १९६ ॥

लाभस्थानगताःसर्वेभूरिलाभप्रदाग्रहाः । व्ययस्थानगताःशश्वद्बहुव्ययकराग्रहाः ॥ १९७ ॥ गुणाधिकतरेलग्नेदोषाल्पत्वतरेयदि । सुराणांस्थापनंतत्रकर्तुरिष्टार्थसिद्धिदम् ॥ १९८ ॥ हंत्यर्थहीनाकर्त्तारंमंत्रहीनातुऋत्विजम् । श्रियंलक्षणहीनातुनप्रतिष्ठासमोरिपुः ॥ १९९ ॥ गृहेस्वेयोविधिःप्रोक्तोविनिवेशप्रवेशयोः।सएवविदुषाकार्य्योदेवतायतनेष्वपि ॥ २०० ॥ अथतडागाद्युत्सर्गकालः ॥ अधुनाकथयिष्यामिवापीकूपक्रियाविधिम्। तडागपुष्करोद्यानमंडपानांयथाक्रमात्॥२०१॥आयव्ययादिसंशुद्धिंमासशुद्धितथैवच।यथागेहेदेवगेहेतथैवात्रविचारयेत् ॥२०२

ग्यारहवें संपूर्णग्रह बहुतलाभकरै और बारहवें संपूर्णग्रह खरचकरावे ॥१९७॥ लग्नमेंगुण अधिकहोवे और दोष थोडाहोवे तब देवोंकास्थापन कर्ताको सिद्धि देतेहें ॥ १९८ ॥ जो प्रतिष्ठा धनविनाकी होवे सो यजमानको मारतींहे, मंत्रविधिसेरहित होवेसो आचार्यऋत्विककों और लक्षणहीन होवेसो यजमानकी स्त्रीको मारतींहै, कारण प्रतिष्ठाकर्मके बराबर कोई शत्रु नहींहै इसवास्ते कर्ताकों लोभ नहींकरनाचाहिये१९९ जो विधि घरके प्रवेशमें लिखींहे सोही विधि देवोंकी प्रतिष्ठामें करनीचाहिये ॥२००॥ (तडागआदिकी प्रतिष्ठाका मु.) अब बावडी, कूवा, तलाव, तलाई, बगीचा, मंडप आदिका मुहूर्त्त कहतेंहै ॥ २०१ ॥ ग्यारहवें बारहवें आदिस्थानोंकीशुद्धि और मास, तिथि आदिकीशुद्धि जैसी पहलें नूतनघरकी तथा देवप्रतिष्ठाकी जो पहलें कहींहे सोही देखनाचाहिये ॥ २०२ ॥

वापीकूपतडागानांतस्मिन्कालेविधिःस्मृतः । सुदिनेशुभनक्षत्रेप्रतिष्ठाशुभदास्मृता ॥ २०३ ॥ कर्कटेपुत्रलाभश्चसौख्यंतुमकरेभवेत् । मीनेयशोर्थलाभस्तुकुंभेचसुबहूदकम् ॥ २०४ ॥ वृषेचमिथुनेवृद्धिर्वृश्चिकेलक्षणंभवेत् । पितृतृप्तिश्चकन्यायांतुलायांशाश्वतीगतिः ॥ २०५ ॥ सिंहेमेषेधनेनाशंजलस्यद्विजयच्छति । तस्मिन्सलिलसंपूर्णेकार्त्तिकेचविशेषतः ॥ २०६ ॥ तडागस्यविधिकार्यःस्थिरनक्षत्रयोगतः । मुनयःकेचिदिच्छंतिव्यतीतेचोत्तरायणे ॥ २०७ ॥ नकालनियमस्तत्रसलिलंतत्रकारणम् ॥ अथनक्षत्रादि ॥ रोहिणीचोत्तरात्रीणिपुष्यंमैत्रंचवारुणं । पित्र्यंचवसुदैवत्यंभगणोवारिबंधने ॥ २०८ ॥

और शुभदिन शुभनक्षत्रोंमें तलाव आदिका उत्सर्ग श्रेष्ठ होताहै॥२०३॥कर्ककेसूर्यमें उत्सर्गकरेतो पुत्रका लाभ, मकरमें सुखहोवै, मीनकेसूर्यमें यश धनका लाभहोवे, कुंभकेमें बहुतजलरहै, ॥ २०४ ॥ वृष मिथुनकेमें जलकी वृद्धिहोवे, वृश्चिकमें अच्छा जलरहे कन्याकेमें पितरोंकी तृप्तिहोवे, तुलकीमें सदैवजलरहै ॥२०५॥ सिंह मेष धनके सूर्यमें जलकानाश होताहै और तलाव जलसे भरगयाहो तब और कार्तिकमें विशेषकरके स्थिरनक्षत्रोंके योगसे तडागकी प्रतिष्ठाकरनी शुभहै और कईआचार्य उत्तरायनके अन्तमेंभी शुभमानतेहै परन्तु यहां कालकानियम नहींहे जबजलसें भरजावे तबही प्रतिष्ठाकरनी चाहिये॥२०६॥२०७॥ रो. उ. ३ पु. अनु शत. पू.षा. धनिष्ठा. यहनक्षत्र जलाशयोंके उत्सर्गमें श्रेष्ठहै ॥ २०८ ॥

जलशोषोभवेत्सूर्य्येभौमेरिक्तंविनिर्दिशेत् । मंदेचमलिनंकुर्याच्छेषावाराः शुभावहाः॥२०९॥ अथलग्नानि।सर्वेषुलग्नेषुशुभंवदंतिविहायसिंहा५लि

८धनुर्धरां९श्च । ग्रहःसदालोकनयोगसौम्ययोगात्प्रकुर्याज्जलभांशवर्गे- ॥२ १ ०॥केंद्रत्रिकोणेषुशुभस्थितेषु पापेषुकेंद्राष्टमवर्जितेषु।सर्वेषुकार्येषु- शुभंवदंतिप्रासादकूपादितडागवाप्याम्॥२ १ १॥अथअनिष्टयोगाः।चतु- र्थाष्टमगैःपापैर्लग्नगेवाखलग्रहे।चंद्रेष्टमेतदाकर्ताम्रियतेमासमध्यतः२ १ २

आदित्यवारकों प्रतिष्ठाकरेतो जलशूकजावै भौमवारको जलशून्यरहै शनिवारको मलीनजलरहै, अन्यवार शुभजानना ॥ २०९॥ सिंह वृश्चिक धन लग्नकेबिना अन्य संपूर्णलग्नोंमें शुभग्रहोंकी दृष्टिहोनेसें और जलराशिके नवांशकमें जलका उत्सर्गकरना शुभहै ॥ २१० ॥ शुभग्रह केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ में होवे और पापग्रह केंद्र अष्टमके विना अन्यस्थानोंमें होवेतो मंदिर, कूप, बावडी, तलाव, आदिका उत्सर्ग श्रेष्ठ होताहै ॥ २११ ॥ यदि पापग्रह चौथे आठवें लग्नमें होवे और चंद्रमा आठवें होवेतो कर्ताकी एकमासके भीतर मृत्यु होतीहै ॥ २१२ ॥

केंद्रपापग्रहैर्युक्तेअष्टमेचव्यये१ २पिवा । धर्मे९स्थानगतैर्वापितज्जलं- क्षीयतेचिरात् ॥ २ १ ३ ॥ केंद्रगैःसौरिभौमार्कैरष्टमस्थेनिशाकरे । त- ज्जलंवर्षमध्येतुनतिष्ठतिजलाश्रये॥२ १ ४ ॥एकःपापोष्टमस्थोपिचतुर्थेसिं- हिकासुतः । नवमेभूमिपुत्रस्तुतज्जलंविषवत्स्मृतम् ॥ २ १ ५ ॥ अथशु- भयोगः । एकोपिजीवज्ञसितासितानांस्वोच्चस्थितानांभवनेस्वकीये । कें- द्रत्रिकोणोपगतानराणांशुभावहंतत्सलिलंस्थिरंस्यात् ॥ २ १ ६ ॥ अथ- नवदुर्गपुरप्रवेशमुहूर्त्तः । रोहिणीरेवतीहस्तत्रयेपुष्येश्रवस्त्रये । अनुरा- धोत्तरेनव्येपुरेदुर्गेप्रवेशनम् ॥ २ १ ७ ॥ इतिश्रीरत्नगढनगरनिवासिना पंडितगौडश्रीचतुर्थीलालशर्मणाविरचितेअद्भुतेमुहूर्त्तप्रकाशेवास्तुप्रकर- णमष्टमंसमासम् ॥ ८ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

केंद्रमें १।४।७।१० या आठवें बारहवें नौवें पापग्रह होवेतो तडागकाजल शीघ्रही नष्टहोताहै ॥ ११३ ॥ केंद्रमें १।४।७।१० शनि मंगल आदित्य होवे और आठवें चंद्रमां होवेतो एकवर्षभी जल नहीरहताहै ॥ ११४ ॥ यदि पापग्रह एकभी आठवें होवें या चौथे राहु होवे मंगल नौवें होवेतो तलावकाजल विषज्वर सदृश होजाताहै ॥११५॥ यदि केंद्रमें या त्रिकोणमें या गुरु बुध शुक्र पूर्णचंद्रमा एकभी होवे और उच्चराशि या स्वगृहराशिका होवेतो कर्ताके शुभकरै और तलावमें जलस्थिररहै ॥२१६॥ (नवीन किल्लेके प्रवेशकामु.) रो रे. ह. चि. स्वा. पुष्य. श्र. ध. श. अनु. उ. ३ इन नक्षत्रोंमें नवीन किल्लेका प्रवेशकरना शुभहै॥२१७॥इतिमुहूर्त्तप्रकाशेवास्तुप्रकरणंअष्टमंसमाप्तम्॥

मिश्रितप्रकरणम् ९

अथमिश्रितप्रकरणम् ॥ तत्रतावत्सर्वकार्योपयोगीशिवद्विघटिकाप्रारभ्यते । अथावश्येपंचांगशुद्ध्यभावेशिवमुहूर्त्तानि ॥ ईश्वरउवाच ॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामिज्ञानंत्रैलोक्यदीपकम् । ज्योतिस्सारस्ययत्सारंदेवानामपिदुर्लभम् ॥ १ ॥ नतिथिर्नचनक्षत्रंनयोगंकरणंतथा । कुलिकंयमयोगंचनभद्रानचचंद्रमाः ॥ २ ॥ नशूलंयोगिनीराशिर्नहोरानतमोगुणः । व्यतिपातेचसंक्रांतौभद्रायामशुभेदिने ॥ ३ ॥ शिवालिखितामित्येतत्सर्वविघ्नोपशांतये । कदाचिच्चलतेमेरुःसागराश्चमहीच्युताः ॥ ४ ॥ सूर्यः पततिवाभूमौवह्निर्वायातिशीतताम् । निश्चलश्चभवेद्वायुर्नान्यथाममभाषितम् ॥ ५ ॥ तत्रादौकथयिष्यामिमुहूर्त्तानिचषोडश । गुणत्रयप्रयोगेनचलंत्येवअहर्निशम् ॥ ६ ॥

अथ मिश्रप्रकरण लिख्यते ॥ प्रथम संपूर्णकार्योंके योग्य दो घडीका शिवलिखितमुहूर्त्त कहतेहैं यह मुहूर्त्त पंचांगकीशुद्धि नहीं होनेसेंभी शुभकर्ताहै और पंचांगकी शुद्धि सहित तो अतीही श्रेष्ठहैं, पूर्वकालमें त्रिपुरासुरकों मारनेके समयमें महादेवजी पार्वतीकों कहाथा, महादेवजी बोले हे देवी त्रैलोकिमें दीपकरूपज्ञान और ज्योतिसका सार देवोंकोभी दुर्लभहै सो तुमकों कहतेहैं॥१॥ जिसमे तिथि नक्षत्र, योग, करन, कुलिक, यमयोग, भद्रा, अशुभचंद्रमा, दिशाशूल, योगिनी, राशि, होरा, तमोगुण, व्यतीपात, संक्रांति, अशुभदिन आदिका दोष नही लगताहै. और संपूर्ण विघ्नशांति होतें है सो "शिवालिखितनाम" मुहूर्त्त यहहै ॥ २ ॥ ३ ॥ समयपाकर मेरुपर्वत और समुद्रसहित पृथ्विभी चल शक्तिहै और सूर्यभी भूमिपें पडशक्ताहै अग्नि शांति हो शक्ताहै, वायु बंध हो शक्तिहै परंतु मेरा कहाहुवा यह मुहूर्त निष्फल नही जाताहै ॥४॥ ॥ ५ ॥ सोही सोलह मुहूर्त्त तीनगुणोंके प्रयोगकरकें रातदिन चलतें है ॥ ६ ॥

अथमुहूर्त्तानि ॥ रौद्रं१श्वेतं२तथामैत्रं३चार्वटंचचतुर्थकम्४ । पंचमंजयदेवंच५षष्ठंवैरोचनं६तथा ॥ ७ ॥ तुरगंसप्तमं७चैवह्यष्टमं ८ चाभिजित्तथा ॥ रावणंनवमं९प्रोक्तंबालवंदशमं१०तथा ॥ ८ ॥ विभीषणंरुद्रसंज्ञं११द्वादशंच१२सुनंदनम् । याम्यंत्रयोदशं १३ ज्ञेयंसौम्यंप्रोक्तं दशम् १४ ॥ ९ ॥ भार्गवंतिथिसंज्ञंच१५सविताषोडशंतथा १६ तानिप्रोक्तकार्येषुनियोज्यानियथाक्रमात् ॥ १० ॥ अथमुहूर्त्तक्रम ।

रौद्रेरौद्रतरंकार्य्यंश्वेतेकुंजरबंधनम् ॥ स्नानदानादिकंमैत्रेचार्वटेस्तंभनं-
भवेत् ॥ ११ ॥ कार्यंयज्जयदेवसंज्ञकवरेसर्वार्थकंसाधयेत्तद्वैरोचनसंज्ञ-
केप्रभवतिपट्टाभिषेकंक्रमात् ॥ ज्ञात्वैवंतुरगेवनाम्निविदितेशस्त्रास्त्रकंसा-
धयेत् स्यात्कार्यमभिजिन्मुहूर्त्तकवरेग्रामप्रवेशंसदा ॥ १२ ॥

(मुहूर्त्तोकेनाम) रौद्र १ श्वेत २ मैत्र ३ चार्वाट ४ जयदेव ५ वैरोचन ६ तुरग ७ अभिजित् ८ रावण ९ बालक १० विभीषण ११ सुनंदन १२ याम्य १३ सौम्य १४ भार्गव १५ साविता १६ यह सोलह मुहूर्त्तोका नामहैसो क्रमसेति जुदे जुदे कामोंमें लेना चाहिये ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ (मुहूर्त्तोका कार्य) रौद्रमुहूर्त्तमें अतिही क्रूरकामकरना शुभहै श्वेतमुहूर्त्तमें हस्तीका बंधन शुभहै और मैत्रमें स्नानदान आदि रना, चार्वाटमें स्थंभनकार्य, जयदेवमें संपूर्ण शुभकार्य, विरोचनमें राज्याभिषेक, तुरमें शस्त्रअस्त्रका कार्य, अभिजितमें ग्रामआदिका प्रवेशकरना शुभहै ॥ ११ ॥ १२ ॥

रावणेसाधयेद्वैरंयुद्धकार्यंचवालवे । विभीषणेशुभंकार्य्यंयंत्रकार्यंसुनंदने
॥ १३ ॥ याम्येभवेन्मारणकार्यमप्यसौसौम्येसभायामुपवेशनंस्यात् ।
स्त्रीसेवनंभार्गवकेमुहूर्त्तेसावितृनाम्निप्रपठेत्सुविद्याम् ॥ १४ ॥ अथवार-
परत्वेनमुहूर्त्तोदयः । उदयेरौद्रमादित्येमैत्रंसोमेप्रकीर्त्तितम् । जयदेवं-
कुजेवारेतुरगंतुबुधेस्मृतम् ॥ १५॥ रावणंचगुरौज्ञेयंभार्गवेचबिभीषणम् ।
शनौयाम्यंमुहूर्त्तंचदिवारात्रिप्रयोगतः ॥ १६ ॥ अथगुणानामुदयः ।
गुरुसोमदिनेसत्वंरजश्चाङ्गारकेभृगौ । रवौमंदेबुधेवारेतमोनाडीचतुष्टयम्
॥ १७ ॥ अथगुणानांवर्णानि । सत्वंगौरंरजःश्यामंतामसंकृष्णमेवच ।
इमंवर्णविजानीयात्सत्वादीनांयथोदितम् ॥ १८ ॥

रावणमें बैरकाकाम, वालवमें युद्धकेकार्य, बिभीषणमे शुभकार्य, सुनंदनमें यंत्रोंकाकार्य, याम्यमें मारणकाकृत्य, सौम्यमें सभाआदिमें बैठना, भार्गवमें स्त्रीसेवन, और सवितामुहूर्त्तमें विद्याकाआरंभकरना श्रेष्ठहै ॥ १३ ॥ १४ ॥ (वारोंमें मुहूर्त्तोंकेउदय होनेंकाविचार) आदित्यवारको सूर्योदयमें रौद्रमुहूर्त्त आताहै, सोमको मैत्र, मंगलको जयदेव, बुधको तुरग, गुरुको रावण, भार्गवको बिभीषण और शनिवारको प्रातःकाल याम्यमुहूर्त्त आताहै ॥ १५ ॥ १६ ॥ गुरुसोमवारको उदयमें सतोगुणमुहूर्त्त होताहै, मंगल शुक्रको रजोगुन, और आदित्य, शनि बुधवारको तमोगुणीमुहूर्त्त च्यारघडी रहताहै ॥१७॥ सत्वगुणका गौर वर्णहै, रजोगुणका श्यामहै, तामसका कृष्णवर्णहै इसप्रकार सत्वआदिकावर्णजानना ॥ १८ ॥

अथगुणानांफलम् । सत्वेनसाधयेत्सिद्धिंरजसाधनसंपदाम् । तमसाछेदभेदादिसाधयेन्मोक्षमार्गकम् ॥ १९ ॥ अथमुहूर्त्ताङ्गरेखाज्ञानम् । शून्यंनभःखादिभिरेववर्णैर्विघ्नंधनुर्युग्मगणाधिपाद्यैः । मृत्युस्तथापादयमादिवर्णैःश्रीविष्णुनामामृतसंज्ञसिद्धिः ॥ २० ॥ अथरेखास्वरूपम् । अमृतश्चोर्ध्वेरेखैकाकालरेखात्रयंभवेत् । विघ्नमावर्त्तकंज्ञेयंशून्येशून्यमितिक्रमः ॥ २१ ॥ अथरेखाफलम् । शून्येनैवभवेत्कार्यंविघ्नमावर्त्तकंभवेत् । स्यान्मृत्युःकालरेखायांसर्वसिद्धिस्तथाऽमृते ॥ २२ ॥ अथराशीनांघातगुणाः । धनु ९ मीन १२ कर्कटानां ४ सत्त्वेघातोविनिर्दिशेत् । तुला ७ वृषभ २ मेषानां १ घातोरजसिनिश्चितम् ॥ २३ ॥ कन्या ६ मिथुन ३ सिंहानां ५ कुंभस्य ७ मकरस्यच १० । घातस्तामसवेलायांविपरीतंशुभावहम् ॥ २४ ॥

सत्वगुणसे सिद्धिका कार्यकरना, रजोगुणसे धनसंपदाका कार्य, तमोगुणसे छेदनभेदन और मोक्षमार्गका कार्यकरना शुभहै ॥ १९ ॥ (मुहूर्त्तोंकी रेखा) नभ. ख. शून्य. इत्यादिवर्ण आवें जहां शून्य० जानना, और धनु, युग्म, गणाधिपआदिवर्ण आवेजहां विघ्नरेखा जानना, पाद यमआदिपद आवेतहां मृत्युरेखा जानना और श्री. विष्णुकेनामआदि आवेजहां अमृतरेखा जानना ॥ २० ॥ (रेखाका स्वरूप) ऊपरको एकरेखा होवेसो अमृतरेखाहै तीनरेखा त्रिशूलके आकार होवेसो कालरेखा धनुषके आकार विघ्नरेखा जानना शून्यकेआकार शून्यरेखा जाननाचाहिये० ॥ २१ ॥ (रेखाका फल) शून्यरेखामें कार्य नहींहोताहै । विघ्नरेखामें विघ्न होताहै । कालरेखामें मृत्यु होतीहै और अमृतरेखामें कार्यकीसिद्धि होतीहै ॥ २२ ॥ (राशियोंका घातिकगुण) धन मीन कर्क राशिको सतोगुण घातीकहै । तुल वृष मेषको रजोगुण घातीकहै । कन्या मिथुन सिंह कुंभ मकरको तामसमुहूर्त्त घातीकहै ॥ २३ ॥ २४ ॥

अथराशीनांवर्णाः । धनुष्कर्कटमीनाख्यागौरवर्णाःप्रकीर्त्तिताः । वृषमेषतुलाश्चैववृश्चिकःश्यामवर्णकः ॥ २५ ॥ मिथुनोमकरःकुंभःकन्यासिंहश्चकृष्णकः । गौरश्चम्रियतेसत्वेश्यामवर्णोरजोगुणे ॥ २६ ॥ कृष्णस्तामसवेलायांम्रियतेनात्रसंशयः ॥ अथक्षयमासाधिमासयोर्व्यवस्था ॥ यस्मिन्वर्षेभवेन्मासोऽधिकश्चैवतथाक्षयः । मासेनगृह्यतेमासःसर्वकार्यार्थसाधने ॥ २७ ॥ अथमासेषुमुहूर्त्तव्यवस्था । माघफाल्गुनचैत्रेषुवैशाखेश्रावणेतथा । नभस्यमासिवाराणांमुहूर्त्तानियथाक्रमात् ॥ २८ ॥ अथमासेषु-

रव्यादिवारेक्रमेणदिनरात्र्योरेखाः। रवौनभःकेशवविघ्नराजोगोविंदनामा-
नभआखुगामी । रात्रौनृसिंहोयुगलंनभःपल्लक्ष्मीशलंबोदररामसंज्ञौ॥२९॥

धन कर्क मीनका गौरवर्णहै, वृष मेष तुल वृश्चिकका श्यामवर्णहै ॥ २५ ॥ मिथुन मकर कुंभ कन्या सिंहका कृष्णवर्णहै, गौरवर्णका सतोगुणीमुहूर्त्तमें मरजावै और श्यामवर्णका रजोगुणमें, तथा कृष्णवर्णका तमोगुणमें मरजावै इसमें संदेह नहींहै ॥२५॥ ॥ २६ ॥ जिसवरसमें जो अधिकमास होवे उसी मासकी रीतिसे मुहूर्त्त संपूर्णकार्योंमें जानना ॥ २७ ॥ (महिनोंके मुहूर्त्तका प्रकार) प्रथम माघ, फाल्गुन चैत्र वैशाख श्रावण भाद्रपदके वारोंका मुहूर्त्त क्रमसे लिखतेहै ॥ २८ ॥ (ऊपरके महिनोंमें आदित्य आदिवारोंके दिनरातके मुहूर्त्तोंकी रेखा) आदित्यवारकों प्रथम (नभनाम) शून्य, फिर तीनजगें (केशव) नाम अमृतरेखा, (विघ्नराजनाम) च्यारजगें विघ्नरेखा, गोविंदनाम तीनजगें अमृतरेखा, नभनाम १ जगेंशून्य, आखुगामीनाम ४ जगें विघ्नरेखा जानना इसीतरह दिनके सोलह मुहूर्त्तोंकी रेखा हुई॥ और रात्रिमें नृसिंहनाम ३ जगें अमृतरेखा, युगलनाम २ जगें विघ्नरेखा, नभनाम १ शून्यरेखा, पत्नाम १ मृत्युरेखा, लक्ष्मीनाम ३ अमृतरेखा, लंबोदरनाम ४ विघ्नरेखा, रामनाम २ जगें अमृतरेखा जानना ॥ २९ ॥

सोमेहरिर्विघ्नपतिःसुरेशःशून्यंचगौरीसुतविष्णुसंज्ञौ । पदंनिशायांखख-
विष्णुशून्यंयुग्मंचनारायणविघ्ननाथौ ॥ ३० ॥ भौमेयमौमारसणोऽथयु-
ग्मंयुग्मंहरिश्चैवगजाननश्च । नक्तंचविघ्नोद्विपदंमुकंदःपदत्रयंश्रीपतिखं-
नभश्रीः ॥ ३१ ॥ बुधेधनुःकृष्णयमौचसौरिःसिद्धिर्द्धनुःसौरियमौचसि-
द्धिः । रात्रौसुपर्णध्वजएवयुग्मंनभोऽथदामोदरकुंजराश्यौ ॥ ३२ ॥ गु-
रौगोपिनाथस्तथाविघ्नराजोनभःकेशवःकुंजराश्यस्तथैव । निशायांपदं-
नंदजःसूर्यसूनुर्नभोमाधवश्चापमेकंहरिश्च ॥ ३३ ॥

सोमवारके दिनमें प्रथम हरिनाम २ जगें अमृतरेखा, विघ्नराजनाम ४ विघ्नरेखा, सुरेशनाम ३ अमृतरेखा, शून्य १ शून्यरेखा, गौरीसुतनाम ४ विघ्नरेखा, विष्णुनाम २ अमृतरेखा, जानना ॥ रात्रिमें पदनाम १ मृत्युरेखा, खखनाम २ शून्यरेखा, विष्णुनाम २ अमृतरेखा, शून्यनाम २ शून्यरेखा, युग्मनाम २ जगें विघ्नरेखा, नारायणनाम ४ जगें अमृतरेखा, विघ्ननाथनाम ४ जगें विघ्नरेखा जानना ॥ ३० ॥ मंगलके-दिनमें, यमनाम २ मृत्युरेखा, मारमणनाम ४ अमृतरेखा, युग्मयुग्मनाम ४ विघ्नरेखा हरिनाम २ अमृतरेखा, गजाननाम ४ जगें विघ्नरेखा जानना ॥ रात्रिमें विघ्ननाम २ जगें विघ्नरेखा, द्विपनाम २ मृत्युरेखा, मुकुंदनाम ३ अमृतरेखा, पदत्रयनाम ३ जगें

मृत्युरेखा, श्रीपतिनाम ३ अमृतरेखा, खंनभनाम ३ शून्यरेखा, श्रीनाम १ अमृत-रेखा जानना ॥३१॥ बुधकेदिनमें, धनुनाम २ जगें विघ्नरेखा, कृष्णनाम २ अमृतरेखा, यम २ मृत्युरेखा, सौरिसिद्धिनाम ३ अमृतरेखा, धनुनाम २ विघ्नरेखा, सौरिनाम २ अमृतरेखा, यमनाम २ मृत्युरेखा, सिद्धिनाम १ अमृतरेखा, और रात्रिमें, सुपर्ण-ध्वजनाम ५ अमृतरेखा, युग्मनाम २ विघ्नरेखा, नभनाम १ शून्यरेखा, दामोदरनाम ४ अमृतरेखा, कुंजराश्पनाम ४ विघ्नरेखा जाणो ॥ ३२ ॥ गुरुकेदिनमें गोपिनाथनाम ४ अमृतरेखा, विघ्नराजनाम ४ विघ्नरेखा नभनाम १ शून्यरेखा, केशवनाम ३ अमृत-रेखा, कुंजराश्पनाम ४ विघ्नरेखा जाणो, रात्रिमें, पदनाम १ मृत्युरेखा, नंदजनाम ३ अमृत० सूर्यसूनुनाम ४ जगेंकालरेखा, नभनाम १ शून्य, माधवनाम ३ अमृत. चा-पनाम २ जगें विघ्नरे. हरिनाम २ अमृत० ॥ ३३ ॥

शुक्रेकृष्णःस्याद्यमःखंमुरारिर्गौरीपुत्रःश्रीपतिःशून्यमेकं। नक्तंकालःकं-सहाखंचयुग्मंपादद्वंदोवामनःखंचपादौ॥३४॥ शनौपदंश्रीःखनभोनभः खंनारायणःखंहरिःखंहरिश्च। रात्रौचशून्यंयमयुग्ममाधवोखविघ्नराजौनृ-हरिश्चपादौ॥३५॥अथाश्विनेकार्त्तिकमार्गपौषसूर्यादिवारेषुमुहूर्त्तरेखाः। नामाक्षराणांवचनप्रवृत्त्याविचारपूर्वंविबुधैर्विचिंत्यम्॥३६॥ सूर्येन्नासिंहो-द्विपदश्चचापोहरिर्नभःखंपदमच्युतोंघ्रिः। रात्रौपदंचापखमच्युतंचयुग्मं-यमौविष्णुखसिद्धिसंज्ञौ ॥ ३७ ॥

शुक्रवारकेदिनमें। कृष्णनाम २ अमृतरेखा। यमनाम २ मृत्यु०। खंनाम १ शू,न्य.। मुरारि ३ अमृत.। गौरीपुत्र ४ जगें विघ्नरे.। श्रीपति ३ अमृत.। शून्यनाम १ शून्यरेखा। रात्रिमें। काल २ मृत्युरे.। कंसहा ३ अमृ.। खंनाम १ शून्य.। युग्म-नाम २ जगें विघ्न.। पादद्वंद्वनाम २ मृत्यु.। वामननाम ३ अमृ.। खंनाम १ शून्य.। पादौनाम २ मृत्युरेखा ॥ ३४ ॥ शनिवारकेदिनमें। पदनाम १ मृत्युरेखा। श्रीनाम१ अमृ.। खनभनभखंनाम ४ शून्यरे.। नारायणनाम ४ अमृ.। खंनाम १ शून्य. हरि-नाम २ अमृ.। खंनाम १ शून्य.। हरिनाम २ अमृ. ॥ रात्रिमें। शून्यनाम २ शून्य.। यमयुग्मनाम २ मृत्युरे.। माधवनाम ३ अमृ.। खनाम १ शून्य.। विघ्नराजनाम ४ विघ्नरे.। नृहरिनाम ३ अमृ.। पादौनाम २ मृत्युरेखा ॥ ३५ ॥ (आश्विन कार्तिक मार्गशिर पौषमासके वारोंके मुहूर्तोंकी रेखा) आदित्यकेदिनमें। नृसिंहनाम ३ अ-मृतरेखा.। द्विपदनाम २ कालरे.। चापनाम २ विघ्नरे.। हरिनाम २ अमृत.। नभखं-नाम २ शून्य.। पदंनाम १ मृत्युरे.। अच्युतनाम ३ अमृ.। अंघ्रिनाम १ मृत्युरेखा। रात्रिमें पदनाम १ मृत्यु.। चाप नाम २ जगें विघ्नरे.। खंनाम १ शून्य.। अच्युतनाम

३ अमृ. । युग्म २ जगें विघ्न. । यमौनाम २ मृत्युरेखा । विष्णुनाम २ अमृ. । खनाम १ शून्य. । सिद्धिनाम २ अमृतरेखा जाननी ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

सोमेंघ्रिचापंखनभोमुकुंदोनभश्चयुग्मंहरिःखंहरिश्च । पदंनिशायांखयुगंमुरारिर्विनायकोविष्णुनभश्चविष्णुः ॥ ३८ ॥ भौमेतथेभास्यनभोथविष्णुर्नभोयुगंगोपतिखंगणेशः।नक्तंगजेंद्रास्यखमच्युतंचयुग्मंचशून्यंनृहरिश्चशून्यम् ॥३९॥ बुधेधनुःश्रीपतिपादयुग्मंनारायणःस्यात्गणनाथसिद्धिः । रात्रौतुकालौहरिशून्यकालौगोविंदगौरीसुतशून्यसिद्धिः ॥४०॥

सोमकेदिनमें अंघ्रिनाम१ मृ. । चापनाम २ जगें विघ्नरेखा. । खनभनाम२ शून्य. । मुकुंदनाम ३ अमृत. । नभनाम१शून्य. । युग्मनाम२विघ्नरे. । हरिनाम२अमृत. । खंनाम१शून्य. । हरिनाम२अमृतरेखा. ॥ रात्रिमें पदनाम१मृत्युरेखा. । खनाम१शून्य. । युगनाम २ विघ्नरेखा. । मुरारि ३ अमृत. । विनायक ४ विघ्नरेखा. । विष्णु २ अमृत. । नभ १ शून्य. । विष्णुनाम २ अमृतरेखा जानना ॥ ३८ ॥ मंगलवारकेदिनमें । इभास्यनाम ३ विघ्नरेखा. । नभ १ शून्य. । विष्णु २ अमृत. । नभ १ शून्य. । युगं २ विघ्नरे. गोपति ३ अमृत. । खं १ शून्य. । गणेशनाम ३ विघ्नरेखा. ॥ रात्रिमें गजेंद्रास्यनाम ४ विघ्नरेखा । खं १ शून्य. । अच्युत ३ अमृतरे. । युग्म २ विघ्नरेखा । शून्य. १ । नृहरिनाम ३ अमृत. । शून्य. १ जानना ॥ ३९ ॥ बुधकेदिनमें । धनुनाम २ विघ्नरेखा । श्रीपति ३ अमृत. । पादयुग्म २ मृत्युरेखा । नारायण ४ अमृत. । गणनाथ ४ विघ्नरेखा. । सिद्धिनाम १ अमृतरेखा । रात्रिमें कालौनाम २ मृत्युरेखा । हरि २ अमृत. शून्य. १। कालौनाम २ मृत्युरेखा । गोविंदनाम ३ अमृत. । गौरीसुत ४ विघ्नरेखा शून्य. १ । सिद्धिनाम १ अमृतरेखा ॥ ४० ॥

गुरौहरिःशून्ययुगंसुरेशःश्रीविघ्नराजोगगनंतथाश्रीः । निश्यंघ्रिदैत्यारिखकार्मुकंचपदेमुरारिःखयुगंपुनःश्रीः ॥ ४१ ॥ शुक्रेऽमृतंचापमरिंदमश्चलंबोदरःकेशवशून्यपादम् । नक्तंचयुग्मंनृहरिःखयुग्मंनृसिंहयुग्मंगगनंचयुग्मम् ॥ ४२ ॥ शनौपदंश्रीर्नभोनकृष्णःखंश्रीःपदंविष्णुनभोहरिःपत् । रात्रौपदंखंपदनंदसूनुर्गजाननौगोपतिःशून्यपादाः ॥ ४३॥ अथज्येष्ठाषाढमलमासेषुरव्यादिवारेमुहूर्त्तरेखाः । ज्येष्ठेमासेतथाषाढेतथावैमलमासके । सूर्य्यादिवारेसंशोध्याःक्रमशोनामभादिमे ॥ ४४ ॥ अर्केशून्येचकृष्णोयुगपदयुगलंखंहरिर्विष्णुचापम् रात्रौलक्ष्मीशयुग्मंयुगलंहरियुगंयुग्मकृष्णंचशून्यं । सोमेचापद्वयंनोनृहरिखयुगलंपीतवा-

साश्वशून्यम्। चापद्वंद्वंनिशायामजपदखमजंचापपद्मेशपादाः॥ ४५ ॥

गुरुकेदिनमें हरिनाम २ अमृतरे. शून्य. १ युगंनाम २ विघ्नरे. । सुरेश श्रीनाम ४ अमृतरे. विघ्नराज ४ विघ्नरे. । गगनं २ विघ्नरे. । श्रीनाम १ अमृतरेखा । गुरुकीरात्रिमें अंघ्रि १ मृत्युरेखा । दैत्यारि ३ अमृतरेखा । ख १ शून्यरे. । कार्मुक २ विघ्नरे. पद २ मृत्युरे. । मुरारि ३ अमृतरे. । ख १ शून्य. । युग २ विघ्नरे. । श्री १ अमृतरेखा ॥४१॥ शुक्रवारकेदिनमें अमृत १ रे. । चापंनाम २ विघ्नरे. । अरिंदमनाम ४ अमृत. । लंबोदर ४ विघ्नरे. । केशव ३ अमृत. । शून्य १ रे. । पादनाम १ मृत्युरेखा । रात्रिमें युग्मनाम २ विघ्नरेखा । नृहरि ३ अमृत. । ख. १ शून्य. । युग्म २ विघ्नरे. । नृसिंह ३ अमृत. । युग्म २ विघ्नरे. । गगनं १ शून्य. । युग्म २ विघ्नरेखा । ४२ ॥ शनिवारकेदिनमें पदनाम १ मृत्युरेखा । श्री १ अमृतरे. । ननभवेन ३ शून्य. कृष्ण २ अमृत. खं१ शून्य. । श्री १ अमृत. । पद १ मृत्युरे. । विष्णुनाम २ अमृत. । नभ १ शून्य. । हरि२ अमृत. । पत्नाम १ मृत्युरे. । रात्रिमें पदनाम १ मृत्युरे. । खंनाम १ शून्य. । पद१मृ. नंदसूनु ४ अमृ. । गजानन ४ विघ्न. गोपति ३ अमृत. । शून्य. १ पादनाम १ मृत्युरे. ॥ ४३ ॥ (ज्येष्ठ आषाढ मलमासके वारोंके मुहूर्त्तोंकी रेखा) आदित्यवारकेदिनमें शून्य २ शून्यरे. । कृष्ण २ अमृत. । युग २ विघ्नरे. । पद १ मृत्युरे. । युगलं २ विघ्नरे. खं १ शून्य. । हरिविष्णु४ अमृत. चाप २ विघ्नरे.॥रात्रिमें लक्ष्मीश३ अमृत. । युग्म २ विघ्न. । युगल २ विघ्न. । हरि २ अमृत. । युग २ विघ्न. । युग्मं २ विघ्न. । कृष्ण २ अमृत. । शून्य १ शून्यरे. ॥ सोमकेदिनमें चापद्वयंनाम ४ विघ्नरे. । नोनाम १ शून्य. । नृहरि ३ अमृत. । ख १ शून्य. । युगलं २ विघ्नरे. । पीतवासा ४ अमृत. । शून्य. १ शून्यरे रात्रिमें चापद्वंद्वनाम ४ विघ्नरे. । अज २ अमृतरे. । पद १ मृत्यु खं १ शून्य. । अज २ अमृत. । चाप २ विघ्नरे. । पद्मेशनाम ३ अमृतरे. । पादनाम १ मृत्युरे. ॥ ४४॥ ४५ ॥

भौमेशून्येचकृष्णोयुगगनहरिस्त्रीणिचापानिसिद्धिः । नक्तंयुग्मंद्विशून्यं युगयुगलपदंश्रीःखचापंहरिश्च । सौम्येश्रीविघ्ननाथोऽथहरिगणपतिःपद्मनाभश्चपादो दोषायांसिद्धियुग्मंहरिखगजमुखाःकृष्णशून्येचकृष्णः ॥ ॥ ४६ ॥ जीवेविष्णुश्चचापोगगनमजितखंचांघ्रिपादौनृसिंहो रात्रौनोखंमुरारिर्गगनयुगगजोविष्णुचापांघ्रियुग्मम्।शुक्रेयुग्मंमुरारिर्गगनयुगगजोरामचापोऽथपादौ तद्रात्रौयुग्मगोपीपतियुगगगनंश्रीवरःखंपदेश्रीः ४७

मंगलकेदिनमें शून्य २ शून्यरे. । कृष्ण २ अमृत. । युग २ विघ्न. । गगन १ शून्य. हरि २ अमृत. । त्रीणिचापानिनाम ६ विघ्नरे. । सिद्धि १ अमृतरेखा । रात्रिमें युग्मं-

द्विनाम४विघ्नरे. शून्यं १ शून्यरे. । युगयुगलनाम४ विघ्नरे. । पद १ मृत्यु. । श्रीः १ अमृत. । ख. १ शून्य. । चाप २ विघ्न. । हरि २ अमृतरेखा ॥ बुधकेदिनमें. श्रीः १ अमृतरे. । विघ्ननाथ ४ विघ्नरे. । हरि २ अमृतरे. । गणपति४विघ्नरे. । पद्मनाम ४ अमृतरे.- पादनाम १ मृत्युरेखा ॥ रात्रिमें सिद्धिनाम १ अमृतरे. । युग्म २ विघ्नरे. । हरि २ अमृत. खनाम १ शून्य. गजमुख ४ विघ्नरे. । कृष्ण२अमृत. । शून्ये. २ शून्य. । कृष्ण २ अमृतरेखा जानना ॥ ४६ ॥ गुरुवारके दिनमें विष्णुनाम २ अमृतरे. । चापनाम २ विघ्न. । गगनंनाम १ शून्यरे. । अजितनाम ३ अमृतरेखा । खंनाम १ शून्य. । अंघ्रिपादौनाम २ मृत्युरेखा । नृसिंनाम ३ अमृतरेखा । रात्रिमें नोखंनाम २ शून्य. मुरारि ३ अमृत. । गगन १ शून्य. । युगगजनाम ४ विघ्नरे. । विष्णु २ अमृत. । चाप २विघ्न. । अंघ्रियुग्मनाम २ मृत्युरेखा । और शुक्रवारकेदिनमें युग्मनाम २ विघ्न. । मुरारि ३ अमृत. । गगन १ शून्य. । युगगजनाम ४ विघ्नरे. । राम २ अमृ. । चाप २ विघ्न. । पादौनाम२मृत्युरेखा. । रात्रिमें युग्मनाम२विघ्नरे. । गोपीपति ४ अमृत. ।युग२विघ्न. । गगनं १ शून्यरे. । श्रीवर३अमृतरे. । खं१शून्य । पदे २ मृत्यु. । श्रीः१ अमृतरे. ॥४७॥

मंदेश्रीयुग्मसिद्धिःखहरिहरिनभःशौरिखंसिद्धिखंत्रा नक्तंश्रीयुग्मसिद्धिः खयुगलहरिर्व्योमगोविंदशून्यम् ॥ ४८ ॥ रुद्रप्रोक्तमिदंज्ञानंशिवायै- रुद्रयामले । गोपनीयंप्रयत्नेनसद्यःप्रत्ययकारकम् ॥ ४९ ॥ इतिशिवा- लिखिताद्विघटिकामुहूर्त्ताः ॥

शनिवारकेदिनमें श्री १ अमृत. । युग्म२विघ्न. । सिद्धि १ अमृत. । ख १ शून्य. । हरिहरिनाम ४ अमृतरे. । नभ १ शून्य. । शौरि २ अमृत. । खं १ शून्यरे. सिद्धि १ अमृ. । खं १ शून्यरे. ॥ रात्रिमें श्री नाम १ अमृतरे. । युग्म २ विघ्न. । सिद्धि १ अमृ. । ख. १ शून्य. । युगल २ विघ्न. । हरि २ अमृत. । व्योम १ शून्य. ।गोविंद ३ अमृतरे. । शून्यंनाम १ शून्यरे. करणीचाहिये ॥ ४८ ॥ इसप्रकार यहज्ञान पार्वतीके अर्थ रुद्रयामलग्रंथमें महादेवजीने कहाहैसो गुप्तरखनेयोग्यहै और ततकाल परचे (फल) देनेवालाहै ॥ ४९ ॥ इतिशिवालिखितद्विघटिकामुहूर्त्ताःसमाप्तः

अथाङ्गस्फुरणफलम् । अंगस्फूर्तिफलंवक्ष्येदक्षिणांगसमुद्भवम् । पुरुषाणां- तुतज्ज्ञेयंवामभागेमृगीदृशाम् ॥ १ ॥ पृथ्वीलाभःशिरःस्थानेस्थानला- भोललाटके । प्रियाप्तिःस्याद्भ्रुवोर्मध्येभ्रुवोर्युग्मेसुखंमहत् ॥ २ ॥ शुभवार्त्ताश्रुतिःकर्णेलोचनेप्रियदर्शनं । दृक्कोणभागयोर्लक्ष्मीरधःपक्ष्मणि- संजयः ॥ ३ ॥ गंडदेशेस्त्रियाःसौख्यंनासायांगंधजंसुखम् । उत्तरोष्ठेतु- वाग्वादश्चुंबनंचाधरेस्त्रियाः ॥ ४ ॥ हनुदेशेभयंज्ञेयंमुखेमधुरभोजनं ।

भूषाप्तिःकंठदेशेस्याद्ग्रीवायांरिपुजंभयम् ॥ ५ ॥ ज्ञेयःपराजयःपृष्ठेस्कंधे मित्रसमागमः । प्रियाप्तिर्बाहुदेशेस्यान्मध्येबाह्वोर्धनागमः ॥ ६ ॥

अथ अंगफुरकनेका फल लिख्यते ॥ अंग फुरकनेकाफल पुरुषोंके दक्षिण अंगों-का और स्त्रीयोंके वाम अंगका जानना ॥ १ ॥ शिर फुरके तो पृथ्विको लाभ होवे, ललाट फुरकेतो स्थानको लाभ होवे, दोंनो भृकुटीके बीचमें फुरकेतो प्रियवस्तु मि-लै, दोनोंभृकुटी फुरेतो महान् सुख होवै ॥ २ ॥ कान फुरकनेसें श्रेष्ठवार्ता सुनै, नेत्रसें प्रियवस्तु देखे, दृष्टिकी दोनों कोनसें लक्ष्मीमिलै, नीचेकी भाफनसें जय होवे ॥३॥ गालसें स्त्रीको सुख होवे, नाकसें सुगंधिका सुख होवै, ऊपरके होठसें वक्वाद होवे, नीचेके होठसें स्त्रीका चुंबन मिलै ॥ ४ ॥ ठोडी फरकनेसें भय होवे, मुखसें मीठा भो-जन मिलै, कंठसें आभूषण मिलै, नाड फरकेतो शत्रुका भय होवे ॥ ५ ॥ पीठसें परा-जय होवे, खँवाकांधाफरकेतो मित्र मिलै, भुजासें प्रियवस्तु मिलै, हाथवीचमेंसें फ-रकेतो धन आवे ॥ ६ ॥

द्रविणाप्तिंकरेविद्याद्विजयंवक्षसिध्रुवम् । प्रमोदंचबलंकट्यांपार्श्वेप्रीतिम-नुत्तमाम् ॥ ७ ॥ स्थानात्प्रचलनंनाभौकोशवृद्धिरथांत्रके । कोशाप्ति-रुदरेनार्याजघनेप्रियसंगमः ॥ ८ ॥ स्फिचगुदेवाहनाप्तिःस्याल्लिंगेयोषि-त्समागमः । वृषणेपुत्रलाभश्चाभ्युदयोवस्तिदेशके ॥ ९ ॥ ऊरौसद्वास-सांप्राप्तिरिपुसंधिस्तुजानुनि । क्वचिद्धानिस्तुजंघायांस्थानाप्तिश्चरणोपरि ॥ १० ॥ पादाधोलाभदंज्ञेयमंगस्फूर्तिफलंत्विदं । वामेपुंसांफलंचैतद्बु-धैर्ज्ञेयंविपर्ययात् ॥ ११ ॥ नारीणांदक्षिणेगेस्यादंगप्रस्फुरणेतथा । अथां-गेतिलोत्पत्तौकंडूत्पांचेदमेवफलम् ॥ १२ ॥

हाथसें द्रव्यमिलै, छातीसें विजयहोवे, कड (कटि) सें मोद (उत्साह) बलहोवे, पसवाडेसें उत्तम प्रीतिहोवे ॥ ७ ॥ नाभिसें स्थानकों त्यागे, आंतडीसें खजानेकी वृ-द्धिहोवे, उदरसें खजाना मिलै, जंघासे प्रिय स्त्रीका संगमहोवै ॥ ८ ॥ कुल्हे तथा गुदा फरकेतो वाहन मिलै, गुह्यस्थान फरकेतो स्त्रीका समागमहोवे, अंडकोश फरकेतो पुत्रलाभहोवे, वस्तिस्थानफरकेतो अभ्युदय (आनंद) होवे ॥ ९ ॥ जंघा फरकेतो श्रेष्ठवस्त्रमिलै, गोडे (घुटने) फरकेतो शत्रुसें प्रीतिहोवे पींडी फरकेतो किंचित् हा-निहोवे, पगऊपरसें फरकेतो स्थानमिलै ॥ १० ॥ पगनीचेसें फरकेतो लाभ होवे, इस-प्रकार यह फल अंग फरकनेका समझना परंतु पुरुषोंके वामभागमें तथा स्त्रियोंके दक्षिण अंगमें फरकनेकाफल विपरीत जानना और इसी प्रकार अंगमें तिल, खाज आदिका फल जानना ॥ ११ ॥ १२ ॥

अंगस्फूर्त्तिसमाज्ञेयालांछनंमशकास्तिलाः । कंडूर्दक्षिणेपाणौनृपाणांजय-

दास्मृता । अन्येषांलाभदापादतलेगमनकारिणी ॥ १३ ॥ अनन्यथा-सिद्धिरजन्मनस्यफलस्यशस्तस्यचनिंदितस्य । अनिष्टनिद्रोपगमेद्विजा-नांकार्यंसुवर्णेनतुतर्पणंस्यात्॥ १४॥अथपल्लीसरठयोःपतनारोहणफलम्। पल्लीस्पर्शफलंवक्ष्येयदुक्तंब्रह्मणपुराब्रह्मस्थानेभवेद्राज्यंस्थानलाभोलला-टके॥ १५॥ कर्णयोर्भूषणावाप्तिर्नेत्रयोःप्रियदर्शनम् । नासिकायांसुगंधा-प्तिमुखेमिष्ठान्नभोजनम् ॥ १६ ॥ कपोलयोर्भवेत्सौख्यंहनुदेशेमहद्भय-म् । भृकुट्यांविग्रहश्चैवकंठेवाव्यसनागमः ॥ १७ ॥ कलिर्वंशेसुखंपृ-ष्ठ्यांदक्षेवामेगदादयः । दक्षांसेविजयोनित्यंवामांसेशत्रुजंभयम्॥ १८॥

अंगफरकनेके समानही ल्हसण. मशा. तिलका फलजानो और राजालोगोंके द-क्षिणहाथमें कंडूति खाजहोवेतो जय होतीहै अन्य ब्राह्मणवैश्यशूद्रोंके लाभकरतीहै य-दिपगकेनीचे होवेतो गमनकरातीहै १३ श्रेष्ठ अंगफुरणेकी, या अशुभफरकणेकी इस्से अन्यथा सिद्धिनहींहै यदिअंगफरणेका अशुभफल होवेतो सुवर्णकादान करनाचाहिये ॥१४॥ इत्यंगस्फुरणफलम् अथ छिबकली पडनेका तथा किरडे(किरकांट) का अंगपर चढणेकाफल लिखतेहैं ॥ जैसा पूर्व ब्रह्माजीने कहाहै॥ शिरकेऊपर ब्रह्मरंध्रमें छिबक-ली पडेतो राज्यका लाभहोवे, ललाटपें पडेतो स्थानमिलै॥१५॥ कानोंपें पडेतो आभू-षण मिलै, नेत्रोंपें पडेतो प्रियवस्तुका दर्शनहोवै, नासिकापें पडेतो सुगंधि प्राप्तहोवे, मुखपें पडेतो मिष्टअन्नका भोजनमिलै ॥ १६ ॥ गालोंपें सुखहोवे, ठोडीपें महान्भय-होवे, भ्रकुटीपें राड (कलह) होवे, कंठपें पडेतो दुखहोवे॥१७॥ पीठके हाडपें पडेतो क-लहहोवे, दक्षिणपीठपें सुखहोवे, वामपीठपें रोगहोवे, दाहणे खँवेपर पडेतो विजयहोवे, वामखँवेपें शत्रुका भयहोवे ॥ १८ ॥

इष्टलाभोभुजेसव्येकूर्परेमणिवंधके । दक्षेकरतलेद्रव्यंतत्पृष्ठेसद्व्ययोभ-वेत् ॥ १९ ॥ वामेभुजेकूर्परेचमणिवंधेधनक्षयः । वामेकरतलेहानिस्त-त्पृष्ठेचार्थनाशनम् ॥ २० ॥ हृदयेराजसंमानंसौभाग्यंदक्षिणेस्तने । दक्षपार्श्वेचभोगाप्तिःस्तनेवामेयशोधनं ॥ २१ ॥ वामपार्श्वेभवेत्पीडावा-मकुक्षौशिशोस्तथा । दक्षकुक्षौसुतावाप्तिरुदरेचविशेषतः ॥ २२ ॥ व-स्त्राप्तिर्दक्षकट्यांचवामकट्यांसुखक्षयः । नाभ्यांमनोरथावाप्तिर्वस्तौगर्भ-च्युतिर्भवेत् ॥ २३ ॥ गुह्येमृत्युर्गुदेरोगोदक्षोरौप्रीतिवर्द्धनम् । वामोरौ-मृत्युतोदुःखंदक्षजानौसुवाहनं ॥ २४ ॥

दक्षिणभुजापें. तथाकूर्परपें. मणिबंधपें पडेतो इष्टवस्तुका लाभहोवे, दक्षिणहाथकी हथेलीपें द्रव्यमिलै दाहणेहाथकी पीठपें पुण्यके निमित्त खरचहोवे ॥ १९ ॥ वामभुजा कूर्पर, मणिबंधपें पडेतो धन नाशहोवे, वामहाथकी हथेलीपें पडेतो हानि और उसकी पीठपें पडेतो धनका नाशहोवे ॥ २० ॥ हृदयपें राजासे सनमान मिलै, दाहणेस्तनपें सौभाग्य और दक्षिणपार्श्वमें भोग तथा वामस्तनपें पडेतो यश, धन मिलै ॥ २१ ॥ वामपार्श्वमें पडेतो पीडाकरै, वामकूखपें पडेतो बालकोंके पीडाकरै, दक्षिणकूखपें, या पेटपें पडेतो पुत्रहोवे ॥२२॥ दक्षिणकड(कटि)पें वस्त्रका लाभ वामकडपें सुखका नाशहोवे, नाभीपें मनोरथसिद्धि और बस्तिस्थान अर्थात् नाभीकेनीचे पडेतो गर्भपतन होजावे॥२३॥ गुह्यपें मृत्यु. गुदापें पडेतो रोगहोवे, दक्षिणजंघापे प्रितिकीवृद्धि और वाम जंघापे मृत्युकादुख, दक्षिणगोडेपे पडेतो श्रेष्ठवाहन मिलै ॥ २४ ॥

पशुहानिर्वामजानौदक्षिणेजघनेसुखं । क्लेशःस्याद्वामजंघायांस्फिचिदक्षेर्थवृद्धिकृत् ॥ २५ ॥ स्फिचिवामेस्त्रीवियोगोदक्षेगुल्फेप्रियागमः । उपप्लवोवामगुल्फेपादयोर्गमनंभवेत् ॥ २६ ॥ पुरोभागेचदुर्वार्तानष्टवार्त्ताचपृष्ठतः । वामेहानिर्धनंदक्षेपरितोभ्रमणेक्षितः ॥ २७॥ वामदक्षिणभागेनयत्फलंकथितंनृणाम् । विपर्ययेणतत्स्त्रीणांज्ञेयंशेषंद्वयोःसमम् ॥ ॥ २८ ॥ इत्थंपल्याःप्रपतनेफलंज्ञेयंविचक्षणैः । एतदेवफलंविद्यात्सरठस्यप्ररोहणे ॥ २९ ॥ मृत्युयोगेचजन्मर्क्षेविष्टयांपातेचवैधृतौ । चंद्रेष्टमेचसक्रूरेलग्नेविघ्नंप्रजायते ॥ ३० ॥

वामगोडेपें पशुहानि, दक्षिणपींडीपें सुख, वामपींडीपें क्लेशहोवे, दक्षिणकूल्हेपें धनकी वृद्धिहोवे ॥ २५ ॥ वामकूल्हेमें स्त्रीकावियोग, दक्षिणटकणेपें प्रियका आगमन, वामटकणेपें नाश, और पगोंपें पडेतो गमन करावे ॥ २६ ॥ अगाडीआके पडेतो खोटीबात सुणे, पछाडी पडेतो नष्टहोनेकी वार्तासुणै, वामपार्श्वमें पडेतो हानि और दक्षिणपार्श्वमें पडेतो धनलाभ और बाहरकर फिर जावेतो नाशकरै ॥ २७ ॥ यहछिपकलीका कहाहुवा फल पुरुषोंके दक्षिणभागका और स्त्रीयोंके वामभागका शुभजानना और विपरीतपडनेसे अर्थात् पुरुषोंके वामअंगोंमें और स्त्रीयोंके दक्षिणअंगोंमे अशुभ जानना ॥ २८ ॥ इसप्रकार छिपकलीके पडनेका और किरडेके चढनेका फल जानना चाहिये ॥ २९ ॥ यदिमृत्युयोग जन्मनक्षत्र, भद्रा, व्यतीपात, वैधृति, आठवांचंद्रमा, पापग्रहसहितलग्नमें पडेतो विघ्नहोताहै ॥ ३० ॥

अंगंदक्षिणमारुह्यवामेनोत्तरतेस्फुटम् । तदाहानिकरीज्ञेयाव्यत्ययेनतुहानिदा॥३१॥चरणादूर्ध्वगाभूयःसद्योरोहतिशीर्षकम् ।प्राप्तंराज्यंतदाद-

त्तेपल्लीश्वेताविशेषतः ॥ ३२ ॥ चिंतिताभ्यधिकंलाभंस्थिताभोजनभाजने । पादांगुलीषुसंपाताद्धानिश्चमहतीभवेत् ॥ ३३ ॥ तत्रशांतिंजपंहोमंरुद्रं-मृत्युंजयादिकं । पंचगव्ययुतंस्नानंकुर्यादाज्यावलोकनम् ॥ ३४ ॥ ति-लमाषादिदानंचस्नात्वादेयंद्विजन्मने । पिनाकिनंनमस्कृत्यजपेन्मंत्रंषड-क्षरम् ॥ ३५ ॥ शतंसहस्रमथवासर्वदोषनिबर्हणं । शिवालयेप्रदद्याद्वै दीपंदोषोपशांतये ॥ ३६ ॥

दक्षिणअंगपें चढके यदि वामअंगोंकरकें उतरजावेतो हानिकरतीहै और वामअं-गसे दक्षिणकरके उत्तरेतो श्रेष्ठहे ॥३१॥ यदिपगोंसें चढके शिरपें जा चढेतो राज्यप्राप्ति करतीहै ॥ ३२ ॥ भोजनपात्रपे पडेतो विचारे हुयेलाभसेभी अधिकलाभ होवे और पगोंकीअंगुलियोंपें पडेतो बहुत हानीहोवै ॥ ३३ ॥ यदिदुष्टस्थानपें छिपकली पडजा-वेतो, शांति, होम, जप, रुद्रीकापाठ, महामृत्युंजयजप करे और पंचगव्यसे स्नानक-रके घृतमें मुखदेखे ॥ ३४ ॥ तिल, उडदकादान स्नानकरके ब्राह्मणकों देवे, महादे-वजीकों नमस्कारकरे ॐनमः शिवाय इसमंत्रका हजार, या सो १०० जपकरे और शिवालयमें दीपकजोवेतो दोषदूरहोजावे ॥ ३५ ॥ ३३ ॥ इतिपल्लीपतनफलम् ॥

अथस्वप्नदर्शनफलम् ॥ आद्येयामेनिशिस्वप्नोवर्षेणफलदोभवेत् । द्विती-येमासषट्केनत्रिभिर्मासैस्तृतीयके ॥ ३७ ॥ प्रातःसद्यफलःस्वप्नस्ततः स्वप्यान्नचेन्नरः । रोगचिंतोद्भवाप्यर्थाश्चिरपाकादिर्वीक्षताम् ॥ ३८ ॥ अथशुभदाःस्वप्नाः । सद्राजाब्राह्मणादेवाःसिद्धगंधर्वकिन्नराः । गुरुः श्वेतांबरानारीतेषामाशीश्चदर्शनम् ॥ ३९ ॥ प्रासादगजशैलानांश्वेतो-क्षासनवाजिनाम् । दर्शनंरोहणंलाभःसिंहस्यारोहणंतथा ॥ ४० ॥ छ-त्रध्वजसुवर्णाब्जरत्नरौप्यदधीनिच । यवगोधूमसिद्धार्थाःफलंदीपश्चक-न्यकाः ॥४१॥ श्रीखंडाक्षतदूर्वेक्षुदर्पणाःपुष्पितद्रुमाः । लाभेवादर्शने-चैषांलाभःसौख्यंभवेद्यशः ॥ ४२ ॥

(अथ स्वप्नफलम्) यदि स्वप्नरात्रिकी प्रथम प्रहरमें आवेतो वरसभरसे फलदेवै, और दूसरी पहरमें छःमहिनोंसें, तीसरेप्रहरमें तीनमाससें फलहोताहे ॥३७॥ प्रातःका-लकास्वप्न ततकालही फलदेताहे परंतु यदि फिर नहिसोवेतो, रोग, चिंता, धनलाभ, आदिकाकार्य बहुतदिनसे सिद्धहोनेवालोंको शीघ्रसिद्ध होवे ॥ ३८ ॥ (श्रेष्ठस्वप्नाः) श्रेष्ठराजा, ब्राह्मण, देव, गंधर्व, सिद्ध, किन्नर, गुरु, श्वेतवस्त्रयुक्तस्त्री, इनका दर्शन तथा आशीष श्रेष्ठहै ॥ ३९ ॥ महल, मंदिर, पर्वत, सुपेदवृषभ, आसन, घोडे सिंह आ-

दिकादर्शन तथा चढना, या मिलना श्रेष्ठहै॥४०॥छत्र, ध्वजा,सुवर्ण,कमल,रत्न, चांदी, दहि,यव, गोहुं, सरसों, फल, दीपक, कन्या, चंदन, चावल, दूर्वा, ईख, दर्पण, पुष्पों-करकेयुक्त दरखत, इनकादर्शन, या लाभ होवेतो लाभ सुख यश प्राप्तिहोवे॥४१॥४२

भोजनंरोदनंवीणावादनंनौप्ररोहणं । अगम्यागमनंविष्ठालेपनंशस्तमी-रितं ॥ ४३ ॥ आरूढोयोहिजागर्तिसपुष्पंफलितंद्रुमं । दृष्टःश्वेताऽहि-नादक्षेकरेस्यात्समहाधनः ॥ ४४ ॥ रुधिरस्नानपानंचसर्पदंशोमृतिर्नि-जा । शय्याहर्म्यासनानांचज्वलनंसशिरच्छिदा ॥ ४५ ॥ रक्तस्रावोज-लैःस्नानंमरणंमांसभक्षणम् । सुरायाःपयसःपानंप्रशस्तंपायसाशनम् ॥ ॥ ४६ ॥ कदलीकल्पवृक्षाश्चतीर्थंगंगादिकंसरित् । तोरणंभूषणंराज्यं-स्वनैश्चग्रामवेष्टनम् ॥ ४७ ॥ वेदवाद्यादिनिर्घोषोगर्तान्निःसरणंतथा । दंशोवृश्चिककीटानांतडागोद्यानदर्शनम् ॥ ४८ ॥

भोजन, रुदन, वीणाकाबजाना,नवकाकाचढना, नहिंगमन करनेयोग्यस्त्रीका संग करना, शरीरके विष्ठालगाना श्रेष्ठहै॥४३॥पुष्पफलसहित वृक्षपें चढकेंजागे और दक्षिण-हाथकों सुपेदसर्प काटजावेतो बहुतधनमिलै॥४४॥ रुधिरसेस्नान, पानकरै, या सर्प खा-जावे, या आपमरजावे या शय्या, महल, आसन, यह अग्निसें जलजावे, या अपना शिर कटजावे॥४५॥ खूननिकलआवै, जलसें स्नानकरै, या मरजावे, मांसभक्षणकरै, मदिरापीवे, या पायसदुग्ध खावेतो शुभहै ॥ ४६ ॥ केलेकावृक्ष, कल्पवृक्ष, तीर्थ, गं-गाआदिनदी, तोरण, आभूषण, राज्य, शब्दोंकरके ग्रामकावेष्टन ॥ ४७ ॥ वेद, बाजे-आदिकाशब्द, खाडेसें निकलना, वृश्चिकडांस, कीडे आदिकाकाटना, तलाव; ब-गीचा, इनका देखना शुभहै ॥ ४८ ॥

पीतंरक्तंफलंपुष्पंस्वप्नेप्राप्नोतियोनरः । लभतेसोचिरात्स्वर्णपद्मराग-मणिंतथा ॥ ४९ ॥ जयोद्यूतेरणेवादेपुरुहूतध्वजेक्षणम् । आत्मनोबंध-नंशीर्षबाह्वोरानंत्यमुत्तमम् ॥ ५० ॥ अभिषेककरीविप्रोदेवोवाछत्रधार-णम् । कुरुतेमहिषीव्याघ्रीगोसिंहीस्तन्यपानकम् ॥५१॥ स्वनाभौतृण-वृक्षांबुपुष्पाणामुद्भवस्तथा । भुवोभूमिधरस्यापिक्रमेणोत्क्षेपणेशुभे ॥ ॥ ५२ ॥ मणिसौवर्णरौप्याणांपात्रेवांभोजिनीदले । योऽश्नातिपायसं-स्वप्नेसराज्यमधिगच्छति ॥ ५३ ॥ गौर्लिंगीब्राह्मणोराजापितामित्रंच-देवता । यद्वदेत्सदसत्स्वप्नेतत्तथैवप्रजायते ॥ ५४ ॥

पीला लालफल पुष्प, स्वप्नमें मिलेतो थोडेही दिनोंसे सुवर्ण रत्नमणी प्राप्तहोवे

॥४९॥ जूवेयारण बादमेंजीतना, इंद्रकीध्वजा देखना, और अपने शरीरें शिर बाहु-काबंधन देखेतो शुभहै॥५०॥राजाकाअभिषेकमें विप्र, देवतावोंका छत्रधारण देखे, महिषी व्याघ्री, गौ सिंहणीका स्तन पीवेतो शुभ ॥ ५१ ॥ आपकी नाभीमें तृण वृक्ष जल पुष्प निकले, शेषभगवान् पृथ्वीको उछालेतो शुभहै ॥ ५२ ॥ मणिसुवर्णचांदीके पात्रोंमें कमलके पत्तेमें पायसभक्षण करेतो राज्यमिलताहै॥५३॥गौ,संन्यासी, ब्राह्मण, राजा, पितर,पिता, मित्र, देवता जो स्वप्नमें शुभअशुभवार्त्ता कहेसो सचीजानना॥५४॥

पूजितंशिवलिंगंचदेवतावायथाविधि । स्वप्नेदृष्टाःप्रयच्छंतिनराणांवि-पुलंधनम् ॥ ५५॥ त्यक्त्वातक्राणिकार्पासंश्वेतवर्णंशुभंमतं । सर्वंकृष्ण-मसद्धित्वागोदेवांश्वगजद्विजान् ॥ ५६॥ यस्तुश्वेतेनसर्पेणदंशितोदक्षि-णेकरे । सहस्रलाभस्तस्यस्यात्पूर्णेतुदशमेदिने ॥ ५७॥ उरगोवृश्चिको-वापिजंबुकोदंशतेयदि।विजयंचार्थसिद्धिंचपुत्रस्तस्यविनिर्दिशेत्॥५८॥ रुधिरंपिवतेस्वप्नेसुरावापिवतिक्वचित् । ब्राह्मणोलभतेविद्यामितरस्तुधनं लभेत् ॥ ५९ ॥ क्षीरंपिवातियःस्वप्नेसफेनंदोहनेकृते । सोमपानंभवे-त्तस्यधनंवाबहुचादिशेत् ॥ ६० ॥

यदि स्वप्नमें महादेवके लिंगको या देवतोंको पूजेहुये देखेतो बहुतधन मिलताहै ॥ ५५ ॥ केवल तक्र कपासकेविना संपूर्णजिनस सुपेद श्रेष्ठहै और गौ, देवता, हस्ति, ब्राह्मणके विना कृष्णजिनस संपूर्ण निषेद्धहै ॥ ५६ ॥ जो स्वप्नमें दाहणेहाथको सुपे-दसर्प काटखावेतो दशदिनकेभीतर हजाररुपैया मिलताहै ॥५७॥ सर्प, वृश्चिक, जं-बुक, स्वप्नमें खावेतो विजय धनलाभ पुत्रलाभ होताहै ॥ ५८ ॥ स्वप्नमें रुधिर, मदि-रापीवेतो ब्राह्मणको विद्याआवे, औरोंको धनमिलै ॥ ५९ ॥ स्वप्नमें दूहतेहुये झागस-हित दुग्धपीवेतो अमृतकेपान बरोबर समजना और बहुतधन मिलताहै ॥६०॥

दधिलाभेधनंतस्यघृतलाभेध्रुवंयशः । घृतप्राशेमहाक्लेशोयशस्तुदधिभ-क्षणे ॥ ६१ ॥ गोधूमैर्वायवैर्वापिलाभंसिद्धार्थकेषु च । पुष्पेप्राप्तेधनं-विद्यात्फलेवृद्धिरनुत्तमाः ॥ ६२ ॥ आसनेशयनेयानेशरीरेवाहनेगृहे । ज्वलमानेविबुध्येततस्यश्रीःसर्वतोमुखी ॥ ६३ ॥ अथअशुभस्वप्नाः । तैलाभ्यक्तोऽथदिग्वासाआरूढोमाहिषंखरम् । उष्ट्रंकृष्णंवृषंवाश्वंयाम्यां-गच्छन्नजीवति ॥६४॥ पाकस्थानंवनेरक्तपुष्पाठ्येसूतिकागृहे।विकलां-गोविशेत्स्वप्नेसोऽसुभिर्विप्रयुज्यते ॥ ६५ ॥ जतुंकौंकुमसिल्हादिधात-वोयस्यमंदीरे । पतंतितरुतस्तस्यगेहदाहश्चचौरभीः ॥ ६६ ॥

दधिमिलेतो धनप्राप्ति घृतमिलेतो यशप्राप्तिहोवे और घृतखानेमें महाक्लेश और दहीखानेमें यशमिलताहै ॥ ६१ ॥ स्वप्नमें गोधूम, यव, सरसों पुष्प मिलेतो धनहोवे और फल मिलेतो उत्तमवृद्धि होवे ॥ ६२ ॥ आसन, शय्या, यान, शरीर, वाहन, घर अग्निसें जलतेहुये देख जागआवेतो सन्मुखलक्ष्मी आतीहै॥६३॥ (दुष्टस्वप्ना.) स्वप्नमें तैललगावै,नंगाहोवे,महिषगधे ऊंट,कालावृषभ काले घोडेपें चढकें दक्षिणदिशामें जावेतो मृत्युहोतीहै॥६४॥पाकस्थानरसोइमें, या लालपुष्पोंकेबनमें,या जापे(जच्चा) केघरमें बिकलहोके स्वप्नमें प्रवेशहोवेसो मृत्युको प्राप्त होताहै ॥६५॥ लाख, कुंकुम, सिलारसआदि वृक्षसे घरमें पडेतो घरकादाह चौरोंका भय होताहै ॥ ६६ ॥

नाभेरन्यत्रगात्रेषुतृणपुष्पद्रुमोद्गमः । खरोष्ट्रकपिसर्पाद्यैर्यानंस्नेहस्यभक्षणम् ॥ ६७ ॥ कलुषेणांबुनामष्याकर्द्दमैर्गोमयेनच । स्नेहेनवपुषोलेपः कर्द्दमेविनिमज्जनम् ॥ ६८ ॥ पातोदग्दंतहस्तस्यजिह्वायाश्चत्रयंतथा । एतेशोकप्रदाःस्वप्नादृष्टाहानिकराअपि ॥ ६९ ॥ स्वप्नेसंदोलनंगीतंक्रीडितंस्फोटितंतथा । हसितंभर्त्सितंस्रोतोवहार्नारेह्यधोगतम् ॥ ७० ॥ सूर्येंदुध्वजताराणांपातःस्वस्यचितावपि । रज्वाच्छेदःशिरोभागेकांस्यवर्णस्यधारणम् ॥ ७१ ॥ प्रवेशोजननींगर्भेदुष्टमेतच्चरिष्टदम् । करवीरमशोकंचलतापाशेनवंधनम् ॥ ७२ ॥

नाभिकेबिना और गात्रोंमें तृण पुष्प वृक्ष पैदा होजावे और खर ऊंट वानर सर्प आदिकी असवारी करै घृत तेल भक्षनकरै ॥ ६७ ॥ मलीनजलसें या स्याहीसें कादेसें गोमयसें घृततेलसें शरीरके लेपकरै या कीचडमें घुसजावे ॥ ६८ ॥ दांत नेत्र हाथ जिव्हां पडजावे तो यह स्वप्न शोक हानि करतें है ॥ ६९ ॥ स्वप्नमें हिंडोलेमें हींडे, गीतगावें, ख्यालकरे, कूदे, हंसे, झिडके, या नदीके प्रवाहमें घुसजावे ॥ ७० ॥ सूर्य चंद्रमा ध्वजा तारा पडता दीखे, अपनी चितासें रज्जूटूटे, शिरमें कांसी धारनकरै॥७१ माताके गर्भमें प्रवेश होवेतो अरिष्ट होताहै, कनीर अशोक बेलसे लपटाहुवा देखे॥७२

कृष्णांबरधरायोषालिंगनंमृत्युकारकं । आरुह्यपुष्पितान्वृक्षान्योविचिंत्यनिजंवपुः ॥ ७३ ॥ भूषयत्यरुणैःपुष्पैःसोपिप्राणैर्वियुज्यते । घृतरक्तांबरश्लिष्टोहत्यामाप्नोतिमानवः ॥ ७४ ॥ यस्तुधूमोयमात्मानंव्याप्तंधूमेनचेक्षते । भस्माज्यलोहलाक्षंचसचलक्ष्म्यावियुज्यते ॥ ७५ ॥ कोष्टुकुक्कुटमार्जारगोधाबभ्रुभुजंगमाः । मक्षिकावृश्चिकादंशादृष्टाःस्वप्नेनशोभनाः ॥ ७६ ॥ रत्नद्रव्यायुधोपानशय्याभूषाश्चयोषिताम् । वस्त्रा-

दिप्रियवस्तूनामपहारोऽर्थनाशकः ॥ ७७ ॥ विवाहोत्सवयोःशोकोभ्रंशे-
वानखकेशयोः । कराद्यवयवानांतुछेदनेस्वप्ननाशनम् ॥ ७८ ॥

कालेवस्त्रधारन करीहुई स्त्रीसें आलिंगनकरे तो मृत्युहोवे, फूलेहुये वृक्षोंपर चढके जानताहुवा लालपुष्पोंकरकें अपनेशरीरकों भूषितकरे तो मृत्युहोतीहै या लालवस्त्र धारनकरे तो हत्याकों प्राप्त होताहै ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ जो धूंवा देखे या धूंवेकरके व्याप्त-शरीरकों देखे या भस्मी, घृत, लोह, लाखकों देखे तो लक्ष्मी नाशहोवे ॥ ७५ ॥ शृगाल, कूकडा, मार्जार, छिपकली, नोलिया, सर्प, मक्षिका, वृश्चिक, यह स्वप्नमें काटेतो अशुभहै ॥ ७६ ॥ रत्न धन आयुध पानशय्या स्त्रियोंका आभूषण वस्त्रआदि प्रियवस्तु चोरी जावेतो धननाशकरै ॥ ७७ ॥ विवाह उत्सावमें शोकहोजावे, या नख केश टूटजावे या हाथपगआदि शरीरका अंगच्छेदन होजावे तो अशुभहै ॥ ७८ ॥

वपनंश्मश्रुकेशानांनेत्ररुक्पतनंतथा । कूपगर्तदरीध्वांतविवरेषुनशोभन-म् ॥ ७९ ॥ कपोतश्येनगृध्राद्याऋक्षकौशिकवायसाः । सृगालशशक-श्वानोदृष्टाःस्वप्नेनशोभनाः ॥ ८० ॥ शष्कुलीकृसराश्राणांगुडाऽपूपा-दिभक्षणं । गोमयंचोष्यपानीयंस्वप्नेपीतंनशोभनम् ॥ ८१ ॥ रक्तेपुरी-षमूत्रेवास्वपन्मृत्युमवाप्नुयात् । रक्तकृष्णानिवासांसिकृष्णानिचविभ-र्त्तियः ॥८१॥ पितृकार्यंप्रकुर्वाणोम्रियतेसनसंशयः । भूतप्रेतपिशाचा-द्यैःश्वपचैःसहसंगतः ॥८२॥ आहृतोवाथतैर्याम्यांस्वल्पाहैर्म्रियतेतुसः । असूर्यंदिवसंरात्रिंविचंद्रांगततारकाम् ॥ ८३ ॥ वृष्टिंयोऽकालजांपश्ये-त्स्वप्नेसोपिविनश्यति। सीसपित्तलकस्तारकांस्यताम्राज्यसंत्रयः॥८४॥ शुष्कवृक्षौषधंशिल्पीदृष्टाश्वेतेनशोभनाः । प्रासादछत्रभूधराणांशिखरा-णांध्वजस्यच ॥ ८५ ॥

दाढी मूंछ केश आदिकों मूंडावे, नेत्रदूखे या फूटजावे, या कूवा, गर्त, गुफा अंधेरा, छिद्रमें पडजावेतो अशुभहै ॥ ७९ ॥ कमेडी, शिकरा, गीध्र, रींच्छ, कौशिक, कागला, शृगाल, शूशिया, श्वान यह स्वप्नमें देखोतो अशुभहै ॥ ८० ॥ सुहाली, लापसी, गुड, पूडे आदिकाभक्षण, गोमय, गर्मपानीका पीना अशुभहै ॥ ८१ ॥ रक्त, विष्टा, मूत्रमें सोवेतो मृत्युहो, लाल, कालावस्त्र धारनकरे और पितृकार्य करावेतो मृत्यु होवे, भूत प्रेत पिशाच चांडालोंकरकें सहित गमनकरै तोभी मरै ॥ ८२ ॥ अथवा भूत आदिकरकें दक्षिणदिशामें लेजायाजावेतो थोडेही दिनमें मरताहै, दिन सूर्य रहित देखे रात्रि चंद्रतारा रहित देखे ॥ ८३ ॥ ऋतु बिनाकी वर्षा देखे तोभी मरताहै और

सीसा, पीतल, रांग, कांसी, ताम्बा, मूकेवृक्ष औषधी, चेजारा देखेतो अशुभहै महल घर छत्र, पर्वतोंकेटोल ध्वजाकों पडी देखे ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

पतनंशक्रचापस्यनृपराष्ट्रविनाशनम् । तारंकोलाहलाह्वाननिंदाक्रोशादिसंश्रवान् ॥ ८६ ॥ विंद्याद्राजभयंदंष्ट्रिश्रृंगीकीशाद्यभिद्रवान । अथ-दुःस्वप्नदर्शनेशांतिः । दुष्टेत्वालोकितेस्वप्नेनिवेद्यब्राह्मणायच ॥ ८७॥ आशीर्भिस्तोषितोविप्रैःपुनःस्वप्यान्नरेश्वरः । नब्रूयाच्चपुनःस्वप्नंसंस्नाया-त्पुण्यवारिभिः ॥ ८८ ॥ कार्योमृत्युंजयोहोमःशांतिस्वस्त्ययनादिकम् । सेवाऽश्वत्थगवांप्रातर्दानंस्वर्णादिशक्तितः ॥ ८९ ॥ श्रवणंभारतादीनां-स्वप्नदोषनिवृत्तये । बृहस्पतिप्रणीतंचस्वप्नाध्यायंपठेदपि ॥ ९० ॥

इंद्रकाधनुष पडादेखे, नृपराजका नाशहोवे कोलाहलसुने निंदाक्रोश आदिसुने तो देशमें भयहोताहै ॥ ८६ ॥ दंष्ट्रि श्रृंगी वानर आदि भागतेदेखेंतो अशुभहे, इसप्रकार दुष्टस्वप्ना आवेतो ब्राह्मणको कहनाचाहिये ॥८७॥ और ब्राह्मणोंका आशीर्वाद लेकें फिर सोना शुभहै सोके उठनेके अनंतर फिर किसीकों कहना नहिंचाहिये और पवित्रजलसें स्नान करना शुभहै॥८८॥मृत्युंजयमंत्रसें होमकरना स्वस्तिवाचन आदिसें शांतिकराना पीपल गौ आदिकीसेवा करनी शक्तिकेअनुसार सुवर्णका दानदेना॥८९॥ भारतआदिकी कथा सुननी अथवा स्वप्नाध्यायकों पढेतो दुष्टस्वप्न शांतिहोवे ॥९०॥

स्तुतिंचवासुदेवस्यतथातस्यचपूजनम् । गजेंद्रमोक्षश्रवणंज्ञेयंदुःस्वप्न-नाशनम् ॥ ९१ ॥ इतिस्वप्नफलम् । अथ होलिकावातपरिक्षा । पूर्वे-वायौहोलिकायांप्रजाभूपालयोःसुखम् । पलायनंचदुर्भिक्षंदक्षिणेजायते-ध्रुवम् ॥ ९२ ॥ पश्चिमेतृणसंपतिरुत्तरेधान्यसंभवः । यदिखेचशिखावृ-ष्टिर्दुर्गराजाचसश्रयेत् ॥९३॥ नैर्ऋत्यांचैवदुर्भिक्षंईशान्यांतुसुभिक्षकम्। अग्नेर्भीतिरथाग्नेय्यांवायव्यांबहवोऽनलाः ॥९४॥ अथहोलिकानिर्णयः। प्रतिपद्भूत १।१४ भद्रासुयार्चिताहोलिकादिवा । संवत्सरंतुतद्राष्ट्रंपुरं-दहतिसाद्भुतम् ॥ ९५ ॥ प्रदोषव्यापिनीग्राह्यापौर्णिमाफाल्गुनीसदा । तस्यांभद्रामुखंत्यक्त्वापूज्याहोलानिशामुखे ॥ ९६ ॥

विष्णुभगवानकी स्तुतिपूजनकरे और गजेंद्रमोक्षको श्रवणकरेतो दुष्ट स्वप्नका-दोष शांतिहोवे ॥ ९१ ॥ इतिस्वप्नफलम् (होलीके वायुका फल) होलीदीपनके समयमें पूर्वकीवायु चलेतो प्रजा, राजाके सुखहोवे, और दक्षिणकी वायु होवेतो भागड पडे, या दुर्भिक्षपडै ॥ ९२ ॥ पश्चिमकी होवेतो तृण बहुतहोवे, उत्तरकी चलेतो अन्न

बहुतहोवे और आकाशमें होलीकीलटा जावेतो वर्षाहोवे और राजाको किल्लेका आसरा लेनाचाहिये कारण शत्रुका भयहोवेगा ॥ ९३ ॥ नैर्ऋत्यकोणकीवायु होवेतो दुर्भिक्षपडे, ईशानकी होवेतो सुभिक्षहोवे, अग्निकोणकी वायु होवेतो अग्निकाभय होवे और वायुकोणकी वायु होवेतो संवतभरमें पवन बहुतचलै ॥ ९४ ॥ यदिहोलिका प्रतिपदा चतुर्दशी भद्राको जलाई जावेतो वरसभर राज्यको और पुरको दग्धकरतीहै ॥ ९५ ॥ फाल्गुनसुदी पूर्णिमा प्रदोषकालव्यापनी लेणीचाहिये यदि उस समयमें भद्रा होवेतो भद्राके मुखकी घडीत्यागके प्रदोषमेंहीं होलीपूजनी जलानी शुभहै॥९६॥

अथवारप्रवृत्तिकस्यविचारः ॥ दिनमानंचरात्र्यर्द्धबाणेंदुना १५समन्वितम् । दिनप्रवृत्तिर्विज्ञेयंगर्गलल्लादिभाषितम् ॥ ९७ ॥ (ग्रंथालंकार) श्रीरामकृष्णपौत्रेणकस्तूरिचंद्रसूनुना । मयाचतुर्थिलालेनकृतोयंसारसंग्रहः ॥ ९८ ॥ अनेनप्रीयतांशंभुर्भवान्यासहसर्वदा । भवन्तुसुप्रसन्नाश्चदैवज्ञागुणसूचकाः ॥ ९९ ॥ बाणबाणाङ्कचंद्रेब्दे १९५५ विक्रमादित्यसंज्ञके । श्रावणेशुक्लपंचम्यांग्रंथःपूर्णोऽभवच्छिवः ॥ १०० ॥ शम् ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजक्षत्रीयकुलार्कमरुदेशाधिपतिश्रीगंगासिंहवर्मणोबीकानेरराज्यान्तर्गतश्रीरत्नगढनगरनिवासिनाश्रीवसिष्ठगोत्रोद्भवेनश्रीरामकृष्णअमरचंद्रपौत्रेणश्रीकस्तूरिचंद्रचतुर्भुजसूनुनाश्रीमहादेवभक्तमाध्यंदिनबाजसनेयिनापण्डितगौडवैद्यश्रीचतुर्थिलाल(चौथमल) शर्मणाविरचितेमुहूर्त्तप्रकाशे । अद्भुतग्रंथेमिश्रितप्रकरणंनवमं समाप्तम् ॥ ९ ॥ ॥ छ ॥

(वारप्रवृत्तिका विचार) दिनमानकी संपूर्णघडी और रात्रिमानसेआधीघडी मिलाके पंदरह फेर मिलावे और संपूर्णघडी जितनीहोवे उतनी घडियोंके अनंतर वार लगताहै यह गर्गलल्लाआदि आचार्योंका मतहै ॥ ९७ ॥ (ग्रंथकर्ताका वंशवर्णन,) श्रीरामकृष्णजीकापौत्र और श्रीकस्तूरीचंद्रजीका पुत्र श्रीचतुर्थिलालनाम पंडितमैं हूंसो यह ज्योतिषके सारसारकासंग्रह कियाहूं ॥ ९८ ॥ सो इस ग्रंथकरकें भवानीपार्वतीसहित श्रीमहादेवजी प्रसन्नहोवो और गुणके जाननेवाले ज्योतिषीलोगभी प्रसन्नहोवो ॥९९॥ विक्रमादित्यके संवत् १९५५ में और श्रावणशुक्ल ५ में यह ग्रंथ आनंद पूर्वक समाप्तहुवा ॥१००॥ इतिश्री रत्नगढ निवासिना पंडित गौड श्रीचतुर्थिलाल (चौथमल)शर्मणाविरचिते मुहूर्त्तप्रकाशे मिश्रप्रकरणं नवमं समाप्तम्।समाप्तश्च यंभाषाभावार्थः

॥ श्री ॥

मुहूर्त्तप्रकाशः

(उत्तरार्द्धः)

अपरनाम

श्रीचतुर्थीलालप्रकाशः

वसिष्ठ, गर्ग, नारद, पराशर, भृगु, बृहस्पति, कश्यपादि महर्षिप्रणीत संहि-
ताभ्यो राजमार्तंडादि प्राचीन निबंधेभ्यश्च सारमादाय लोकोपकारार्थं
बालबोधार्थं च

श्रीमन्महाराजाधिराज क्षत्रीयकुलार्क मरुदेशाधिपति श्रीगंगासिंहवर्मण·
श्रीबीकानेर विषयान्तर्गत श्रीरत्नगढनिवासिना गौडवंशावतंस पंडित
वैद्य श्रीचतुर्थीलाल (चौथमल) शर्मणा संग्रहीतः भाषाटीकया-
समलंकृतश्च-

सोयम्

पंडित श्रीधर शिवलालात्मज श्रीकृष्णलाल शर्मणा

मुंबय्याम्

स्वकीये 'श्रीज्ञानसागर' मुद्रालयेङ्कित्वा

प्रसिद्धिंनीतः

संवत् १९५६

अथ प्रभवादि षष्टि संवत्सरचक्रम्. पृ १ श्लो २

प्रभव १	विभव २	शुक्ल ३	प्रमोद ४	प्रजापति ५	अंगिरा ६	श्रीमुख ७	भाव ८	युवा ९	धाता १०	ईश्वर ११	बहुधान्य १२	प्रमाथी १३	विक्रम १४	वृष १५	चित्रभानु १६	सुभानु १७	तारण १८	पार्थिव १९	अव्यय २०	ब्रह्मविंशति
सर्वजित् २१	सर्वधारी २२	विरोधी २३	विकृति २४	खर २५	नंदन २६	विजय २७	जय २८	मन्मथ २९	दुर्मुख ३०	हेमलंबी ३१	विलंबी ३२	विकारी ३३	शार्वरी ३४	प्लव ३५	शुभकृत् ३६	शोभकृत् ३७	क्रोधी ३८	विश्वावसु ३९	पराभव ४०	विष्णुविंशति
प्लवग ४१	कीलक ४२	सौम्य ४३	साधारण ४४	विरोधकृत् ४५	परिधावी ४६	प्रमादी ४७	आनंद ४८	राक्षस ४९	अनल ५०	पिंगल ५१	कालयुक्त ५२	सिद्धार्थी ५३	रौद्र ५४	दुर्मति ५५	दुंदुभि ५६	रुधिरोद्गारी ५७	रक्ताक्षी ५८	क्रोधन ५९	क्षय ६०	रुद्रविंशति

अथ मासर्त्तुचक्रम्. पृ २ श्लो ५

चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	मासाः
मधु	माधव	शुक्र	शुचि	नभ	नभस्य	इष	ऊर्ज	सह	सहस्य	तपस	तपस्य	माससंज्ञा
वसंत		ग्रीष्म		वर्षा		शरत्		हेमंत		शिशिर		ऋतवः
मारुत		अग्नि		इद्र		विश्वेदेव		प्रजापति		सोम		ऋत्वधिपतयः

अथ तिथिवारचक्रम्. पृ २ श्लो १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	तिथयः
वन्हि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	सर्प	स्कद	रवि	शिव	दुर्गा	यम	विश्वेदेवा	हरि	काम	शिव	चद्र	तिथीशाः

सूर्य	चद्र	भौम	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनैश्चर	वाराः
शिव	दुर्गा	स्कद	विष्णु	ब्रह्मा	इद्र	काल	वाराधिपतयः
स्थिर	चर	उग्र	मिश्र	लघु	मृदु	तीक्ष्ण	संज्ञा

अथ नक्षत्रज्ञानचक्रम्. पृ ३ श्लो. १९

संख्या	नक्षत्रनामा	शुभाशुभसंज्ञा	नक्षत्रस्वामि	मुखसंज्ञा	संज्ञा	संज्ञा	संज्ञा	तारा
१	अश्विनी	शुभद	अश्विकुमार	तिर्यमुख	लघु	क्षिप्र	मदलोचन	३
२	भरणी	नाशक	यम	अधोमुख	उग्र	क्रूर	मध्याक्ष	३
३	कृत्तिका	कार्यनाश	अग्नि	अधोमुख	मिश्र	साधारण	सुलोच	६
४	रोहिणी	सिद्धि	ब्राह्म	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	अधलो	५
५	मृगशिर	शुभ	चंद्र	तिर्यमु	मृदु	मैत्र	मदलो.	३
६	आर्द्रा	शुभ	रुद्र	ऊर्ध्वमु	तिक्ष्ण	दारुण	मध्यलो	१
७	पुनर्वसु	मध्य	अदिति	तिर्यमु	चर	चल	सुलोच	४
८	पुष्य	शुभ	गुरु	ऊर्ध्वमु	लघु	क्षिप्र	अधलो.	३
९	आश्लेषा	शोक	सर्प	अधोमु	तीक्ष्ण	दारुण	मदलो	५
१०	मघा	नाशक	पितर	अधोमु	उग्र	क्रूर	मध्यलो	५
११	पूर्वाफा०	मृत्युप्रद	भग	अधोमु	उग्र	क्रूर	सुलोच	२
१२	उत्तराफा०	विद्याप्रद	अर्यमा	ऊर्ध्वमु	ध्रुव	स्थिर	अधलो.	२
१३	हस्त	लक्ष्मी	सूर्य	तिर्यमु	क्षिप्र	लघु	मदलो	५
१४	चित्रा	शुभदा	त्वष्टा	तिर्यमु	मृदु	मैत्र	मध्यलो	१
१५	स्वाती	अशुभ	वायु	तिर्यमु	चर	चल	सुलोच	१
१६	विशाखा	अशुभ	इंद्राग्नि	अधोमु	मिश्र	साधारण	अधलो	४
१७	अनुराधा	सर्वसिद्धि	मित्र	तिर्यमु	मृदु	मैत्र	मदलो	४
१८	ज्येष्ठा	क्षयप्रद	इंद्र	तिर्यमु	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो	३
१९	मूळ	हानीप्रद	राक्षस	अधोमु	तीक्ष्ण	दारुण	सुलोच	११
२०	पूर्वाषाढा	हानी	उदक	अधोमु	उग्र	क्रूर	अधलो	२
२१	उत्तराषाढा	वृद्धिद	विश्वेदेव	ऊर्ध्वमु	ध्रुव	स्थिर	मंदलो	२
२२	अभिजित्	सिद्धिद	विधि	ऊर्ध्वमु.	लघु	क्षिप्र	मध्यलो.	३
२३	श्रवण	स्फरद	विष्णु	ऊर्ध्वमु	चर	चल	सुलोच	३
२४	धनिष्ठा	शुभदा	वसु	ऊर्ध्वमु	चर	चल	अंधलो.	४
२५	शतभिषा	कल्याण	वरुण	ऊर्ध्वमु.	चर	चल	मंदलोच.	१००
२६	पूर्वाभाद्र.	मृत्युदा	अजपात्	अधोमु	उग्र	क्रूर	मध्यलो.	२
२७	उत्तराभा.	लक्ष्मी	अहिर्बुध्न्य	ऊर्ध्वमु	ध्रुव	स्थिर	सुलोच	२
२८	रेवती	कामदा	पूषा.	तिर्यमु.	मृदु	मैत्र	अंधलो.	३२

योगचक्रम् पृ ५ श्लो. ३७

विष्क-भ १	प्रीति २	आयुष्मान् ३	सौभाग्य ४	शोभन ५	अतिगड ६	सुकर्मा ७	धृति ८	शूल ९	गड १०	वृद्धि ११	ध्रुव १२	व्याघात १३	हर्षण १४
वज्र १५	सिद्धि १६	व्यतीपात १७	वरियान् १८	परिघ १९	शिव २०	सिद्धि २१	साध्य २२	शुभ २३	शुक्ल २४	ब्रह्मा २५	ऐंद्र २६	वैधृति २७	योग नामा

अथ करणज्ञानचक्रम्- पृ ६ श्लो. ४०

शुक्लतिथि				कृष्णतिथि				नाम	स्वामी
पूर्वदल		उत्तरदल		पूर्वदल		उत्तरदल			
१	स्थि	र	०	०	०	०	०	किंस्तुघ्न	वायु
५	८	१	१५	४	११	७	०	बव	इंद्र
२	१२ ९	५	१२	१	८	४	११	बालव	ब्रह्मा
६	१२	२	९	५	१२	१	८	कौलव	मित्र
३	१०	६	१३	२	९	५	१२	तैतिल	सूर्य
७	१४	३	१०	६	१३	२	९	गर	भूमि
४	११	७	१४	३	१०	६	१३	वणिज	लक्ष्मी
८	१५	४	११	७	१४	३	१०	विष्टि भद्रा	यम
स्थिर	·		·	·	·	·	१४	शकुनी	कलि
स्थिर			·	३०	·			चतुष्पद	बैल
स्थिर	·	·		·			३०	नाग	सर्प

भद्राअंगविभागफलचक्रम्. पृ ६ श्लो ५२

घडी	५	१	११	४	६	३
अंग	मुख	गल	वक्ष	नाभि	कटी	पुच्छ
फल	हानी	मृत्यु	दरिद्र	उन्मत्तता	नाश	जय

भद्रायाःपुच्छघटीचक्रम्. पृ ६ श्लो ६१

तिथि	४	८	११	१५	३	७	१०	१४
प्रहर	८	१	६	३	७	२	५	४
घटी	३	३	३	३	३	३	३	३

अथदिवारात्रौ पंचदश मुहूर्त्तचक्रम्. पृ. ८ श्लो ६०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	दिवामुहूर्ता
शिव	सर्प	मित्र	पितृ	वसु	जल	विश्वेदेव	विधि	वेधा	इन्द्र	इन्द्राग्नि	राक्षस	वरुण	अर्यमा	भग	देवता.
आर्द्रा	ऽश्लेषा	अनुराधा	मघा	धनिष्ठा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	अभिजित्	रोहिणी	ज्येष्ठा	विशाखा	मूल	शतभिषा	उत्तराफाल्गु	पूर्वाफाल्गु	नक्षत्राणि
रुद्र	अजैकपाद	अहिर्बुध्न्य	पूषा	दस्र	यम	अग्नि	ब्रह्मा	चद्र	अदिति	गुरु	विष्णु	सूर्य	त्वष्टा	वायु	रात्रिमुहूर्ता.
आर्द्रा	पूर्वाभाद्र	उत्तराभाद्र	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	पुनर्वसु	पुष्य	श्रवण	हस्त	चित्रा	स्वाती	नक्षत्राणि

सूर्यादिवारेषुत्याज्य मुहूर्त्तानांचक्रम्. पृ ९ श्लो ६५

रवि	चद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनैश्चर	वारा
अर्यमा	ब्रह्मा राक्षस	पितृ अग्नि	अभिजित्	राक्षस अंबु	पितृ ब्रह्मा	शिव सर्प	मुहूर्तानि
उत्तराफाल्गुनी	रो मू	म कृ.	अभिजित्	मू. पू. षा	म. रो	आर्द्रा आश्लेषा	नक्षत्राणि
दिवसे १४	दि ९।१२ रात्री ८	दि ४ रा ७	दि ८ रा ८	दि १२ रा ६	दि. ४।८ रा ९	दि. ११२ रा १	काला.

अथदिनरात्रिविभागेन पौराणिकमुहूर्त्तचक्रम्. पृ.९ श्लो ६७

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	दिवामुहूर्तानि
रौद्र	चैत्र	सित	मैत्र	सावित्र	वैराज	गाधर्व	अभिजित्	रौहिण	बल	विजय	नैर्ऋत	इद्र	जलेश्वर	भग	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	रात्रिमुहूर्तानि
रौद्र	गंधर्व	यक्षेश	अरुण	मारुत	अनल	राक्षस	धाता	सौम्य	पद्मज	वाक्पति.	पूषा	हरि	वायु	निर्ऋति	

आनंदादियोगचक्रम् पृ १ श्लो॰ ७२

वार	शनि	शुक्र	बृहस्पति	बुध	मंगल	चंद्र	रवि
योग	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र
आनंद	श	उषा	अनु	ह	आश्ले	मृ	अ
कालदंड	पू	अ	ज्ये	चि	म	आ	भ
धूम्राक्ष	उ	श्र	मू	स्वा	पू	पु	कृ
प्रजा	रे	ध	पू	वि	उ	पु	रो
सौम्य	अ	श	उ	अ	ह	आश्ले	मृ
ध्वांक्ष	भ	पू	अ	ज्ये	चि	म	आ
ध्वज	कृ	उ	श्र	मू	स्वा	पू	पु
श्रीवत्स	रो	रे	ध	पू	वि	उ	पु
वज्र	मृ	अ	श	उ	अनु	ह	आ
मुद्गर	आ	भ	पू	अ	ज्ये	चि	म
छत्र	पु	कृ	उ	श्र	मू	स्वा	पू
मैत्र	पु	रो	रे	ध	पू	चि	उ
मानस	आश्ले	मृ	अ	श	उ	अ	ह
पद्माक्ष	म	आ	भ	पू	अ	ज्ये	चि
लुंबक	पू	पु	कृ	उ	श्र	मू	स्वा
उत्पात	उ	पु	रो	रे	ध	पू	वि
मृत्यु	ह	आश्ले	मृ	अ	श	उ	अ
काण	चि	म	आ	भ	पू	अ	ज्ये
सिद्धि	स्वा	पू	पु	कृ	उ	श्र	मू
शुभ	वि	उ	पु	रो	रे	ध	पू
अमृत	अनु	ह	आश्ले	मृ	अ	श	उ
मुसल	ज्ये	चि	म	आ	भ	पू	अ
गद	मू	स्वा	पू	पु	कृ	उ	श्र
मातंग	पू	चि	उ	पु	रो	रे	ध
राक्षस	उ	अ	ह	आश्ले	मृ	अ	श
चर	अ	ज्ये	चि	म	आ	भ	पू
स्थिर	श्र	मू	स्वा	पू	पु	कृ	उ
प्रवर्द्धमान	ध	पू	वि	उ	पु	रो	रे

राशिज्ञानचक्रम्. पृ ११

मेष १	वृषभ २	मिथुन ३	कर्क ४	सिंह ५	कन्या ६	तुल ७	वृश्चिक ८	धन ९	मकर १०	कुंभ ११	मीन १२	राशि
पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	सज्ञा
क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौ	क्रूर	सौ	क्रूर	सौ	क्रूर	सौ	क्रू॰सं
चर	स्थिर	द्विस्व-भाव	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व	च स

अवकहडाचक्रम्. पृ १२

चुचेचोळा अश्विनी	लीलुलेलो भरणी	आईउए कृत्तिका	ओवावीवु रोहिणी	वेवोकाकी मृगशिर	कूघङछ आर्द्रा	केकोहाही पुनर्वसु
हुहेहोडा पुष्य	डीडुडेडो आश्लेषा	मामीमुमे मघा	मोटाटिटु पूर्वाफा	टेटोपापी उत्तराफा	पूषणठ हस्त	पेपोरारी चित्रा
रूरेरोता स्वाती	तितूतेतो विशाखा	नानीनुने अनुराधा	नोयायियू ज्येष्ठा	येयोभाभि मूल	भुधाफाढा पूर्वाषाढा	भेभोजाजी उत्तराषाढा
जूजेजोखा अभिजित्	खिखूखेखो श्रवण	गगीगूगे धनिष्ठा	गोसासिसू शततारका	सेसोददि पूर्वाभाद्रप	दूथझञ उत्तराभाद्र	देदोचची रेवती

अथनामतोराशिज्ञानचक्रम्. पृ. १३

मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन	राशि
चू	ई	क	ह्रि	मा	टो	रा	तो	ये	भो	गू	दी	०
चे	उ	कि	हू	मि	पा	री	ना	यो	जा	गे	दू	०
चो	ए	कू	हे	मू	पी	रू	नी	भा	जी	गो	थ	०
ला	ओ	घ	हो	मे	पू	रे	नू	भी	खी	सा	झ	०
ली	वा	ङ.	डा	मो	ष	रो	ने	भू	खू	सी	ञ	०
लु	वी	छ	डी	टा	ण	ता	ना	धा	खे	सू	दे	०
ले	वु	के	डू	टी	ढ	ती	या	फा	खो	से	दो	०
लो	वे	को	डे	टू	पे	तू	यी	ठा	गा	सो	च	०
अ	वो	ह	डो	टे	पो	ते	यू	भे	गी	द	ची	०

अथग्रहाणामुच्चादिज्ञानचक्रम्. पृ १३ श्लो. ९९

रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रहा.
१	२	१०	६	४	१२	७	उच्चराशयः
७	८	४	१२	१०	६	१	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	परमोच्चांशाः
५	२	१	६	९	७	११	मूलत्रिकोणराशयः

अथहोराचक्रम्. पृ. १५

ल.	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तूल	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन	राशि
अं. १५	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	च	सू	चं	सू	चं	चंद्र
अं. ३०	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	सूर्य

अथ द्रेष्काणचक्रम्. पृ. १५

	मेष	वृष.	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१ अंश १०	मं १	शु २	बु ३	च ४	सू ५	बु ६	शु ७	म ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२
२ अंश १०	सू ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	वृ १२	मं १	शु २	बु ३	च ४
३ अंश १०	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	चं ६	शु ७	मं ८

अथ नवांशचक्रम्. पृ. १५

·	·	मे	वृ.	मि.	क.	सिं.	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी.
३	२०	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४
६	४०	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५
१०	०	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६
१३	२०	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७
१६	४०	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८
२०	०	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९
२३	२०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०
२६	४०	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११
३०	०	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२

अथ द्वादशांशकथनम्. पृ. १५

अंश	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
२ ३०	म	शु	बु	च	सू	बु	शु	म	गु	श	श	गु
५ ०	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं
७ ३०	बु	च	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु
१० ०	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु
१२ ३०	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	च
१५ ०	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू
१७ ३०	शु	म	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु
२० ०	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु
२२ ३०	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं
२५ ०	श	श	गु	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं	गु
२७ ३०	श	गु	म	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं	गु	श
३० ०	गु	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं	गु	श	श

अथ केंद्रादिज्ञानचक्रम्. पृ. १७

केंद्र	१	४	७	१०
पणफर	२	५	८	११
आपोक्लीम	३	६	९	१२
उपचय	३	१०	११	६

अथ दृष्टिज्ञानचक्रम्. पृ. १७

ग्रहाः	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	०
स्थान	७	७	७ ४ ८	७	७ ५ ९.	७	७ ३ १०	पूर्ण दृष्टि
.	४ ८	४ ८	.	४ ८	४ ८	४ ८	४ ८	त्रिपाद
.	९ ५	९ ५	९ ५	९ ५	.	९ ५	९ ५	द्विपाद
.	३ १०	३ १०	३ १०	३ १०	३ १०	३ १०	.	एक पाद

इति संज्ञाप्रकरणस्थ विषयाणांचक्राणि.

अथ त्याज्यप्रकरण विषयचक्राणि. पृ १८ श्लो १

अथ पक्षरंध्रतिथिचक्रम्.

पक्षरंध्रास्तिथयः	१४	४	८	९	६	१२
वर्ज्यघटिका	५	८	१४	२४	९	१०

अथ संक्रांतेस्त्याज्यघटिकाचक्रम्

ग्रहाः	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
घटी	३३	२	९	६	८८	९	१६०

अथ विरुद्धयोगानांत्याज्यघटीचक्रम्. पृ. २२ श्लो. २९

योगाः	वैधृति	व्यतीपात	वज्र	विष्कंभ	परिघ	शूल	व्याघात	गंड	अतिगंड	ध्वांक्ष	मुद्गर.	
त्याज्यघटिकाः	६०	६१	३	३	३०	५	९	६	६	५	५	
योगाः	काण	मुसल	पद्म	लुंब	धूम्र	गद	चर	मृत्यु	काल	उत्पात	राक्षस	कुंभघट
त्याज्यघटिकाः	२	२	४	४	१	७	३	६० १५	६० १५	६० १५	६० १५	८

अथ षडशीति मुखादिसंज्ञाचक्रम्.

षडशीतिमुख	धन	मिथुन	कन्या	मीन	संक्रांति
विषुव	तुल	मेष	.	.	सं.
विष्णुपद.	सिंह	वृश्चिक	वृष	कुंभ	सं.

इति त्याज्यप्रकरणस्थचक्राणि.

अथ गोचर प्रकरण चक्राणि.

अथ ताराज्ञानचक्रम्. पृ २९ श्लो २१

जन्मनक्षत्रात्तारा नामानि.	जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मैत्र	अतिमैत्र
तारा वर्जित कर्म	यात्रा	शुभ	अशुभ	शुभ	अशु	शु.	अशु.	शु	शु
शुभाशुभसंज्ञा	युद्ध	शुभ	अशु.	शुभ	अशु	शुभ	अशु	शु.	शु
	विवाह	शुभ	अशु	शुभ	अशु.	शु.	अशु.	शु	शु.
	क्षौर चौल	शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	शु	अशु	शु	शु
	गृहप्रवेश	शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	शु.	अशु	शु.	शु.
तारास्कदानम्	शाक १	शाक २	गुड ३	लवण ४	लवण ५	लवण ६	स्वर्णतिल ७	लवण ८	लवण ९
तारासंख्या	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
नक्षत्रतारासंख्या	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७

अथ नक्षत्रवशेन शनैश्वरचक्रम्. पृ ३० श्लो ३४

शनिनक्षत्रात् नाम नक्षत्रपर्यंत	१	४	३	३	४	५	३	२	२
अङ्ग	मुख	दक्षिण हस्त	पाद	पाद	वामहस्त	हृत्	मस्तक	नेत्र	गुह्य
फल	हानी	लाभ	पर्यटन	पर्यटन	रोग	श्री	राज्य	सुख	मृत्यु

अथ शनैश्वरणज्ञानचक्रम् पृ ३१ श्लो ४१

जन्मराशी सकाशाच्छनिचरण	सुवर्णपादं	रजतपादं	ताम्रपादं	लोहपादं.
संख्या	१।६।११	२।५।९	३।७।१०	४।८।१२
फल	सुखं	सौभाग्यं	समता	धननाश

अथ शनैश्वर वाहनचक्रम् पृ. ३२ श्लो ४३

जन्मराशीः सकाशात्	१	४	६	५	७	३	८	२
वाहन.	छाग	अश्व	खर	गज	महिष	अश्व	वृष	वायस
फल.	हानि	वैर	भय	श्रम	धन	मान	सौख्य	रोग

अथ गोचरे तन्वादिद्वादशभावस्थसूर्यादीनां फलम्. पृ ३२ श्लो ४६										
नांव.	सू.	चं	मं.	बु.	बृ.	शु	श	रा.	के.	ग्रहाः
तनु १	स्थान नाश	अन्न प्राप्ती	शत्रु भय	बंधन	भय	शत्रुना.	सर्व नाश	हानि	रोग	तनु १
धन २	भय	धन	धन नाश	धन प्राप्ति	धनप्रा.	धनप्रा.	वित्त नाश	धन लाभ	वैर	धन २
सहज ३	लक्ष्मी	सुख	धनप्रा	भीति	क्लेश	सौख्य	धन लाभ	धन प्राप्ति	सुख	सहज ३
सुहृत् ४	मान हानि	रोग	भय	धन प्रा	धन नाश	धन प्रा.	शत्रु वृद्धि	वैर	भय	सुहृत् ४
सुत ५	दैन्यं	कार्य ना.	अर्थ प्राप्ति	रोग	सुख	पुत्र प्रा	स्रुत प्रा.	शुचि	शुचि ष्मता	सुत ५
रिपु ६	विजय	लक्ष्मी	लाभ	स्थान ला	शुचि ष्म	रिपु भय	धन प्रा	लक्ष्मी	धन प्राप्ति	रिपु ६
जाया ७	मार्ग	लक्ष्मी	खर्च	पीडा	मान	भय	दोष	कलह	मार्ग	जाया ७
मृत्यु ८	पीडा	मृत्यु	शत्रु भय	अप्राप्ति	रोग	शोक	रिपु	धनला.	रोग	मृत्यु ८
धर्म ९	पुण्य नाश	राज भय	पीडा	रोग	सुख	धन प्रा.	धन नाश	पाप कर्म	दुष्ट कर्म	धर्म ९
कर्म १०	सिद्धि	सुख	शोक	सौख्य	दैन्य	महाव.	अस्वस्थ	वैर	शोक	कर्म १०
आय ११	लाभ	लाभ	धन प्राप्ति	सौख्य	लाभ	विपत्ति	धनप्राप्ति	सौख्य	कीर्ति	आय ११
व्यय १२	हानि	व्यय	हानि	नाश	पीडा	धनप्रा.	धन नाश	शुचि	शत्रु नाश	व्यय १२

अथ दानकालचक्रम्. पृ. ३४ श्लो. ५८									
ग्रहाः	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
दान कालः	सूर्योदये	संध्या समये	घ. २ दिनचडे	घ. ५ दिनचडे	संध्या	सूर्योदये	मध्याह्न	रात्रि	रात्रि

अथसूर्यादिग्रहाणांदानानि. पृ ३४ श्लो. ६०

	रवि	चद्र	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
	मणि रक्त	वंश पात्र	मुँगा	नील वस्त्र	शर्करा	चित्र वस्त्र	माष	गोमेद	वैडूर्य
	गोधूम	चावल	गोहूं	सुवर्ण	हरिद्रा	श्वेत अश्व	तेल	अश्व	रत्न
	गौ	कर्पूर	मसूर	कांस्य पात्र	अश्व	धेनु	नील मणि	नील वस्त्र	तिल
	कौसुंभ वस्त्र	मोती	रक्त वृष	मुद्ग	पीत धान्य	हीरा	तिल	नीलकं बल	तैल
	गुड	श्वेत वस्त्र	गुड	घृत	पीत वस्त्र	रजत	कुलित्थ	तिल	कंबल
	सुवर्ण	शंख	सुवर्ण	गरुत्म-	पुषरा-ज	सुवर्ण	महिषी	तेल	कस्तूरी
	ताम्र	श्वेत वृष	रक्त वस्त्र	पुष्प	सिंधो लवण	चावल	लोह	लोह	शस्त्र
	रक्त चंदन	रजत	कनीर पुष्प	हस्ति दंत	सुवर्ण	चंदन	कृष्णा धेनु	०	छाग
	रक्तक मल	घृतकुं भ	ताम्र	हस्ति					
जप	७०००	११०००	१००००	८०००	१९०००	११०००	२३०००	१८०००	७०००
कलौ	२८०००	४४०००	४००००	३२०००	७६०००	४४०००	९२०००	७२०००	२८०००
साधारण दानम्.	तांबूल	चंद्रन	ब्राह्मण भोजन	शास्त्र मंत्र	शिव पूजा	श्वेत वस्त्र	तैला-भ्यग	विप्र पूजा	विप्र पूजा
रत्नधार णम्	मुँगा	रजत	मुँगा	सुवर्ण	मोती	रजत	लोह	लाजा वर्त	लाजा वर्त

अथजन्मराशेःसकाशात् ग्रहणफलम्. पृ ३६ श्लो. ७४

राशि						
अशुभफल	१	७	८	१२	९	१०

इति गोचरप्रकरणस्थविषयाणांचक्राणि.

अथस्त्रीणांरक्तवस्त्रस्वर्णचूडाधारणमुहूर्त्तचक्रम्. पृ. ३७ श्लो. २

ग्राह्यनक्षत्राणि.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	रे	अश्विनी	धनिष्ठा	भौमवार	आदित्य	गुरुवार	शुक्र
त्याज्यनक्षत्रादि	रो	उ. फा	उ. षा.	उ. भा	पुष्य	पुनर्वसू	बुध	शनि	सोम	रिक्ता	अमावास्या	भद्रा
चूडी चक्रम्.	३	५	३	४	७	२	१	२	१	.	.	.
सूर्यनक्षत्रात्	सू	मं	शु	बु	रा	श	बृ	चं	के			
फलम्.	अ.	अ	शुभ	शु	अशु	अशु.	शु	शु	अ			

अथखड्गचक्रम्. पृ. ३९ श्लो. १३

सूर्यनक्षत्रात्	४	८	८	३	४	नक्षत्रादिखड्गायाः
अंग	मस्तक	कोण	शाखा	मध्ये	पादयो.	रो. उ. ह. पु. पुन. अनु. अश्विनी
फल	शुभ	मृत्यु	शुभ	शुभ	हानी	शुभयोग. शुभचार

अथनवीनभोजनपात्रमुहूर्त्तचक्रम्. पृ ३९ श्लो. १७

नक्षत्रादि	रो.	मृ.	ह. चि. स्वा.	रेव. अश्वि.	श्र. ध. श.	पुष्य पुनर्व.	अनु. उत्तरा ३	बुधवार शुक्र.	बृहस्पति अमृतयोग.
सूर्यनक्षत्रात्	२	२	२	२	२	२	२	२	११
फल	बंधन	सौख्य	हानी	लाभ	सौख्य	मृत्यु	पुत्र	आयु	शोक

अथविद्यारंभचक्रम्. पृ. ४१ श्लो. २२

नक्षत्राणि.	ह.	चि.	स्वा	मू.	पू.	रे	अश्वि	अनु	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले.
	श्र	ध.	श.	गुरुवार	शुक्रवार	आदित्य	.	.	.	.	.	.	.

अथअश्वचक्रम् पृ. ४२ श्लो. ४५

सूर्यभात्	५	१०	२	४	५	२
अंग	स्कंधे	पृष्ठे	पुच्छे	चतुष्पादे	उदरे	मुखे.
फलं	लक्ष्मी	अर्थसिद्धि	स्त्रीनाश	रणेभंग	वाजीनाश	अर्थलाभ

अथविपणिवाणिज्यमुहूर्त्तचक्रम्. पृ. ४४ श्लो. ६१

नक्षत्राणि	अनु	उत्तरा	पुष्य	रेवती	रोहिणी	मृग	हस्त	चित्रा
•	अश्वि.	लग्ने च शु	शुभवार					

अथहलप्रवाहमुहूर्त्तचक्रम् पृ ४५ श्लो ६७

ग्राह्यनक्षत्राणि	अनु. ज्ये.	मू. पू षा	म पु ह पु	स्वा श्र रो.	मृ. रे उ. फा	उ षा	उत्तरा भाद्र	
लग्न	२	३	६	१२	त्याज्य वार	शनि	मगल	
त्याज्य तिथि	६	४	९	१४	१२	२	३०	१५
				•				

सूर्यभात्हलचक्रम् पृ ४५ श्लो ६९

नक्षत्र	३	३	३	५
फल	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि
नक्षत्र	३	५	३	२
फल	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि

सूर्यभात्गोमयपिंडचक्रं पृ ४५ श्लो ७१

नक्षत्र	६	६	४	८	४
फल	शु.	अ	शु	अ	शु

सूर्यभात्गोमयपिंडसंचयचक्रं द्वितीयप्रकारेण.

नक्षत्र	६	२	४	४	४	४	४
फल.	रस पाक	शव दाह	सर्प भय	सुहृद् सगम	रोग	भय	सुख

अथसूर्यभात्होमेखेटाहुतिफलचक्रम् पृ ४७ श्लो ८१

नक्षत्राणि	सू ३	चं ३	शु ३	श ३	च. ३	म ३	गु ३	रा. ३	के ३
फल	अ	शु	शु	अ	शु	अ	शु	अ	अ

अथरोगोत्पत्तौनक्षत्रवशात्पीडादिनसंख्याचक्रम् पृ. ४८ श्लो ९३

नक्षत्र.	अश्विनी	कृत्तिका	मूल	रो.	उ. भा	पुनर्वसु	पुष्य	उत्त फा	मघा	शत.	भरणी	चित्रा
पीडादिनसंख्या	९	९	९	७	७	७	७	७	२०	११	११	११
नक्षत्र	श्रव	धनि	विशा स्वा	हस्त	मृग	उ षा	रे	अनु.	पूर्वा ३	श्ले षा	ज्येष्ठा आर्द्रा	स्वा.
पीडादिनसंख्या	११	१५	१५	१५	३०	३०	कृच्छ्रं	कृच्छ्रं	मृत्यु	मृत्यु	मृत्यु	मृत्यु

अथग्रामवासचक्रम्.					अथसेवाचक्रम्.				
ग्रामनक्षत्रात्	७ मस्तके	७ पृष्ठे	७ हृदि	७ पादे	स्वामिभात्	७ मस्तक	७ पृष्ठ	७ कुक्षि	७ पाद
फल	धनी मान्य	हीन निर्धन	सुख संपत्ति	पर्यटन	फल	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

इतिनानामुहूर्त्तप्रकरणविषयाणांचक्राणि.

अथमूलनक्षत्रजननेफलं					ज्येष्ठायाश्चरणफलं					अश्लेषायाश्चरणफलं.				
पाद	१	२	३	४	पाद	१	२	३	४	पाद	१	२	३	४
फल	तात मरण	जननी नाश	धन नाश	शुभ	फल	ज्येष्ठ भ्रातर	कनिष्ठ नाश	जननी	आत्मान	फल	राज्य प्राप्ति	धन नाश	जननी नाश	पितृ नाश

अथाश्विनीमघामूलरेवतीज्येष्ठाश्लेषानांचरणफलं.

नक्षत्र	अश्विनी	मघा	मूल	रेवती	ज्येष्ठा	अश्लेषा
चरण	पूर्वार्द्ध	पू.	पू.	पू.	पू.	पू.
फल	जननी नाश	जननी नाश	जननी नाश	जननी नाश	जननी नाश	जननी नाश

अथसूतिकास्नानमु०चक्रं.					अथनामकर्ममुहूर्त्तचक्रम्.							
ग्राह्यनक्षत्रादि	हस्त	मृग	अनु	रो.	नक्षत्र	पुनर्वसु	पुष्य	ह	चि.	स्वा	अनु	ज्येष्ठा
.	रे. अश्वि.	उत्तरा ३	स्वाती	.	.	मृग	मूल	उत्त. फा	उत्त. षा.	उत्त. भा	धनिष्ठा	.
वाराः	गुरु	आदित्य	मंगल	..	वारा.	बुध	चंद्र	सू.	गु.	लग्न	२ ५	८ ११
त्याज्यनक्षत्रादि	आर्द्रा	पुन. पुष्य	श्र. वि. भर.	सू. चि. कृ. म.	वर्ज्यतिथ्यादि.	१४	४	८	९	६	१२	१५
वर्ज्यतिथयः	४ ९ १४	बुध	शनि चंद्र	६ १२ ८	आवश्यके वर्ज्यतिथीनां	५	८	१४	२४	९	१०	.

घट्यः

अथजलपूजा मु० चक्रम्.

नक्षत्राणि	पुन	पुष्य	हृ	मृ	मू
.	अनु	श्रव	गुरु वार	बुध वार	सोम वार

अथनिष्क्रमणमु० चक्रम्.

नक्षत्र.	अनु	पुष्य	पुनर्वसु	रेव	हस्त	ज्येष्ठा	मृग	श्रेष्ठ तारा
बुधे	गुरौ	शुक्रे	लग्न	६	११	७	५	.

अथान्नप्राशनमु० चक्रम्

वर्ज्यनक्षत्राणि	पूर्वा ३	आर्द्रा	शतभिषा	भरणी	अश्लेषा	मंगलवार	शनिवार
वर्ज्यतिथि	१२।७		४।९।१४		१५।३०	११६।११	
ग्राह्यलग्नानि.	१२		२		६	३	

कर्णवेधमु० चक्रम्

नक्षत्र	रे अश्वि	पुष्य	पुन	अनु-
	श्र	धनि.	चि	मृ	हृ.
शुभ तिथि.	१ २	३ ५	७ १०	११ १३
वार	सोम	गुरु	बुध	शुक्र

अथचौलचूडाकर्ममु०चक्रम्

नक्षत्राणि	पुन	पुष्य	ज्ये	मृ	श्र	ध	हृ	चि	स्वा	रे
लग्न	२	६	९	११	१०	३	वार	सोम	गुरु	भृगु बुध
वर्ज्यतिथ्यादि	४	९	१४	६	१५	३०	१	जन्म पास	जन्म नक्ष	मातृ गर्भ

अथअक्षरारंभमु०चक्रं.

नक्षत्राणि	हृ	चि	स्वा	श्र	ध	पू	पू.	पू.
	अश्वि	मृग	आर्द्रा	पुन	पुष्य	अश्ले.	मूल	रेवती
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२ ९	.	.

अथयज्ञोपवीतधारणमुहूर्तचक्रम्.

सर्वेषाग्राह्यनक्षत्र	हृ	चि	स्वा	श्र	ध	श	रो	मृग	उत्तरा ३	अनु	रेव	अश्वि	पुन पुष्य
वर्ज्यनक्षत्राणि	कृ	भ	मू	ज्ये	आर्द्रा	विशा.	पू.	पू.	पू	ऽश्ले	.		.
ऋग्वेदीननक्षत्र	पू	पू	पू	ऽश्ले	श्र	मू	.	.					
यजुर्षांग्राह्यानि	रे	अनु	हृ	पुन	पुष्य	मृग	चि	रे	रो	उ	उ	उ	.
सामगाना.	श्र	आ	हृ	ध	पुष्य	उ.	उ	उ	अश्वि		.	.	.
अथर्वणां	पुन	ध	अनु	हृ	मृ	रे	सर्वेषा वारा	गुरु	शुक्र	बुध	शशी	आदि.	.
तिथय.	२	३	५	१३	१०	७	११	६	१२	लग्न २।९	५ ६	३	.
वर्ज्यतिथ्यादिगलग्रहाश्च	४	७	८	९	१३	१४	३०	१	कृष्ण पक्षः	रात्रि	प्रदोष	अपराह्न.	अनध्यायः

अथ वधूवरयोर्मेलनार्थं वर्णादिज्ञानचक्रम्.

राशि.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
वर्ण.	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र
वश्य	चतुष्पद	चतुष्पद	मानव	जलचर	वनचर	मानव	मानव	कीटक	मानव	जलचर	मानव	जलचर
स्वामी.	मंगल	शुक्र	बुध	चंद्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु.

अथ योन्यादिज्ञानचक्रम्.

नक्षत्र	अश्विनी	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे
योनि.	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गौ	महिषी	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	गौ	नकुल	वानर	अश्व	सिंह	सिंह	गौ	गज
वैरयोनि	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गौ	अश्व	गौ	श्वान	श्वान	मृग	मेष	व्याघ्र	सर्प	मेष	महिष	गज	गज	व्याघ्र	सिंह
गण.	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाडी.	आद्य	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आद्य	आद्य	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आद्य	आद्य	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आद्य	आद्य	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आद्य	आद्य	मध्य	अन्त्य

अथ ग्रहाणां मैत्रीचक्रम्.

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्प.	शुक्र	शनि
मित्राणि	चं. मं. गु.	सू. बु.	गु. चं. सू.	सू. शु.	सू. मं. चं.	बु. श.	बु. शु.
सम.	बु	म. गु. शु. श.	शु. श.	मं. गु. श.	श.	मं. गु.	गु.
शत्रव.	श. शु	०	बु.	चं.	शु. बु.	सू. चं.	सू. चं. मं.

अथवर्णमेलने गुणज्ञानचक्रम्.

वर्ण	वरस्य वर्णम्	ब्रा	क्ष	वै	शू.
कन्याया वर्णम्	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

अथवश्यगुणाः

वश्य	चतु	मानव	जलचर	वनच.	कीटक
चतुष्पद	२	॥	१	०	२
मानव	॥	२	०	०	०
जलचर	१	०	२	२	२
वनचर	०	०	२	२	०
कीटक	१	०	१	०	२

अथताराज्ञानचक्रम्

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	फल
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	शुभ
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	शुभ
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥	अशुभ
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	शुभ
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥	अशु
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	शुभ
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥	अशु.
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	शुभ
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	शुभ
फल.	शुभ	शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	शुभ	अशु	शुभ	शुभ	.

अथयोनिगुणचक्रम्.

योनि.	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	बानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	२	०
मेष	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	२	२	४	०	२	२	१	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	१	२	३	२	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	२	२	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
बानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नकुल	२	३	३	०	१	२	१	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	१	१	१	३	२	२	२	२	४

अथग्रहमैत्रीगुणचक्रम्.

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु	श
सू.	५	५	५	३	५	०	०
चं.	५	५	४	१	४	॥	॥
मं.	५	४	५	॥	५	३	॥
बु.	३	१	॥	५	॥	५	४
गु.	५	४	५	॥	५	॥	३
शु	०	॥	३	५	॥	५	५
श	०	॥	॥	४	३	५	५

अथगणगुणचक्रम्.

	वरस्यगणानि			
	गण	देव	मनुष्य	राक्षस
कन्यायाः	देव	६	६	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	१	०	६

अथनाडीगुणचक्रम्.

	आद्य	मध्य	अंत्य
आद्य	०	८	८
मध्य	८	०	८
अंत्य	८	८	०

अथराशिकूटगुणचक्रम्.

	मेष	वृष.	मिथु	कर्क	सिंह	क	तु.	वृ	धन	मक.	कुंभ	मीन
मे.	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृ.	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मि.	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
क	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिं	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०
क	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७
तु	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०
ध	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
म.	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७
कुं	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०
मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७

अथवर्गगुणचक्रम्.

वर्गनामानि.	गरुड	बिलाव	सिंह	श्वान	सर्प	मूषा	मृग	हिरण
वर्णा हसाम्य	अ १४	क ५	च ५	ट ५	त ५	प ५	य ४	श ४
वैर	सर्प	मूषा	मृग	हिरण	गरुड	बिलाव	सिंह	श्वान

अथयुंजीनक्षत्रप्रीतिगुणचक्रम्.

नक्षत्राणि.											
पूर्वभाग	रे		अ.		भ.		कृ.		रो		मृ.
मध्य भाग	आ	पु	पु.	श्ले.	म	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.
पर भाग	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	अ.	श्र.	ध.	श	पू.	उ.		

अथजन्मराशिनामराशि विचारचक्रम्.

जन्मराशेः सकाशात्	विवाह आदि संस्कार.			सर्व मांगल्य कर्म.			यात्रा			ग्रह गोचर फल		
नामराशितः	देश वासे	ग्राम वासे	गृह वास	युद्ध	सेवा	व्यव हार	काकिणी	वर्ग शुद्धि	दान	द्युत	ज्वर	मंत्रे	पुनर्भू विवाहे

इति संस्कार प्रकरणस्थ विषयाणांचक्राणि.

अथ विवाहे रविगुरुचंद्रशुद्धिचक्रम्.

	शुभस्थान					पूज्यस्थान						अशुभ
रवि	३	६	१०	११		१	२	५	७	९		४।८।१२
गुरु	२	५	७	९	११	.	१	३	६	१०	.	४।८।१२
चंद्र	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	.	.	४।८।१२

अथयामार्द्धबारवेलाचक्रम्.								कुलिकयोगचक्रम्.							
वार	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	बार	सू	च	म	बु	बृ	शु	श
प्रहर	४	७	२	५	८	३	६	तिथि	७	६	५	४	३	२	१

अथसंक्रांतिवशाद्दग्धास्तिथयः

सक्रांति राशय·	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·	तु	वृ·	ध	म·	कुं·	मी
तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

अथलत्तादोषचक्रम्. *मगलबृहस्पति*

ग्रहा·	सू·	मं·	बृ·	श	दक्षिणक्रमेण	बु·	रा·	शु·	चं·	वामक्रमेण
नक्षत्र	१२	३	६	८		७	९	५	२२	
फल	धनना·	मृत्क	बंधुनाश	कुलक्षय		त्रास	नाश	दुःख	त्रास	

पातनक्षत्राणि	मघा १	अश्लेषा २	चित्रा ३	अनुराधा ४	रेवती ५	श्रवण ६

अथयुतिदोषचक्रम्.

ग्रहा· चंद्रयुताः	सू च	मं च	बु चं	बृ च	शु चं	श च
फल.	दरिद्र	मृत्क	प्रजानाश	दौर्भाग्य	सापत्न	प्रवज्या

अथवेधनक्षत्रज्ञानचक्रम्.

नक्षत्र	अश्वि·	भरणी	अभिजित्	कृ	मृ·	आ	पुन	पुष्य	ऽश्ले	मघा	ऽफा·	ह	स्वा	चि·
नक्षत्र	पूफा	अनु·	रो	वि·	उषा	पूषा·	मू·	ज्ये·	ध·	श्र	रे·	उ·भा	श	पू·भा·

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु.
फल	वैधव्य	दुःख	कुलनाश	वंध्या	भिक्षुकी	अपुत्रा	दुःख	परपुरुषरता	स्वेच्छानुचारिणी

अथ वाणदोषज्ञानचक्रम्.

वाणनामानि.	रोग	अग्नि	नृप	चौर	मृत्यु.
योजनांका.	१५	१२	१०	८	४
गतांशाः	८।१७।२६	२।११।२०।२९	४।१३।२२	६।१५।२४	१।१०।१९।२८
सशल्यता वारे.	सूर्ये	भौमे	सोमे	गुरौ	शनौ
	उपनयने	गृहाच्छादने	नृपसेवायां	यात्रायां	विवाहे
परिहारः कालभेदेन	रात्रौ	दिवा	दिवा	रात्रौ	संध्ययो.

अथैकार्गलदोषज्ञानचक्रम्

नक्षत्राणि	अश्विनी	स्वा	विशाखा	भर	कृत्ति	अनु	रोहि	ज्ये.	मूळ	मृग	आर्द्रा	पू.षा	पुनर्वसु	उ.षा
योगा	विष्कंभ	प्रीति	सौभाग्य	आयुष्मा.	शोभन	अतिगंड	सुकर्मा	धृति	गंड	शूल	वृद्धि	ध्रुव	व्याघा	हर्षण
नक्षत्राणि	पुष्य	अभिजि.	अश्लेषा	श्रव	मघा	धनि.	पू.फा.	शत.	उ.फा.	पू.भा	हस्त	उ.भा.	चित्रा	
योगा	वज्र	सिद्धि	व्यतीपात	वरियान्	परिघ	शिव	सिद्धि	साध्य	शुभ	शुक्ल	ब्रह्म	ऐंद्र	वैधृति	

एकार्गलचक्रम्.

अथोपग्रहदोषचक्रम्

सूर्यभानि.	८	५	१८	१४
नक्षत्राणि.	२२	१९	२३	२४

अथरेखाविश्वाप्रद्ग्रहाणाचक्रम्									भंगप्रद्ग्रहचक्रम्.					ग्रहाणांविश्वा.
सू	११	३	८						१	७				३॥
चं	११	२	३						१	६	८	७	१२	५
म	११	६	३						१	८	७	१०		१॥
बु	११	९	६	२	३	४	५	१०	८	७				२
बृ	११	९	६	२	३	४	५	१०	८	७				३
शु	११	२	३	४	५	९	१०	१	८	६	७	३		२
श	११	३	८						७	१२	१			१॥
रा	११	१०	८	६	५	३	९	१२	१	७	४			१॥

अथविवाहलग्नात्द्वादशभावस्थितग्रहफलचक्रम्

भावा.	संख्या	ग्रहा.	सू	च	म	बु.	बृ	शु.	श	रा.	के.
तनु	१		विधवा	आयुनाश	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्रा	पुत्रनाश	
धन	२		दरिद्र	बहुपुत्र	दरिद्रा	सौभाग्य	सौभाग्य	सौभाग्य	दुःख	दरिद्र,दुःख	
सहज	३		पुत्र	धन	धनाढ्य	पुत्रधन	पुत्रा	पुत्र	लक्ष्मी	लक्ष्मीवान्	
सुहृत्	४		दरिद्र	दौर्भाग्य	अल्पसंतान	सौख्य	सुख	सौख्य	दुग्धास्य	पुत्रनाश	
सुत	५	.	पुत्रनाश	कन्या	पुत्रनाश	संतति	संतति	संतति	रोगी	मृत्युकारक	
रिपु	६		धन	विधवा	धन	कलह	धन	वेश्या	धन	धनवान्	
जाया	७	.	रोगी	प्रवास	विधवा	क्षय	भय	मृत्यु	मरण	वित्तनाश	
मृत्यु	८	.	विधवा	मृत्यु	धन	स्वजनवियोग	वियोग	मरण	पुत्र	मरणांतवियोग	
धर्म	९		धर्म	पुत्र	धर्म	भोग	धर्म	धर्म	वध्या	वंध्यायोग	
कर्म	१०	.	पाप	दरिद्रा	मृत्यु	धनवती	धन	धन	पाप	वैधव्ययोग	
आय	११		पुत्र	लक्ष्मी	पुत्र	सुखी	आयु	पुत्र	धन	सौभाग्य	
व्यय	१२		व्यय	दिनांधा	वध्या	सुपुत्र	कुशीला	पतिव्रता	व्यय	जारिणीयोग	

अथ तैलाभ्यंगे वारचक्रम्.

वाराः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
फल	ताप	शोभा	मृति	यश	हानि	दुःख	सुख
परिहार	पुष्प	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०

अथ विवाहांगकार्ये नक्षत्रचक्रं.

त्याज्य नक्षत्राणि	वि. भ. चि.	ज्येष्ठा अश्वि. शत.	आर्द्रा पुन.	पुष्य ऽश्ले.
त्याज्य दिन	३	६	९	अशुभ चंद्रमा
स्थंभनिवेशन	ईशान	अग्नि	निर्ऋ	वायु.
संक्रांति	६।५।७	२।३।४	१२।१।११	८।९।१०

अथ वधूप्रवेश मुहूर्तचक्रम्.

नक्षत्राणि	श्र. ध. मू. अनु. रो. मृ.	ह. चि. स्वा. म. पुष्य	उ. फा. उ. षा. उ. भा.	रेवती अश्वि.
वाराः	सोम	शुक्र	गुरु	शनि

अथ प्रथमाब्दे वध्वा निवास मासविचारच.

मासाः	ज्येष्ठ	आषाढ	पौष	चैत्र	अधिक मास
फल.	पत्युर्ज्येष्ठनाशः	श्वश्रू नाशः	श्वशुर नाशः	स्वपितर नाशः	पति नाशः

अथ द्विरागमन मुहूर्त्तचक्रम्.

ग्राह्यनक्षत्राणि.	अश्विनी मृग रेवती	रो. पुष्य उत्तरा ३ श्र. ध.	श. ह. चि. स्वा.	पुन. मू. अनु.
वाराः	सू.	चं.	बु. गु.	शु.
मासाः	माघ	फाल्गुन	वैशाख	शुक्लपक्ष
तिथि.	१।२	३।५	७।८।१५	१०।११।१३
लग्न.	६	१२	७	३।२

अथ त्रिरागमन मु. च.

नक्षत्राणि	हस्त रेवती	मृग अश्विनी	अनुरा. श्रवण
.	स्वाती	मघा	राहुशुद्धिः

अथ प्रतिशुक्रदोषापवादच.

एक ग्रामे	नगरे	दुर्भिक्षे	राज्य नाशे
विवाहे	तीर्थ यात्रा	रेवती अश्वि.	भरणी कृ. १ च.

इति विवाह प्रकरणस्य विषयाणां चक्राणि.

अथयात्रामासतिथिवारनक्षत्रादिकोष्टकम्

सूर्यसंक्रांति	१	२	३	४	६	७	८	१०	११ शुभ
तिथय	२	३	५	७	१०	११	१३	१५	शुभ
वारा फल	सू क्लेश	चं प्रिय	म तस्कराग्निभय	बु अर्थ	बृ क्षेमसुख	शु लाभ	श बंधनुहाणी		
ग्राह्यनक्षत्राणि	ध	श्र	ह	अनु	रे	अश्वि	मृ	पुन	पुष्य
मध्यम नक्षत्र.	मू.	पू.फा	पू.षा.	पू.भा	ज्ये.	रो.	शत	उत्तरात्रितय	
वर्ज्यानि नक्षत्राणि	चि.	स्वा	वि.	म.	ऽश्ले.	कृ.	आर्द्रा	भर	जन्म-नक्षत्र
आवश्यके त्याज्यनक्षत्र घटिका	१४	१४	१४	११	१४	२१	१४	७	६०

अथयोगिनीचक्रम्.

ईशान ८।३०	पूर्व १।९	अग्नि ३।११
उत्तर २।१०	०	दक्षिण ५।१३
वाय ७।१५	पश्चिम ६।१४	निर्ऋति ४।१२

पृष्ठे इष्टसिद्धि	वामे सुख	दक्षिणे धनदा	संमुखे मृत्यु

दिक्शूलचक्रम्.

ईशान्यां बु	पू. श. चं. ज्ये	अग्नि च. गु.
उत्तर बु मं. उ फा	०	दक्षिण गु.पू.भा
वायव्य मं	पश्चिम सू.शु रोहिणी	नैर्ऋ सू. शु.

पृष्ठे इ सि	वामे श्रीप्रा.	दक्षिणे कार्यनाश	संमुखे मृत्यु

कालचक्रम्

ई.	पू. शनि	अ शुक्र
उ. सूर्य	०	द गु.
वा चंद्र	प. मगल	नै बुध

वामे इ.सि	पृष्ठे का सि	दक्षिणे धनना	समुखे मृत्यु

वाराः	सू.	चं	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
शूलपरिहारः	घृतप्राशन	पयदान	गुडदान	तिलदान	दधिभक्षण	यवभक्षण	माषदान

अथसन्मुखचंद्रविचारचक्रम्.			
पूर्व मे· सिं· ध	दक्षिण २।६।१०	पश्चिम ३।७।११	उत्तर ४।८।१२
सन्मुखे अर्थप्राप्ति	दक्षिणे सुख	वामे धननाश	पृष्ठे प्राणनाश

अथदिगीशाः							
सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा
पूर्व-स्य	वा-यु	दक्षि ण	उत्त र	ईशा न	अ-ग्नि	पश्चि म	निर्ऋ ति.

अथयात्रायांलग्नविचारचक्रम्.													समयबलयात्रा			
लग्नानि·	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
फल	विलंब	सिद्धि	धन सुख	सिद्धि	सिद्धि	धन सुख	विलंब	मृत्यु	विलंब	मृत्यु	मृत्यु	धन सुख	मध्यान्हे	अपरान्हे	अर्द्धरात्रौ	पूर्वान्हे

अथयात्रायांलग्नशुद्धिचक्रम्.

शुभफलदाः	ग्रहा	सू·	चं·	मं·	बु·	बृ·	शु·	श	लग्नेश.
भाव	स्थान	३।१०।११।६	२।३।४।५।७।९।१०।११	३।१०।११।६	१।४।७।१०।५।९	१।४।७।१०।५।९	१।४।१०।५।९	३।६।११	१।२।३।४।५।९।१०।११

अथहोराज्ञानचक्रम्.

वाराः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
होरा	शु २॥ घटी	श २॥	सू २॥	चं २॥	मं २॥	बु २॥	बृ २॥
होरा	बु २॥ घटी	बृ २॥	शु २॥	श २॥	सू २॥	चं २॥	मं २॥
होरा	चं २॥ घ	मं २॥	बु २॥	बृ २॥	शु २॥	श २॥	सू २॥
होरा	श २॥ घ	सू २॥	चं २॥	मं २॥	बु २॥	बृ २॥	शु २॥
होरा	बृ २॥ घ	शु २॥	श २॥	सू २॥	चं २॥	मं २॥	बु २॥
होरा	मं २॥ घ	बु २॥	बृ २॥	शु २॥	श २॥	सू २॥	चं २॥
होरा	सू २॥ घ·	चं २॥	मं २॥	बु २॥	बृ २॥	शु २॥	श २॥
कार्याणि.	राजसेवा	सर्वकार्य	युद्ध	विद्या	विवाह	यात्रा	द्रव्यसंग्रह

अथ अकालवृष्टिमासज्ञानचक्रम्.

मासा	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
त्याज्य दिन	अकाल वृष्टि घटी २	सुकाल	सुकाल	सुकाल	सुकाल	सुकाल	सुकाल	अकाल ३	अकाल ३	अकाल ३	अकाल २	अकाल १

यात्रायाः प्राक् त्याज्यकर्म.

क्रोध	क्षीर	स्त्रीसंग	श्रम
मासभक्षण	गुडभक्षण	द्यूत	अश्रुपात
दुग्धपान	आसव	क्षार	तैलाभ्यग
भय	कृष्ण वस्त्र	बमन कटु	तैलभक्षण
त्याज्यदिनसंख्या	क्षीर ३	क्षीर ५	स्त्री ७

अथस्वरकृत्यज्ञानचक्रम्

चंद्र स्वर	बाम स्वर	गृह ग्राम प्रवेश विवाह यात्रा वस्त्रालंकार धारणं संधि
सूर्य स्वर	दक्षिण स्वर	युद्धं व्यवहारं भोजन मैथुनं विग्रह द्यूत स्नान

अथ प्रस्थानद्रव्यदेशादिकनियमस्थित्यादिकोष्टम्.

ब्राह्मण	यज्ञोपवीत	स्वर्ण	छत्र	ध्वजा	माला				
क्षत्रिय	शस्त्र	धान्य	खड्ग	धनु					
वैश्य	मधु	वस्त्र	तुरग						
प्रस्थान देश	ग्राम समीप	नदी	विप्र गृह	देव गृह	उद्यान	बापी तडाग	गृहांतरे	सीम्नांतरे	नगराद्बहिः
प्रस्थान स्थितिदिन	पूर्वे दि· ७	दक्षिणे दि ५	पश्चिमे दि ३	उत्तरे दि २					

अथयात्रानिवृत्तौ प्रवेशमु॰ च॰

ग्राह्य नक्षत्र	चि	उ ३		अनु	रो		रे॰	मृ॰	
वारा	गुरु		शुक्र	बुध		सोम		शनि	
त्याज्यनक्षत्राणि	पूर्वा ३	कृ॰	भ॰	मू	म	ज्ये॰	आर्द्रा	ऽश्ले	वि॰
फलच	स्व नाश	गृह दाह	स्व नाश	पुत्र नाश	स्व नाश॰	पुत्र नाश॰	पुत्र नाश॰	पुत्र नाश	स्त्री नाश॰
ग्राह्य लग्न॰	२	३	५	६	८	९	११	१२	॰
त्याज्य तिथि	४	९	१४	३०	सूर्यवार		मंगलवार		

छिंकाशब्दस्यफलज्ञानच॰

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
फल	अमुभ	अरिष्ट	मिष्टान्न प्राप्ति	कलह
दिशा	ईशान	अग्नि	नैर्ऋति	वायव्य
फल॰	शुभ	शोक	शुभ	धन लाभ
ऊर्ध्वे शुभः	मध्ये भय	आत्म छिंकायां भयं		

इतियात्राप्रकरणस्थविषयाणांचक्राणि.

अथगृहारंभमासतिथिनक्षत्रवारादियंत्रम्.

मासा॰	चैत्र १२ सं॰	वैशाख	ज्येष्ठ ३ संक्रां	आषाढ	श्रावण	भाद्रप ६ सं	आश्विन	कार्तिक	मार्ग॰ शीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
मास फलम्	व्याधि	धन रत्न	मृत्यु	भृत्य रत्न	मित्र लाभ	हानि	सुहृद्	धन धान्य	धन वृद्धि	चौर॰ भय	अग्नि भय	लक्ष्मी वृद्धि
तिथि ग्राह्य	२	३	५	६	७	१०	११	१२	१३	१५	शुक्ल पक्ष	शुभ दिन
निषिद्ध तिथ्यादि	१	४	८	९	३०	१४	आदित्यवार भौमवा	वज्र व्याघात	शूल- व्यतीपात	गंड.विष्कंभ- अतिगंड	परिघ मासदग्ध तिथिद	वैधृति कृष्णपक्ष
फल	दरिद्रत्व॰	धननाश दरिद्रत्व	उच्चाटन	शत्रुवृद्धि दरिद्र	राजभय गर्भनाश	चोरभय दरिद्र	शिशु मरण	धनधान्यादि नाशः	धननाश॰ मृत्यु	धनधान्यनाश	धनधान्यनाश॰	सर्वनाश चोरभय
ग्राह्यनक्षत्राणि	उ॰ फा॰	उ भा॰	उ॰ भा॰	रोहिणी	पुष्य पुनर्वसु	अनुराधा॰	हस्त	चित्रा	धनिष्ठा	शतभिषा	रेवती मूल	मृ स्वा॰ अश्वि॰
ग्राह्यवारादिका॰	बृहस्पति	शुक्र	बुध	सोम स्थिरलग्न	शनि चौरभ	श्वेत मुहूर्त	मैत्र मुहूर्त	माहेंद्र मु	गांधर्व मु॰	अभिजिन्मुहू॰	रौहिण मुहूर्त	वैराज सावित्रमु
लग्नानि	१ मे॰	२ वृ	३ मि	४ क	५ सि	क॰ ६	तु॰ ७	वृ ८	ध॰ ९	म॰ १०	कुं॰ ११	मी॰ १२
लग्नफलम्	दीर्घ सूत्री	सिद्धि	धन लाभ	नाश	सिद्धि	धन लाभ	दीर्घ सूत्र	नाश	दीर्घ सूत्र	नाश	सिद्धि	धन लाभ

अथ गृहारंभे वृषवास्तुचक्रम्.

सूर्यभात् नक्षत्राणि	३	४	४	३	४	४	३	३
अङ्गानि.	मस्तक	अग्र पाद	पश्चिम पाद	पृष्ठ	दक्षिण कुक्षि	वाम कुक्षि	पुच्छ	मुख
फलम्	अग्नि दाह	उद्वास	स्थैर्य	धनागम	लाभ	दरिद्रता	स्वामि नाश	पीडा
अथखनने भूनाथन विचार चक्रम्	सूर्यनक्षत्रात्	५	७	९	१२	९	२६	एषु नक्षत्रेषु भूशायनम्

सक्रांति गतांशाः	५।७	११।९	१५।२०	२२	२३।२८	एतेसक्रांतिगतांशेषु च भूशायनम्

अथ गृहारंभदेवालयतडागारंभे खनने शेषचक्रम्.

कोण	ऐशान्यां राहु अग्नौ खातः	वायौ राहु. ऐशान्यां खातः	नैर्ऋत्यां राहु वायौ खातः	अग्नौ राहुः नैर्ऋत्या खातः
गृहारंभे	सि· क तु· सूर्य ५ ६ ७	वृ ध म· सूर्य ८ ९ १०	कुं मी मे सूर्य १० १२ १	वृ मि क· सूर्य २ ३ ४
देवालये.	मी मे· वृ सूर्य १२ १ २	मि· कं· सिं सू·	क तु· वृ सू ६ ७ ८	ध म· कु सूर्य ९ १० ११
जलाशये	म कुं मी सूर्य १० ११ १२	मे वृ मि सू १ २ ३	क· सिं· क· सू ४ ५ ६	तु· वृ ध सूर्य ७ ८ ९

गृहायुर्दीयोगा १०० वर्षे	वर्ष १००	वर्ष १०००	वर्ष २००
श गु शु बु सू	शु गु सू गु गु बु गु	१२ शु श ७ गु ४	सू शु गु सू गु मं

अथ गृहारंभलग्नात् द्वादशभावफलयंत्रम्.

स्थान.	नाम	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
१	तनु.	वज्रपात	कोशहानि	मृत्यु	कुशलता	धर्मार्थकाम	पुत्रोत्पत्ति.	दरिद्र	हानि	हानि	·
२	धन.	हानि	शत्रुनाश	बंधन	धनसंपत्ति	धर्मवृद्धि	आनंद	नानाविघ्न	हानि	हानि	·
३	सहज.	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धि	·
४	सुहृत्.	सुहृद्वियोग	बुद्धिनाश	मंत्रभेद	धनलाभ	नृपालाभः	भूमिलाभ	सर्वनाश	हा	हा	·
५	पुत्र.	पुत्रदुःख	कलह	कार्यविरोध	रत्नलाभ	धनागम	पुत्रसुख	बंधुविमर्दन.	हा.	हा	·
६	रिपु	रोगनाश	पुष्टि	प्राप्ति	कुशलता	मंत्रोदय	विद्यागम	शत्रुनाश	धन	धन	·
७	जाया	कीर्तिभंग	क्लेश	विपद्	अश्वलाभ	गजलाभ	भूमिलाभ	भय	पाप	पाप	·
८	मृत्यु.	द्वेष	पदहानि	रोगभय	धनप्राप्ति	विजय	स्वजनभेद	रोगभय	रोग	रोग	·
९	धर्म.	धर्महानि	धातुक्षय	धनक्षय	विविधभोग	विद्याभोग	विजय	धर्मदूषण	धर्मनाश	धर्मनाश	·
१०	कर्म	सुहृद्वृद्धि	शोक	रत्नलाभ	विजयधन	सौख्य	शयनासनला.	कीर्तिनाश	अशुभ	अशुभ	·
११	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	·
१२	व्यय	व्यय	व्यय	व्यय	व्यय	व्यय	व्यय	व्यय	व्यय	व्यय	·

अथस्तंभस्थापनेस्तंभचक्रम्.

सूर्यनक्षत्रात्	२	२०	६	०
फल	धन नाश	सौख्य	मृत्यु	.
त्याज्य नक्षत्र	धनि	श	पू भा	उ भा रेवती

अथ द्वारशाखारोपणमु यंत्रम्.

ग्राह्य नक्षत्र	अश्वि	उ. ३	ह	पुष्य	श्र मृ	स्वा. रो	रे.
तिथि फल	१ दुःख	२ धनना	३ शुभ	४ अमु	५ धन	६ अमु	७ धन
तिथि फल	८ शुभ	९ शुभ	१० धना-	११	१२	१३ १४ अमु. १५ ३० अमु	
त्याज्य वारादि	म	श च	सू	त्रिपुष्कर	कृ ध	श पू	उभा रे

अथसंक्रांतितो द्वारविचारच.

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
संक्रांति	कर्क ४ मकर १०	तुल ७ मेष १	सिंह ५ कुंभ ११	वृषभ २ वृश्चिक ८
अशुभ संक्रांति	मीन	धन	मिथुन	कन्या

अथ द्वारशाखा चक्रम्.

सूर्यभान्नक्षत्र	४	८	८	३	४
अग	शिर	कोण	शाखा	अध	मध्ये
फलम्	राज्य	उद्वास	लक्ष्मी	मृत्यु	सौख्य

अथचुल्लीस्थापनमु. यंत्रम्.

वाराः	सू	सो	म	बु	बृ	शु	श
वार फल	रोग	धन नाश	भार्या नाश	लाभ	लक्ष्मी	धन धान्य	दरिद्र
ग्राह्य नक्षत्र	पूर्वा ३	आर्द्रा	रो. पुष्य	उत्तरा ३	अश्विनी	चंद्र बल	.

अथ चुल्लीचक्रम्.

सूर्यभात्.	६	४	८	५	२	२
फल	सुख	मृत्यु	सौख्य	नाश	भोग	मृत्यु
अग	पृष्ठ	शिर	बाहु	गर्भ	कर	पाद

अथ कूपबाप्यारंभ मुहूर्त्तयंत्रम्.

कूपारंभ नक्षत्र	हस्त	पुष्य	धनिष्ठा	शतभिषा	अनुराधा	मघा	उत्तरा ३	रोहिणी
वापी नक्षत्र	स्वा	अश्वि	हस्त	पुष्य	अनुराधा	पुनर्वसु	रेवती	शतभिषा
वाराः	आदित्य	सोम	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	
वार फलम्	जल नाश	पूर्ण जल	वालुका	बहुजल	मिष्टजल	क्षारजल	जल नास्ति	
लग्न फलम्	१२ जल	४ जल	१० जल	२ जल	११ जल	८ जल	७ जल	१।३।५।६। ९ जलनास्ति

अथगृहप्रवेशमुहूर्त्तयंत्रम्.

नूतनगृहप्रवेशे मासाः	माघ	फाल्गुन	वैशाख	ज्येष्ठ	जीर्णगृहप्रवेशे मासाः	माघ फाल्गुन	वैशाख ज्येष्ठ	श्रावण मार्गशीर्ष कार्तिक
मास फलम्	धनलाभ	पुत्र धन लाभ	पशुपुत्र लाभ	पशुपुत्र लाभ	मास फलम्.	शुभ	शुभ	शुभ
नूतनगृत्याज्यमासाः	कर्क सू. कार्तिके	कुंभ सू. चैत्रे	कन्यासू. आषाढे	मार्गशीर्षे	जीर्णनक्षत्राणि.	धनि	पुष्य	चि स्वा.
द्वारवशात्तिथय	दक्षिणे १।६।११	पश्चिमे २।७।१२	उत्तरे ३।८।१३	पूर्वद्वारे ५।१०।१५		शतभिषा	उत्तरा ३	रोहिणी
वारा.	गुरु	शुक्र	बुध	शनि / चोरभय		मृगशिर	रेवती	अनुराधा
ग्राह्यनक्षत्राणि फलंच	चित्रा	उत्तरा ३	रोहिणी	मृगशिर	अनुरा	धनिष्ठा	रेवती	शतभिषा
	आयु	धन	आरोग्य	पुत्र	पौत्र	कीर्ति	धन	धन
निषिद्ध नक्षत्राणि	हस्त	स्वाति	अश्विनी	श्रवण	पुनर्वसु	भरणी ज्ये मू	कृ आर्द्रा पुष्य	अश्ले मघा पूर्वा ३ वि
	हानि	हानि	हानि	हानि	हानि	मृत्यु	मृत्यु	मृत्यु
वास्तु पूजा नक्षत्र	चि.	श	स्वा	ह	पु पुन	रो. रे	मू. श्र मृ अनु.	ध. उत्तरा अश्विनी.
लग्न शुद्धि.	शुभग्रह १।४।७।१०	शुभ ९।५	शुभ २।३	पापग्रह ३।६।११	चंद्रमा २।३।४	चंद्रमा ५।७।९	चंद्रमा १०।११	चतुर्थस्थानशुद्ध. स्थिरलग्न
त्याज्य योगादि	कुयोग	पापलग्न	चरलग्न	चरांशक	क्रूरग्रहयुक्तनक्षत्र	उत्पातादि दूषितनक्ष	लातदोष दग्धातिथि	क्रातिसाम्यदोष
त्याज्य	क्रूर वेध	क्रूरमुक्त नक्षत्र	क्रूरगंतव्य नक्षत्र	अकपाट गृहे	अनाच्छन गृह	सन्मुखदक्षिणशुक्र	बलिदान रहितगृह	चंद्रबलरहित कृष्णप

अथवामार्कज्ञानयंत्रम्.

दिशा	पूर्वमुखे	दक्षिण मुखे	पश्चिम मुखे	उत्तर मुखे
लग्नात् सूर्य स्थान	८।९।१० ११।१२	५।६।७ ८।९	२।३।४ ५।६	११।१२ १।२।३
वामो	रवि	रवि	रवि	रवि

गृहप्रवेशे कलशचक्रम्.

सूर्यान्नक्षत्रात्	१	४	४	४	४	४	३	३
अङ्ग.	मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	कंठ	गुदा
फलं	मृति	गमन	धन	लक्ष्मी	वैर	शोक	स्थिरता	सुख.

अथसर्वदेवानांप्रतिष्ठामुहूर्त्तयंत्रम्.

सर्वदेवम मासा	चैत्र	फाल्गुन	वैशाख	ज्येष्ठ	माघ	शुक्ल पक्ष	उत्तरा यन	
लिंगस्थाप नेविशेष	श्रावण	भाद्रपद	आषाढ	देवीस्थापने मासविशेष	आश्विन	माघ	कृष्णप क्ष	दक्षिणा यन
सर्वदेवाना तिथय	५	२	३	७	१०	१५	१३	•
देवतानतरे णातिथय	प्रतिपदा १ कुबेरस्य	द्वितीया २ लक्ष्म्या	तृतीया ३ भवान्या	चतुर्थी४ गणेशस्य चतु शिव	पचमी ५ सोमस्य	षष्ठी ६ स्कंदस्य पूर्णि ब्रह्म	सप्तमी ७ सूर्यस्य	द्वादशी १२ विष्णो
वाराः	सोम	गुरु	शुक्र	बुध	लग्नानि ८।५।११।२ ४।६।७	५ ३ सू शिव	६ ११ हरि ब्रह्मा	स्थिरेषु सर्वदेवा
नक्षत्र.	पू षा. उत्त षा	मू उफा उ भा	ज्ये.	श्र पुष्य	रो. मृ	पू भा	हस्त अनु	आश्वि स्वा
मुहूर्त्तौ.	प्राजापत्ये शयन	श्वेते उत्थापन	ब्राह्मे स्थापनं	अभिजित् स्थापन	पूर्वान्हे	शुभ दिने	विषुवे ११७ स.	षडशीतौ ९।३।६।१२ सं
देवता नक्षत्राणि	विष्णु श्र अनु चि	ब्रह्मण रो श्र ज्ये पुष्य	इद्रस्य रो ज्ये पुष्य	सूर्यस्य हस्त	कुबेरस्कद यो अनु	दुर्गाया मूले	बौद्धस्य श्रवणे	धर्मस्य रेवती
•	गणेशस्य रेवती	सर्पस्य रेवती	सरस्वत्या रेवती	ग्रहाणाच्या सस्य पुष्ये	दिग्पाला- ना धनि	चद्रवल	शुभशकु ने	

अथदेवप्रतिष्ठायांलग्नादिद्वादशभावस्थितग्रहफलयं.

ग्रहा / भावा	तनु १	धन २	सहज ३	सुहृत् ४	सुत ५	रिपु ६	जाया ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	मृत्यु	अशुभ	शुभ	दुख	हानि	शत्रुना	व्याधि	मृत्यु	नाश	भगद	ला	व्यय
चद्र	मृत्यु	शुभ	शुभ	सुख	पुत्र	श ना	शुभ	मृ.	शुभ	कीर्ति	ला	व्य.
मगल	मृत्यु	अ	शु	दुख	हा	श ना	व्या	मृ	नाश	भं	ला.	व्य
बुध	धन	शु.	शु	सुख	सुख	श दृ	शु	मृ.	शु.	की.	ला.	व्य
गुरु	धान्य	शु.	शु.	सुख	पुत्र	श दृ.	शु	मृ.	शु.	की	ला.	व्य
शुक्र	सुख	शु	शु.	सुख	स्र	श. दृ.	शु	मृ	शु.	की	ला.	व्य
शनि	मृत्यु	अ	शु.	दुख	हा.	श ना	व्या	मृ.	ना	भं.	ला.	व्य.
रा.के.	मृत्यु	अ.	शु	दुःख	हा	श ना	व्या.	मृ.	ना.	भं.	ला.	व्य.

अथतडागकूपवापीप्रतिष्ठोत्सर्गमु॰चक्रम्.

मासा सौरमानेन	कर्क	मकर	मीन	कुंभ	वृष	मिथुन	वृश्चिक	कन्या	तुल	सिंह	मेष	धन
फलम्.	पुत्र लाभ	सौख्य	धन यश	बहूदक	वृद्धि	वृद्धि	लक्षण	पितृ तृप्ति	शाश्वत जल	जल नाश	जल नाश	जल नाश
नक्षत्राणि	रो॰	उत्तरा ३	पुष्य	अनु॰	शतभिषा	मघा	धनिष्ठा	बुध वार	गुरु वार	भृगु वार	सोम	शुक्ल पक्षः
लग्नानि	१	२	३	४	६	७	०	१०	११	१२	जल भांश	सौम्य योगे

अथनवीनदुर्गप्रवेशमु॰ यंत्रम्.

नक्षत्राणि.	रोहिणी	रेवती	हस्त	चित्रा	स्वाति	पुष्य	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	अनुराधा	शुभ वार	चंद्र बल

इतिवास्तुप्रकरणस्थविषयाणांयंत्राणि.

अथ वास्तुप्रकरण शुभकुनाम

नक्षत्र —— नामा वाली देवता

अथशिवप्रोक्तद्विघटीमुहूर्त्तचक्राणि. पृष्ठ १४२ श्लो॰ ७

मुहूर्त्तनामानि	रौद्र १	श्वेत २	मैत्र ३	चार्वट ४	जयदेव ५	वैरोचन ६	तुरग ७	अभिजित् ८	रावण ९	बालव १०	विभीषण ११	सुनंदन १२	याम्य १३	सौम्य १४	भार्गव १५	सविता १६
फलानि.	रौद्रकार्यं.	कुंजरबंधनं.	स्नानदानादिशुभं	संभ्रम.	सर्वकार्यसिद्धिः	शुभपद्धतिविवेकः	शस्त्रसाधनं.	ग्रामप्रवेशादि.	वैरकार्यं.	युद्धकार्यं.	शुभकर्म.	गंगास्नानादि.	मारणकर्म.	सभागृहप्रवेशः.	स्त्रीसेवनं.	विद्यारंभः.

अथवारेषुमुहूर्त्तोदयचक्रम्							
वारा	सू	च	म	बु	बृ	शु	श
मुहूर्ता	रौद्र	मैत्र	जयदेव	तुरग	रावण	विभीषण	याम्य

अथगुणोदयफलचक्रम्.							
वारा	सू	च	म	बु	बृ	शु	श
गुण फल	तमोगु श्यामव अशुभ	सत्वगु गौरवर्ण सिद्धि	रजोगु श्यामव धनसम	तमोगु श्या व अशुभ	सत्वगु गौरव सिद्धि	रजो श्याम धनस	तमो श्याम अशुभ

अथरेखाज्ञानचक्रम्				
रेखानाम	अमृतरेखा	कालरेखा	विघ्नरेखा	शून्यरेखा
रेखाफल	सिद्धिकर	मृत्युकर	विघ्नकर	कार्यहानि
रेखा संज्ञा	श्री विष्णु अमृत सिद्धि δ	मृत्यु पाद यम काल ♆	विघ्न धनु युग्म गणाधिप ⌒	शून्य नभ ख अभ्र ०

अथराशिगुणचक्रम्.			
गुणा वर्ण	सत्व गौर	राजस श्याम	तामस कृष्ण
घात राशि घात वर्णानि	धन मीन कर्क गौरवर्ण	तुल वृष मेष श्यामवर्ण	कन्या मिथु सि कु मकर कृष्णवर्ण

अथमाघ फाल्गुन-चैत्र-वैशाख श्रावण-भाद्रपद-मासेषु मुहूर्त्तानि-
नामराशितः शोध्यानि. पृष्ठ १४५ श्लो २८

रवि दिनमु	रौ	श्वे	मै	चा	जय	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सुनं	या	सौ	भा	सा
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	०	δ	δ	δ	⌒		⌒		δ	δ	δ	०	⌒		⌒	
रवि रात्री	श्वे.	मै	चा	ज.	वै.	तु	अ	रा	बा	वि	सु	या	सौ	भा	सा.	रौ
गुण.	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	δ	δ	δ	⌒		०	♆	δ	δ	δ	⌒		⌒		δ	δ

माघफाल्गुनचैत्रवैशाखश्रावणभाद्रपदमासेषुमुहूर्त्तानि. पृष्ठ १४५																
सोम दिने	मैत्र	चा	ज	वै:	तु	श्र:	रा	वा	बि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे.
गुण	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा	ꝺ	ꝺ	⌒	⌒	⌒	⌒	ꝺ	ꝺ	ꝺ	o	⌒	⌒	⌒	⌒	ꝺ	ꝺ
सोम रात्री	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा.	ᛘ	ꝺ	o	ꝺ	ꝺ	o	⌒	⌒	ꝺ	ꝺ	ꝺ	ꝺ	⌒	⌒	⌒	⌒
भौम दिने	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा
गुण.	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा.	ᛘ	ᛘ	ꝺ	ꝺ	ꝺ	ꝺ	⌒	⌒	⌒	⌒	ꝺ	ꝺ	⌒	⌒	⌒	⌒
भौम रात्री	वै	तु	श्र	रा	वा	बि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज
गुण.	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा.	⌒	⌒	ᛘ	ᛘ	ꝺ	ꝺ	ꝺ	ᛘ	ᛘ	ᛘ	ꝺ	ꝺ	ꝺ	o	o	ꝺ
बुध दिने	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा.	⌒	⌒	ꝺ	ꝺ	ᛘ	ᛘ	ꝺ	ꝺ	ꝺ	⌒	⌒	ꝺ	ꝺ	ᛘ	ᛘ	ꝺ
बुध रात्री.	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु
गुण.	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा.	ꝺ	ꝺ	ꝺ	ꝺ	ꝺ	⌒	⌒	o	ꝺ	ꝺ	ꝺ	ꝺ	⌒	⌒	⌒	⌒

माघफाल्गुनचैत्रवैशाखश्रावणभाद्रपदमासेषुमुहूर्त्तानि. पृष्ठ १४५

गुरु दिने	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	न	वै	तु	श्र
गुण	स	स	र	र	न	न	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा	ȯ	ȯ	ȯ	ȯ	o⌒	⌒o	o⌒	⌒o	o	ȯ	ȯ	ȯ	o⌒	⌒o	o⌒	⌒o
गुरु रात्रौ	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	ψ	ȯ	ȯ	ȯ	ψ	ψ	ψ	ψ	o	ȯ	ȯ	ȯ	o⌒	⌒o	ȯ	ȯ
शुक्र दिने	बि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा
गुण	र	र	त	न	स	स	र	र	त	न	स	स	र	र	न	त
रेखा	ȯ	ȯ	ψ	ψ	o	ȯ	ȯ	ȯ	o⌒	⌒o	o⌒	⌒o	ȯ	ȯ	ȯ	o
शुक्र रात्रौ	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि
गुण	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा	ψ	ψ	ȯ	ȯ	ȯ	o	o⌒	⌒o	ψ	ψ	ȯ	ȯ	ȯ	o	ψ	ψ
शनि दिने	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	ψ	ȯ	o	o	o	o	ȯ	ȯ	ȯ	ȯ	o	ȯ	ȯ	o	ȯ	ȯ
शनि रात्रौ	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या
गुण	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	o	ψ	ψ	ȯ	ȯ	ȯ	o	o⌒	⌒o	o⌒	⌒o	ȯ	ȯ	ȯ	ψ	ψ

अथाश्विनकार्तिकमार्गशीर्षपौषमासेषुरव्यादिवारेषुमुहूर्त्तानि.पृ १४७ श्लो ३६																
रवि दिने	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	ꝺ	ꝺ	ꝺ	Ψ	Ψ	⌒		ꝺ	ꝺ	०	०	Ψ	ꝺ	ꝺ	ꝺ	Ψ
रवि रात्रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ
गुण	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	Ψ	⌒		०	ꝺ	ꝺ	ꝺ	⌒		Ψ	Ψ	ꝺ	ꝺ	०	ꝺ	ꝺ
सोम दिने	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे
गुण	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा.	Ψ	⌒		०	०	ꝺ	ꝺ	ꝺ	०	⌒		ꝺ	ꝺ	०	ꝺ	ꝺ
सोम रात्रौ.	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा.	Ψ	०	⌒		ꝺ	ꝺ	ꝺ	⌒		⌒		ꝺ	ꝺ	०	ꝺ	ꝺ
भौम दिने	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा
गुण	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	⌒⌒			०	ꝺ	ꝺ	०	⌒		ꝺ	ꝺ	ꝺ	०	⌒⌒		
भौम रात्रौ	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज
गुण.	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा.	⌒		⌒		०	ꝺ	ꝺ	ꝺ	⌒		०	ꝺ	ꝺ	ꝺ	⌒	
बुध दिने.	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
गुण.	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा.	⌒		ꝺ	ꝺ	ꝺ	Ψ	Ψ	ꝺ	ꝺ	ꝺ	ꝺ	⌒		⌒		ꝺ
बुध रात्रौ	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु
गुण.	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा.	Ψ	Ψ	ꝺ	ꝺ	०	Ψ	Ψ	ꝺ	ꝺ	ꝺ	⌒		⌒		०	ꝺ

आश्विनकार्तिकमार्गशीर्षपौषमासेषुमुहूर्तानि. पृष्ठ १४७

गुरु दिने	रा	वा	दि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
गुण	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	र्स	स	र	र
रेखा	ठ	ठ	०	⌒	⌒	ठ	ठ	ठ	ठ	⌒	⌒	⌒	⌒	०	०	ठ
गुरु रात्रौ	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	ψ	ठ	ठ	ठ	०	⌒	⌒	ψ	ψ	ठ	ठ	ठ	०	⌒	⌒	ठ
शुक्र दिने	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
गुण	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	ठ	⌒	⌒	ठ	ठ	ठ	ठ	⌒	⌒	⌒	⌒	ठ	ठ	ठ	०	ψ
शुक्र रात्रौ	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि
गुण	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा	⌒	⌒	ठ	ठ	ठ	०	⌒	⌒	ठ	ठ	ठ	⌒	⌒	०	⌒	⌒
शनि दिने	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	ψ	ठ	०	०	०	ठ	ठ	०	ठ	ψ	ठ	ठ	०	ठ	ठ	ψ
शनि रात्रौ	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या
गुण	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	ψ	०	ψ	ठ	ठ	ठ	ठ	⌒	⌒	⌒	⌒	ठ	ठ	ठ	०	ψ

अथज्येष्ठाषाढमलमासेषुरव्यादिवारेषुमुहूर्तानि पृष्ठ १४८ श्लो ४४

रवि दिने	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	०	०	ठ	ठ	⌒	⌒	ψ	⌒	⌒	०	ठ	ठ	ठ	ठ	⌒	⌒

ज्येष्ठाषाढमलमासेषु मुहूर्तानि. पृष्ठ १४८ श्लो ४४

रवि रात्रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ
गुण	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	ऽ	ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	०
चंद्र दिने	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे
गुण	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा	⌒		⌒		०	ऽ	ऽ	ऽ	०	⌒		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०
चंद्र रात्रौ	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	⌒		⌒		ऽ	ऽ	ψ	०	ऽ	ऽ	⌒		ऽ	ऽ	ऽ	ψ
भौम दिने	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा
गुण	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	०	०	ऽ	ऽ	⌒		०	ऽ	ऽ	⌒		⌒		⌒		ऽ
भौम रात्रौ	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज
गुण	स	स	र	र	स	स	त	त	र	र	स	स	त	त	स	स
रेखा	⌒		⌒		०	⌒		⌒		ψ	ऽ	०	⌒		ऽ	ऽ
बुध दिने	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	⌒		⌒		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ψ
बुध रात्रौ	श्र	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु
गुण	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	ऽ	⌒		ऽ	ऽ	०	⌒		⌒		ऽ	ऽ	०	०	ऽ	ऽ

ज्येष्ठाषाढमलमासेषु मुहूर्तानि पृष्ठ १४८ श्लोक ४४.																
गुरु दिने	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र
गुण	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा	ȯ	ȯ	⌒		०	ȯ	०	ȯ	०	ψ	ψ	ψ	ψ	ȯ	ȯ	ȯ
गुरु रात्रौ	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	०	०	ȯ	ȯ	ȯ	०	⌒		⌒		ȯ	ȯ	⌒		ψ	ψ
शुक्र दिने	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा
गुण	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	⌒		ȯ	ȯ	ȯ	०	⌒		⌒		ȯ	ȯ	⌒		ψ	ψ
शुक्र रात्रौ	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि
गुण	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा	⌒		ȯ	ȯ	ȯ	ȯ	⌒		०	ȯ	ȯ	ȯ	०	ψ	ψ	ȯ
शनि दिने	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	ȯ	⌒		ȯ	ȯ	०	ȯ	ȯ	ȯ	ȯ	०	ȯ	ȯ	०	ȯ	०
शनि रात्रौ	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	श्र	रा	वा	वि	सु	या
गुण	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	ȯ	⌒		ȯ	ȯ	०	०	⌒		ȯ	ȯ	०	ȯ	ȯ	ȯ	०

अथ अङ्ग-स्फुरणफलम्
पुरुषाणां दक्षिणांगेषु स्त्रीणां वामांगेषु च शुभफलं ज्ञेयम्.

अंगानि.	फलम्.	अङ्गानि	फलम्.
शिर	पृथ्वीलाभ	स्कंधे	मित्रसमागम
ललाटे	स्थानलाभ	बाहौ	प्रियसमागम
भ्रुवोर्मध्ये	प्रियाप्तिः	बह्वोर्मध्ये	धनलाभ
भ्रुवोर्युग्मे	सुखं	हस्ते	धनलाभ
कर्णे	शुभश्रुतिः	वक्षसि	विजयः
नेत्रे	प्रियदर्शनं	कट्यां	प्रमोदं बलंच
दृक्कोणभागयोः	लक्ष्मी	पार्श्वे	प्रीति
अधःपक्ष्मणि	जयः	नाभौ	स्थानात्प्रचलनं
गंडदेशे	स्त्रिया-सौख्यं	अंत्रके	कोशवृद्धि
नासायां	गंधजं सुखं	उदरे	कोशप्राप्ति
उत्तरोष्ठे	वाग्वादः	जंघे	प्रियासंगम
अधरोष्ठे	स्त्रिया-चुंबनं	गुदे स्फिचि (कुल्ला)	वाहनलाभ
हनौ	भयं	लिंगे	स्त्रीसमागम
मुखे	मिष्टभोजन	वृषणे	पुत्रलाभ
कंठे	आभूषणलाभ	बस्तौ	आभ्युदय
ग्रीवायां	शत्रुभय	उरौ	वस्त्रलाभ
पृष्ठे	पराजयः	जानुनि	रिपुसंधि
जंघायां	हानि	पादोपरिभागे	स्थानलाभ
पादाधः	लाभः	.	.

अथ पल्लीसरठयोः पतनारोहणफलम्

अङ्गानि.	फलम्	अङ्गानि.	फलम्
ब्रह्मरंध्रे	राज्यप्राप्ति	वामभुजे कूर्परे मणि-बधे	धननाश
ललाटे	स्थानलाभ	वामकरतले	हानि
कर्णयोः	भूषणलाभ	वाम हस्त पृष्ठे	धननाश
नेत्रयो	प्रियदर्शन	हृदये	राजसन्मानं
नासिकायां	सुगंधलाभ	दक्षिणस्तने	सौभाग्य
मुखे	मिष्टान्नभोजन	दक्षिण पार्श्वे	भोगलाभ
कपोलयो.	सौख्यं	वामस्तने	यशधनं
हनौ	महाभय	वामपार्श्वे	पीडा
भृकुट्या	विग्रह	वामकुक्षौ	शिशोःपीडा
कंठे	व्यसनागम	दक्षिणकुक्षौ	पुत्रलाभ
बंशे	कलह	उदरे	पुत्रप्राप्ति
दक्षिणपृष्ठे	सुख	दक्षिणकट्यां	वस्त्रलाभ
वामपृष्ठे	रोगादि	वामकट्यां	सुखनाश
दक्षांसे	विजय	नाभौ	मनोरथपूर्ण
वामांसे	शत्रुभय	बस्तौ	गर्भनाश
दक्षिणभुजे कूर्परे मणिबधे	इष्टलाभ	गुह्ये	मृत्यु
दक्षिण हस्ततले	द्रव्य	गुदे	रोग
दक्षिण हस्त पृष्ठे	श्रेष्ठ व्यय.	दक्षिण ऊरौ	प्रीतिवर्द्धन

बामउरौ	मृत्यु दुःख	परितोभ्रमणे	नाश.
दक्षिणजानौ	श्रेष्ठवाहन	दक्षिण गुल्फे	प्रियागम
बामजानौ	पशुहानि	वाम गुल्फे	कलह
दक्षिणजघने	सुख	पादयोः	गमनं
बामजंघायां	क्लेश	पुरोभागे	दुष्टवार्ता
दक्षिणकुल्ले	धनवृद्धि	पृष्ठतः वामभागे	नष्टवार्ता हानि
वाम कुल्ले	स्त्रीवियोग	दक्षिणभागे	धनलाभ

श्रीसूर्यादिग्रहेभ्योनमः

अथ जातकोक्तविंशोत्तरीदशाचक्रम्.

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मगल	राहु	बृहस्प	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
नक्षत्राणि	कृत्ति·उ फा·उ·षा·	रो· ह· श्र·	मृ· चि· ध·	आ स्वा· श	पुन· वि· पू·भा	पु· अनु उ·भा	श्ले·ज्ये रेवती	मघा मू· अ	पू·फा·पू षा भ·

अथसूर्यदशांतराणि १

ग्रहा	सू	च	म	रा	जी	श	बु	के	भु
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

अथचंद्रदशांतराणि २

ग्रहा	चं	भौ	रा	गु	श	बु	के	भु	आ
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथभौमांतराणि. ३

ग्रहा	भ	रा	गु	श	बु	के	भु	आ	चं
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

अथराहुदशांतराणि. ४

ग्रहा	रा	गु	श	बु	के	भु	आ	चं	भौ
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

अथगुरोर्दशांतराणि ५

ग्रहा	बृ	श	बु	के	भु	आ	चं	भौ	रा
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

अथशनिदशांतराणि. ६

ग्रहा	श	बु	के	भु	सू	च	मं	रा	गु
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

अथ बुधदशांतराणि. ७

ग्रहा	बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

अथ केतुदशांतराणि ८

ग्रहा	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

अथ शुक्रदशांतराणि. ९

ग्रहा	शु	आ	च	भौ	रा	बृ	श	बु	के
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथरविदशामध्ये रव्यंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि १०

ग्रहा	सू	चं	म	रा	बृ	श	बु	के	शु
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
घडी	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशामध्ये चद्रानरं तन्मध्ये प्रत्यतराणि ११

ग्र.	चं	म	रा	गु	श	बु	के	शु	सू
मा.	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दि.	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथसूर्यदशायां भौमांनरे प्रत्यतराणि १२

ग्र	म	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	७	१८	१६	१८	१७	७	२१	६	१०
घ	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशाया राह्नोरतरे प्रत्यंतराणि १३

ग्र.	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
मा.	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दि	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घ.	३६	१२	१८	५४	५४	०	११	०	५४
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथसूर्यदशायां गुरोरतरे प्रत्यंतराणि १४

ग्र.	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मा	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दि	८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
घ	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशायांशन्यंतरे प्रत्यंतराणि १५

ग्र	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	गु
मा	१	१	०	१	०	०	०	१	१
दि	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
घ	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशायाबुधांतरे प्रत्यंतराणि १६

ग्र	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	गु	श
मा	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दि.	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
घ.	२९	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशायाकेत्वंतरे प्रत्यंतराणि १७

ग्र	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु
मा	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
घ.	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशायाशुक्रांतरे प्रत्यंतराणि १८

ग्र	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के
मा	२	०	१	०	१	१	१	१	०
दि	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथचंद्रदशायांचद्रांतरे प्रत्यंतराणि. १९

ग्र	च	भौ	रा	बृ	श	बु	के	शु	र
मा	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दि	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५
घ	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथचंद्रदशायांभौमांतरे प्रत्यंतराणि २०

ग्र	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	र	च
मा	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दि	१२	१	२८	३	२०	१२	५	१०	१७
घ	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चद्रदशायांराहोरंतरे प्रत्यंतराणि. २१

ग्र	रा	जी	श	बु	के	शु	र	च	म
मा.	२	२	२	२	१	३	०	१	१
दि.	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१
घ	०	२०	३०	३०	३०	०	०	३०	३०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्रदशायांगुर्वंतरे प्रत्यंतराणि २२

ग्र	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मा	२	२	२	०	२	०	१	०	२
दि	४	१६	८	२८	२०	२८	१०	२८	१२
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्रदशायांशन्यंतरे प्रत्यंतराणि. २३									
ग्र.	श	बु	के	शु	सू	च	मं	रा	गु
मा	२	२	१	३	०	१	१	२	२
दि	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
घ	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्रदशायांबुधांतरे प्रत्यंतराणि. २४									
ग्र.	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श
मा.	२	०	२	०	१	०	२	२	२
दि.	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०
घ	४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्रदशायांकेत्वंतरेप्रत्यंतराणि. २५									
ग्र.	के	शु	सू	च	म	रा	गु	श	बु
मा.	०	१	०	०	०	१	०	१	०
दि.	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९
घ.	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्रदशायांशुक्रांतरेप्रत्यंतराणि. २६									
ग्र.	शु	र	चं	मं	रा	गु.	श	बु	के
मा.	३	१	१	१	३	२	३	२	१
दि.	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्रदशायांरव्यंतरे प्रत्यंतराणि: २७									
ग्र	सू	चं	मं	रा	जी	श	बु	के	शु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दि.	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

मंगलदशायांमंगलांतरे प्रत्यंतराणि. २८									
ग्र.	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	र	चं
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घ.	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५
प	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

मंगलदशायांराहोरंतरे प्रत्यंतराणि. २९									
ग्र.	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	म
मा	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दि.	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०.

मंगलदशायांगुरोरंतरेप्रत्यंतराणि. ३०									
ग्र.	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मा.	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दि.	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

मंगलदशायांशन्यंतरेप्रत्यंतराणि ३१									
ग्र	शा	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	जी
मा	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दि.	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

मगलदशायाबुधातरेप्रत्यतराणि. ३२									
ग्र	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	शा
मा	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दि	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१
प.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

मंगलदशायांकेतोरंतरेप्रत्यंतराणि ३३									
ग्र	के	शु	आ	च	भौ	रा	गु	शा	बु
मा	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९
प	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

मंगलदशायाशुक्रातरेप्रत्यतराणि - ३४									
ग्र	शु	आ	च	भौ	रा	गु	शा	बु	के
मा	२	०	१	०	२	२	२	१	०
दि.	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घ	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

मगलदशायारव्यंतरेप्रत्यंतराणि ३५									
ग्र.	सू	चं	मं	रा	गु	शा	बु	के	शु
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घ	१८	३०	३१	५४	४८	५७	३१	३१	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

मंगळदशायाचंद्रांतरेप्रत्यंतराणि - ३६									
ग्र	चं	म	रा	गु	शा	बु	के	शु	र
मा.	०	०	१	१	१	०	०	१	०
दि	१७	१२	१	२९	३	२८	१२	५	१०
घ	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथराहुदशायाराहोरंतरेप्रत्यतराणि ३७									
ग्र	रा	गु	शा	बु	के	शु	र	चं	मं
मा.	४	४	५	४	१	५	१	२	१
दि.	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
घ.	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायांगुरोरंतरे प्रत्यंतराणि ३८									
ग्र.	गु	शा	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मा	३	४	४	१	४	१	२	१	४
दि	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९
घ	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायांशनेरंतरे प्रत्यंतराणि ३९

ग्र.	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु
मा	५	४	१	५	१	२	१	५	४
दि.	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
घ	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायांबुधांतरे प्रत्यंतराणि ४०

ग्र	बु	के	शु	आ	चं	भौ	रा	गु	श
मा.	४	१	५	१	२	१	४	४	४
दि.	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
घ	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायांकेत्वंतरे प्रत्यंतराणि. ४१

ग्र.	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु
मा.	०	२	०	१	०	१	१	१	१
दि.	२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३
घ.	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायांशुक्रांतरे प्रत्यंतराणि. ४२

ग्र.	शु	आ	चं	मं	रा	गु	श	बु	के
मा.	६	१	३	२	५	४	५	५	२
दि.	०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायांरवेरंतरे प्रत्यंतराणि ४३

ग्र.	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु
मा.	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दि.	१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४
घ.	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायांचंद्रांतरे प्रत्यंतराणि ४४

ग्र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र
मा.	१	१	२	२	२	२	१	३	०
दि.	१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७
घ	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायांभौमांतरे प्रत्यंतराणि. ४५

ग्र	भौ	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं
मा.	०	१	१	१	१	०	२	०	१
दि.	२२	२४	२०	२९	२३	२२	३	१८	१
घ	३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथगुरुदशायांगुर्वंतरे प्रत्यंतराणि. ४६

ग्र.	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
मा.	३	४	३	१	६	१	२	१	३
दि.	१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५
घ.	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायांशन्यंतरेप्रत्यतराणि. ४७									
ग्र	श	बु	के	शु	सू	च	मं	रा	बु
मा	४	४	१	५	१	२	१	४	४
दि	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१
घ	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायाबुधातरेप्रत्यंतराणि ४८									
ग्र	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श
मा	३	१	४	१	२	१	४	३	४
दि.	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९
घ	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायांकेत्वतरेप्रत्यंतराणि. ४९									
ग्र	के	शु	सू	चं	भौ	रा	गु	श	बु
मा	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दि	१९	२६	२६	२८	१९	२०	१४	२३	१७
घ.	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायांशुक्रांतरेप्रत्यंतराणि ५०									
ग्र	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के
मा	५	१	२	१	४	४	५	४	१
दि	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायांसूर्यांतरेप्रत्यंतराणि ५१									
ग्र	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु.
मा.	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दि	२४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८
घ	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायांचंद्रांतरेप्रत्यंतराणि. ५२									
ग्र	चं	म	रा	गु	श	बु	के	शु	सू
मा	१	०	२	२	१	२	०	२	०
दि.	१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायांभौमांतरे प्रत्यंतराणि.५३									
ग्र.	भौ	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	च
मा.	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दि	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८
घ	३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायांराहोरंतरे प्रत्यंतराणि ५४									
ग्र	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
मा.	४	२	४	४	१	४	१	२	१
दि.	९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०
घ.	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथशनिदशायांशन्यंतरेप्रत्यंतराणि ५५

ग्र	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु
मा	५	५	२	६	१	३	२	५	४
दि	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
घ	२८	२५	१०	३०	९	१५	१०	२७	२४
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

अथशनिदशायांबुधांतरेप्रत्यंतराणि. ५६

ग्र	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श
मा	४	१	५	१	२	१	४	४	५
दि	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३
घ	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	२५
प	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

अथशनिदशायांकेत्वंतरेप्रत्यंतराणि ५७

ग्र.	के	शु	सू	चं	भौ	रा	गु	श	बु
मा	०	२	०	१	०	१	१	२	१
दि.	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६
घ.	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

शनिदशायांशुक्रांतरेप्रत्यंतराणि. ५८

ग्र.	शु	सू	चं	भौ	रा	गु	श	बु	के
मा.	६	१	३	२	५	५	६	५	२
दि.	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिदशायांसूर्यांतरेप्रत्यंतराणि. ५९

ग्र.	सू	चं	भौ	रा	गु	श	बु	के	शु
मा.	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दि.	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७
घ	६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिदशायांचंद्रांतरेप्रत्यंतराणि. ६०

ग्र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू
मा	१	१	२	२	३	२	१	३	०
दि.	१७	३	२५	१६	०	२०	३०	५	२८
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिदशायांभौमांतरेप्रत्यंतराणि. ६१

ग्र.	मं.	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं
मा.	०	१	१	२	१	०	२	०	१
दि.	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३
घ	१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१५
प	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शनिदशायांराह्वंतरेप्रत्यंतराणि. ६२

ग्र.	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
मा	५	४	५	४	१	५	१	२	१
दि.	३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९
घ.	५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिदशायांगुरोरंतरे प्रत्यंतराणि. ६३

ग्र	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मा	४	४	४	१	५	१	२	१	४
दि	१६	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६
घ	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथबुधदशायांबुधांतरेप्रत्यंतराणि. ६४

ग्र	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श
मा.	४	१	४	१	२	१	४	३	४
दि	२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७
घ	४०	३४	३०	२१	१५	३४	३०	२६	१६
प.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

अथबुधदशायांकेत्वंतरे प्रत्यंतराणि. ६५

ग्र	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु
मा.	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दि	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	०
घ	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	३४
प	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

अथबुधदशायांशुक्रांतरेप्रत्यंतराणि. ६६

ग्र.	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के
मा	५	१	२	१	५	४	५	४	१
दि.	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	२९
घ	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथबुधदशायांसूर्यांतरे प्रत्यंतराणि. ६७

ग्र.	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु
मा	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दि.	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
घ.	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथबुधदशायांचंद्रांतरेप्रत्यंतराणि ६८

ग्र	च	म	रा	गु	श	बु	के	शु	सू
मा	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दि	१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५
घ.	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुधदशायांमंगलांतरेप्रत्यंतराणि ६९

ग्र.	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं
मा	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दि	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९
घ	४९	३३	३६	३१	३४	४९	३०	५१	४५
प.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

बुधदशायांराहोरंतरेप्रत्यंतराणि ७०

ग्र	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
मा.	४	२	४	४	१	५	१	२	१
दि.	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३
घ	४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथबुधदशायांगुरोरंतरे प्रत्यंतराणि ७१

ग्र	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	म	रा
मा.	३	४	३	१	४	१	२	१	४
दि	२८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुधदशायांशन्यंतरे प्रत्यंतराणि ७२

ग्र	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु
मा.	५	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
घ.	२५	१६	३१	३०	१७	४५	३१	२१	१२
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

अथकेतुदशायांकेत्वंतरे प्रत्यंतराणि ७३

ग्र.	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ.	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

केतुदशायांशुक्रांतरे प्रत्यंतराणि. ७४

ग्र.	शु	सू	चं	म	रा	गु	श	बु	के
मा.	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दि.	१०	२१	५	२४	३	२९	६	२८	२४
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुदशायांसूर्यांतरे प्रत्यंतराणि. ७५

ग्र.	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घ.	१८	३०	३१	५४	४८	५७	३१	३१	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुदशायांचंद्रांतरे प्रत्यंतराणि ७६

ग्र.	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू
मा.	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दि	१७	१२	१	२९	३	२८	१२	५	१०
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुदशायांभौमांतरे प्रत्यंतराणि. ७७

ग्र.	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घ.	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५
प.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

केतुदशायांराहोरंतरे प्रत्यंतराणि. ७८

ग्र.	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
मा.	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दि.	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२३
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुदशायांगुरोरंतरेप्रत्यंतराणि- ७९

ग्र	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	म	रा
मा	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दि	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ-	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुदशायांशनेरंतरेप्रत्यंतराणि ८०

ग्र	श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	गु
मा	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दि	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२
प	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

केतुदशायांबुधांतरेप्रत्यंतराणि ८१

ग्र.	बु	के	शु	सू	च	म	रा	गु	श
मा	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दि	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	४९	३०	५१	४५	४९	२३	३६	३१
प	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

अथशुक्रदशायांशुक्रांतरेप्रत्यंतराणि ८२

ग्र	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के
मा	६	२	३	२	६	५	६	५	२
दि	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायांसूर्यांतरेप्रत्यंतराणि-८३

ग्र	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु
मा	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दि	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायांचंद्रांतरेप्रत्यंतराणि. ८४

ग्र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू
मा	१	१	३	२	३	२	१	३	१
दि-	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायांभौमांतरे प्रत्यंतराणि. ८५

ग्र	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
मा.	०	२	१	२	१	०	२	०	१
दि	२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५
घ	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायांराह्वन्तरे प्रत्यन्तराणि. ८६

ग्र	रा	बृ	श	बु	के	शु	र	चं	भौ
मा	५	४	५	५	२	६	१	३	२
दि.	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायांबृहस्पत्यन्तरे प्रत्यंतराणि. ८७

ग्र.	बृ	श	बु	के	शु	र	चं	भौ	रा
मा.	४	५	४	१	५	१	२	१	४
दि.	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायांशन्यंतरे प्रत्यंतराणि. ८८

ग्र.	श	बु	के	शु	र	चं	भौ	रा	जी
मा.	६	५	२	६	१	३	२	५	५
दि.	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
घ.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायांबुधांतरे प्रत्यंतराणि. ८९

ग्र.	बु	के	शु	र	चं	भौ	रा	जी	श
मा.	४	१	५	१	२	१	५	४	५
दि.	२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११
घ.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायांकेत्वंतरे प्रत्यंतराणि. ९०

ग्र.	के	शु	र	चं	भौ	रा	बृ	श	बु
मा.	०	२	०	१	०	२	१	२	१
दि	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९
घ.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

समाप्त.

नवीन ग्रंथ भाषा टीका सहित बेचनेके तैयार है.

भारतसार.

यह भारतसार हमारे यहा तीन वक्त छप चुका है क्योंकि इसकी कथा कैसी मनो-हर है सो आप लोगोको विदितही है यह ग्रंथ प्रथम महात्मा श्री ५ तिरपत रामजी म होदयने हस्तलिखित हमको दियाथा जिसीपें छपता रहा परतु इसकी भाषा कहीं हिंदी कहीं व्रजकी, कहीं मारू थी। तोभी इस अमृतरूपी इतिहासके लोभसे धर्मा-नुरागी लेते थे. परतु सज्जन लोगोकी यह अभिलाषा थी कि इसकी भाषा सुदर देवनागरी (हिंदी) में होवे और बिस्तारभी कथाका बढजाय तो सोना और सुगंध हो जावे

तब उन लोगोंकी आज्ञा मस्तकपे चढाके वैसाही किया कि यह पुस्तक श्रीयुत पंडितजी श्री ५ श्रीज्वालाप्रसादजी महाराज मुरादाबाद निवासीके सेवामे भे-जा तो उन महोदयने अति श्रम करके अति मनोहर भाषा सरल हिंदीमे बनाके कथा का बिस्तारभी बढा दिया पहिले यह ग्रंथ ३४४ पृष्टमें था अब ८४० है सो पाठक स-मजसकेगे कि कथा कितनी बढगई है

संपूर्ण महाभारतकी किमत अधिक होनेसे द्रव्यपात्र ले सकते हैं परंतु साधा रण सज्जनोसे न लिया जानेसे प्राय करके उनके दिलमे कथाकी लालसा रहती है फिर द्रव्यपात्र अपने कार्यहीमें समय खोके संपूर्ण कथाको बांचने या श्रवण क-रनेका मोका नहीं पाते तो दोनोंहीके लिये यह महाभारतका सार सार ऐसा निकला गया है कि दहीसे मख्खन, इनके बांचनेसे संपूर्ण महाभारतका आ-शय हृदयमे आजायगा फिर आप लोग बिचारिये कि ग्रंथकी संख्या देखते कमसे कम रु ४ चाहिये परंतु रु. २॥ ही रक्खा गया है. यह ग्रंथ अति उत्तम स्पष्ट अक्षरोमे चिकना कागजपर छपा है. आशा है के यह ग्रथ एक बखत दोहा चौपाइ इत्यादि कवितोसे अवलोकन करके अपने मन प्रसन्न करे

मुहूर्त्तप्रकाशस्थविषयाणांशुद्धाऽशुद्धिपत्रम्.

अशुद्धम्	शुद्धम्	पृ०	पं०	अशुद्धम्	शुद्धम्	पृ०	पं०
तीसदिनको	तीसदिनके	२	१६	दोषापनुत्तेय	दोषापनुत्तये	२९	२७
शरे१५दि२दु१	शरे१५दि१दु१	४	२६	मदार्क्षोच्छ	मंदर्क्षोच्छ	३२	८
चोर	चौर	५	१	लेश ३	क्लेश ३	३३	१४
चि २	चि १	५	६	मंगलका१०००	मंगलका१००००	३६	१३
पु षा ४उ षा ३	पु षा २उ षा २	५	७	तृतीय	तृतीय	३६	२७
वालवश्चैव	बालवश्चैव	५	२३	करेंदुः १	करे २ इु १	३७	२२
अन्यप्रकार.	भद्रावासः	६	११	करोत्तरैषु	करोत्तरेषु	३८	११
दूसरामत	भद्रावासः	५	१९	शिनि	शनि	३८	२७
पित्र्यग्नि	पित्र्याग्नि	८	२६	यन्यऽपरान्ह	हन्यऽपराह्न	४०	२०
पित्र्याब्राह्मौ	पित्र्यब्राह्मौ	८	२६	उनको	ऊनके	४१	४
क्रममें	क्रमसें	९	५	लिखाहो	लिखाहै	४१	२०
कारणालिखा	करणालिखा	९	५	देनेमेंशुभहै	देनेमेंअशुभहै	४३	२७
सौम्ये	सौम्यो	९	२०	फिर १ मिलवै	फिर१ औरबारामि	४७	१२
पशु १४	पद्म १४	१०	३	निविद्ध	निषिद्ध	५१	२८
शिनिवारकों	शनिवारकों	१०	१८	परतु	अथवा	५२	१७
भानाच	भानाच	११	६	दृग्धयागे	दग्धयोगे	५३	१८
कुम	कुम	१२	३	अन्यत्रपि	अन्यत्रापि	५४	१२
वर्ण.	वर्णा.	१२	५	स्थितयः	स्थितयः	५४	२५
कथिता	कथितो	१३	९	शुक्लक्ष.	शुक्लपक्षः	५५	२१
२१७	२१८	१६	१३	षोडेशदिने	षोडशेदिने	५५	२४
भावस्तनोः	भावास्तनोः	१७	५	स्वेध्याय	स्वाध्याय	५६	१९
यपापर	पणफरं	१७	६	विवक्ष्यत	विवक्ष्यते	५७	२३
यपापर	पणफर	१८	२	जन्मकाएक१	जन्मका १	५८	६
राशियें	राशिपें	२१	७	एकाचतुर्थी	एकाचतुर्थी	५९	१२
वर्जेह	वर्जेह	२१	१३	श्वोर	श्वौर	६१	२३
सुयोगा	सुयोगो	२४	१२	दंपत्योराशियो मैत्री	दंपत्योराशयो मैत्री	६५	१८
कार्येसिद्धचौ	कार्यसिद्धये	२४	१२	शुतिस्वात्यः	श्रुतिस्वात्य	६५	२३
खचराः	खेचराः	२४	२६	रक्षसौ.	रक्षसोः	६६	६
खचेराः	खेचराः	२४	२७	गुणासादृश्ये	गुणसादृश्ये	६६	७
कतीके	कर्तीके	२५	१०	सौख्यकत	सौख्यकृत्	६६	१३
छं	षष्ट	२७	२५	गर्माधानाद्या	गर्भधानाद्या	६९	३

अशुद्धम्	शुद्धम्	पृ०	पं०	अशुद्धम्	शुद्धम्	पृ०	पं०
निवासिमां	निवासिना	७०	१६	मवाम्नुयात्	मवप्नुयात्	११०	७
जन्ममासर्मे	जन्ममासर्से	७१	१३	नाडीयपदं	नाडीपदं	११०	११
ऊष १२	ऊष १२	७३	२४	पृधानो	प्रधानो	१११	१
गुडूच्ययामार्गं	गुडूच्यपामार्गं	७४	२३	सीम्नांतर	सीम्नांतरं	११२	३
(सौतका)	(सौकका)	८१	२७	वद्धैकश्चे	बद्धोकैश्चि	११३	१८
एपष्टसूर्य	एयष्टसूर्य	८४	२२	पीसेतोचलो	पीछेसेंतोचलो	११४	१७
ऊर्ध्वास्तिस्त्र	ऊर्ध्वास्तिस्र	८५	११	कुयोगस्तिथि	कुयोगास्तिथि	११९	६
क्रांताश्वापो	क्रांतश्वापो	८५	१४	रौहिणी	रौहिण	११९	१६
छिद्रको	छिद्रके	८७	८	वमितः	वामतः	११९	२६
धनुष्यः	धनुषः	८८	१	तीनपीठकाह	तीन३पीठकाह	१२०	८३
पापःषष्ठे	पापाःषष्ठे	८८	२०	नगांक ९	नगांक ७९	१२०	१
मूर्त्तौ१चवेंद्रे	मूर्त्तौ १ चचंद्रे	९३	१०	बाणा ५	बाणाः ५	१२०	१५
हित्वाहित्वात्रि२	हित्वात्रि	९३	१४	अघामुखे	अघोमुखे	१२०	१७
१९२	१८२	९३	१९	गेसिंहा	गेहेसिंहा	१२१	६
घटेषु ७	घटेषु ७	९४	१०	सोम्यैः	सौम्यैः	१२१	२८
सप्तां ७ ग १	सप्तां ७ ग ६	९४	७	चौथेगूरु	चौथेगुरु	१२२	१७
प्रथमाद्दे	प्रथमाब्दे	९५	३	च्छशद्दयम्	च्छतद्दयम्	१२४	६
विल्हवे	विप्लवे	९६	१३	त्वादस्त्रष्ट	त्वाष्ट्रदस्र	१२४	२५
द्रुमोवेत्	द्रुमोभवेत्	९६	१५	प्रतिष्ठापयाः	प्रतिष्ठाप्याः	१२५	१९
वेश्मेनि	वेश्मनि	९६	१६	धिण्ये	धिष्ण्ये	१२७	१०
मध्याऽन्यतानि	मध्यान्येतानि	९८	१४	रवोमुखं	रघोमुखं	१३०	११
धिष्टयानि	धिष्टयानि	९८	१५	प्रारंभग	प्रारंभणं	,,	१४
सोमारकौं	सोमवारकौं	९८	२९	नक्षत्रैर्मर्वं	नक्षत्रैर्मवं	१३१	१०
धिष्टयानि	दिष्ण्यानि	९९	७	मघौ	मघौ	१३२	३
तांवूलं	तांबूलं	९९	२५	यदिवा	दिवावा	,,	२०
ष्ठाह	ष्ठाह	१००	१	चराशेष	चरांशेच	१३४	२१
अन्यच्चः	अन्यच्च	१००	२५	मृगे	मृगौ	१३५	११
ग्रुक्त	युक्ता	१००	२९	वृक्षाश्रहताद्रव	वृक्षावज्रहताइव	,,	१२
पुर्वे	पूर्वे	१०१	६	स्रवीतमाल्यै	स्रग्वीगीतमाल्यै	,,	१५
मकरेष्टमी	मकरेष्टमो	१०३	१०	त्युत्रा	पुत्रा	,,	२७
द्वापशःसार्ये	द्वादशःसार्पं	१०३	१२	कर्तुर्नोनिवनो	कर्तुर्नोनिधनो	१३७	१४
प्राच्यांमुवां	प्राच्यामुषां	१०५	१२	प्रतिष्ठयेत्	प्रतिष्टपेत्	१३८	१९
संमुखो	समुखे	१०६	२१	पतिष्ठाका	प्रतिष्ठाका	१३९	१२
अर्हंपौषे	त्र्यहगौषे	१०८	१७	पूत्र	पुत्र	१४०	८
कालवृष्टि	अकालवृष्टि	१०८	२७	कीर्त्तिदा	कीर्त्तिदाः	,,	३१

अशुद्धम्	शुद्धम्	पृ०	प०	अशुद्धम्	शुद्धम्	पृ०	प०
श्रिय	स्त्रिय	”	२५	कडूक्षिणे	कडूतिर्दक्षिणे	”	३१
ग्रहः	ग्रहैः	१४२	१	ब्रह्मण	ब्रह्मणा	१५२	४
जलाश्रये	जलाशये	”	१४	रतथा	स्तथा	१५५	२५
गतानराणां	गतोनराणां	”	१७	खरोष्ट	खरोष्ट्र	१५७	९
रना	करना	१४४	१०	लाक्षच	लाक्षांच	”	२७
तुरमें	तुरगमें	”	१०	कोष्ठ	क्रोष्ठ	”	२८
लक्ष्मी	लक्ष्मीश	१४६	१४	ताम्राज्यसं-त्रय	ताम्रायस-चयः	१५८	१९
सौरिसिद्धि-नाम ३	सौरिसिद्धि-नाम ४	१४७	३	तार	तारां	१५९	३
खविघ्न	खविघ्न	”	१३	द्रवान	द्रवान्	”	४
आश्विने	आश्विन	१४७	१४	लल्ला	लल्ल	१६०	२१
कंडूत्पां	कडूत्यां	१५१	२०				

विषयाणांशुद्धाऽशुद्धपत्रम् समाप्तम्.

श्री॥ ॥ श्रीः ॥ समाप्ति

श्रीः ।

"ज्ञानसागर" छापखानेके

नूतन पुस्तक विक्रीके रि तैयारहै.

नूतन सुखसागर—सुखसागर तो अनेक जग छपे हैं परंतु यह जो हमारे पास छप रहा है सो इस्की भाषा खडी, उत्तम सर्व साधार..भी समज सकें जैसी और योग्य स्थानमें दोहे चौपाई कविता पद, सोरठा रक्खे गये है इस्में रसभरी कवितामें श्रीमद्भाग· वतके बारहों स्कंधोंका मनोरंजक अनुवाद हैं–पुस्तकके गुण देखनेहीसे विदित होगा परंतु २ मासमें छपके संपूर्ण होगा सं. १९५६ के फाल्गुन शुक्र १२ तक–बिकना सरू होजायगा हालमें दशम उतरार्द्ध छपताहै मूल्य ग्लेज ७) तथा रफ कागजका ६) ट० ख० १॥)

भारतसार—हिंदीभाषा उत्तमोत्तम टाईपके बडे अक्षरोंमें और ग्लेज कागदमें चित्रोंसहित छपा हुआहै इस्में १८ ही पर्वोका सारांश लियाहै जैसे दधिमेंसे माखन निकाल लेतेहै उसी प्रकार यह महाभारतका सारहै पहिले इस्की भाषा साधारणथी सो बदलके पंडितजी श्रीज्वालाप्रसादजी अबकी दफे अति श्रमतासे अमृतरूपी भाषा बनादी स्थान स्थानमें दोहेचौपाई सोरठा कवित्त बनादिये जैसे कि स्वर्णके आभूषणमें रत्न जड दिये है इस्की प्रसंशा अधिक लिखना व्यर्थ है पुस्तक देखनेसेही मनोरथ पूर्ण होताहै किं. २॥) मा. ॥%) इसकी किंमत रु० ५) चाहियेथी क्योंकि ग्रंथ बढगया परंतु पहिले कमथी सो अबकी दफेभी अधिक न रक्खी. इस्को बांचनेसे सपूर्ण महाभारतका अनुभव होताहै.

बृहत्पाराशरी होरा—होरा विषयका यह अद्वितीय ग्रन्थ हैं. प्रथम आवृत्ति हाथों हाथ बिक गई. जो कि शिलाक्षरोंमेंथी तोभी सो ! अबकी बार टाईपके सुन्दर सुवाच्य, अक्षरोंमें छापी है. और मूल्यभी पहिलेकी अपेक्षा कमकर दिया है. अर्थात् पहिले ६) थे अब ५) करदिये हैं डा० म० ॥=) अलग देनेहोंगे.

मुहूर्त गणपतिः मूल और भाषा टीका सहित—हमारी आर्ष विद्याओंमें ज्योतिःशास्त्र एक ऐसी विद्या है जिसके द्वारा मनुष्य अपने होनहारको तत्काल जान सकता है। इस विद्याका पूर्ण अभ्यास करके तदनुसार ही कार्यमें प्रवृत होनेसे सुख संपदादि मिलनेमें कदापि संदेह नही है। इन सब बातोंमें मुहूर्त्त विषयका जानना ऐसा प्रयोजनीय है कि बिना इसके सन्मार्गावलंभियोंका कार्य चलना ही कठिन किन्तु असंभव प्रतीत होता है; परंतु मुहूर्त्त विषयका उत्तम ग्रन्थ न होनेसे यह त्रुटि दूर नहीं हो सकती है-इस अभावके दूर करनेको यह ग्रन्थ हमने भाषा टीका समेत बहुत सुवाच्य अक्षरोंमें छपवाया है, इसमें मुहूर्त्त विषयकी कोईबात नही छोडी गई है, इससे सबको इसकी एक एक प्रति अवश्य अपने पास रखना उचित है। विलायती कपडेकी बंधी हुई जिल्दका मूल्य १॥) डा. म ।–) है

ताजिकनीलकंठी भाषाटीकासहित—यह ग्रन्थ रसाला टीकाके अनुसार और कोशभी है. ताजक विषयमें सर्व मान्य और शिरोधार्य है–इसकी अधिक प्रशंसा करना इस